अक्टूबर से फरवरी – 2024, (विशेषांक), वर्ष 33, अंक 52 से 56

उत्तर प्रदेश संदेश

श्री राम मंदिर अयोध्या विशेषांक

नमामि रामं रघुवंश नाथम्

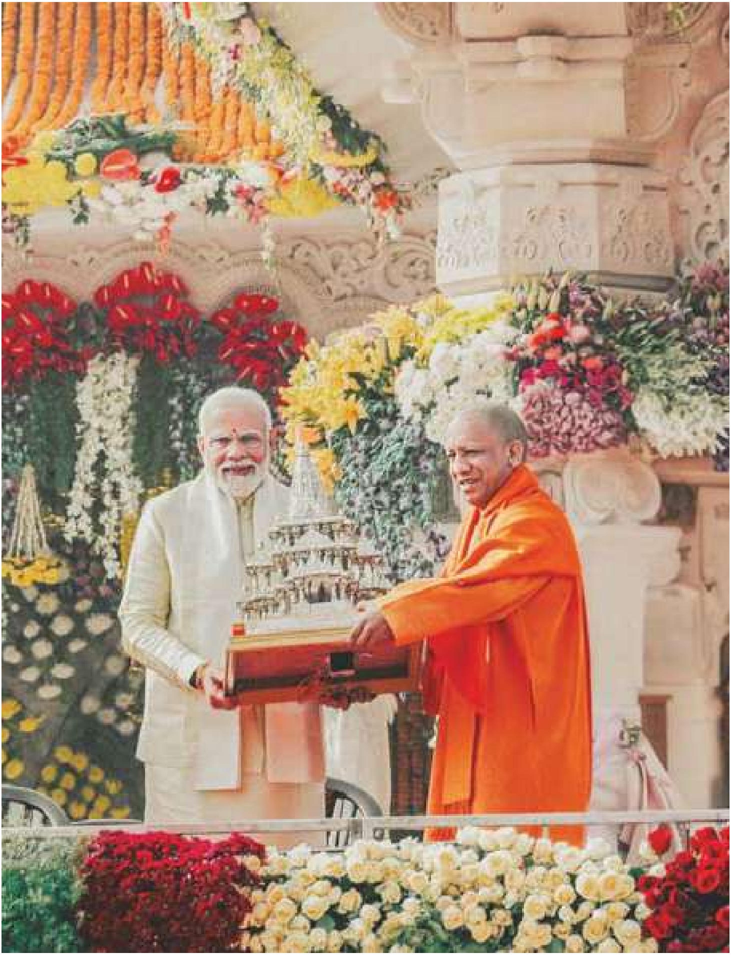

अक्टूबर से फरवरी-2024, (विशेषांक) वर्ष 33, अंक 52 से 56

उत्तर प्रदेश संदेश

संरक्षक एवं मार्गदर्शक :
संजय प्रसाद
प्रमुख सचिव, सूचना

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी :
शिशिर
सूचना निदेशक

सम्पादकीय परामर्श :
अंशुमान राम त्रिपाठी
अपर निदेशक, सूचना

डॉ. मधु ताम्बे
उपनिदेशक सूचना

डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह
सहायक निदेशक, सूचना

अतिथि सम्पादक :
कुमकुम शर्मा

सम्पादकीय सहयोग :
दिनेश कुमार गुप्ता
उपसम्पादक, सूचना

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
ईमेल : upsandesh20@gmail.com
दूरभाष कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 2236198, 2239011

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित

भारत सरकार के रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या : 55884/91

प्रकाशित सामग्री में विभिन्न लेखकों के दृष्टिकोण एवं विचार से सूचना विभाग की सहमति अनिवार्य नहीं हैं। लेखों में प्रयुक्त आंकड़े अनन्तिम हो सकते हैं।

इस अंक में

सब नर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं...	-योगी आदित्यनाथ	3
मंदिर बनाने का संकल्प हुआ पूरा	-योगी आदित्यनाथ	6
दिव्य भव्य राम रसायन	-हृदयनारायण दीक्षित	9
श्री राम : सामाजिकता और आध्यात्मिकता...	-अमिताभ जी महाराज	15
अयोध्या और सरयू	-डॉ. पवनपुत्र बादल	21
'लोकनायक राम'	-डॉ. सौरभ मालवीय	27
मंगल भवन हैं भगवान राम	-सियाराम पांडेय 'शांत'	31
मंगल के प्रतीक श्रीराम	-डॉ. रविशंकर पाण्डेय	35
तुलसी के मानस में राम	-आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	38
अयोध्या में लौटा स्वर्णिम इतिहास	-अशोक कुमार सिन्हा	48
सदियों की तपस्या के बाद मिले राम	-गोलेश स्वामी	52
हमारे सबके राम	-रेनू सैनी	59
राम मंदिर की स्थापना सांस्कृतिक गौरव...	-प्रदीप उपाध्याय	64
प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही खड़ी होती अयोध्या	-दिनेश गर्ग	70
कबीर के राम	-चित्रलेखा वर्मा	74
जी हां! यह भगवान राम की अयोध्या है	-यशोदा श्रीवास्तव	76
सर्वं राममयं जगत्	-दिनेश कुमार गुप्ता	79
सहस्त्रायु होगा राममन्दिर	-सीमा राय	83
कुछ यूं संवरी है राम की अयोध्या	-चित्रांशी	87
नव्य, भव्य, दिव्य अयोध्या	-अन्जु अग्निहोत्री	90
गोरक्षपीठ के महंत दिग्विजय नाथ रहे राम मंदिर...	-यशोदा श्रीवास्तव	97
रामो विग्रहवान धर्मः	-प्रेमशंकर अवस्थी	99
नए कालचक्र के नायक	-डॉ. अजय कुमार मिश्रा	104
काम से बना सीएम का नाम	-सुयश मिश्रा	107
अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित...	-विदर्भ कुमार	111
अयोध्या की सांस्कृतिक महत्ता	-विजय रंजन	115
सनातन संस्कृति का पुनर्जागरण	-अनूप ओझा	122
अवधी लोक साहित्य में लोकमंगल राम	-शिवचरण चौहान	124
दिव्य और भव्य होती अयोध्या	-सुरेन्द्र अग्निहोत्री	127
अयोध्या : अतीत से अब तक	-प्रदीप श्रीवास्तव	131
लोकगीतों में राम और अयोध्या	-शिवराम पाण्डेय	136
रामचरितमानस में भगवान राम की छवियाँ	-डॉ. रामकृष्ण	142
जा पर कृपा राम की होई	-प्रज्ञा पाण्डेय	149
नित नये प्रतिमान गढ़ती अयोध्या	-रजनीश वैश्य	152
अवधपुरी अति रूचिर बनाई, देवन्ह...	-रतिभान त्रिपाठी	154
पाँच सौ वर्षों की प्रतीक्षा का सुखद अंत!	-स्नेह मधुर	157
घर-घर आये हैं राम	-अखिलेश निगम 'अखिल'	164
अयोध्या : स्वर्णिम इतिहास और शानदार भविष्य	-रूद्रेश घिल्डियाल	167
सुत सनेह बस माता, बालचरित कर गान	-डॉ. अलका अस्थाना	171
अवधपुरी का माहात्म्य	-अमल मिश्र	173
आस्था का प्रमुख केंद्र के रूप में उभरता प्रदेश	-अनिल श्रीवास्तव	175
उमा राम सुभाव जेहि जाना	-संजीव श्रीवास्तव	179
आस्था के संकल्प की सिद्धि	-राघवेन्द्र प्रताप सिंह	182
अयोध्या होगा देश का पहला सोलर सिटी	-सरिता त्रिपाठी	186
राम की वैश्विक दृष्टि	-वीरेंद्र सिंह	191
दशरथ महल : जहां पहन पैजनिया ठुमक चले राम जी	-रवि प्रकाश	195
अजेय अयोध्या	-डॉ. रंजना जायसवान	197
भए प्रगट कृपाला दीनदयाला	-सुनीता उपाध्याय	200

सम्पादकीय

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः

'रम्' धातु में 'धञ' प्रत्यय के योग से 'राम' शब्द की निष्पत्ति होती है। 'रम्' धातु का अर्थ होता है रमण, निवास अथवा विहार करना। भगवान श्रीराम प्राणि मात्र के हृदय में निवास करते हैं, इसीलिए उन्हें राम कहा गया। ''रमते कणे-कणे इति रामः। विष्णुसहस्रनाम पर लिखित अपने भाष्य में आद्य शंकराचार्य ने पद्मपुराण का उदाहरण देते हुए कहा है कि नित्यानन्द स्वरूप भगवान में योगी जन निवास करते हैं इसीलिए वे 'राम' हैं। कबीर के राम घट घट वासी हैं जिन्हें हम दुनिया भर में ढूँढ रहे हैं, कबीर कहते हैं राम तो तुम्हारे अन्दर ही बसे हैं उन्हें अपने अन्तर्मन में खोजो।

कस्तूरी कुण्डल बसै, मृग ढूँढ़े वन माहि।
ऐसे घट-घट राम हैं दुनिया देखय नाहिं।।

यह कहते हुए कबीर अखण्ड भक्ति में राम से एकात्म होने की बात करते हैं। वो कहते हैं घट-घट वासी प्रभु को बाहरी दुनिया में खोजने की जगह अपने भीतर खोजने की आवश्यकता है।

प्राणि मात्र से प्रेम करते हुए मनुष्य राम को पा सकता है। कबीर अखण्ड प्रेम की बात करते हैं वे कहते हैं,

मेरे संगी दोई जणा, एक वैष्णों एक राम,
वो है दाता मुकति का, वो सुमिरावै नाम।

अर्थात् वे कहते हैं कि मेरे तो दो ही संगी साथी हैं, एक वैष्णव और दूसरे राम। राम मोक्षदायी हैं और वैष्णव नाम स्मरण करवाते हैं, कबीर कहते हैं। जब ये दो साथी हों तो किसी भी साथी की क्या जरूरत है।

पवित्र अयोध्या धाम में श्री रामलला के बाल रूप विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा के उपरान्त प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा था, ''500 वर्षों के लम्बे अन्तराल के उपरान्त आज के इस चिर प्रतीक्षित सुअवसर पर अन्तर्मन में भावनाएं कुछ ऐसी हैं कि उन्हें व्यक्त करने को शब्द नहीं मिल रहे हैं। मन भावुक है, भाव विभोर है, भाव विह्वल है। निश्चित रूप से आप सभी ऐसा ही अनुभव कर रहे होंगे। आज भी ऐतिहासिकता के अत्यन्त पावन अवसर पर भारत का हर ग्राम अयोध्या धाम है। हर मार्ग श्री रामजन्मभूमि की ओर आ रहा है। हर मन में राम नाम है। हर आँख हर्ष और संतोष के आँसू से भीगी हुई है। हर जिह्वा राम-राम जप रही है। रोम-रोम में राम रमे हैं। पूरा राष्ट्र राममय है। ऐसा लगता है हम त्रेतायुग में आ गये हैं। आज रघुनन्दन, राघव रामलला हमारे हृदय के भावों से भरे संकल्प सिंहासन पर विराज रहे हैं। आज हर राम भक्त के हृदय में प्रसन्नता है, गर्व है और संतोष के भाव हैं।''

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की इच्छाशक्ति और अथक परिश्रम से यह कार्य सम्भव हो सका है। प्राण प्रतिष्ठा के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने 100 करोड़ रुपये दिये। प्रधानमंत्री जी के आगमन पर देश भर में 22 जनवरी को दीपावली मनाई गई। मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के निरन्तर चलते सार्थक प्रयासों से आज नई विकसित अयोध्या पूरे विश्व के सनातन आस्थावानों संतों, पर्यटकों, शोधार्थियों, जिज्ञासुओं के लिए प्रमुख केन्द्र बनने की ओर अग्रसर है। इस नवीन अयोध्या नगरी में आज राम वन गमन वीथिकाओं का कार्य हो रहा है। आज यहाँ प्राचीन संस्कृति और सभ्यता का संरक्षण तो हो ही रहा है साथ ही भविष्य की जरूरतों को देखते हुए आधुनिक सभी नगरीय सुविधाओं को भी विकसित किया जा रहा है। जल्दी ही सोलर सिटी के रूप में भी अयोध्या नगरी का विकास होगा।

सम्पादक

सब नर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति

शताब्दियों की प्रतीक्षारत पीढ़ियों के संघर्ष और पूर्वजों के व्रत को सफल करते हुए सनातन संस्कृति के प्राण रघुनन्दन राघव रामलला, अपनी जन्मभूमि अवधपुरी में नव्य–भव्य–दिव्य मंदिर में अपने भक्तों के भावों से भरे संकल्प स्वरूप सिंहासन पर प्रतिष्ठित होने जा रहे हैं।

–योगी आदित्यनाथ

शताब्दियों की प्रतीक्षाएं पीढ़ियों के संघर्ष और पूर्वजों के व्रत को सफल करते हुए सनातन संस्कृति के प्राण रघुनन्दन राघव रामलला, अपनी जन्मभूमि अवधपुरी में नव्य–भव्य–दिव्य मंदिर में अपने भक्तों के भावों से भरे संकल्प स्वरूप सिंहासन पर प्रतिष्ठित होने जा रहे है। 500 वर्षों के सुदीर्घ अंतराल के बाद आए इस ऐतिहासिक और अत्यंत पावन अवसर पर आज पूरा भारत भाव विभोर और भाव विह्वल है। पूरी दुनिया की दृष्टि आज मोक्षदायिनी अयोध्याधाम पर है। हर मार्ग श्रीरामजन्मभूमि की ओर आ रहा है। हर आंख आनन्द और संतोष के आंसू से भीगी है। हर जिह्वा पर राम–राम है। समूचा राष्ट्र राममय है।

आखिर भारतवर्ष को इसी दिन की तो प्रतीक्षा थी। इसी दिन की प्रतीक्षा में दर्जनों पीढ़ियां अधूरी कामना लिए धराधाम से साकेतधाम को प्रस्थान कर गईं। श्रीअयोध्याधाम

में श्रीरामलला के बालरूप विग्रह की प्राण–प्रतिष्ठा भर ही नहीं हो रही, अपितु लोकआस्था और जनविश्वास भी पुनर्प्रतिष्ठित हो रही है। अपने खोए हुए गौरव की पुनर्प्राप्ति कर अयोध्या नगरी विभूषित हो रही है। न्याय और सत्य के संयुक्त विजय का यह उल्लास अतीत की कटु स्मृतियों को विस्मृत कर, नए कथानक रच रहा है। यह पावन वेला समाज में समरसता की सुधा सरिता प्रवाहित कर रही है।

श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति महायज्ञ न केवल सनातन आस्था व विश्वास की परीक्षा का काल रहा, बल्कि, संपूर्ण भारत को एकात्मकता के सूत्र में बांधने के लिए राष्ट्र की सामूहिक चेतना जागरण के ध्येय में भी सफल सिद्ध हुआ। श्रीरामजन्मभूमि, संभवतः विश्व में पहला ऐसा अनूठा प्रकरण रहा होगा, जिसमें किसी राष्ट्र के बहुसंख्यक समाज ने अपने ही देश में अपने आराध्य की जन्मस्थली पर मंदिर निर्माण के लिए इतने वर्षों तक और इतने स्तरों पर लड़ाई लड़ी हो। संन्यासियों, संतों, पुजारियों, नागाओं, निहंगों, बुद्धिजीवियों, राजनेताओं, वनवासियों सहित समाज के हर वर्ग ने जाति–पाँति, विचार–दर्शन, पंथ–उपासना पद्धति से ऊपर उठकर राज काज के लिए स्वयं का उत्सर्ग किया। संतों ने आशीर्वाद दिया और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद जैसे सामाजिक–सांस्कृतिक संगठनों ने रूपरेखा तय की, जनता को एकजुट किया। अंततः संकल्प सिद्ध हुआ, व्रत पूर्ण हुआ।

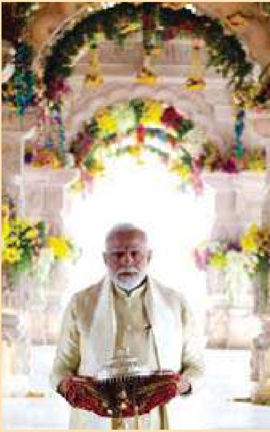

यह कैसी बिडंबना थी कि जिस अयोध्या को 'अवनि की अमरावती' और 'धरती का बैकुंठ' कहा गया, वह सदियों तक अभिशप्त रही। सुनियोजित तिरस्कार झेलती रही। जिस देश में 'रामराज्य' को शासन और समाज की आदर्श अवधारणा के रूप में स्वीकार किया जाता रहा हो, वहां राम को अपने अस्तित्व का प्रमाण देना पड़ा। जिस देश में 'राम नाम' सबसे बड़ा भरोसा है, वहां राम की जन्मभूमि के लिए साक्ष्य मांगे गए। किंतु श्रीराम का जीवन मर्यादित आचरण की शिक्षा देता है। संयम के महत्व का बोध कराता है। और यही शिक्षा ग्रहण कर रामभक्तों ने धैर्य नहीं छोड़ा। मर्यादा नहीं लांघी। दिन, माह, वर्ष, शताब्दियाँ बीतती गईं लेकिन हर एक नए सूर्योदय के साथ रामभक्तों का संकल्प और दृढ़ होता गया। सदियों की प्रतीक्षा के उपरांत भारत में हो रहे इस नवविहान को देख अयोध्या समेत भारत का वर्तमान आनन्दित हो उठा है। भाग्यवान है हमारी पीढ़ी जो इस राम–काज के साक्षी बन रही है और उससे भी बड़भागी हैं वो जिन्होंने सर्वस्व इस राम–काज के लिए समर्पित किया है और करते चले जा रहे हैं। हमारे व्रत की पूर्णाहुति के लिए हमारा मार्गदर्शन करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का हृदय से अभिनन्दन।

22 जनवरी, 2024 का दिन मेरे निजी जीवन के लिए भी सबसे बड़े आनंद का अवसर है। मानस पटल पर अनेक स्मृतियां जीवंत हो उठी हैं। यह रामजन्मभूमि मुक्ति का संकल्प ही था, जिसने मुझे पूज्य गुरुदेव महंत अवेद्यनाथ जी महाराज का पुण्य सान्निध्य प्राप्त कराया। श्रीरामलला के विग्रह की प्राण–प्रतिष्ठा के इस अलौकिक अवसर पर आज मेरे दादा गुरु ब्रह्मलीन महंत श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज और पूज्य गुरुदेव ब्रह्मलीन महंत श्री अवेद्यनाथ जी महाराज एवं अन्य पूज्य संतगण भौतिक शरीर से साक्षी नहीं बन पा रहे

किंतु, निश्चित ही आज उनकी आत्मा को असीम संतोष की अनुभूति हो रही होगी। मेरा सौभाग्य है कि जिस संकल्प के साथ मेरे पूज्य गुरुजन आजीवन संलग्न रहे, उसकी सिद्धि का मैं साक्षी बन रहा हूं। श्रीरामलला के श्रीरामजन्मभूमि मंदिर में विराजने की तिथि जबसे सार्वजनिक हुई है, हर सनातन आस्थावान 22 जनवरी की प्रतीक्षा में है। सम्पूर्ण राष्ट्र में ऐसे समवेत उल्लास और आनंदमय वातावरण का दूसरा उदाहरण हाल की कई शताब्दियों में देखने को नहीं मिलता। कोई ऐसा समारोह जहां शैव, वैष्णव, शाक्त, गाणपत्य, पात्य, सिख, बौद्ध, जैन, दशनाम शंकर, रामानंद, रामानुज, निम्बार्क, माध्व, विष्णु, नामी, रामसनेही, घिसापंथ, गरीबदासी, अकाली, निरंकारी, गौड़ीय, कबीरपंथी सहित भारतीय आध्यात्मिकता, धर्म, संप्रदाय, पूजा पद्धति, परंपरा के सभी विद्यालयों के आचार्य, 150 से अधिक परंपराओं के संत गण, 50 से अधिक वनवासी, गिरिवासी, द्वीपवासी परंपराओं के प्रमुख व्यक्ति उपस्थिति हों, जहां एक छत्र के नीचे राजीनीति, विज्ञान, उद्योग, खेल, कला, संस्कृति, साहित्य आदि विविध विधाओं के लब्धप्रतिष्ठ जन एकत्रित हों, अभूतपूर्व है। दुर्लभ है। भारत के इतिहास में प्रथम बार पहाड़ों, वनों, तटीय क्षेत्रों, द्वीपों आदि के वासियों द्वारा एक स्थान पर ऐसे किसी समारोह में प्रतिभाग किया जा रहा है। यह अपने आप में अद्वितीय है। इस भव्य समारोह में श्रीरामलला के समक्ष यशस्वी प्रधानमंत्री जी 140 करोड़ भारतीयों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करेंगे। अयोध्याधाम में लघु भारत के दर्शन होंगे। यह गौरवपूर्व अवसर है। उत्तर प्रदेश की 25 करोड़ जनता की ओर से मैं पावन अयोध्याधाम में सभी का अभिनन्दन करता हूं।

आखिर भारतवर्ष को इसी दिन की तो प्रतीक्षा थी। इसी दिन की प्रतीक्षा में दर्जनों पीढ़ियां अधूरी कामना लिए धराधाम से साकेतधाम को प्रस्थान कर गईं। श्रीअयोध्याधाम में श्रीरामलला के बालरूप विग्रह की प्राण–प्रतिष्ठा भर ही नहीं हो रही, अपितु लोकआस्था और जनविश्वास भी पुनर्प्रतिष्ठित हो रही है। अपने खोए हुए गौरव की पुनर्प्राप्ति कर अयोध्या नगरी विभूषित हो रही है। न्याय और सत्य के संयुक्त विजय का यह उल्लास अतीत की कटु स्मृतियों को विस्मृत कर, नये कथानक रच रहा है।

प्राण प्रतिष्ठा समारोह के उपरांत अयोध्याधाम दुनियाधाम में रामभक्तों, पर्यटकों, शोधार्थियों, जिज्ञासुओं के स्वागत हेतु तत्पर है। इसी उद्देश्य के साथ प्रधानमंत्री जी की परिकल्पना के अनुसार अयोध्यापुरी में सभी आवश्यक व्यवस्थाएं की जा रही है। अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट, विस्तारित रेलवे स्टेशन, चारों दिशाओं से 04–06 लेन रोड कनेक्टिविटी, हेलीपोर्ट सेवा, सुविधाजनक होटल, अतिथि गृह उपलब्ध हैं। नव्य अयोध्या में पुरातन संस्कृति सभ्यता का संरक्षण तो हो ही रहा है, यहां भविष्य की जरूरतों को देखते हुए आधुनिक पैमाने के अनुसार सभी नगरीय सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। अयोध्या की पंचकोसी, 14 कोसी तथा 84 कोसी परिक्रमा की परिधि में आने वाले सभी धार्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक स्थलों के पुनरुद्धार का कार्य त्वरित गति से हो रहा है। यह प्रयास सांस्कृतिक संवर्धन, पर्यटन को प्रोत्साहन तथा रोजगार के मौके भी सृजित करने वाले हैं।

श्रीरामजन्मभूमि मंदिर की स्थापना भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आध्यात्मिक अनुष्ठान है, यह राष्ट्र मंदिर है। निःसन्देह! श्रीरामलला विग्रह की प्राण–प्रतिष्ठा राष्ट्रीय गौरव का ऐतिहासिक अवसर है। रामकृपा से अब कभी कोई भी अयोध्या की गलियों में गोलियां नहीं चलेंगी, सरयूजी रक्त रंजित नहीं होंगी। अयोध्या में कर्फ्यू का कहर नहीं होगा। यहां उत्सव होगा। यहां उत्सव होगा। रामनाम संकीर्तन गुंजायमान होगा। अवधपुरी में रामलला का विराजना भारत में रामराज्य की स्थापना की उद्घोषणा है। 'सब नर करहिं परस्पर प्रीति, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति'' की परिकल्पना साकार हो उठी है। श्रीरामजन्मभूमि मंदिर में विराजित श्रीराम का बालरूप विग्रह हर सनातन आस्थावान के जीवन में धर्म के अनुपालन के लिए मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। सभी जनता जनार्दन को श्रीरामलला के विराजने की पुण्य घड़ी की बधाई। हमें संतोष है कि मंदिर वहीं बना है, जहां बनाने की सौगंध ली थी। जो संकल्प हमारे पूर्वजों ने लिया था, उसकी सिद्धि की बधाई। प्रभु श्रीराम की कृपा सभी पर बनी रहें।

◆

(साभार – अमर उजाला, 21 जनवरी, 2024)

मंदिर बनाने का संकल्प हुआ पूरा

–योगी आदित्यनाथ

ऐतिहासिक और अत्यंत पावन अवसर पर भारत का हर नगर– हर ग्राम अयोध्या धाम है। हर मार्ग श्री राम जन्मभूमि की ओर आ रहा है। हर मन में राम नाम है। हर आंख, हर्ष और संतोष के आंसू से भीगी हुई है। हर जिह्वा राम–राम जप रही है। रोम रोम में राम रमे हैं। पूरा राष्ट्र राममय है। ऐसा लगता है हम त्रेतायुग में आ गए हैं।

आज रघुनन्दन राघव रामलला, हमारे हृदय के भावों से भरे संकल्प स्वरूप सिंहासन पर विराज रहे हैं। आज हर राम भक्त के हृदय में प्रसन्नता है, गर्व है और संतोष के भाव हैं।

आखिर भारत को इसी दिन की तो प्रतीक्षा थी। भाव–विभोर कर देने वाली इस दिन की प्रतीक्षा में लगभग पांच शताब्दियां व्यतीत हो गईं, दर्जनों पीढ़ियां अधूरी कामना लिए इस धरा धाम से साकेत धाम में लीन हो गईं, किन्तु प्रतीक्षा और संघर्ष का क्रम सतत जारी रहा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या धाम में श्री रामलला के बाल रूप विग्रह की प्राण–प्रतिष्ठा के उपरांत कहा कि "रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।। 500 वर्षों के लंबे अंतराल के उपरांत आज के इस चिर प्रतीक्षित मौके पर अंतर्मन में भावनाएं कुछ ऐसी हैं कि उन्हें व्यक्त करने को शब्द नहीं मिल रहे हैं। मन भावुक हैं, भाव विभोर हैं, भाव विह्वल हैं। निश्चित रूप से आप सब भी ऐसा ही अनुभव कर रहे होंगे। आज इस

श्रीराम जन्मभूमि, संभवतः विश्व में पहला ऐसा अनूठा प्रकरण होगा, जिसमें किसी राष्ट्र के बहुसंख्यक समाज ने अपने ही देश में अपने आराध्य के जन्मस्थली पर मंदिर निर्माण के लिए इतने वर्षों तक और इतने स्तरों पर लड़ाई लड़ी हो। संन्यासियों, संतों, पुजारियों, नागाओं, निहंगों, बुद्धिजीवियों, राजनेताओं, वनवासियों सहित समाज के हर वर्ग ने जाति–पाति, विचार–दर्शन, उपासना पद्धति से ऊपर उठकर राम काज के लिए स्वयं का उत्सर्ग किया।

अंततः आज वह शुभ अवसर आ ही गया कि जब कोटि–कोटि सनातनी आस्थावानों के त्याग और तप को पूर्णता प्राप्त हो रही है। आज संतोष इस बात का भी है कि मंदिर वहीं बना है, जहां बनाने का संकल्प लिया था। संकल्प और साधना की सिद्धि के लिए, हमारी प्रतीक्षा की समाप्ति के लिए, हमारे संकल्प पूर्णता के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का हृदय से आभार और अभिनंदन।

प्रधानमंत्री जी! 2014 में आपके 'आगमन' के साथ ही भारतीय जनमानस कह उठा था– "मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई। मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई।।" अभी गर्भगृह में वैदिक विधि–विधान से रामलला के बाल विग्रह के प्राण–प्रतिष्ठा के हम सभी साक्षी बने। अलौकिक छवि है हमारे प्रभु की। धन्य है वह शिल्पी, जिसने हमारे मन में बसे राम की छवि को मूर्त रूप प्रदान किया। विचारों और भावनाओं की विह्वलता के बीच मुझे पूज्य संतों और अपनी गुरु परम्परा का पुण्य स्मरण हो रहा है। आज उनकी आत्मा को असीम संतोष और आनन्द की अनुभूति हो रही होगी, जिन परम्पराओं की पीढ़ियां श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ में अपनी आहुति दे चुकी हैं, उनकी पावन स्मृति को यहां पर कोटि–कोटि नमन करता हूं। श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति महायज्ञ न केवल सनातन आस्था व विश्वास की परीक्षा का काल रहा, बल्कि, संपूर्ण भारत को एकात्मकता के सूत्र में बांधने के लिए राष्ट्र की सामूहिक चेतना जागरण के ध्येय में भी सफल सिद्ध हुआ। सदियों के बाद भारत में हो रहे इस चिर प्रतीक्षित नवविहान को देख अयोध्या समेत भारत का वर्तमान आनंदित हो उठा है।

श्रीराम जन्मभूमि, संभवतः विश्व में पहला ऐसा अनूठा प्रकरण होगा, जिसमें किसी राष्ट्र के बहुसंख्यक समाज ने अपने ही देश में अपने आराध्य के जन्मस्थली पर मंदिर निर्माण के लिए इतने वर्षों तक और इतने स्तरों पर लड़ाई लड़ी हो। संन्यासियों, संतों, पुजारियों, नागाओं, निहंगों, बुद्धिजीवियों, राजनेताओं, वनवासियों सहित समाज के हर वर्ग ने जाति–पाति, विचार–दर्शन, उपासना पद्धति से ऊपर उठकर राम काज के लिए स्वयं का उत्सर्ग किया।

भाग्यवान है हमारी पीढ़ी के लोग, जो इस राम–काज के साक्षी बन रहे हैं और उससे भी बड़भागी हैं वो जिन्होंने सर्वस्व इस राम–काज के लिए समर्पित किया है और करते चले जा रहे हैं। जिस अयोध्या को "अवनि की अमरावती" और "धरती का बैकुंठ" कहा गया, वह सदियों तक अभिशिप्त रही। उपेक्षित रही। सुनियोजित तिरस्कार झेलती रही। अपनी ही भूमि पर सनातन आस्था पददलित होती रही, चोटिल होती रही। राम का जीवन हमें संयम की शिक्षा देता है और भारतीय समाज ने संयम बनाये रखा, लेकिन हर एक नए दिन के साथ हमारा संकल्प और दृढ़ होता गया। और आज देखिए, पूरी दुनिया अयोध्या जी के वैभव को निहार रही है। हर कोई अयोध्या आने को आतुर है। आज अयोध्या में त्रेतायुगीन वैभव उतर आया है। यह धर्म नगरी 'विश्व की सांस्कृतिक राजधानी' के रूप में प्रतिष्ठित हो रही है। पूरा विश्व दिव्य और भव्य अयोध्या का साक्षात्कार कर रहा है। आज जिस सुनियोजित एवं तीव्र गति से अयोध्यापुरी का विकास हो रहा है, वह प्रधानमंत्री जी के दृढ़संकल्प, इच्छाशक्ति एवं दूरदर्शिता के बिना संभव नहीं था।

कुछ वर्षों पहले तक यह कल्पना से परे था कि अयोध्या में एयरपोर्ट होगा। यहां नगर के भीतर 4 लेन की सड़क होगी। सरयू जी में क्रूज चलेंगे। अयोध्या की खोई गरिमा वापस आएगी, अब यह यह सपना साकार हो रहा है। "सांस्कृतिक अयोध्या, आयुष्मान अयोध्या, स्वच्छ अयोध्या, सक्षम अयोध्या, सुरम्य अयोध्या, सुगम्य अयोध्या, दिव्य अयोध्या और भव्य अयोध्या" के रूप में पुनरुद्धार के लिए हजारों करोड़ रुपये लग रहे हैं। आज यहां राम जी की पैड़ी, नया घाट, गुप्तार घाट, ब्रह्मकुंड आदि विभिन्न कुंडों के कायाकल्प, संरक्षण, संचालन और रखरखाव का कार्य हो रहा है। रामायण परंपरा की 'कल्चरल मैपिंग' कराई जा रही है, राम वन गमन पथ पर रामायण वीथिकाओं का निर्माण हो रहा है। इस नई अयोध्या में पुरातन संस्कृति और सभ्यता का संरक्षण तो हो ही रहा है, भविष्य की जरूरतों को देखते हुए आधुनिक पैमाने के अनुसार सभी नगरीय सुविधाएं भी विकसित हो रहीं हैं। इस मोक्षदायिनी नगरी को आदरणीय प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से

'सोलर सिटी' के रूप में विकसित किया जा रहा। नई अयोध्या पूरे विश्व के सनातन आस्थावानों, संतों, पर्यटकों, शोधार्थियों, जिज्ञासुओं के लिए प्रमुख केंद्र बनने की ओर अग्रसर है। यह एक नगर या तीर्थ भर का विकास नहीं है, यह उस विश्वास की विजय है, जिसे 'सत्यमेव जयते' के रूप में भारत के राजचिन्ह में अंगीकार किया गया है। यह लोक आस्था–जन विश्वास की विजय है। भारत के गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा है। अयोध्या का दिव्य दीपोत्सव नए भारत की सांस्कृतिक पहचान बन रहा है और श्री रामलला की प्राण–प्रतिष्ठा समारोह भारत की सांस्कृतिक अंतरात्मा की समरस अभिव्यक्ति सिद्ध हो रही है। निश्चिंत रहिए! रामकृपा से अब कभी कोई भी अयोध्या की परिक्रमा में बाधक नहीं बन पाएगा। अयोध्या की गलियों में गोलियों की गड़गड़ाहट नहीं होगी। कर्फ्यू नहीं लगेगा। यहां की गलियां राम नाम संकीर्तन से गुंजायमान होंगी। अवधपुरी में रामलला का विराजना भारत में रामराज्य की स्थापना की उद्घोषणा है।

नई अयोध्या पूरे विश्व के सनातन आस्थावानों, संतों, पर्यटकों, शोधार्थियों, जिज्ञासुओं के लिए प्रमुख केंद्र बनने की ओर अग्रसर है। यह एक नगर या तीर्थ भर का विकास नहीं है, यह उस विश्वास की विजय है, जिसे 'सत्यमेव जयते' के रूप में भारत के राजचिन्ह में अंगीकार किया गया है। यह लोक आस्था–जन विश्वास की विजय है। भारत के गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा है। अयोध्या का दिव्य दीपोत्सव नए भारत की सांस्कृतिक पहचान बन रहा है और श्री रामलला की प्राण–प्रतिष्ठा समारोह भारत की सांस्कृतिक अंतरात्मा की समरस अभिव्यक्ति सिद्ध हो रही है।

◆

प्रस्तुति : सुनील राय
मो. : 9415132728

दिव्य भव्य रामसायन

—हृदयनारायण दीक्षित

श्रद्धा असम्भव पर विश्वास है। श्रद्धा का विकास शून्य से नहीं होता। वह इतिहास में तथ्य लेती है। संस्कृति की कसौटी पर कसती है। लोकसमर्थन करता है, विश्वास की सीमाएँ फैलती हैं। लेकिन तर्क और विज्ञान की कसौटी महत्वपूर्ण है। हिन्दू श्रद्धा का आधार दर्शन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। हिन्दू अनुभूति में 'राम, कृष्ण और शिव' त्रिदेव हैं। श्रीराम और श्रीकृष्ण विष्णु के अवतार माने जाते हैं। भारतीय श्रद्धा ने उन्हें—इतिहास में खोजा। उन्हें भगवान भी माना। पूजा और मनुष्य मानकर जाँचा भी। तुलसीदास की अनुभूति की बात ही दूसरी है।

समाजवादी चिन्तक डॉ. राममनोहर लोहिया भारत के लोकमन की थाह ले चुके थे। वे 'राम—कृष्ण—शिव' की त्रिमूर्ति के प्रशंसक थे। लोहिया ने राम, कृष्ण और शिव को भारत में पूर्णता के तीन महान स्वप्नों की संज्ञा दी। "राम की पूर्णता मर्यादित व्यक्तित्व में है, कृष्ण की उन्मुक्त या सम्पूर्ण व्यक्तित्व में और शिव की असीमित व्यक्तित्व में। लेकिन हर एक पूर्ण है" (राम, कृष्ण और शिव लोहिया, पृ. 4)। डॉ. रामविलास शर्मा मार्क्सवादी थे। महाभारत के सम्बंध में डॉ. शर्मा की टिप्पणी है, 'महाभारत इतिहास है, आख्यान है.... आधुनिक अर्थ में वह इतिहास नहीं है, लेकिन इतिहास से भिन्न भी नहीं है।' फिर आगे कहा, 'ऋग्वेद में जो समाज—व्यवस्था है, ऋग्वेद और रामायण के समाजों से महाभारत का समाज पिछड़ा हुआ है' (भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश)। यहाँ एक समाज ऋग्वेद का है, एक रामायण का और बाद का समाज महाभारत का है। श्रीराम और रामायण का समाज ऋग्वेद के बाद है, महाभारत के पहले है। राज्य व्यवस्था विकसित है। तुलसी यह तथ्य राम राज्य के वर्णन में रखते हैं।

पार्जीटर के अनुसार पुराणों के अध्ययन का ऐतिहासिक उपयोग किया जा सकता है। भारत के ज्ञात इतिहास/पौराणिक अनुश्रुति के अनुसार वैवस्वत मनु पहले आर्य राजा थे। उनके बड़े पुत्र थे इक्ष्वाकु। मनु और इक्ष्वाकु ऋग्वेद में भी हैं। इक्ष्वाकु अयोध्या के राजा थे। इक्ष्वाकु के 19 पीढ़ी बाद मान्धाता चक्रवर्ती राजा हुए। उनका पुत्र पुरुकुत्स अयोध्या का राजा बना। पुरुकुत्स के 11 पीढ़ी बाद दानवीर राजा हरिश्चन्द्र का शासन आया। 41वीं पीढ़ी में राजा सगर और 45वीं में चक्रवर्ती सम्राट भगीरथ। इक्ष्वाकुवंश के बाद 60वीं पीढ़ी में दिलीप फिर दिलीप का पोता रघु और भी प्रतापी राजा हुआ। रघु के कारण ही 'रघुवंशी' शब्द चला।

रघु के पुत्र अज, अज के पुत्र दशरथ और दशरथ के पुत्र श्रीराम। श्रीराम इक्ष्वाकु वंश की 65वीं पीढ़ी में थे।

वाल्मीकि ने इन्हीं श्रीराम को अपना नायक बनाया। 'रामायण' की रचना हुई। वाल्मीकि 'आदर्श मनुष्य' का चित्रण कर रहे थे। ऐसा आदर्श व्यत्तित्व उन्होंने श्रीराम में देखा। वाल्मीकि के श्रीराम मनुष्य हैं, ईश्वर भी हैं। लेकिन मनुष्य ज्यादा हैं। तुलसीदास के राम ईश्वर हैं, वे मनुष्य रूप में लीला करते हैं। तुलसी के राम सबको भाए। श्रीराम का चरित्र और व्यक्तित्व विश्वव्यापी बना। संस्कृत और प्राकृत सहित भारत और विश्व की तमाम भाषाओं में रामकथाएँ लिखी गईं। तमिल कवि कम्बन ने भी राम कथा लिखी। मुस्लिम आबादी वाले देश इंडोनेशिया में भी रामायण का राष्ट्रीय महत्व है। भारतीय इतिहास के सबसे बड़े लोकप्रिय नेता महात्मा गांधी भारत में 'रामराज्य' के ही स्वप्नद्रष्टा बने। डॉ. लोहिया के अनुसार श्रीराम समन्वय के प्रतीक हैं। न्याय के लिए संघर्ष के प्रतीक हैं। राम आनंद सागर हैं–हिलोरे लेने वाला सागर नहीं, विश्रांत–निस्पंद। जिस तरह हिमालय के निर्मल निर्झर से शरीर और मन शांत होता है उसी प्रकार राम

वाल्मीकि ने इन्हीं श्रीराम को अपना नायक बनाया। 'रामायण' की रचना हुई। वाल्मीकि 'आदर्श मनुष्य' का चित्रण कर रहे थे। ऐसा आदर्श व्यत्तित्व उन्होंने श्रीराम में देखा। वाल्मीकि के श्रीराम मनुष्य हैं, ईश्वर भी हैं। लेकिन मनुष्य ज्यादा हैं। तुलसीदास के राम ईश्वर हैं, वे मनुष्य रूप में लीला करते हैं। तुलसी के राम सबको भाए। श्रीराम का चरित्र और व्यक्तित्व विश्वव्यापी बना। संस्कृत और प्राकृत सहित भारत और विश्व की तमाम भाषाओं में रामकथाएँ लिखी गईं। तमिल कवि कम्बन ने भी राम कथा लिखी। मुस्लिम आबादी वाले देश इंडोनेशिया में भी रामायण का राष्ट्रीय महत्व है। भारतीय इतिहास के सबसे बड़े लोकप्रिय नेता महात्मा गांधी भारत में 'रामराज्य' के ही स्वप्नद्रष्टा बने।

के निर्झर से मन घुलता है" (राजेन्द्रमोहन भट्नागर अवधूत लोहिया, पृ. 338)। लोहिया तुलसी के रामचरितमानस पर मोहित थे। वे उसे रामायण ही कहते थे, "रामायण में आनंद के न जाने कितने स्रोत हैं। एक–एक चौपाई आनंद का सागर है। तुलसी में लय तथा शब्दमाधुर्य की जैसी प्रचुरता पाई जाती है वह विश्व के अन्य किसी कवि में नहीं" (वही, 341)। लोहिया के अनुसार विश्व में राम जैसा कोई नायक नहीं, तुलसी जैसा दूसरा कवि नहीं।

तुलसी का 'राम राज्य' विश्व में अद्वितीय है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल की किसी राज्यप्रणाली में रामराज्य के आदर्श नहीं मिलते। तुलसी लिखते हैं, "बयरू न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई।। कोई किसी से बैर नहीं करता, गैरबराबरी का नाम निशान नहीं" (रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड)। फिर कहते हैं, "अल्प मृत्यु नहीं कौनिऊ पीरा। सब सुन्दर सब बिरूज शरीरा।। नहि दरिद्र कोऊ दुखी न दीना। नहि कोऊ अबुध न लच्छन हीना।। न अल्पमृत्यु है, न बीमारियाँ। सब स्वस्थ हैं। कोई गरीब और दुखी नहीं है। न कोई मूर्ख है और न अगुणी" (वही)। सबसे दिलचस्प बात यह है, "बिधु महि पूर मयूखन्हि, रबि तप जेतन्हि काज – चन्द्रमा धरती को प्रकाश से पूर्ण करता है, सूर्य उतना ही तपते हैं, जितना जरूरी होता है।" 'ग्लोबल वार्मिंग' का नामनिशान नहीं है। फिर बादल और वर्षा के बारे में कहते हैं, "मांगे वारिधि देंहि जल, रामचन्द्र के राज–बादल इच्छा करते ही/जल मांगते ही बरस पड़ते हैं।" एक आदर्श राज्य की कल्पना बार–बार पठनीय और विचारणीय है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस में युद्ध में विजय के लिए जरूरी रथ का उल्लेख किया है। तुलसी कहते हैं, ''रावनु रथी बिरथ रघुबीरा/देखि बिभीषन भयउ अधीरा–रावण रथ पर है और श्रीराम रथहीन।'' विभीषण दुःखी थे, उन्होंने श्रीराम से कहा, ''नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना/केहि बिधि जितब बीर बलवाना।–श्रीराम के पास न रथ है न कवच। पैरों में पहनने के लिए जूते भी नहीं हैं।'' विभीषण द्वारा पूछे गए इस प्रश्न के उत्तर में श्रीराम कहते हैं, ''सुनहु सखा कह कृपानिधाना/जेहि जय होइ सो स्यंदन आना।'' श्रीराम ने कहा, ''हे मित्र सुनो, जिस रथ से विजय होती है, वह रथ दूसरा ही है।''

युद्ध के लिए उपकरण जरूरी हैं। श्रीराम युद्ध के

मैदान में हैं। युद्ध में भी वे राष्ट्रजीवन के आदर्शों की ही चर्चा करते हैं। बताते हैं कि विजय रथ कैसा है, ''सौरज धीरज तेहि रथ चाका/सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका। बल बिबेक दम परहित घोरे/छमा कृपा समता रजु जोरे।'' श्रीराम कहते हैं कि, ''शौर्य और धैर्य उस रथ के पहिए हैं। सत्य और शील रथ के ध्वज पताका हैं। बल, विवेक, इन्द्रिय संयम व परोपकार उस रथ के घोड़े हैं। ये घोड़े क्षमा, दया और समता रूपी डोरी से रथ में जुड़े हुए हैं।'' आगे कहते हैं, ''ईस भजनु सारथी सुजाना/बिरति चर्म संतोष कृपाना। दान परसु बुधि शक्ति प्रचंडा/बर बिग्यान कठिन कोदंडा–ईश्वर का भजन रथ का चालक है। वैराग्य ढाल है। संतोष तलवार है। बुद्धि प्रचंड शक्ति। विज्ञान धनुष है। यम और नियम बाण हैं। विद्वानों और गुरुओं के प्रति श्रद्धा कवच है।'' श्रीराम कहते हैं, ''एहि सम बिजय उपाय न दूजा–इसके अलावा विजय का कोई दूसरा मार्ग नहीं है।'' श्रीराम कहते हैं, ''जिसके पास ऐसा धर्ममय रथ है उसे जीतने के लिए कोई शत्रु ही नहीं है। वह दुर्जेय शत्रु को भी जीत सकता है।'' तुलसी की रामकथा में राष्ट्रजीवन की सभी मर्यादाओं को रथ के प्रतीक में सम्मिलित किया गया है।

रामचरितमानस की प्रगतिशीलता सांस्कृतिक परम्परा से संवाद करती है। यह 'विधि निषेधमय कलिमय हरनी' (बालकाण्ड) है, इसमें विधि–निषेध (करणीय और अकरणीय) की सूची है। वेदों की परम्परा है, उपनिषदों का दर्शन है। सगुण भक्ति/उपासना है। निर्गुण निराकार की सरल व्याख्या है। अद्वैत दर्शन भी है, "एक दारूगत देखिए एकू/पावक सम जुग ब्रह्म विवेकू–जैसे लकड़ी के भीतर निराकार अग्नि छिपी रहती है, दिखाई नहीं पड़ती, लेकिन जलते समय अग्नि प्रकट रहती है।" प्रकट अग्नि सगुण है, अप्रकट अग्नि निर्गुण है। ऋग्वेद में भी अग्नि से ऐसी ही प्रार्थना है। उपनिषदों वाला ब्रह्म भी तुलसी की रामकथा में है 'व्यापक एक ब्रह्म अविनासी/सत चेतन घन आनंद वासी' (बालकाण्ड), लेकिन तुलसी भक्तिमार्गी है, "निरगुन तें एहि भांति बड़, नाम प्रभाऊ अपार"–वे नाम का प्रभाव निर्गुण और सगुण से भी बड़ा बताते हैं, "कहहुं नाम बड़ नाम राम तें निज विचार अनुसार।" यहाँ राम का नाम सगुण राम से भी बड़ा है।" राम नाम वाणी है। मन संकल्प है। ध्यान है, विज्ञान है, अन्न जल उन्हीं में है, वे तेज है। आकाश है, आशा है, प्राण है, भूमा – विराट भी है।"

मार्क्सवादी श्रीराम को कल्पना बताते रहे हैं। राम भारत के मन वचन में, बोली में, नमस्कार और कुशलक्षेम में प्रत्येक मंगलमुहूर्त में हैं। चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य रामकथा पर सम्मोहित थे। उन्होंने तमिल में 'तिरूगमन–रामायण' लिखी। इसका हिन्दी अनुवाद उनकी पुत्री और महात्मा गांधी की पुत्र–बहू लक्ष्मी देवदास गांधी ने किया। राजाजी ग्रन्थ की भूमिका लिखते हैं, 'सियाराम हनुमान और भारत को छोड़कर हमारी कोई गति नहीं। उनकी कथा हमारे पूर्वजों की धरोहर है। हम आज उसी के आधार पर जीवित हैं" (हिन्दी अनुवाद, पृ. 7)। तुलसी के राम अद्वितीय हैं।

भारत का राष्ट्रजीवन अखण्ड रामायण है। अविभक्त। हिन्दू अनुभूति के महानायक हैं तुलसी के श्रीराम। वे दिक्काल में हैं और दिक्काल के परे भी। भारतीय जनता के चित्त, आचार व्यवहार पर श्रीराम का प्रभाव है। श्रीराम मंगल भवन हैं और अमंगलहारी भी। वे भारत के मन में रमते हैं। हजारों स्थलों पर ऐसे नाटक या उत्सव नहीं होते। रामलीला में आनंद रस का प्रवाह है।

ब्रह्म का उद्भव ब्रह्म से हुआ। यह पूर्ण है। पूर्ण पूर्ण को आच्छादित करता है। पूर्ण में पूर्ण घटाओ तो पूर्ण ही बचता है। ब्रह्म सदा से है। यही ब्रह्म तुलसी के राम हैं। वह कर्ता नहीं है। उसके सभी कृत्य लीला हैं। यह विराट जगत भी ब्रह्म की लीला है। ब्रह्म अभिनय करता है श्रीराम होकर। मनुष्य रूप धारी ब्रह्म श्रीराम होकर मर्यादा पालन करते हैं। मर्यादापालन की प्रतिबद्धता के कारण उनके सारे निर्णय स्वयं के विरुद्ध हैं। वे प्रतिपल तपते हैं, प्रतिक्षण दुखी होते हैं। सीता निष्कासन अग्नि स्नान जैसा दुःख देता है लेकिन राम को तप मर्यादा प्रिय है। रामकथा में यही तप है। रामकथा भारत के मन की वीणा है। ब्रह्म स्वयं राम का अभिनय करते है। साधारण अभिनय नहीं। यहां आदर्श अभिनय के सभी सूत्र एक साथ हैं। आदर्श पितृभक्त। पिता की आज्ञा के अनुसार

उपनिषदों वाला ब्रह्म भी तुलसी की रामकथा में है 'व्यापक एक ब्रह्म अविनासी / सत चेतन घन आनंद वासी' (बालकाण्ड), लेकिन तुलसी भक्तिमार्गी है, "निरगुन तें एहि भांति बड़, नाम प्रभाऊ अपार"–वे नाम का प्रभाव निर्गुण और सगुण से भी बड़ा बताते हैं, "कहहुं नाम बड़ नाम राम तें निज विचार अनुसार।" यहाँ राम का नाम सगुण राम से भी बड़ा है।" राम नाम वाणी है। मन संकल्प है। ध्यान है, विज्ञान है, अन्न जल उन्हीं में है, वे तेज हैं। आकाश हैं, आशा हैं, प्राण हैं, भूमा – विराट भी है।"

मिले तो राम राम, अलग हुए तो राम राम। राम का नाम हम सब बचपन से सुनते आए हैं। वे संकट में धैर्य हैं। पौरुष पराक्रम में सक्रियता हैं। वे परम शक्तिशाली हैं। राम तमाम असंभवों का संगम हैं। युद्ध में अजेय पौरुष पराक्रम और निजी जीवन में मर्यादा के पुरुषोत्तम। श्रीराम भारतीय आदर्श व आचरण के शिखर हैं। भारतीय मनीषा ने उन्हें ब्रह्म या ईश्वर जाना है। श्रीराम प्रतिदिन प्रतिपल स्मरणीय हैं। विजयादशमी व उसके आगे पीछे श्रीराम के जीवन पर आधारित श्रीराम लीला के उत्सव पूरे विश्व में होते हैं। राम भारत बोध में तीनों लोकों के राजा हैं। त्रिलोकीनाथ हैं। सो भारत के बाहर भी इंडोनेशिया आदि देशों में भी श्रीराम लीला होती है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की रामलीला विख्यात है। वाराणसी देश की सांस्कृतिक राजधानी है। यहां की रामलीला दर्शनीय है। ग्रामीण क्षेत्रों में गांव गांव रामलीला की परंपरा है। दुनिया के किसी भी देश में एक ही अवधि में वन गमन। निषाद राज का सम्मान। अयोध्या से वन पहुंचे भरत को राजव्यवस्था के मूल तत्वों पर प्रबोधन। शबरी सिद्धा का सम्मान। वनवासी राम मोहित करते हैं। लंका विजय युद्ध काण्ड है।

रामकथा का रस क्षण भंगुर नहीं है। यह रस सभी रसों का मधु संगम है। राम राज्य दुनिया की सभी राजव्यवस्थाओं का आदर्श है। आधुनिक काल के सबसे बड़े सत्याग्रही महात्मा गांधी ने आदर्श राजव्यवस्था के लिए राम राज्य को ही भारत का स्वप्न बताया था। रामचर्चा से भारत का मन नहीं अघाता। राम रस का आस्वाद बार–बार स्मरण में आता है–पीवत राम रस लागत खुमारी। राम रसायन दिव्य और भव्य है।

◆

(पूर्व अध्यक्ष विधानसभा उत्तर प्रदेश)

मो. : 9695009944

श्री गुरु गोरक्षनाथ की नगरी

गोरखपुर

सांस्कृतिक धरोहरों की पुनर्प्रतिष्ठा

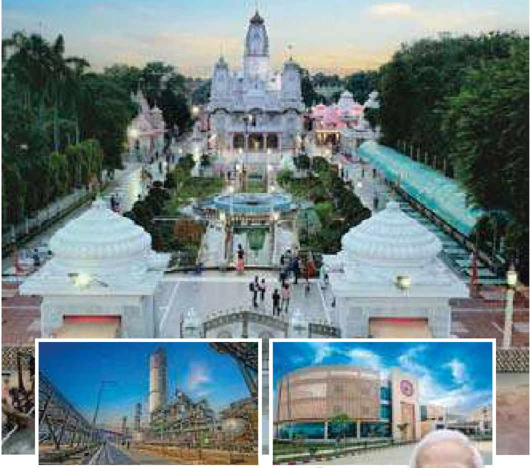

- महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय की स्थापना
- वाटर कॉम्प्लेक्स का निर्माण, रामगढ़ ताल में वाटर स्पोर्ट्स सुविधाएं
- गोरखपुर में दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद प्लांट की स्थापना
- 40 वर्षों से बंद गोरखपुर खाद कारखाना का पुनर्संचालन
- अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) का संचालन
- अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त आईसीएमआर लैब का निर्माण
- शहीद अशफाक उल्ला खां प्राणी उद्यान का निर्माण

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

श्री राम : सामाजिकता और आध्यात्मिकता का अद्भुत समन्वय

—अमिताभ जी महाराज

श्री राम को भाव के साथ संबोधन करने के लिए अनेक नाम से अभिहित किया गया है उन्हें श्री रामभद्र सरकार, राघवेंद्र सरकार, रघुकुल भूषण, सत्यनिष्ठ राम आदि आदि अनंत नामों से भक्तगण उन्हें संबोधन करते हुए अपनी भावांजलि अर्पित करते हैं।

राघवेंद्र सरकार की विशिष्टताओं का वर्णन करना, विशेषकर उनकी समाजोन्मुखी आध्यात्मिकता, उसी प्रकार से है जैसे एक लघु पात्र को को समुद्र के जल से आपूरित करने का कोई प्रयास करना।

एक महत्वपूर्ण बात और है। शास्त्र कहते हैं श्याम तेज की उपासना एवं कृपा तभी फलित होती है जब गौर तेज की उपासना की जाए। अर्थात भगवती सीता की कृपा प्राप्त हुए बिना श्री राम के विषय में कुछ कह पाना संभव नहीं है। अतः भगवती की कृपा प्राप्ति की कामना एवं प्रार्थना करते हुए मैं पूर्ण विनम्र भाव से राघवेंद्र सरकार के अद्भुत व्यक्तित्व पर एवं उनके सर्व समावेशीकरण संयुक्त आध्यात्मिक भाव पर चर्चा करने का दुस्साहस करूंगा।

महर्षि वाल्मीकि के वर्णन के अनुसार अपने बाल्य काल से ही श्री राम ने धीरोदात्त नायक के समस्त गुण को प्रकट किया। विद्वानों की संगति, अपने भाइयों के प्रति संरक्षण का भाव, माता—पिता के प्रति सम्मान एवं आज्ञा पालन करने वाले पुत्र का भाव, प्रजा के प्रति पितृभाव तथा समग्र सृष्टि के प्रति समत्व का भाव श्री राम के व्यक्तित्व में प्रकट रूप में परिलक्षित होते हैं।

वस्तुतः श्री राम क्या करते थे, इससे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि वह किस प्रकार से करते थे। सबके प्रति अनुराग एवं सम्मान का भाव रखते हुए भी जो अपने प्रारंभ से ही वैराग्यपरक मूल्य से अनुप्राणित हैं। वे ऐसा व्यक्तित्व हैं जो अयोध्या जैसे विश्रुत राज्य का शासक बनने की सूचना प्राप्त होने पर भी प्रसन्न नहीं होते तथा 14 वर्ष के आकस्मिक निर्वासन की सूचना से दुःखी भी नहीं होते। उनकी स्थितिप्रज्ञता अनंत काल तक मनुष्यों को विपरीत परिस्थितियों को उत्तम रीति से सामना करने की शक्ति प्रदान करती रहेगी।

राघवेंद्र सरकार की आध्यात्मिकता पर चर्चा करते हुए उसका अनुसंधान करने का प्रयास उसी प्रकार से है जैसे कि आप सूर्य का दर्शन करते हुए उसमें तेज के अनुसंधान का प्रयास करें अर्थात तात्पर्य यह है श्री राम स्वयं में ही अध्यात्म का पर्याय है।

।। रामो विग्रहवान धर्मः।।

उनका व्यक्तित्व इस अध्यात्म चिंतन के साथ संबंधित है कि हमारे अपने परिवेश में जिनके प्रति हमारे भीतर दायित्व का बोध होना चाहिए तथा जिनके प्रति पोषण करने का बोध होना चाहिए इस भाव की निरंतरता को बनाए रखना ही अध्यात्म की चरम भूमि को सुप्रतिष्ठ करता है।

आध्यात्मिक होने का तात्पर्य सदैव पूजन आदि प्रक्रिया में रत रहना ही नहीं होता अपितु अपने परिवार तथा समाज, जिसके माध्यम से हमको बहुत कुछ प्राप्त होता है, के प्रति अपने दायित्वों को पूर्ण करना भी होता है। इस मापदंड पर श्री राम अपने बाल्य काल से लेकर अपने संपूर्ण जीवन काल में खरे उतरे हैं। उनके बालकपन में भी उनकी गंभीरता, निष्कपटता एवं पारदर्शिता बड़े–बड़े साधुजनों को भी चमत्कृत कर देती थी।

राघवेंद्र सरकार के व्यक्तित्व का जो विराट फलक है। इसका एक अत्यंत सुंदर निरूपण श्रीमद् भागवत के एकादश स्कंध, पंचम अध्याय तथा 34 संख्या के श्लोक में प्राप्त होता है। श्रीमद्भागवत में भगवान की स्तुति के जो श्लोक हैं, उनमें– से एक में भगवान् श्रीरामचन्द्र की महिमा का अद्भुत वर्णन है–

त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।

इस श्लोक का सार यह है कि जिस राज्य लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए देवता भी आकांक्षा करते थे। ऐसी अद्भुत राज्य लक्ष्मी का भगवान श्री रामचंद्र ने सहज रूप में ही त्याग कर दिया। पिता के चरणों के प्रति इतना अदभुत समर्पण कि संकेत मात्र से ही पिता की आज्ञा प्राप्त कर अनेक–अनेक दुर्गम वनों में उनका चरण भ्रमण हुआ।

अपनी पत्नी के प्रति इतना प्रेम तथा एकात्म भाव कि भगवती ने वन गमन के उपरांत पहली बार किसी संदर्भ में कोई अपेक्षा की है। समझते–जानते हुए भी स्वर्ण–मृग के पीछे भागे। लक्ष्मण ने शंका की। श्री राम ने भी सकारात्मक उत्तर देते हुए कहा जो भवितव्यता है, वही प्रभावी होती है। ऐसे भगवान श्री रामचंद्र के चरणों का हम आश्रय प्राप्त करते हैं।

भगवान् श्रीराम का चरित्र अनेक–अनेक आयामों को परिलक्षित करता है। जैसे दृढ़ प्रतिज्ञ संकल्प के साथ प्रतिज्ञा–पालन, उसके परिणाम रूप में वन–गमन एवं अनेक क्लेश एवं कष्ट का स्थितप्रज्ञ भाव से सामना करना, इसी अनुक्रम में पृथ्वी के भार को उतारने का संकल्प, पत्नी के प्रति अद्भुत प्रीति का और अपनी प्रजा के पोषण का चरित्र है।

उन्होंने प्रजा के लिए अपने अत्यन्त सुखमय जीवन को भी दुःखमय बना लिया। उत्तर रामचरित में वे कहते हैं–

स्नेहं दयां च मैत्रों च अथवा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।

मैं लोगों की प्रसन्नता के लिए, आनन्द के लिए अपना स्नेह छोड़ सकता हूँ, अपनी दया छोड़ सकता हूँ, सुख छोड़ सकता हूँ, यहाँ तक कि अपनी प्राणों से प्रिय पत्नी जानकी को भी त्याग सकता हूँ। ऐसा करने में मुझे जरा भी व्यथा नहीं होगी।

इसी से श्रीमद्भागवत में कहा गया,

'उपासितलोकाय उपशिक्षितात्मने'

अर्थात् भगवान् श्रीरामचन्द्र का यह विशेषण है कि उन्होंने मन को तो शिक्षा दी, लेकिन दूसरों को शिक्षा नहीं दी। 'उपासितलोकाय का अर्थ है कि 'उपासितो लोको येन' अर्थात भगवान् श्री रामचंद्र ने किसी ईश्वर की, ब्रह्म की अथवा अपनी उपासना नहीं की, केवल प्रजा की उपासना की। इसीलिए भगवान् श्रीराम वन में गये तथा उन्होंने अनेक प्रकार के कष्ट सहे।

यहां पर एक स्पष्टीकरण और आवश्यक है। लोक की उपासना में रामभद्र सरकार ने प्रत्येक मानवीय सीमा का उल्लंघन किया अर्थात लोक निंदा के स्वर सुनते ही उन्होंने अपनी पत्नी भगवती सीता का भी परित्याग किया, किंतु इस बात को समझने की आवश्यकता है। इस परित्याग को करने के पीछे अपनी पत्नी की प्रतिष्ठा को असंदिग्ध रूप से स्थापित करना है। जैसे की अग्नि की ज्वाला में स्वर्ण तप करके और चमकदार हो जाता है।

इस परित्याग के उपरांत तापस वेश धारण करके भगवती सीता वाल्मीकि महर्षि के आश्रम में रहती हैं तथा लव और कुश जैसे तेजस्वी पुत्रों को जन्म देती हैं। जिनके गायन से ही रामायण का प्रचार प्रसार संपन्न हुआ तथा कालांतर में श्री रामभद्र के साथ मिलन की घड़ी में भगवती सीता का स्वरूप, उनका चरित्र और उनकी प्रतिष्ठा इस प्रकार से स्थापित हुई जिसकी कोई तुलना करना संभव नहीं है। किंतु इसको समझने के लिए विशाल एवं उदार हृदय का होना अत्यंत अनिवार्य है।

एक बार जानकीजी ने भगवान् राम से कहा कि अब आप दण्डक आ गये हैं। यहाँ बड़े–बड़े राक्षस विचरते हैं। यदि वे आपके हाथों में बाण आदि अस्त्र–शस्त्र देखेंगे तो आपको क्षत्रिय समझकर आप पर आक्रमण करेंगे। उससे व्यर्थ ही शांति भंग होगी। इस पर श्री राम ने कहा कि मैं किसी भी स्थिति में सब कुछ परित्याग कर सकता हूं किंतु मैं अपनी प्रतिज्ञा का परित्याग नहीं कर सकता।

ऋषियों का कष्ट देखकर तथा सहज वनवासियों का शोषण तथा उन पर होने वाले अत्याचारों को देखते हुए श्री राम ने धरती को राक्षसों से रहित करने की प्रतिज्ञा की थी।

'रामो द्विर्नाभिभाषते, रामो विग्रहवान् धर्मः।।'

श्री रामभद्र सरकार के वन गमन के पीछे का एक स्पष्ट उद्देश्य था जनजातीय समुदायों, वनवासियों तथा उपेक्षित समूहों को एकत्र कर उनका सशक्तीकरण संपन्न करना तथा उनके भीतर आत्मविश्वास को उत्पन्न करके लंका के राज्य शासन के द्वारा आर्यावर्त में जो विध्वंसात्मक गतिविधियां गतिशील थीं उनको समाप्त करना था। सीता जी का अपहरण इस उद्देश्य की प्रक्रिया में मात्र तीव्रता उत्पन्न करता है।

आजकल जो सर्व समावेशीकरण या इंक्लूजिवनेस (Inclusiveness) की चर्चा बहुत होती है। वह श्री राम के चरित्र के प्रत्येक संदर्भ में प्रकाशवान है।

अपने वनवास के समय में समाज का कौन सा वर्ग है जिसको उन्होंने अपने उदार हृदय के साथ स्वीकार न किया

हो या अपने हृदय में स्थान प्रदान न किया हो? वनवासी, गिरि कंधराओं में निवास करने वाले आदिम प्राणी, यहां तक की वानर भालू सुग्रीव, जामवंत आदि तथा राक्षसों के वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले विभीषण तक को उन्होंने अपनी शरणागति प्रदान की।

वन में भी उन्होंने स्वयं को अयोध्या के साम्राज्य के प्रतिनिधि के रूप में ही माना तथा वहां पर नैतिक नियमों के अनुपालन हेतु अनुशास्ति को प्रभावी किया।

अपने दायित्वों का बिना थके हुए सतत निर्वहन करना आध्यात्मिक होने तथा आध्यात्मिकता से अनुप्राणित होने का स्पष्ट संकेत है।

राघवेन्द्र सरकार के व्यक्तित्व का एक–एक अंश आध्यात्मिक मूल्यों के विविध संदर्भों को उद्घाटित करता है।

श्री राम के विवाह पूर्व की एक महत्वपूर्ण घटना अहिल्या उद्धार है। तुलसीदास जी ने इसको अपने भक्ति परक दृष्टिकोण के साथ व्याख्या प्रदान की है। वाल्मीकि रामायण में इसका अधिक विषद और स्पष्ट वर्णन प्राप्त होता है।

अहिल्या ब्रह्मा की सृष्टि है। पति है महर्षि गौतम जो अपनी तपस्या एवं साधना में रत रहते हैं। इंद्र के द्वारा दिए गए विषय परक प्रलोभन से अहिल्या दुष्प्रभावित होती हैं तथा कालांतर में इंद्र से प्रार्थना करती हैं कि वह शीघ्र ही यहां से चले जाएं अन्यथा महर्षि गौतम के क्रोध का उनको भागी बनना पड़ेगा। किंतु महर्षि गौतम इंद्र को देख लेते हैं और उसको श्राप देते हैं।

"इह वर्ष–सहस्राणि बहूनि निवसिष्यसि। वातभक्षा निराहारा तप्यंती भस्मशायिनी। अदृश्या सर्वभूतानां आश्रमेऽस्मिन् वसिष्यसि''

इसके अतिरिक्त वह अहिल्या को भी यह शाप देते हैं कि जिस अपरूप सौंदर्य के अहंकार में इस प्रकार का विचलन संपन्न हुआ है। वह सौंदर्य भस्म में आच्छादित अग्नि के समान परिलक्षित नहीं होगा तथा सहस्त्रों वर्षों तक बिना कुछ खाए पिए अपने वायवीय स्वरूप में वायु का सेवन करते हुए भस्म से आच्छादित होकर पड़ी रहोगी एवं किसी को तुम्हारा दर्शन प्राप्त नहीं होगा तथा कालांतर में जब इस मार्ग से होकर श्री रामचंद्र का गमन संपन्न होगा। तब उनके दर्शन मात्र से तुम्हें अपना पूर्व पूर्ण स्वरूप प्राप्त हो जाएगा।

विचार योग्य है नैतिक मूल्यों से पूर्णतः अनुप्राणित श्री राम किसी प्रतिष्ठित महिला के शरीर से अपने चरणों का स्पर्श कैसे कर सकते थे ? श्री राम के दर्शन के उपरांत अहिल्या के स्वस्थ स्वरूप प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने स्वयं उनकी चरण वंदना की। इस संसार के आधे भाग का प्रतिनिधित्व करने वाली नारी के प्रति भगवान श्री रामचंद्र जी महाराज का दृष्टिकोण चित् को अत्यंत संतुष्टि एवं प्रेरणा प्रदान करता है।

श्री राम ने बिना कुछ कहे हुए अपने आचरण से वह प्रतिमान स्थापित किए हैं कि उनकी प्राप्ति के लिए बहुसंख्य लोग सतत प्रयास करते रहते हैं।

दुर्जनः सज्जनो भूयात्
सज्जनः
शान्तिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यः
मुक्तस्त्वन्यान्
विमोचयेत्।।

हमारे शास्त्रों का उद्घोष है कि जो दुर्जन प्राणी है उनमें सज्जनता का प्रवेश हो और जो सज्जन हो चुके हैं, वह शांति लाभ करें और इस प्रक्रिया के उपरांत वह अपने बंधन से से मुक्त हो जाएं। किंतु जंगल में जाकर के तपस्या प्रारंभ न करें अपितु यह मुक्त प्राणी औरों की मुक्ति के लिए प्रयासरत हो जाएं।

राघवेन्द्र सरकार के व्यक्तित्व में जनसाधारण के बंधनों से उन्हें मुक्त करने की छटपटाहट दिखाई देती है। ऋषियों के साथ उनके संवाद से लेकर शबरी के साथ उनके संवाद तक। इसके अतिरिक्त बाली के जीवन के अंतिम चरण में उसको उनके द्वारा प्रदान किया गया प्रबोध बाली को उसके

यहां पर एक स्पष्टीकरण और आवश्यक है। लोक की उपासना में रामभद्र सरकार ने प्रत्येक मानवीय सीमा का उल्लंघन किया अर्थात लोक निंदा के स्वर सुनते ही उन्होंने अपनी पत्नी भगवती सीता का भी परित्याग किया, किंतु इस बात को समझने की आवश्यकता है। इस परित्याग को करने के पीछे अपनी पत्नी की प्रतिष्ठा को असंदिग्ध रूप से स्थापित करना है। जैसे की अग्नि की ज्वाला में स्वर्ण तप करके और चमकदार हो जाता है।

समस्त बंधनों से मुक्त कर देता है। अपने आश्रित का संरक्षण उनका परम धर्म है।

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम।।

(वाल्मीकीय रामायण युद्धकाण्ड 18.33)

अर्थात जो एक बार भी शरण में आकर, मैं तुम्हारा हूं, यह कहकर मुझसे अपनी रक्षा की कामना एवं प्रार्थना करता है, उसे मैं समस्त संदर्भों से अभय प्रदान कर देता हूं। यह मेरा सदैव निरंतरता में बना रहने वाला व्रत है।

जिस समय विभीषण ने श्री राम की शरणागति हेतु प्रार्थना की कि हे रामभद्र समस्त प्राणियों को शरण प्रदान करने वाले स्वरूप है अतः मैंने आपकी शरण ली है। अपना समस्त संसाधन, धन, मित्र एवं यहां तक की कि लंका को भी छोड़कर आया हूं।

भवन्तं सर्वभूतानां शरण्यं शरणं गतः।
परित्यक्ता मया लङ्का मित्राणि च धनानि च।

जब समस्त वानर सेनापतियों के साथ विभीषण की शरणागति पर चर्चा होती है तब श्री राम कहते हैं सुग्रीव से कि यदि स्वयं रावण का आगमन संपन्न हुआ हो तब भी मुझे लौटकर आकर पूछने की आवश्यकता नहीं है उसको ले आओ। चाहे रावण हो चाहे विभीषण, जो भी आया है उसका स्वीकार है, क्योंकि मेरे लिए दोष युक्त शरणागत को ग्रहण करना ही आभूषण है।

आनयैनं हरिश्रेष्ठ दत्तमस्याभयं मया।
विभीषणो वा सुग्रीव यदि वा रावणः स्वयम्।।

(वाल्मीकि रामायणं)

किसी भी सामर्थ्यवान के भीतर वैराग्य से आपूरित आध्यात्मिकता का इससे सुंदर और ज्वलंत उदाहरण और क्या हो सकता है ? देवताओं के लिए भी दुर्लभ अयोध्या का राज्य परित्याग कर दिया। किष्किंधा का राज्य सुग्रीव को प्रदान किया। लंका की राज्यश्री, जिसको प्राप्त करने के लिए रावण ने कितने प्रयास किये, श्री रामभद्र सरकार ने उसे युद्ध क्षेत्र में तिलक करके विभीषण को सहज ही प्रदान कर दिया।

श्री रामभद्र सरकार के वन गमन के पीछे का एक स्पष्ट उद्देश्य था जनजातीय समुदायों, वनवासियों तथा उपेक्षित समूहों को एकत्र कर उनका सशक्तीकरण संपन्न करना तथा उनके भीतर आत्मविश्वास को उत्पन्न करके लंका के राज्य शासन के द्वारा आर्यावर्त में जो विध्वंसात्मक गतिविधियां गतिशील थीं उनको समाप्त करना था। सीता जी का अपहरण इस उद्देश्य की प्रक्रिया में मात्र तीव्रता उत्पन्न करता है।

सत्यनिष्ठा से युक्त राम यह प्रतिज्ञा करते हैं—

अहं हत्वा दशग्रीवं सप्रहस्तं सहात्मजम्।
राजानं त्वां करिष्यामि सत्यमेतच्छृणोतु मे।।

(मेरी प्रतिज्ञा है कि मैं तुम्हारे भाई रावण का, सेनापति प्रहस्त का तथा रावण के पुत्र इंद्रजीत का नाश करके तुमको लंका का राजा बना दूंगा। यह मेरा सत्य वचन है—

संपर्क और संवाद की अत्यंत लघु अवधि में ही इतनी दुष्कर प्रतिज्ञा कर लेना रामभद्र सरकार के अतिरिक्त किसी अन्य की सामर्थ्य हो ही नहीं सकती। इसके अतिरिक्त दुर्जन के संहार एवं सज्जन की प्रतिष्ठा का उनका संकल्प भी परिलक्षित होता है। उनके द्वारा दिए जाने वाले दान और वैराग्य की सीमा ही नहीं नापी जा सकती।

लोकक्षयकर—भीमं—भयं—पश्याम्युपस्थितम्।
प्रबर्हणं प्रवीराणमृक्षवानर—रक्षसाम्

जब श्री राम लंका के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं तब उन्हें भगवती सीता की चिंता होनी चाहिए थी, किंतु उन्हें चिंता होती है भगवती की सुरक्षा और उनकी स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने वाले ऋक्ष एवं बंदरों की स इतना ही नहीं उन्हें निरपराध राक्षस शूरवीरों के भी नरसंहार की चिंता होती है। यह श्री राम के मानवीय भाव को स्पष्ट करता है तथा शास्त्र स्पष्ट करते हैं आध्यात्मिकता का मूल आधार मानवीय भावों की सुप्रतिष्ठा ही है।

श्री रामभद्र सरकार का वन गमन तो वंचितों एवं शोषण का सामना कर रहे साधनहीन लोगों को न्याय प्रदान करने तथा सहज भाव से जीवन यापन करने की परिस्थितियों को सुनिश्चित करने का निमित्त मात्र था।

समस्त संसार भले कैकेई को दोषी माने किंतु

श्री रामभद्र ने कभी भी ना उनकी निंदा की और न ही अपने सामने किसी को करने दी।

वास्तविकता भी यही है वनवास की प्रक्रिया ने श्री राम को महा मानव होने की सीमा को पार करके ईश्वरत्व की श्रेणी में सुप्रतिष्ठ किया। जिस प्रकार से अग्नि में तपकर स्वर्ण अधिक मूल्यवान और शुभ्र हो जाता है उसी प्रकार से क्रमशः बालक से युवा हुए श्री राम ईश्वरत्व को प्राप्त करते हैं। इस स्थिति में उनका अद्‌भुत व्यक्तित्व उद्‌घाटित होता है।

श्री रामभद्र सरकार अपनी भक्ति करने वालों तथा स्मरण करने वालों वाले अपने समर्पित भक्तों के हृदय में अपने वह चरण स्थापित करके अपने ज्योतिर्मय धाम में प्रविष्ट हो गए जो चरण दंडक वन के कांटों से बिंध कर रक्तरंजित हो गए थे।

श्री कृष्ण के अद्‌भुत चरित्र का वर्णन करने वाली तथा समग्र रूप से समस्त शास्त्रों का सार श्रीमद् भागवत में श्री रामभद्र सरकार के विषय में अद्‌भुत विवेचन है।

इसीलिए कहा जाता है किसी को भी अपने इष्ट की किसी दूसरे इष्ट के साथ तुलना नहीं करनी चाहिए अपितु अपने भाव में विभोर होकर अपने ही इष्ट का सर्वत्र दर्शन करना चाहिए।

यहां यह प्रश्न उठता है कि महामुनींद्र शुकदेव जी महाराज ने दंडक वन के कांटों से रक्तरंजित हुए ठाकुर के चरण कमल को भक्तों के हृदय में क्यों स्थापित करवाया ? भगवती सीता की शैय्या पर आसीन सुंदर चरण भी तो स्थापित कराए जा सकते थे।

किंतु भारतीय अस्मिता, संस्कृति तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए यह करना आवश्यक था।

भक्तों को यह सदैव स्मरण रखना होगा धर्म की, नीति की, संबंधों की स्थापना के लिए भगवान ने वन में भटकना स्वीकार किया। अतः हम भी इस भाव से प्रेरित होकर धर्म की रक्षा के लिए, समाज की रक्षा के लिए, सनातन की रक्षा के लिए अपना उत्सर्ग कर देंगे। इस भाव की निरंतरता बनी रहेगी।

स्मरतां हृदि विन्यस्य विद्धं दण्डककण्टकैः।
स्वपादपल्लवं राम आत्मज्योतिरगात् ततः।।

(भागवत 9.11.19)

।। हरि अनंत हरि कथा अनंता।।

राघवेंद्र सरकार के विषय में जितना भी कहा जाए उतना ही कम है या यूं कहें कि मानव की सीमा एवं सामर्थ्य से परे का विषय है। श्री रामभद्र के चरणों में प्रणिपात पूर्वक प्रणाम करता हुआ मैं अपनी चिंतन धारा को विश्राम प्रदान करता हूं।

।। शुभम भवतु कल्याणम।।

◆

मो. : 9415308509
(लेखक श्रीमद्‌भागवत् के प्रखर वक्ता हैं)

अयोध्या और सरयू

—डॉ. पवनपुत्र बादल

बन्दउँ अवधपुरी अति पावन।
सरयू सरि कलि कलुष नशावनि।।

पुराणों एवं प्राचीन ग्रन्थों में उल्लिखित कथाओं में अयोध्या को भारत के पवित्र नगरों में एक माना गया है—

अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काञ्चि, अवंतिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैताः मोक्षदायिकाः।।

अयोध्या का सर्वप्रथम उल्लेख 'अथर्ववेद' में मिलता है। अयोध्या ही वह नगरी है, जिसे वैदिक ग्रन्थों में नाम से सम्बोधित किया गया है। कहते हैं कि अयोध्या की स्थापना महाराज मनु ने की थी जो हजारों वर्षों तक सूर्यवंशी/इक्ष्वाकुवंशी/रघुवंशी राजाओं की राजधानी रही। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम का अवतरण इसी वंश में महाराजा दशरथ के घर हुआ। पारम्परिक इतिहास में अयोध्या कोशल राज्य की प्रारम्भिक राजधानी थी। गौतम बुद्ध के समय कोशल के दो भाग हो गये— उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल, जिनके बीच सरयू नदी प्रवाहमान हो रही थी। यह भी बताना यहाँ समीचीन होगा कि बौद्धकाल में अयोध्या के निकट एक नयी बस्ती बस गयी थी, जिसका नाम साकेत था। बौद्ध साहित्य में साकेत और अयोध्या दोनों का नाम साथ-साथ मिलता है। अयोध्या व साकेत को कई विद्वानों ने एक ही माना है। कालिदास रचित 'रघुवंश' में दोनों नगरों को एक ही माना गया है, जिसका समर्थन जैन साहित्य में भी मिलता है। परन्तु कतिपय विद्वान् इन्हें अलग-अलग मानते हैं। 'वाल्मीकि रामायण' में अयोध्या को कोशल की राजधानी बताया गया है जिसके बाद अयोध्या को संस्कृत ग्रन्थों में साकेत से मिला दिया गया। भगवान् राम के अवतार के बाद अयोध्या का माहात्म्य और अधिक बढ़ गया और यह नगरी सम्पूर्ण विश्व में हिन्दुओं के प्रथम तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित हो गयी।

अयोध्या न केवल हिन्दुओं अपितु हिन्दू धर्म के अनेक पंथों की भी स्थली रही है। आज भी अयोध्या में जैन, बौद्ध, सिख पन्थों के आराधनास्थल इसकी गवाही देते हैं। कहते हैं गुरु नानकदेव अपनी तीर्थयात्रा के क्रम में अयोध्या पधारे थे। पवित्र सरयू में स्नान करने के उपरान्त उन्होंने अपने शिष्यों सहित भगवान् राम के बाल-विग्रह के दर्शन किये थे। गुरु

अयोध्या न केवल हिन्दुओं अपितु हिन्दू धर्म के अनेक पंथों की भी स्थली रही है। आज भी अयोध्या में जैन, बौद्ध, सिख पन्थों के आराधनास्थल इसकी गवाही देते हैं। कहते हैं गुरु नानकदेव अपनी तीर्थयात्रा के क्रम में अयोध्या पधारे थे। पवित्र सरयू में स्नान करने के उपरान्त उन्होंने अपने शिष्यों सहित भगवान् राम के बाल–विग्रह के दर्शन किये थे। गुरु नानकदेव का अयोध्या प्रवास कई दिनों तक रहा। गुरु तेगबहादुर जी ने भी अयोध्या आकर रामलला के दर्शन कर जन्मभूमि को मुगलों के अतिक्रमण से मुक्त कराने का प्रयास किया था। गुरु गोविन्द सिंह महाराज भी जब पटना से लौट रहे थे, तो अयोध्या में रुके थे। बाद में गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने निहंगों की एक सेना जन्मभूमि को मुगलों से मुक्त कराने हेतु भेजी थी।

नानकदेव का अयोध्या प्रवास कई दिनों तक रहा। गुरु तेगबहादुर जी ने भी अयोध्या आकर रामलला के दर्शन कर जन्मभूमि को मुगलों के अतिक्रमण से मुक्त कराने का प्रयास किया था। गुरु गोविन्द सिंह महाराज भी जब पटना से लौट रहे थे, तो अयोध्या में रुके थे। बाद में गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने निहंगों की एक सेना जन्मभूमि को मुगलों से मुक्त कराने हेतु भेजी थी। जो सभी वीरगति को प्राप्त हो गये थे। उक्त गुरुओं एवं बलिदानी निहंगों की स्मृति में अयोध्या में दो गुरुद्वारों का निर्माण कराया गया, जिसमें गुरुजी व निहंगों के अस्त्र–शस्त्र आज भी सँभाल कर रखे गये हैं।

पाँच जैन तीर्थंकरों की जन्मस्थली भी अयोध्या रही है। आदिनाथ (ऋषभदेव), अजितनाथ, अभिनंदनाथ, सुमतिनाथ एवं अनंतनाथ का जन्म अयोध्या में ही हुआ था। इनकी स्मृति में पाँच जैन मंदिरों का निर्माण भी कराया गया था। दिगम्बर जैन मंदिर प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी को समर्पित है जिसे आदिनाथ, पुरदेव वृषभदेव एवं आदिब्रह्म मंदिर आदि नामों से भी जाना जाता है। वर्तमान में यह बड़ी मूर्ति के रूप में प्रसिद्ध है, जो अयोध्या के रायगंज में स्थित है, जहाँ ऋषभदेव जी की 31 फीट ऊँची प्रतिमा स्थापित है। यहाँ विभिन्न तीर्थंकरों से सम्बन्धित 18 कल्याणक घटित हुए। ध्यातव्य है कि जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों में से 22 तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंश के थे।

अयोध्या नाथ योगियों का भी केन्द्र में रही है। नाथ सम्प्रदाय के अनेक योगी अयोध्या आकर साधना करते रहे हैं। गोरक्ष पीठाधीश्वर महंत दिग्विजयनाथ, महंत अवैद्यनाथ एवं वर्त्तमान पीठाधीश योगी आदित्यनाथ का राम जन्मभूमि के संघर्ष में दिये गये योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। इसी प्रकार अयोध्या नगरी में भगवान् शिव एवं दुर्गा जी के शक्तिपीठ होने का अर्थ यह है कि यह नगरी शैव एवं शाक्त मतावलम्बियों के लिए भी महत्त्वपूर्ण रही है।

सभी पंथ एवं मतों के ग्रन्थों में भगवान् राम एवं अयोध्या का वर्णन अवश्य ही देखने को मिलता है। 'गुरु ग्रन्थ साहिब' में राम एवं हरि के पद हजारों में हैं। एक स्थान पर गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी है–

राम एक दशरथ का बेटा,
एक राम घट–घट में लेटा।
एक राम का सगल पसारा,
एक राम इन सबसे न्यारा।।

आज भी अयोध्या में अनेक प्राचीन मन्दिर एवं ऐतिहासिक स्थल हैं। अनेक घाट आज भी भगवान् राम का स्मरण कराते हैं जैसे– रामघाट, लक्ष्मणघाट, गुप्तारघाट

(जहाँ भगवान् राम ने जलसमाधि ली थी), राम की पैड़ी, नयाघाट, आदि। इन ऐतिहासिक स्थलों एवं मंदिरों को आज भी अयोध्या में देखा जा सकता है। भगवान् रामचन्द्र जी के राज्याभिषेक के बाद पवनपुत्र हनुमान् जी नगर की रक्षा करने के लिए अयोध्या के एक सिरे पर ऊँची पहाड़ी पर विराजमान् हुए। उस स्थान को आज हनुमानगढ़ी कहते हैं, जो लगभग 52 बीघा में विस्तार लिए हुए है। कहते हैं कि मुगल आक्रान्ता बाबर के सेनापति मीर बॉकी ने राम जन्मभूमि मंदिर को ध्वस्त कर मस्जि़द बना दी थी। लेकिन हनुमान् गढ़ी पर कभी भी कोई आक्रान्ता कब्जा करने में सफल नहीं हो पाया था। हनुमानगढ़ी के महंत, साधुओं का सतत संघर्ष, उनका बलिदान हमेशा अयोध्या के इतिहास में अविस्मरणीय है। अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों में कनक भवन, छोटी छावनी, बड़ी छावनी, सीतारसोई, दशरथ महल, कोपभवन आदि रहे, जिसमें से कतिपय ध्वस्त हो गये। कुछ भवन आज भी अपनी अलौकिक शोभा से भक्तों को आकर्षित करते हैं।

अयोध्या एवं सरयू का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। सरयू के बिना अयोध्या का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया जा सकता। सरयू के उद्‌गम के बारे में वाल्मीकि रामायण के 24वें सर्ग में संक्षिप्त वर्णन किया गया है। सरयू महिमा का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी ने लंकाकाण्ड के अन्त में श्रीराम जी के मुखारबिंद से अपने सखाओं व अयोध्या नगरी एवं सरयू के बारे में कहलवाया है–

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि।
उत्तर दिशि बह सरजू पावनि।।
जा मज्जन तें बिनहिं प्रयासा।
मम समीप नर पावहिं बासा।।

पौराणिक कथाओं के अनुसार सरयू, काली, घाघरा व शारदा नदियों का संगम तो हुआ ही है, सरयू और गंगा का संगम श्रीराम के पूर्वज राजा भगीरथ ने करवाया था। गंगा एवं सरयू का संगम छपरा से कुछ मील पहले रिवेलगंज नामक स्थान पर होता है। पुराणों में वर्णित है कि सरयू भगवान् विष्णु के नेत्रों से प्रकट हुई है। आनन्द रामायण के यात्र काण्ड एवं मत्स्य पुराण में उल्लेख है कि प्राचीनकाल में हयग्रीव नामक दैत्य ने वेदों को चुराकर समुद्र में डाल दिया और स्वयं भी वहाँ छिप गया। तब भगवान् विष्णु ने मत्स्य रूप धारण कर दैत्य का वध किया और वेदों को ब्रह्मा जी को सौंप दिया। उस समय हर्ष के कारण भगवान् विष्णु के नेत्रों से प्रेमाश्रु निकल पड़े, जिन्हें ब्रह्मा जी ने मानसरोवर में डालकर सुरक्षित कर लिया। बाद में इस जल को महापराक्रमी वैवस्वत मनु महाराज ने अपने बाण के प्रहार से मानसरोवर से बाहर निकाला। यही जलधारा सरयू कहलायी। बाद में जब राजा भगीरथ गंगा को पृथ्वी पर लाये, तो उन्होंने गंगा एवं सरयू का संगम करवाया।

गोस्वामी जी की इस चौपायी में सरयू को अयोध्या का प्रमुख प्रतीक बताया गया है। अयोध्या उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के दायें तट पर स्थित है। कहा जाता है कि हिमालय के कैलाश मानसरोवर से लोकपावन सरयू की धारा निकली है, जो अयोध्यापुरी से सटकर बहती है। वामन पुराण के 13वें अध्याय, ब्रह्मपुराण के 19वें अध्याय और वायु पुराण के 45वें अध्याय में गंगा, यमुना, गोमती, सरयू और सरस्वती आदि नदियों का हिमालय से प्रवाहित होना बताया गया है। सरयू नदी का प्रवाह कैलाश मानसरोवर से कब बंद हुआ, इसका विवरण तो नहीं मिलता; किन्तु सरस्वती एवं गोमती की भाँति इस नदी में भी प्रवाह भौगोलिक कारणों से बन्द होना माना जा रहा है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार सरयू, काली, घाघरा व शारदा नदियों का संगम तो हुआ ही है, सरयू और गंगा का संगम श्रीराम के पूर्वज राजा भगीरथ ने करवाया था। गंगा एवं सरयू का संगम छपरा से कुछ मील पहले रिवेलगंज नामक स्थान पर होता है। पुराणों में वर्णित है कि सरयू भगवान् विष्णु के नेत्रों से प्रकट हुई हैं। आनन्द रामायण के यात्र काण्ड एवं मत्स्य पुराण में उल्लेख है कि प्राचीनकाल में हयग्रीव नामक दैत्य ने वेदों को चुराकर समुद्र में डाल दिया और स्वयं भी वहाँ छिप गया। तब भगवान् विष्णु ने मत्स्य रूप धारण कर दैत्य का वध किया और वेदों को ब्रह्मा जी को सौंप दिया। उस समय हर्ष के कारण भगवान् विष्णु के नेत्रों से प्रेमाश्रु निकल पड़े, जिन्हें ब्रह्मा जी ने मानसरोवर में डालकर सुरक्षित कर लिया। बाद में इस जल को महापराक्रमी वैवस्वत मनु महाराज ने अपने बाण के प्रहार से मानसरोवर से बाहर निकाला। यही जलधारा सरयू कहलायी। बाद में जब राजा

भगीरथ गंगा को पृथ्वी पर लाये, तो उन्होंने गंगा एवं सरयू का संगम करवाया।

वास्तव में सृष्टिविषयक पंचतत्व में जल तत्त्व भी एक स्रोत है, जिसकी सार्वभौमिक उपलब्धता सरिता पर ही निर्भर रहती है। इसी कारण भारतीय संस्कृति में नदियों के जल को पवित्र माना गया है एवं नदियों की पूजा अर्चना की जाती है। आध्यात्मिक रूप से नदियाँ ऋषियों, मुनियों अथवा देवताओं से सुसम्बद्ध होकर अवतरित हुई हैं। सरयू नदी के अवतरण की एक कथा और प्रचलित है– अयोध्या के सूर्यवंशी नृप ने स्नान ध्यान हेतु गुरु वशिष्ठ से नदी की याचना की। तब ऋषि वशिष्ठ ने ब्रह्मा जी से विनती कर अयोध्या के उत्तर की ओर सरयू का आगमन करवाया। जैसा कि पहले बताया गया है कि सरयू का उद्‌गम शान्त मानसरोवर से हुआ है, इसीलिए सरयू को भी शान्त नदी कहा गया है। बहराइच जिले के कटकाधाम में सरयू की धारा इतनी निर्मल है कि तलहटी में पड़ी हुई वस्तु स्पष्ट देखी जा सकती है। आगे चलकर जब सरयू में घाघरा नदी मिलती है, तो जल की पारदर्शिता विलीन होने लगती है। यहीं से नदी का पाट विशाल हो जाता है। यह नदी गंगा से संगम करते हुए अन्त में समुद्र में विलीन हो जाती है।

आइये अब हम सरयू के उद्‌गम स्थल के बारे में चर्चा करते हैं। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि पौराणिक संदर्भानुसार यह नदी मानसरोवर से निःसृत है; किन्तु वर्त्तमान में इस नदी की मुख्य तीन धाराएँ हैं, जिनमें अन्य कई उपधाराएँ भी बीच–बीच में मिलती हैं। पहली धारा मानसरोवर के पास स्थित ग्लेशियर से निकलती है, जिसे काली नदी कहा जाता है। उत्तराखण्ड के कुमायूँ अंचल में गीत गाया जाता है–

काली गंगा को कालो पानी,
कैलो कैलो, छैलो छैलो।

दूसरी धारा वागेश्वर जिले के कपकोट से 56 कि.मी. दूर सरमूल नामक स्थान से निकलती है, जिसे सौधारा, सहस्रधारा और सरयू कहा जाता है। सरमूल में बैशाख पूर्णिमा को मेला लगता है। यहाँ अब अनेक धर्मशालाएँ एवं

मंदिर भी बन गये हैं। मुख्य मन्दिर सरयू माता का है। जहाँ से उत्तुंग हिमालय के बर्फाच्छादित शिखरों का दर्शन होता है। रूपकोट से आगे चलने पर सूती या पतियासार गाँव से 12 कि.मी. की दूरी पर ऋषि भारद्वाज की तपस्थली भद्रतुंगा है, जहाँ भद्रतुंगा मन्दिर आज भी अवस्थित है। यही से 6 कि.मी. आगे सरमूल है। पौराणिक एवं सांस्कृतिक पर्यटक स्थल सहस्रधारा/सरमूल बाँस, देवदारु, चीड़ आदि के वृक्षों से आच्छादित हैं, जहाँ पहाड़ों के बीच खड़ी पहाड़ियों से शताधिक जलधाराएँ झरनों के रूप में निःसृत होती हैं एवं आगे एक नदी के रूप में प्रवाहित हो रही है, यह जलधारा पावन सरयू है। सरयू एवं काली नदी का संगम पंचेश्वर के पास होता है।

तीसरी धारा दक्षिणी तिब्बत के पठारों से निकलती है। यह स्थान मापचोचुंगो ग्लेशियर कहा जाता है। यह घाघरा नदी का उद्‌गम स्थल है। घाघरा नदी नेपाल से बहती हुई आगे बढ़ती है। नेपाल में इसे करनाली नदी कहा जाता है। यह घाघरा अयोध्या से पूर्व बहराइच जिले में सरयू से मिलती है, जिसे आगे सरयू ही कहा जाता है। अयोध्या के बाद इसे फिर घाघरा कहा जाता है। ज्यादातर ब्रिटिश मानचित्रकार इस पूरे मार्ग को घाघरा नाम से ही सम्बोधित करते हैं; किन्तु परम्परा में और स्थानीय लोगों द्वारा इसे सरयू ही कहा जाता है, जिसके सम्बन्ध में रामचरितमानस के बालकाण्ड में कहा गया है—

मज्जहिं सज्जनबृंद बहु, पावन सरजू नीर।
जपहिं राम धर ध्यान उर, सुंदर स्याम सरीर।।
दरस, परस, मज्जन अरु पाना।
हरइ पाप कह वेद पुराना।।
नदी पुनीत अमित महिमा अति।
कहि न सकइ सारदा बिमल मति।।
रामधामदा पुरी सुहावनि।
लोक समस्त बिदित अति पावनि।।

ऐसी पावन सरयू के माहात्म्य को अनेक प्रसंगों द्वारा समझा जा सकता है। सरयू स्नान का हिन्दू संस्कृति में अत्यधिक महत्त्व है। भगवान् राम स्वयं कहते हैं—

अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ।
यह प्रसंग जाने कोऊ कोऊ।।

यह प्रसंग जाने कोऊ—कोऊ में एक जनश्रुति छिपी है। कहते हैं कि एक बार वीरवर लक्ष्मण जी ने तीर्थयात्रा पर जाने का विचार करते हुए भगवान् राम से आज्ञा माँगी। भगवान् राम ने गुरु वशिष्ठ जी से मुहूर्त निर्धारित करने हेतु प्रार्थना की। वसिष्ठ जी ने श्रावण मास शुक्लपक्ष पंचमी तिथि को ब्रह्ममुहूर्त से सूर्योदय तक मुहूर्त प्रस्थान हेतु शुभ बताया। लक्ष्मण जी ने सायंकाल से ही अपनी यात्रा की तैयारी पूर्ण

कर ली। ब्रह्ममुहूर्त से पूर्व ही जाग जाने के कारण सोचा सरयू में स्नान कर ब्रह्ममुहूर्त में ही यात्रा के प्रस्थान हेतु आज्ञा ली जाये। लक्ष्मण जी जब सरयू किनारे पहुँचे तो वहाँ एक दिव्य प्रकाश फैला हुआ था और उस समय प्रकाश में हजारों लोग स्नान कर रहे थे। कुछ दूरी पर स्त्रियाँ अलग घाट पर स्नान करती हुई दिखायी दे रही थीं। लक्ष्मण जी कुछ नहीं बोले, स्नान कर वापस घर आये और भगवान् राम से इस कौतूहल के बारे में पूछा, तो राम जी ने कहा कि आपने उनसे पूछा नहीं कि वे कौन हैं, तो लक्ष्मण जी ने उत्तर दिया कि उन्होंने उन्हें अनावश्यक जाँचना/पूँछना उचित नहीं समझा। तब राम जी ने कहा कि कल पुनः उसी समय नदी पर जाना और जानकारी करके आना। आज यात्रा स्थगित रखो। दूसरे दिन लक्ष्मण जी ब्रह्ममुहूर्त से पहले ही वहाँ पहुँच गये। स्नान किया और वहाँ स्नान ध्यान में लीन लोगों में से एक से पूछा कि वे लोग कौन हैं, तो उसने बताया कि हम लोग सम्पूर्ण विश्व के तीर्थस्थल हैं, जो मानव रूप धर कर पावन सरयू में स्नान करने आये हैं और जो वे नारियाँ दूसरे घाट पर स्नान करते हुए दिख रही हैं, वे सभी पवित्र नदियाँ हैं, जो नारियों के वेष में आकर स्नान, ध्यान और पूजा में निमग्न हैं। तभी लक्ष्मण जी ने देखा कि एक श्यामवर्णी विशालकाय मनुष्य नदी में कूदा और जब निकला तो वह गौरवर्ण का दिखने लगा। उस देव ने बताया कि यह तीर्थराज प्रयाग है। सभी देवी–देवता, तीर्थ, नदियाँ आदि मनुष्य रूप धर कर प्रतिदिन अयोध्या आते हैं एवं यहाँ स्नान, ध्यान एवं पूजा करते हैं। लक्ष्मण जी ने घर लौटकर पूरा वृत्तान्त राम जी को बताया। अब उन्हें समझ आ गया था कि सभी तीर्थ, पवित्र नदियाँ, देवी, देवता यहीं सरयू किनारे आते हैं तो तीर्थयात्रा पर जाने का कोई औचित्य नहीं है। अयोध्या दर्शन एवं सरयू स्नान का पुण्य सभी तीर्थों से बढ़कर है। रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में कहा गया है–

उत्तर दिसि सरजू बहे, निर्मल जल गंभीर।
बाँधे घाट मनोहरा, स्वल्प पंक नहिं तीर।।
दूरि फराक, रुचिर सो घाटा।
जहँ जल पिअहिं, बाजि, गज ठाटा।।
पनिघट परम मनोहर नाना।
तहाँ न पुरुष करहिं असनाना।।
राजघाट सब बिधि सुंदर बर।
मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर।।
वीर–तीर देवन्ह के मंदिर।
चहुँदिसि तिन्हके उपवन सुंदर।।
कहुँ–कहुँ सरिता तीर उदासी।
बसहिं ज्ञान रत मुनि संन्यासी।।
तीर–तीर तुलसिका सुहाई।
बृन्द–बृन्द बहु मुनिन्ह लगाई।।

ऐसी परम पावन सरयू के तट पर बसी अयोध्या नगरी लगभग 500 वर्ष तक अपने आराध्य प्रभु रामचन्द्र जी के जन्मस्थान के मंदिर के लिए संघर्षरत रही। अनेक बलिदान दिये गये और अन्त में सफलता प्राप्त कर आज फिर यह नगरी अपने गौरव को प्राप्त करने जा रही है। एक लम्बे संघर्ष की गाथा जन–जन को स्मरण है अतः उसको दोहराना आवश्यक नहीं समझता। प्रभु राम के बाल विग्रह का मंदिर उन्हीं की जन्मभूमि एवं जन्म स्थान पर भव्यरूप में निर्मित होने जा रहा है। यह हमारा सौभाग्य है कि हम सब इस दृश्य को अपने नेत्रों से देख रहे हैं। प्रभु राम की प्रिय नगरी अयोध्या एवं पावन सरयू को बारम्बार प्रणाम करते हुए एक बार पुनः पावन सरयू का स्मरण–

नदी पुनीत सुमानसनंदिनि।
कलि मलि तृन सम मूलनिकंदिनि।।

भगवान् श्रीराम ने अपने शब्दों को इस प्रकार वाल्मीकि रामायण में कहा है–

अपि च स्वर्णमयी लंका न में लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

इसी के साथ राम जन्मभूमि मंदिर के लिए संघर्ष करने वाले एवं बलिदान देने वाले पुण्यात्माओं को कृतज्ञतापूर्वक नमन।

बाबरी मस्ज़िद की कहानी, अब सदा को बन्द होगी।
राम की पूजा अवध में, अब सदा स्वच्छन्द होगी।।
अब निराशा की निशा को, पियेगा विश्वास का रवि।
भव्य मन्दिर बन गया अब, राम की लेकर अतुल छवि।।

◆

मो. : 9450932117

'लोकनायक राम'

–डॉ. सौरभ मालवीय

सनातन धर्म के अनुयायी श्रीराम को भगवान मानते हैं तथा उनकी पूजा–अर्चना करते हैं। वह भगवान विष्णु के अवतार माने जाते हैं, जिन्होंने लंका नरेश रावण एवं अन्य राक्षसों का संहार करके मानव जाति को उनके अत्याचारों से मुक्त करवाने के लिए अयोध्या के राजा दशरथ के यहां राम के रूप में जन्म लिया था।

इसके इतर राम ने स्वयं को एक जननायक के रूप में स्थापित किया। उनका संपूर्ण जीवन इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मर्यादा के नूतन आयाम स्थापित किए। इसीलिए उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है। उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन में कभी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया, इसलिए भी उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है।

'आदर्श पुत्र'

श्रीराम एक आदर्श पुत्र थे। उन्होंने अपने पिता राजा दशरथ के वचन का पालन किया। उन्होंने राजा दशरथ द्वारा अपनी माता पत्नी कैकेयी को दिए वचन को पूर्ण करने के लिए राजपाट त्याग कर चौदह वर्ष का वनवास सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपनी माता के वचन का सहृदय से पालन करके यह सिद्ध कर दिया कि उनके लिए पिता के वचन और माता की प्रसन्नता से बढ़कर कुछ भी नहीं है। उन्होंने वैभवशाली जीवन का त्याग करके वन में जीवन व्यतीत करना उचित समझा। उन्होंने अपने पिता की मनोव्यथा एवं उनकी विवशता को अनुभव किया तथा बिना किसी अन्तर्द्वन्द्व के वनवास जाने का निर्णय ले लिया। यह निर्णय कोई सरल कार्य नहीं था। आज के युग में कोई अपनी एक इंच भूमि भी अपने भाई को नहीं देना चाहता। भूमि और संपत्ति को लेकर भाइयों के मध्य रक्तपात हो जाता है। ऐसे में त्रेता युग में जन्मे श्रीराम परिवार मूल्य बोध के लिए एक आदर्श स्थापित करते हैं।

चित्रकूट में जब भरत व उनके अन्य परिवारजन उन्हें पुनः अयोध्या वापस लौटने को कहते हैं, वह इसे अस्वीकार कर देते हैं। उनकी माता कैकेयी भी उनसे अपने वचनों को वापस लेने की बात कहती हैं, परन्तु वह अपने निर्णय पर अटल रहते हैं तथा उनके कथन को अस्वीकार कर देते हैं। वह अपनी माता से कहते हैं कि आपका वचन पिता से संबंधित था, मुझसे नहीं। मेरा संबंध तो पिता के वचन से है, मैं

उनके वचन की अवज्ञा नहीं कर सकता। मैं अपने पिता के वचन से बंधा हुआ हूं। तभी से यह कहा जा रहा है कि "रघुकुलरीत सदा चली आई, प्राण जाय पर वचन न जाय।"

वास्तव में राजा दशरथ अपने पुत्र से अत्यधिक स्नेह करते थे। पुत्र के वियोग में उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए, परन्तु अपने वचन का पालन किया।

'आदर्श भाई'

श्रीराम एक आदर्श भाई भी थे। उनके लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के प्रति अथाह प्रेम, त्याग एवं समर्पण के कारण उन्हें आदर्श भाई माना जाता है। उन्होंने अपनी माता कैकेयी के आदेश पर अपना राज्य अपने छोटे भाई भरत को सौंप दिया और स्वयं अपनी पत्नी सीता और छोटे भाई लक्ष्मण के साथ वनवास के लिए प्रस्थान कर गए।

रामचरित मानस में भक्त शिरोमणि तुलसीदास कहते हैं–

सजि बन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत।
बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत।।

अर्थात वन के लिए आवश्यक वस्तुओं को साथ लेकर श्रीराम पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण सहित ब्राह्मण एवं गुरु के चरणों की वंदना करके चले गए।

'सद्भाव का संदेश'

श्रीराम ने समाज के प्रत्येक वर्ग को आपस में जोड़कर रखने का संदेश दिया। उन्होंने प्रेम एवं भाईचारे का संदेश दिया। निषादों के राजा निषादराज श्रीराम के अभिन्न मित्र थे। वह ऋृंगवेरपुर के राजा थे। उनका नाम गुह्यराज था। वह श्रीराम के बाल सखा थे। उन्होंने एक ही गुरुकुल में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी। आदिवासी समाज के लोग आज भी निषादराज की पूजा करते हैं। उन्होंने वनवास काल में श्रीराम, सीता एवं लक्ष्मण को गंगा नदी पार करवाई थी।

'संपूर्ण प्राणियों से प्रेम'

श्रीराम मनुष्यों से ही नहीं, अपितु पशु–पक्षियों से भी हृदय से प्रेम करते थे। पशु–पक्षियों ने भी समय–समय पर उनकी सहायता की। इनकी सहायता से ही उन्हें सीता के हरण के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। श्रीराम का गिलहरी से संबंधित एक अत्यंत रोचक प्रसंग है।

जिस समय श्रीराम की सेना रामसेतु के निर्माण के कार्य में व्यस्त थी, उस समय लक्ष्मण ने उन्हें गिलहरी को निहारते हुए देखा। इस बारे में पूछने पर श्रीराम ने बताया कि एक गिलहरी बार–बार समुद्र के तट पर जाती है तथा रेत पर लोटपोट करके रेत को अपने शरीर पर चिपका लेती। जब रेत उसके शरीर पर चिपक जाती, तो वह सेतु पर जाकर सारा रेत झाड़ देती है। वह बहुत समय से ऐसा कर रही है। यह सुनकर लक्ष्मण ने कहा कि वह केवल क्रीड़ा का आनंद ले रही है। इस पर श्रीराम ने कहा कि लक्ष्मण से कहा कि मुझे ऐसा प्रतीत नहीं होता। उत्तम तो यही होगा कि हम इस संबंध में गिलहरी से ही पूछ लेते हैं। उन्होंने गिलहरी से पूछा कि तुम क्या कर रही हो? गिलहरी ने उत्तर दिया कि कुछ नहीं, केवल सेतु निर्माण के पुनीत कार्य में अपना थोड़ा सा योगदान दे रही हूं। उन्हें उत्तर देकर गिलहरी पुनः अपने कार्य के लिए चल पड़ी, तो लक्ष्मण ने उसे रोकते हुए पूछा कि तुम्हारे रेत के कुछ कणों से क्या होगा?

इस पर गिलहरी ने उत्तर दिया कि आप सत्य कह रहे हैं। मेरे रेत के कुछ कणों से कुछ नहीं होगा, परन्तु मैं अपनी सामर्थ्य के अनुसार जो योगदान दे सकती हूं, दे रही हूं। मेरे कार्य का कोई मूल्यांकन नहीं, परन्तु इससे मेरे मन को

श्रीराम ने स्वयं को एक लोकनायक के रूप में ही प्रस्तुत किया। इसलिए वह कभी स्वाभाविक जीवन व्यतीत नहीं कर पाए। उनका बाल्यकाल शिक्षा ग्रहण करते हुए गुरुकुल में व्यतीत हुआ। गुरुकुल में वह राजकुमारों की भांति नहीं रहे, अपितु उन्हें अन्य बालकों की भांति ही अपने सारे कार्य स्वयं करने पड़ते थे। इसके अतिरिक्त में वे अपने सहपाठियों के साथ कंद–मूल एवं लकड़ियां एकत्रित करने वन भी जाते थे। इस प्रकार उनका बाल्यकाल सुख–समृद्धि में व्यतीत नहीं हुआ। युवा होने पर जब उन्हें राज्य का संपूर्ण दायित्व सौंपने का निर्णय लिया गया एवं उनके राज्याभिषेक की तैयारियां होने लगीं, तो उन्हें अकस्मात् चौदह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा। उन्होंने वनवास की समयावधि में भी अनेक कष्टों का सामना किया।

संतुष्टि प्राप्त हो रही है कि मैं अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य के अनुसार अपना योगदान दे रही हूं। मेरे लिए यही पर्याप्त है, क्योंकि यह राष्ट्र का कार्य है एवं धर्म का कार्य है।

गिलहरी का यह प्रसंग सदैव से ही प्रासंगिक रहा है, क्योंकि इससे यह प्रेरणा मिलती है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी सामर्थ्य के अनुसार जनहित एवं राष्ट्र हित में अपना योगदान देना चाहिए।

'नेतृत्व क्षमता'

श्रीराम एक लोक नायक थे। उनमें नेतृत्व की अपार क्षमता थी। उन्होंने समुद्र में पत्थरों से सेतु का निर्माण करवाया, जिसे राम सेतु कहा जाता है। सीताहरण के पश्चात उन्होंने वानरों की सेना के माध्यम से लंका पर चढ़ाई कर दी। एक ओर लंका नरेश रावण की बलशाली राक्षसों की शक्तिशाली सेना थी, तो दूसरी ओर निर्बल वानरों की छोटी सी सेना। किन्तु श्रीराम के पास सत्य की शक्ति थी और वानर सेना का उनके प्रति अटूट प्रेम, श्रद्धा एवं विश्वास था। इस सत्य एवं श्रद्धा के बल पर उन्होंने लंका पर विजय प्राप्त की। वे अपने मित्रों एवं साथियों को आदर एवं सम्मान देते थे। उन्होंने अपने मित्र निषादराज, सुग्रीव, हनुमान, केवट, जामवंत एवं विभीषण आदि को समय–समय पर नेतृत्व करने के अवसर प्रदान किए तथा उनकी हृदय से सराहना भी की।

'मातृभूमि से प्रेम'

लंका पर विजय प्राप्त करने के पश्चात श्रीराम ने लंका का राज्य रावण के भाई विभीषण को सौंप दिया तथा अयोध्या लौटने का निर्णय किया। इस पर लक्ष्मण ने कहा कि लंका में स्वर्गीय सुख है। लंका स्वर्णमयी है। अयोध्या में क्या रखा है? इस पर श्रीराम ने कहा–

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

(वाल्मीकि रामायण)

अर्थात यद्यपि यह लंका स्वर्ण से निर्मित है, फिर भी इसमें मेरी कोई रुचि नहीं है, जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है।

श्रीराम ने स्वयं को एक लोकनायक के रूप में ही प्रस्तुत किया। इसलिए वह कभी स्वाभाविक जीवन व्यतीत नहीं कर पाए। उनका बाल्यकाल शिक्षा ग्रहण करते हुए गुरुकुल में व्यतीत हुआ। गुरुकुल में वह राजकुमारों की भांति नहीं रहे, अपितु उन्हें अन्य बालकों की भांति ही अपने सारे कार्य स्वयं करने पड़ते थे। इसके अतिरिक्त में वह अपने सहपाठियों के साथ कंद–मूल एवं लकड़ियां एकत्रित करने वन भी जाते थे। इस प्रकार उनका बाल्यकाल सुख–समृद्धि में व्यतीत नहीं हुआ। युवा होने पर जब उन्हें राज्य का संपूर्ण

दायित्व सौंपने का निर्णय लिया गया एवं उनके राज्यभिषेक की तैयारियां होने लगीं, तो उन्हें अकस्मात् चौदह वर्ष के लिए वनवास जाना पड़ा। उन्होंने वनवास की समयावधि में भी अनेक कष्टों का सामना किया। जब रावण ने उनकी पत्नी सीता का हरण कर लिया, तो उन्हें पत्नी के वियोग में एवं उनकी खोज में वन–वन भटकना पड़ा। एक साहसी शत्रु से सामना करने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं था। उन्हें वानर राज सुग्रीव की सहायता प्राप्त हुई, परन्तु इससे पूर्व उन्हें बाली का वध करके सुग्रीव को राजा बनाना पड़ा। इस समयावधि में उन्हें अनेक कष्ट एवं आरोपों का सामना करना पड़ा।

एक राजा के रूप में भी श्रीराम ने स्वयं को लोकनायक ही सिद्ध किया। उन्होंने लोकनायक के रूप में शासन किया। वह राजा थे। वह चाहते तो निरंकुश होकर निर्णय ले सकते थे, परन्तु उन्होंने लोकनायक के रूप में आदर्श स्थापित किया। उनके राज्य में सबको अभिव्यक्ति का अधिकार था। जब धोबी ने माता सीता के चरित्र पर प्रश्न चिन्ह लगाया, तो श्रीराम ने सीता का त्याग कर दिया। महाकवि भवभूति उत्तररामचरित में कहते हैं–

स्नेहं दयां च सौख्यं च, यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो, नास्ति में व्यथा।।

अर्थात देश व समाज की सेवा के लिए स्नेह, दया, मित्रता यहां तक कि धर्मपत्नी को छोड़ने में भी मुझे कोई पीड़ा नहीं होगी।

माता सीता एक बार पुनः वनवास के लिए चली गईं। इसके पश्चात श्रीराम ने भी राजसी जीवन का त्याग कर दिया। वह एक वनवासी की भांति जीवन व्यतीत करने लगे। वह भूमि पर चटाई बिछाकर सोते तथा कंद–मूल खाते। वह अपनी पत्नी से अत्यधिक प्रेम करते थे, इसलिए उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। उस समय राजा अनेक विवाह करते थे, परन्तु श्रीराम पत्नीव्रता रहे।

श्रीराम ने एक पुत्र के रूप में, भाई के रूप में, पति के रूप में, मित्र के रूप में तथा राजा के रूप में समाज के लिए आदर्श स्थापित किया। उन्होंने प्रेम, भाईचारे, त्याग एवं समर्पण का संदेश दिया। वर्तमान युग में जब स्वार्थ बढ़ गया है तथा संबंध स्वार्थ सिद्धि तक ही सीमित होकर रह गए हैं, ऐसे में लोकनायक राम एक आदर्श बनकर सामने आते हैं।

◆

मो. : 8750820740

मंगल भवन हैं भगवान राम

–सियाराम पांडेय 'शांत'

500 साल के कठिन संघर्ष के बाद जगदाधार भगवान राम के नवनिर्मित श्री विग्रह की उनकी अवतार भूमि अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा हो गई है। इस मंदिर को राष्ट्र निर्माण का मंदिर कहा जा रहा है तो कदाचित् यह गलत भी नहीं है। राममंदिर आंदोलन से लेकर आज तक या यूं कहें कि राम मंदिर टूटने से लेकर अद्यावधि तक यह मंदिर लोक आस्था का केंद्र बना रहा। शिला पूजन कार्यक्रम से लेकर मंदिर के निर्माण तक भारतवासी हिंदुओं ने मुक्तहस्त से अपना सहयोग दिया है। अदालत के फैसले के बाद कुछ बड़े औद्योगिक घरानों ने अपने जान कल्याण कोष से इस मंदिर के भव्य निर्माण की पेशकश की थी लेकिन मंदिर प्रबंधन का तर्क था कि जन–जन को इस बात का अहसास होना चाहिए कि यह मंदिर उनका है और इसमें उनके भी सहयोग का एक अंश समाहित है। इस मंदिर के निर्माण में सम्पूर्ण विश्व का किसी न किसी रूप में योगदान है। दुनिया के 155 देशों की पवित्र नदियों और सरोवरों के जल से भगवान राम के श्रीविग्रह का जलाभिषेक हुआ है। उनके चौखट और मंदिर परिसर का प्रच्छालन हुआ है। पाकिस्तान समेत तमाम देशों की नदियों का जल अयोध्या लाया गया। देश के हर प्रमुख तीर्थस्थल, शहीदों के स्मारक स्थल, चंद्रशेखर आजाद, वीर

शिवाजी जैसे महापुरुषों के 8 जन्मभूमि की मिट्टी, हर जिले और गांव की मिट्टी का अयोध्या आना और उसका मंदिर निर्माण में लगना अपने आप में बड़ी बात है। इससे दुनिया भर में संदेश गया है कि राम सम्पूर्ण विश्व के हैं। अल्लामा इकबाल ने भगवान राम को इमामे हिन्द तक कहा था। भगवान राम की नजर में कोई छोटा–बड़ा नहीं था। उन्होंने गिद्ध, गिलहरी और वानर–भालू तक को समान सम्मान दिया। माता शबरी के जूठे बेर खाए तो आदिवासियों, वनवासियों को गले लगाया। उन्हें अपना मित्र बनाया। उन भगवान राम का मंदिर बने, उनके श्री विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हो और समरस समाज की प्रतिष्ठा की उनकी अवधारणा न दिखे, ऐसा कैसे हो सकता था। देश के विभिन्न हिस्सों से 14 विभिन्न जातियों के लोगों को यजमान बनाया गया था, जिसमें काशी के डोमराज परिवार के अनिल चौधरी भी सपत्नीक यजमान की भूमिका में रहे। जिन लोगों को राम मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा का यजमान बनाया गया उनमें रामचंद्र खराडी (उदयपुर), राम कुई जेमी (असम), गुरुचरण सिंह गिल (भरतपुर), रमेश जैन मुल्तानी (जयपुर), कृष्ण मोहन (हरदोई), अझलारासन (तमिलनाडु), विट्ठलराव कांबले (मुंबई), महादेव गायकवाड़ (लातूर), श्रीलिंगराज वासव राजप्पा (कलबुर्गी, कर्नाटक) दिलीप वाल्मीकि (लखनऊ), डोमराजा अनिल चौधरी, कैलाश यादव, कवींद्र प्रताप सिंह (वाराणसी) अरुण चौधरी (पलवल, हरियाणा) शामिल रहे।राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र समिति के अनिल मिश्र ने तो सपत्नीक यजमान की प्रमुख भूमिका निभाई ही। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी अनुष्ठानपूर्वक इस समारोह में मुख्य यजमान की भूमिका का निर्वहन किया। सबहि सुलभ, सब दिन सब देसा की परंपरा में जीने वाले भगवान राम के परम प्रतिष्ठा समारोह में यजमान समाज के सभी जाति–वर्ग से थे,जो यह साबित करने के लिए काफी है कि राममंदिर राष्ट्र की एकता, अखंडता और समरसता का मंदिर है।

भगवान राम गुणग्राम हैं। मंगल भवन अमंगल हारी हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे दाशरथि राम सामान्य मनुष्य नहीं हैं, वे परम ब्रह्म परमेश्वर है। राम सबके हैं और सब राम के हैं। वे जीव–जगत से परे हैं। यह सारा ब्रह्मांड उन्हीं की रचना है। सारा संसार उन्हीं की कृपा का विस्तार है। अपनी माया से वे परमप्रभु पूरे संसार को नचा रहे हैं। भगवान शंकर माता पार्वती से कहते हैं कि उमा दारू जोसित की नाई, सबहिं नचावत राम गुसाईं। वे सर्वत्र उनकी व्याप्ति देखते हैं और ताल ठोककर कहते हैं। हरि व्यापक सर्वत्र सामना, प्रेम ते प्रकट होई में जाना। कबीरदास तो यहां तक कहते हैं कि घट–घट वासी राम ही हैं जो विभिन्न रूपों में लीला कर रहे हैं। एक राम घट–घट में बोला, एक राम दशरथ गृह डोला। एक राम का जगत पसारा। एक राम सब जग से न्यारा। विभीषण अपने अग्रज लंकापति रावण को समझाते हैं कि राम सामान्य मनुष्य नहीं है।

अपने वनवास काल में वे अगर केवट को पूरा सम्मान देते हैं। उसकी भावना का सम्मान करते हुए उसे अपने चरण पखारने का अवसर देते हैं तो निषादराज गुह को मित्र बनाते हैं। जब वे निषादराज को विदा करते हैं तो उनका हृदय विषाद से भर जाता है। बिदा कीन्ह सनमानि निषादू। चलेउ हृदयँ बड़ बिरह बिषादू। कोल किरात भिल्ल बनचारी। फेरे फिरे जोहारि जोहारी। भरत जी जब भगवान राम से मिलने चित्रकूट जाते हैं तो मार्ग में उनकी भेंट वनवासी समाज से होती है। जो अपनी क्षमता के अनुरूप सामग्री उन्हें भेंट करते हैं लेकिन भरत भी भगवान राम की दुहाई देकर उन्हें लौटा देते हैं। कोल किरात भिल्ल बनबासी। मधु सुचि सुंदर स्वादु सुधा सी। भरि भरि परन पुटीं रचि रूरी। कंद मूल फल अंकुर जूरी। सबहि देहिं करि बिनय प्रनामा। कहि कहि स्वाद भेद गुन नामा। देहिं लोग बहु मोल न लेहीं। फेरत राम दोहाई देहीं। दरअसल यह भगवान राम का आदिवासियों के प्रति प्रेम है जो प्रतिफल स्वरूप श्री भरतलाल और अयोध्यावासियों को मिल रहा है। भगवान राम अशरण शरण दया के धाम हैं। उनके मंदिर में लगे हुए पत्थर भी अलग–अलग राज्य से लाए गए हैं।उनकी तीनों प्रतिमाओं का निर्माण भी अलग–अलग राज्यों के मूर्तिकारों ने किया है। शालिग्राम शिला उनकी ससुराल नेपाल से आई है। देश में पक्षीराज जटायु का एक ही मंदिर था लेकिन अब अयोध्या में

भी उनकी प्रतिमा लग गई है। भगवान राम की प्राणप्रतिष्ठा के वक्त अलग–अलग राज्यों से जिस तरह उनके लिए आभूषणों, तीर धनुष आदि की भेंट आई है, उसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। रामलला के दर्शन के लिए पूरा संसार उमड़ रहा है। 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा वाले दिन पूरी दुनिया में दीपोत्सव मनाया गया।

भगवान राम गुणग्राम हैं। मंगल भवन अमंगल हारी हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे दाशरथि राम सामान्य मनुष्य नहीं हैं, वे परम ब्रह्म परमेश्वर है। राम सबके हैं और सब राम के हैं। वे जीव–जगत से परे हैं। यह सारा ब्रह्मांड उन्हीं की रचना है। सारा संसार उन्हीं की कृपा का विस्तार है। अपनी माया से वे परमप्रभु पूरे संसार को नचा रहे हैं। भगवान शंकर माता पार्वती से कहते हैं कि उमा दारू जोसित की नाई, सबहिं नचावत राम गुसाईं। वे सर्वत्र उनकी व्याप्ति देखते हैं और ताल ठोककर कहते हैं। हरि व्यापक सर्वत्र सामना, प्रेम ते प्रकट होई में जाना। कबीरदास तो यहां तक कहते हैं कि घट–घट वासी राम ही हैं जो विभिन्न रूपों में लीला कर रहे हैं। एक राम घट–घट में बोला, एक राम दशरथ गृह डोला। एक राम का जगत पसारा। एक राम सब जग से न्यारा। विभीषण अपने अग्रज लंकापति रावण को समझाते हैं कि राम सामान्य मनुष्य नहीं है। साक्षात नारायण हैं। तात राम नहिं नर भूपाला, भुवनेस्वर कालहु कर काला। ब्रह्म अनामय आज भगवंता, व्यापक अजित अनादि अनंता। राम मनुष्यों के ही राजा नहीं हैं। वे समस्त लोकों के स्वामी हैं और

अब जब प्रभु श्रीराम अपने नए घर में विराजित हो गए हैं तो हमें उनके गुणों को अपने जीवन में उतारना चाहिए। हमें उनकी तरह एक अच्छा पुत्र, अच्छा मित्र, अच्छा तपस्वी, अच्छा पति, अच्छा पिता, अच्छा राजा और अच्छा देशभक्त बनना चाहिए। उनके आचरण और व्यवहार के अनुकरण से ही यह देश एक बार फिर स्वर्ण विहंग बन सकता है।

काल के भी काल हैं। वे सम्पूर्ण यश, ऐश्वर्य, धन, समृद्धि, धर्म, वैराग्य और ज्ञान के भंडार हैं। वे भगवान निरामय हैं। अजन्मा हैं। सर्वथा अजेय हैं। अनादि और अनंत हैं। लेकिन रावण को यह बात समझ में नहीं आती और भारी सभा में विभीषण को अपमानित कर वह लंका से निकाल देता है। हालांकि यह बात रावण को भी पता है कि राम सामान्य इंसान नहीं है। खर–दूषण और त्रिशिरा के मारे जाने पर शक तो उसे भी हो गया था। खर–दूसन मो सम बलवंता, तिन्हहि को मारहिं बिनु भगवंता। लेकिन अहंकारी अपना विवेक खो देता है। रावण के साथ भी कुछ ऐसा ही है।

इसमें संदेह नहीं कि राम नाम में ही सांप्रदायिकता को दूर करने वाले तत्व हैं। इसे कौन समझे, कौन समझाए? 'राम कथा ससि किरन समाना। संत चकोर करहिं जेहि पाना।' मुसलमानों के सारे शुभ काम चांद देखकर होते हैं। जब तक चांद नहीं दिखता, तब तक ईद मनती ही नहीं। इस्लामिक झंडे का प्रतीक भी चांद–तारा है। अब इस चौपाई पर विचार करें जो यह कह रही है कि 'राम कथा ससि किरन समाना।' राम की कथा चंद्रमा की किरणों की तरह है। जस्ट लाइक वाली बात नहीं चलती साहब। सीधे–सीधे कहो कि भगवान राम चंद्रमा हैं या नहीं हैं। तुलसी बाबा लिखते हैं कि 'राका रजनी भगति तव, राम नाम सोई सोम, अपर देव उदगन सरिस बसहिं भगत उर ब्योम।' अर्थात राम की भक्ति चांदनी रात है और जो राम नाम है, वही चंद्रमा है और जो दूसरे देवता हैं, वह तारागण हैं जो भक्त के भक्ति रूपी आकाश में निवास करते हैं। राम केवल हिंदुओं के देवता नहीं है। वे संपूर्ण लोक के देवता हैं। वे हर काल में, हर स्थान पर सबके लिए सर्व सुलभ हैं। 'सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा।' विनय पत्रिका में गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं कि

'ऐसो को उदार जग माहीं,
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर,
राम सरिस कोउ नाहीं।'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस अभिकथन में दम है कि 'राम आग नहीं, ऊर्जा हैं और उज्ज्वल भविष्य के निर्धारक हैं'। भगवान राम भारत की सांस्कृतिक गतिशीलता और निरंतरता के प्रतीक हैं, वही गतिशीलता जो भारत का 'वसुधैव कुटुंबकम' के सिद्धांत के साथ पूरे विश्व के प्रति उदार भाव से देखने की रही है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस अभिकथन में दम है कि 'राम आग नहीं, ऊर्जा हैं और उज्ज्वल भविष्य के निर्धारक हैं'। भगवान राम भारत की सांस्कृतिक गतिशीलता और निरंतरता के प्रतीक हैं, वही गतिशीलता जो भारत का 'वसुधैव कुटुंबकम' के सिंद्धांत साथ पूरे विश्व के प्रति उदार भाव से देखने की रही है

प्रभु राम का जीवन चरित्र सही मायने में प्राणिमात्र के लिए आदर्श आचार संहिता है। प्रकृति के सारे जीव जंतु, जड़, चेतन और स्थावर सब प्रभु राम के मित्र हैं। तभी तो गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं। सीयराम मय सब जग जानी। मतलब सर्वं राममयं जगत। रामराज में समरसता और सबके संम्मान की भावना है। वहां कोई अशिक्षित नहीं, कोई निर्धन नहीं। नहीं कोउ अबुध न लक्षणहीना। वहां किसी का किसी से बैर नहीं। बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई। भगवान राम ने प्रकृति की गोद में चौदह साल बिताया है। उनका जीवन हमें संपूर्ण पर्यावरण की रक्षा हेतु प्रेरणा देता है। हमारी संस्कृति में जब भी किसी व्यक्ति के सदाचरण की कल्पना की जा सकती है वह सारे आचरण, वे सारी सत्य निष्ठाएं प्रभु राम के जीवन में है। बल पराक्रम, क्षमाशीलता, विनयशीलता, उदारता भरा व्यवहार सब कुछ तो है भगवान राम के जीवन चरित्र में। हृदय की सौम्यता और कर्तव्य पालन में स्व की आहुति देने की मिशाल भी अगर कहीं देखने को मिलती है तो प्रभु श्री राम के जीवन में ही मिलती है। श्रीराम के जीवन में जो न्याय है, जो करुणा है, सद्भाव है, निष्पक्षता है, सहिष्णुता है वही आज के इस समाज की जरूरत है।

अब जब प्रभु श्रीराम अपने नए घर में विराजित हो गए हैं तो हमें उनके गुणों को अपने जीवन में उतारना चाहिए। हमें उनकी तरह एक अच्छा पुत्र, अच्छा मित्र, अच्छा तपस्वी, अच्छा पति, अच्छा पिता, अच्छा राजा और अच्छा देशभक्त बनना चाहिए। उनके आचरण और व्यवहार के अनुकरण से ही यह देश एक बार फिर स्वर्ण विहंग बन सकता है।

◆

मो. : 7459998968

मंगल के प्रतीक श्रीराम

—डॉ. रविशंकर पाण्डेय

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम मंगल के प्रतीक हैं। आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने उन्हें सार्वभौमिक रूप से सभी कालों में सर्वत्र मंगल का हेतु बताया है। वे रामायण महाकाव्य के धीरोद्दात्त नायक होने के साथ साथ–साथ पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के वास्तविक महानायक हैं–

मंगलं कौशलेन्द्राय महनीयगुणाब्धये।
चक्रवर्ति तनूजाय सार्वभौमाय मंगलम्।।

संभवतः गोस्वामी तुलसीदास जी ने इसी कथन से प्रेरणा लेकर अपने आराध्य श्री राम को लोक–मंगल के प्रतीक के रूप में निरूपित करने का पूरा प्रयास किया है। मेरा मानना है कि तुलसी मूलतः कवि थे और कवि का प्रथम दायित्व यही होता है कि वह बिना किसी भेद भाव के अपने कवि कर्म के माध्यम से संपूर्ण मानवमात्र के मंगल की कामना करे। अपने आराध्य श्री राम, जो सर्वथा मंगल के प्रतीक हैं, उनके चरित्र को केंद्र में रखकर उन्होंने रामचरितमानस जैसे महाकाव्य की रचना की है जो एक मंगल काव्य के रूप में संपूर्ण विश्व में लोकप्रिय हुआ है। विश्व की किसी भाषा में ऐसी कोई भी साहित्यिक रचना नहीं है जिसमें मानस से अधिक मंगल शब्द का प्रयोग कहीं हुआ हो। उन्होंने बड़े ही सुनियोजित ढंग से अपने रामचरितमानस जैसे महाकाव्य में श्री राम को मंगल का प्रतीक मान कर काव्य प्रबंधन किया है।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार भगवान श्री राम का नाम मंगल का प्रतीक है। श्री राम का काम मंगल का प्रतीक है। श्री राम का धाम मंगल का प्रतीक है और उनकी कथा ललित ललाम मंगल की प्रतीक है। यही नहीं भगवान श्री राम के माध्यम से स्वयं में रामचरितमानस भी विश्व मंगल और लोक–मंगल की एक विराट चेष्टा है। देश, काल, जाति, धर्म, भाषा और संप्रदाय की सीमाओं से परे आज पूरे विश्व में रामचरितमानस लोक–मंगल और विश्व मंगल का संदेश दे रही है।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार श्री राम का नाम लोक मंगल का प्रतीक कैसे है–

नाम सप्रेम जपत अनयासा। भगत होंहि मुदमंगल बासा।।

अर्थात अनायास ही श्री राम का नाम लेने मात्र से भक्तजनों में मोद और मंगल का संचार हो जाता है। वे आगे कहते हैं कि शिव जी जैसे अमंगल के प्रतीक और औघड वेशधारी भी श्री राम का नाम लेते ही मंगल की विशाल राशि में बदल जाते हैं–

नाम प्रताप शंभु अविनाशी। साजु अमंगल मंगलरासी।।

यह ध्यान देने वाली बात है कि मानसकार को तब तक संतोष नहीं होता जब तक कि वे श्री राम के नाम को सार्वभौमिक रूप से विश्व मंगल का हेतु नहीं घोषित करते–

चहुं जुग तीन काल तिहुं लोका। भये नाम जप जीव विसोका।।
जिनकर नाम लेत जग माहीं। सकल अमंगल मूल नसाहीं।।

मानस के अनुसार भगवान श्री राम का काम भी लोक मंगल और विश्व मंगल का प्रतीक है। उनका काम है विश्व भर में मंगल की श्रीवृद्धि करना और सभी अमंगलों का नाश करना–

मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवहु सो दसरथ अजिर बिहारी।।

श्री राम तो ऐसे सरल और सहज हैं कि उनका नाम चाहे कोई भाव से ले, कुभाव से ले, आलस्य के साथ ले अथवा जोर जोर से ले सभी दिशाओं में चारों ओर मंगल ही मंगल होता है–

भाय कुभाय अलख आलसहूं। नाम जपत मंगल दिसि दसहूं।।

गोस्वामी जी विश्व मंगल की कामना के साथ आगे कहते हैं कि श्री राम पूरे विश्व का मंगल तो करते ही हैं वे सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति दिलाने वाले और सांसारिक सुख वैभव के दाता भी हैं–

जग मंगल गुनग्राम राम के।दानि मुकुति धन धरम धाम के।।

मानस के अनुसार भगवान श्री राम का धाम भी मंगल का अद्भुत खजाना है। उनकी नगरी अयोध्या में नित नूतन मंगल ही मंगल होता है। वहां किसी को पता ही नहीं चलता कि दिन कब होता है और रात कब हो गई।

यही नहीं मां सीता जब व्याह कर साकेतपुरी में आती हैं तो उनके आने से श्री बृद्धि के साथ मंगल की वृद्धि भी द्विगुणित हो जाती है–

नित नूतन मंगल पुर माहीं। निमिसि सरिस दिन जामिनि जाहीं।।
जब ते राम व्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए।।

मानसकार का कहना है कि यद्यपि अयोध्या नगरी सदा सर्वदा सुंदर रचनाविधान के कारण मनोहारी रही है किन्तु जबसे उनके आराध्य श्रीराम ने यहां पर जन्म लिया है तबसे तो इसकी छटा दुगुनी हो गई है। श्रीराम का संदर्भ जुड़ने के साथ अयोध्या सुंदर ही नहीं बल्कि पावन होते हुए सबके लिए मंगलकारी भी हो गई है। यह नगरी प्रीति पर प्रीति होने के कारण विशेष रूप से सुंदर व सुव्यवस्थित रचना प्रक्रिया से बनाई और सजाई गई है –

जद्यपि अवध सदैव सुहावनि। रामपुरी मंगलमय पावनि।।
तदपि प्रीति कै प्रीति सुहाई। मंगल रचना रची बनाई।।

श्रीराम के समय की अयोध्या नगरी की झांकी ही कुछ विशिष्ट और अलग थी। यहां का बाजार विभिन्न रंगों की ध्वजा पताकाओं के साथ सुंदर पर्दों व चवरों से सुसज्जित हुआ करता था। चौराहों और सार्वजनिक स्थलों पर सोने के कलश सजा कर रक्खे गए थे। इसके अतिरिक्त स्थान स्थान पर मंगलकारी प्रतीक हल्दी,दूब, दही भी रक्खे हुए मिलते थे–

ध्वज पताक पट चामर चारू। छावा परम विचित्र बजारू।।
कनक कलस तोरन मनि जाला। हरद दूब दधि अच्छत माला।।

भगवान श्रीराम के जन्म लेते ही अयोध्या नगरी का वैभव अपने चरम पर था किन्तु जब माता जानकी व्याह कर अयोध्या आती हैं तो इस नगरी में घर घर बधाइयां बजने लगती हैं और चारों ओर कोकिल कंठी महिलाओं के स्वर से मंगलकारी गीतों की धुन अहर्निश गुंजायमान होती रहती है–

गाविहं सुंदर मंगल गीता।
लै लै नाम राम अरु सीता।।
बहुत उछाह भवन अति थोरा।
मानहु उमगि चला चहुं ओरा।।

इसी प्रकार भगवान श्री राम की कथा ललित ललाम भी सर्वत्र मंगल की वर्षा करने वाली है। श्री राम की कथा व्यक्ति और समाज के समस्त पापो व दोषों का शमन कर मंगल की वर्षा करते हुए मन प्राणों को निर्मलता प्रदान करती है–

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।
गति कूर कविता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की।।

यह ध्यान देने वाली बात है कि गोस्वामी जी जब तक जग मंगल की कामना नहीं कर लेते तब तक रुकते नहीं–

भनित भदेस बस्तु भल बरनी। रामकथा जग मंगल करनी।।

उनका कहना है कि अभी तक कविगण राजाओं महाराजाओं का भदेस गुणगान अपनी कविताओं में करते चले आ रहे थे किन्तु भगवान श्री राम की यह अथा तो संपूर्ण विश्व में सभी का मंगल करने वाली एक अद्भुत कथा है।

यही नहीं श्री हनुमान जी के मुख गोस्वामी जी कहलाते हैं कि उनकी जाति तो ऐसी है कि उसका प्रातः काल नाम लेने मात्र से व्यक्ति को दिनभर भोजन नहीं मिलता। किंतु भगवान श्री राम की कृपा ऐसी है कि स्वयं हनुमानजी भी मंगल की मूर्ति बन जाते हैं–

पवन तनय संकटहरन मंगलमूरति रूप।
राम–लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप।।

तुलसी ने अपनी कृति रामचरितमानस में राम का परम करुणामय, शीलवान और परम परदुखकातर स्वरूप का निर्माण किया है, जो उनका अद्भुत लोकवादी अवतार है. तुलसी के इस लोकवादी आग्रह को व्यक्त करने वाले शब्द हैं 'मंगल और विवेक' जिनसे तुलसी का काव्य भरा पड़ा है. मंगल के साथ ही विवेक शब्द भी रामचरितमानस में भरा पड़ा है। अतः तुलसी के राम लोकमंगल और विवेक के विधायक एवं प्रतीक हैं. तुलसी के प्रिय मंगल और विवेक का गहरा नाता राम की दीनवंधुता से है. याद रखिये दीनबंधु शब्द का मतलब दीनों का सहायक मात्र नहीं होता, वंधु मित्र को और विपत्ति में साथ खड़े होने वाले को भी कहते हैं। श्रीराम दीनों के दुख में उनके साथ खड़े होते हैं, उनके सहायक मात्र नहीं हैं। जिनसे हमारा आत्मिक संबंध होता है हम उसकी शाब्दिक सहायता नहीं करते बल्कि उसके साथ खड़े होते हैं और उसका दुख बांट कर स्वयं में कृतार्थ होते हैं। राम मंगल भवन अमंगल हारी हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार भगवान श्री राम का नाम मंगल का प्रतीक है। श्री राम का काम मंगल का प्रतीक है। श्री राम का धाम मंगल का प्रतीक है और उनकी कथा ललित ललाम मंगल की प्रतीक है। यही नहीं भगवान श्री राम के माध्यम से स्वयं में रामचरितमानस भी विश्व मंगल और लोक–मंगल की एक विराट चेष्टा है। देश, काल, जाति, धर्म, भाषा और संप्रदाय की सीमाओं से परे आज पूरे विश्व में रामचरितमानस लोक–मंगल और विश्व मंगल का संदेश दे रही है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि तुलसी के राम लोक मंगल के प्रतीक हैं, प्रतीक थे और सदा लोकमंगल के प्रतीक रहेंगे, उन्हें किसी देश, काल, जाति, धर्म और संप्रदाय में नहीं बांधा जा सकता।

◆

मो. : 8004867521

तुलसी के मानस में राम

—आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

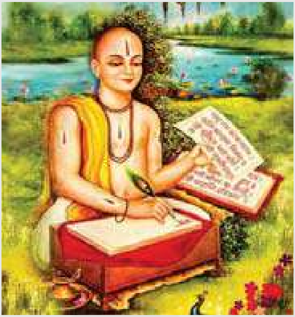

युगों—युगों से श्रीराम भारतीय समाज की आस्था और विश्वास, श्रद्धा और भक्ति तथा राष्ट्र की अस्मिता के अटूट संबल बने हुए हैं। वे सनातन धर्म—साधना के संवाहक हैं। सृजनधर्मियों के लिए सर्वथा प्रेरक व्यक्तित्व हैं। भक्तों के आराध्य देव हैं, सामान्य जनों के लिए आदर्श और मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, वे विष्णु के अवतार हैं, परमतत्त्व हैं, पारब्रह्म परमेश्वर हैं, किंतु दशरथनन्दन राम का जीवन एक संघर्षमय महामानव की अपराजेय जीवनगाथा है। राम मनुष्यत्व के चरमोत्कर्ष हैं। वे सर्वोच्च मानव धर्म के प्रतिमान हैं। उन्होंने अपने महान् नायकत्व से मानवीयता के सर्वोच्च मूल्यों को परिभाषित ही नहीं किया, बल्कि उसे स्वयं जिया और मानव मात्र को अनुप्राणित भी किया है। राम अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं। युगद्रष्टा महाकवि तुलसी की संपूर्ण साहित्य साधना के केंद्र में मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं जिन्होंने नर जीवन से नारायणत्व की यात्रा का सुंदर निर्वहन किया है। 'रामचरितमानस' तुलसी की काव्य—साधना का सुमेरु है। मानस के उच्च शिखर पर पहुंचकर ही तुलसी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम को विरचित कर सके हैं। उनकी आरंभिक सारी काव्य रचनाएं उस शिखर तक पहुंचने की सृजनात्मक—यात्रा के विभिन्न मनोरम पड़ाव हैं। वैचारिक उदात्तता और भक्ति का उच्चतर विकास मानस में ही संभव हुआ है। तुलसी ने राम को अपनी अशेष संवेदना, चिंतन, ज्ञान, भक्ति और विवेक से युगानुरुप रचा और संवारा है। राम के साथ तुलसी का गहरा लगाव दुर्लभ है। वे रामभक्तिपथ के समर्पित पथिक बन चुके थे। राम उनकी चेतना में, उनकी रग—रग में, हर सांस में पूरी तरह रच—बस चुके थे। अपने लेखकीय जीवन की अप्रतिम और अतुलनीय उपलब्धि पर तुलसी कभी अभिमान नहीं करते हैं वरन् अपने काव्यनायक से अपनी मुक्ति के साथ लोकमुक्ति की प्रार्थना करते हैं। 'सुरसरि सम सब कर हित होई' की भावना तुलसी ने व्यक्त किया है। जहां तक तुलसी के रामचरितमानसेतर काव्य की बात है तो कवि एवं भक्त तुलसी अपने उस राम को खोजने का प्रयास करते हैं जो अपने समय में एक ऐसा महानायक है जो पतित पावन हैं, शरणागतवत्सल है। लोक उद्धारक है। वह अपने अलौकिक सौंदर्य और गुणों से जनमानस को आनंदित करता है और हमारे अंतस् में मनुष्यता को प्रतिष्ठित करने वाला है।

रामकथा के स्फुट प्रसंगों की झलकियां, रामनाम स्मरण का महत्त्व और राम के सद्गुणों का बखान तुलसी की आरंभिक रचनाओं में विशेषतरू हमें देखने को मिलता है। अपनी आरंभिक रचनाओं में तुलसी राम को जानने की कोशिश में भक्ति की ओर उन्मुख दिखाई देते हैं। आरंभिक काव्य युवा तुलसी की राम के प्रति अविरल भक्ति भाव—विह्वलता से संयुक्त हैं। एक श्रद्धालु भक्त की भावांजलि है। यहां तुलसी अपने प्रखर कवि रूप के अर्जन की ओर सचेष्ट दिखाई देते हैं। दरअसल आरंभिक काव्य तुलसी की सृजनात्मकता और भक्ति भावना के उन्मुखीकरण का प्रमाण है। वास्तव में रामचरितमानस तुलसीदास की काव्ययात्रा में युगांतर उपस्थित करने वाला महाकाव्य है। इसके सृजन की पीठिका तुलसी के युवावस्था में बनने लगी थी और जिसका उत्कर्ष ज्ञान और भक्ति से परिपूर्ण महाकाव्य रामचरितमानस

के रूप में साकार हुआ है। तुलसीदास का पूर्ववर्ती काव्य उनकी रचनाशीलता का अभ्यास काल कहा जा सकता है। अपने भक्त हृदय को जांचने और परखने की इस यात्रा में तुलसी इस जगत् को प्रबोधित करते चलते हैं। आत्मोत्कर्ष के साथ ही लोकोत्कर्ष उनके लेखन का परम लक्ष्य रहा है। 'स्वांतः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा' कहने वाले तुलसी जीवनपर्यंत लोक कल्याण के लिए साधनारत रहे हैं। उनकी हर सांस में राम पैठे हुए थे। राम उनके जीवन के पर्याय बन चुके थे। रामचरितमानसेतर काव्यकृतियों में राम के चरित को खोजने का विनम्र प्रयास किया गया है।

रामलला नहछू में राम

यह तुलसी के युवाकाल की रचना है। जब उनकी कविताई लोक गायकी के रूप में जगजाहिर होने लगी थी। वे स्थानीय स्तर अपने ग्राम्य–परिवेश और संस्कृति के प्रभाव में कुछ लिखने की ओर प्रेरित हुए थे। रमेशकुंतल मेघ ने सही लिखा है–''यह अल्हड़ युवक बचपन के अभागे तथा दुखियारे दिनों को भूलकर सनातन धर्म पर मंगल विश्वास करने वाला ब्राह्मण है जो सहज प्रवृत्तिमूलक जीवन के एक मधुर संस्कार (विवाह) का मंगलगान करता है। 'रामलला नहछू' विवाह मंगलोत्सव की मस्ती और शुचिता को ग्राम भाषा, ग्राम छंद सोहर में गाता है।'' (तुलसी : आधुनिक वातायन से, पृ–35) तुलसी ने इस कृति में राम को एक साधारण दूल्हा बनाकर उपस्थित किया है जिसे अपने विवाह के मंगल अवसर पर ग्रामीण महिलाओं से अश्लील गालियां मिलती हैं और वह उसमें रस लेता है। राम उन नारियों के रसिक सखा हैं जो ग्रामीण कारोबार से जुड़ी हुई हैं। रामलला के नहछू संस्कारकी कल्पना बहुत रोचक है। एक चित्र देखिए –

गावहिं सब रनिवास देहांत प्रभु गारी हो।
रामलला सकुचाहिं देखि महतारी हो।।
हिलमिलि करत स्वांग सभा रसकेलि हो।
नाउनि। मन हरषाइ सुगंधन मेलि हो।। 18
दूलह के महतारि देखि मन हरषइ हो।
कोटिन्ह दीन्हेउ दान मेघ जनु बरखइ हो।।
रामलला कर नहछू अति सुख गाइय हो।
जेहि गाये सिधि होई परम निधि पाइय हो।। 19

इस तरह राम के विवाह के संदर्भ में नहछू संस्कार का सुंदर वर्णन तुलसी की लोक–संस्कृति के प्रति निकटता का बोधक है। अवध में विवाह के अवसर पर नहछू की परंपरा आज भी प्रचलित है। यहां राम एक असाधारण युवक की तरह उपस्थित हैं जिन्हें नहछू के विधि–विधान का अनुपालन करना होता है। तुलसी विवाह में नहछू की प्रथा से भली–भांति अवगत हैं। 'रामलला नहछू' में राम मर्यादा से दूर हैं और मायावाद से निष्प्रभावी हैं।

वैराग्य संदीपनी में राम

वैसे तो इस कृति के नाम से स्पष्ट है कि तुलसी ने इसमें वैराग्य संबंधी अपने अनुभवजन्य सुविचार प्रकट किए हैं। फिर भी इसमें तुलसी ने राम के नाम की महिमा गान के साथ ही राम के प्रति अपनी अपरिमित श्रद्धा और भक्तिभाव को स्थान दिया है। भक्तिरस में निमग्न तुलसी को एकमात्र राम का ही भरोसा है–

एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास।
राम–रूप–स्वाती–जलद तक तुलसीदास।। 15

तुलसी लोगों को राम–नाम का स्मरण करने अर्थात् राम का नाम भजने की सलाह देते हैं य क्योंकि उन्हें विश्वास है कि चाहे जिस भी तरह से अथवा धोखे से भी रात–दिन राम का नाम लिया जाय तो उस मनुष्य का कल्याण अवश्यंभावी है। तुलसी रामनाम की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं–

धन्य धन्य माता पिता, धन्य पुत्रवर सोइ।
तुलसी जो रामहिं भजै, जैसेहु कैसिहु होइ।। (36)

राम के नाम का स्मरण मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा पुण्य माना गया है। किसी भी तरह से उन्हें याद किया जाए वह फलदायी है। तुलसी कहते हैं–

तुलसी जाके बदन तें, धोखेउ निकसत राम।
ताके पग की पगतरी, मेरे तनु को चाम।। 37
तुलसी भगत सुपच भलो, भजै रैनि दिन राम।
ऊंचो कुल केहि काम को, जहां न हरि को नाम।। 38

तुलसीदास की संपूर्ण जीवन–यात्रा और काव्य–साधना उस मर्यादा पुरुषोत्तम राम की खोज है जो

लोक के लिए मंगलकारी है, पतितपावन हैं, 'निशिचर हीन करहुं महि भुज उठाय प्रन कीन्ह' में विश्वास करने वाला संकल्पधर्मा हैं, शरणागत वत्सल है, करूणानिधान है। इस कृति में अद्वैत, अनाम, निर्गुण मायापति के रूप में राम ने अवतार लिया है। मनुष्य को त्रितापों से मुक्ति, शांति एवं सन्त–स्वभाव राम के व्यक्तित्व से प्राप्त हो सकता है। राम के प्रति तुलसी के युवा मन का उद्‌गार भक्तजनों को रास आता है।

बरवै रामायण में राम

यह रचना अपने अति लघु कलेवर में राम के सौंदर्य और उनके नाम की महिमा को भक्ति भाव से जागृत करने के उद्देश्य से रचित है। इस पुस्तिका में पहली बार तुलसी ने राम की जीवन कथा की रूपरेखा तैयार की है। उन्होंने बरवै छंद में बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड शीर्षकान्तर्गत राम कथा के कतिपय प्रसंगों का वर्णन किया है। यानी रामकथा रचने का सुंदर प्रयास किया गया है। राम और उनके जीवन की कथा के लगभग सभी महत्त्वपूर्ण कथासूत्रों को संक्षिप्त रूप में संयोजित किया गया है। इस कृति में राम अपने शील और चरित्र से कवि को लुभाते हैं। वे सुंदर दूल्हा होने के साथ ही लोक कल्याणकारी राम हैं। वनवासी राम का सुंदर रूप नारायण, ऋषि, विष्णु अथवा कामदेव–सा लगता है। यहां विचारणीय प्रश्न यह है कि तुलसी राम और शिव की एकता की भांति राम और कामदेव का ऐक्य कराने में सफल नहीं हुए हैं।इस प्रसंग में तुलसी आत्मसंघर्ष से गुजरते हैं। बरवै रामायण के राम साधु, सुशील, सुमति, शुचि, सरल स्वभाव (साधु सुशील सुमति, सुचि सरल सुभाव) के हैं।राम के सौंदर्य और उनके नीतिरत होने की बात कही गई है–

राम सुजस कर चहुं जुग होता प्रचार।
असुरन कहीं लखि लागत जग अंधियार।। 39।।

सीता हरण से उपजे राम के दुःख को तुलसी ने गहराई से महसूस किया है। राम की करुणावस्था का एक चित्र प्रस्तुत है –

सिय–बियोग–दुख केहि बिधि कहउं बखान।
फूलवान ते मनसिज बेधत आनि ।। 40।।

उत्तरकाण्ड में राम नाम के माहात्म्य का वर्णन विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

जानकी मंगल में राम

यह काव्य जानकी पर केंद्रित है। जानकी के प्रति तुलसी की भक्ति और श्रद्धा बहुत सहज और स्वाभाविक है। यहां भी राम की मोहक सौंदर्य छवियों का वर्णन है। तुलसी के लिए राम छविधाम, सत–कोटि–काम–मद–मोचन, भ्रकुटी काम–कमानै, अति अलौकिक, राउ राम गुन रूपहिं, वीरधुरंधर हैं। उनके राम अंतर्यामी हैं। राम का मर्म सभी भक्त जनों को जान लेना चाहिए। यहां राम अवतारी पुरुष हैं। वे राजकुमार हैं, विवाह में उनकी सुकुमारता लुभावनी है। उनका तेजोमय व्यक्तित्व अयोध्या की स्त्रियों के आकर्षण का केंद्र है। उनका शील और सौन्दर्य अद्वितीय है। पार्वती मंगल के राम ब्रह्ममय हैं। उनका चरित्र कुलीन या कहें सामंती युवक का प्रतीक है। श्रीराम मध्यकालीन ग्रामीण संस्कृति के प्रभाव से बंधे हुए हैं। उनके विवाह प्रसंग में कवि की इतिहास चेतना और उनके ब्रह्मत्व का प्रभाव लक्षित होता है।

रामाज्ञा प्रश्न में राम

यह कृति छोटे–छोटे सात सर्गों में विभक्त है। प्रत्येक सर्ग में सात–सात सप्तक हैं। इसमें राम के जन्म से लेकर रामकथा के प्रमुख प्रसंगों की अवतारणा के साथ ही चरितनायकों के गुणों की प्रशंसा हुई है। यहां राम के शौर्य, सीता के विरह की झलक भी मिलती है। राम के रोष को कवि ने स्मरण किया है–

राम रोष पावक प्रबल, निसिचर सलभ समान।
लरत परत जरि जरि मरत, भय भसम जगु जान।।

(सप्तक 1/6)

राम का विरह तुलसी को बराबर मर्माहित करता है
राम लषनु बन–बन बिकल फिरत सीय सुधि लेत।

(सप्तक–3/4–1)

रामनाम कलि–कामतरु, रामभगति सुरधेनु।
सगुन सुमंगल मूल जग, गुरु–पद –पंकज रेनु।।

(पंचम सर्ग, तीसरा सप्तक–1/1)

राम रिपुरन जीतने वाले हैं, जिनके प्रभाव से सिला सुतिय हो गई थी। इस कृति में तुलसी ने रामभक्ति को

शकुनशास्त्र के शुभ लक्षणों से संयुक्त कर दिया है। नवग्रह, नवरत्न, मंगल लक्षण संपन्न ज्योतिष शकुनशास्त्र में घुलमिल गये हैं। राम ज्योतिष पुरुष हैं। अपने समय के समाज के सौभाग्य–दुर्भाग्य से राम को जोड़ कर देखा गया है। रामकथा की घटनाओं के सुफल और कुफल को भी राम से जोड़कर देखा गया है। रामाज्ञा प्रश्न में श्रीराम ने अतिप्राकृतिक तत्त्वों के अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाकर आचरण मूलक सौभाग्य का प्रसार किया है। (तुलसी : आधुनिक वातायन से, पृष्ठ 39)

दोहावली में राम

तुलसी अपनी काव्य प्रतिभा से हमें चमत्कृत और प्रभावित करते हैं। पूरी कृति प्रचलित दोहा छंद में रचित है।दोहा उनका प्रिय छंद है। कवि ने अपने आराध्य प्रभु श्री राम के व्यक्तित्व और उनकी कथा के अनेक अनछुए प्रसंगों को पहली बार बहुत मार्मिक ढंग से वर्णित किया है। तुलसी राम भक्ति में शनैः शनैः परिपक्व और परमार्जित हो जाते हैं। वे अपने कवि मन और काव्य कौशल को भी निरंतर साधने और मांजने में तत्पर होते हैं।

इस दोहावली में राम के नाम और राम के उदात्त चारित्रिक वैशिष्ट्य और सद्गुणों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई है। सभक्ति राम का नाम जप करने से आत्यंतिक सुख की अनुभूति होती है। कलियुग में राम नाम मनचाहा फल देने वाले कल्पवृक्ष के समान है।

राम प्रेम के बिना सब व्यर्थ है। राम और राम प्रेम की महिमा अपार है। राम विमुखता का फल व्यक्ति को भोगना पड़ता है। राम प्रेम के लिए वैराग्य की आवश्यकता है।उनकी शरणागतवत्सलता अपूर्व है। तुलसी कहते हैं–

जो संपत्ति सिव रावनहि दीन्हि दिए दस माथ।
सोई संपदा विभीषनहि सकुचि दीन्हि रघुनाथ।। 163

राम और शिव की एकता को कौन नहीं जानता है ? राम का प्रेम सर्वोत्कृष्ट है। राम का नाम स्मरण करते ही भक्तगणों को समस्त श्रेष्ठ सद्गुणों और मंगलभावों का खजाना मिल जाता है। वे सब अमंगलों और पापों को हरने वाले तथा सब कल्याणों को करने वाले हैं। (35/1)

राम भरोसो राम बल राम नाम बिस्वास।
सुमिरत सुभ मंगल कुसल मांगत तुलसीदास।। 38

राम–प्रेम के बिना इस जगत् में सब व्यर्थ है। तुलसी वैरागी हैं ।इसलिए उन्हें राम की प्राप्ति का सुगम उपाय वैराग्य प्रतीत होता है। इसीलिए भक्तगणों से उनकी अपेक्षा है–

राम–प्रेम–पंथ पेखिये दिए विषय तनु पीठि।
तुलसी केंचुरि परिहरें होत सांपहू दीठि।। 82

तुलसी बहुत स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि सच्चिदानंदकंद स्वरूप सूर्य कुल के ध्वजारूप भगवान् श्रीराम मनुष्यों के समान ऐसे चरित्र करते हैं जो संसार सागर तारने के लिए पुल के समान हैं।

सुद्ध सच्चिदानंदमय कंद भानु–कुलकेतु।
चरित करत नर अनुहरत संसृति–सागर–सेतु।। 116

राम की कृपा अपरंपार है। राम की अनुकूलता में ही कल्याण है। राम की दयालुता, धर्मधुरन्धरता अद्भुत है। राम की कीर्ति अपार है। उनका स्वरूप अलौकिक है, श्रीराम की भक्तवत्सला अप्रतिम है। रामराज्य की महिमा का वर्णन करते हुए तुलसीदास कहते हैं कि रामराज्य में सभी नर–नारी अपने–अपने धर्म में रत होकर शोभित हो रहे हैं। कहीं भी राग (आसक्ति), क्रोध, दोष और दुःख नहीं है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष–चारों पदार्थ सुलभ हो रहे हैं।

रामराज राजत सकल धरम–निरत नर–नारि।
राग न रोष न दोष दुख, सुलभ पदारथ चारि।। 182

राम की धर्मधुरन्धरता अद्भुत है। उनकी कीर्ति अपार है। वे गुणों के समूह हैं–

प्रभु गुनगन भूषन बसन, बिसद बिसेष सुदेस।
राम–सुकीरति–कामिनी, तुलसी–करतब केस।। 192

राम के स्वरूप की अलौकिकता वर्णनातीत है। वाणी के अगोचर और बुद्धि से परे है। इस स्वरूप को न कोई जान पाया है,न बखान कर सकता है, न उसका पार ही पा सकता है, इसलिए वेद सदा नेति नेति कहकर ही उसका वर्णन करते हैं।

राम स्वरूप तुम्हार वचन अगोचर बुद्धि पर।
अबिगत अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह।। (199)

भाइयों के प्रति राम का प्रेम अलौकिकता से पूर्ण है। राम चरित्र की पवित्रता कल्पतरु के समान है– ''तुलसी केवल कामतरु रामचरित–आराम।'' (215/1) राम कृपा सब सुमंगलों की खान है। उस रामकृपा ने केवट, राक्षस (विभीषण), पक्षी (जटायु), और पशुओं (बंदर, भालु आदि) को भी सम्मान देकर साधु बना दिया। (228)

तुलसीदास को केवल राम का ही भरोसा है

एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास।

एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास।। 277

नीतिपथ पर चलना और श्रीराम के चरणों में प्रेम निबाहना उत्तम है–चलब नीतिमग, रामपग–नेह–निबाहब नीक। (469/1)

रामभक्ति की महिमा अपरम्पार है। जिनके वचन सत्य होते हैं, मन निर्मल होता है और क्रिया कपटरहित होती है, ऐसे रामजी के भक्तों को कलियुग कभी धोखा नहीं दे सकता है। तुलसी कहते हैं–

सत्य बचन मानस विमल कपटरहित करतूति।

तुलसी रघुवर सेवकहिं सकै न कलिजुग धूति।। 87

कवितावली में राम

इस कृति में रामकथा सात काण्डों–बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तर काण्ड में विभक्त है और इसमें प्रमुख घटनाक्रम शीर्षकबद्ध किए गए हैं। यहां श्रीराम का पुनः एक नया रूप गढ़ा गया है जो पूर्व के राम से भिन्न है, आकर्षक और लोक–मंगल का विधायक है। तुलसी कहते हैं–''धीर–सिरोमनि बीर बड़े बिनयी, बिजयी रघुनाथ सुहाए। (बालकाण्ड, 22/3), उनका रावरो स्वभाव है। यहां राम निर्गुण–सगुण रूप में प्रतिष्ठित हैं। निर्गुण की अपेक्षा सगुण रूप अधिक श्रेयस्कर है। राम विश्व के रचयिता, पालक और संहारक हैं। वे सर्वशक्तिमान एवं समस्त शक्तियों के मूलस्रोत हैं , वे करूणानिधान, सज्जन रंजन, पापनाशक, संकटमोचन, सेवकसुखदायक और अनंतपालक हैं। (7/46, 7/123, 7/111–14) वे राखनहारा हैं। वे गरीबों, दीन–हीन मनुष्यों से प्रेम करते हैं। धर्म संस्थापन, लोकमंगल और भारतभूमि हरण के लिए राम ने अवतार लिया है। राम का सौंदर्य अप्रतिम है। वे राजीवलोचन है। राज्य को बटोही की तरह त्याग देने वाले हैं– राजिवलोचन राम चले, तजइ बाप को राज बटाऊ की नहीं। (अयोध्या. 1/4 कैकेयी के प्रति राम के मन में दुर्भाव नहीं है। अजामिल जैसे करोड़ों पापियों के उद्धारकर्ता हैं। केवट के प्रति स्नेह रखने वाले, अहल्या को तारने वाले, वनमार्ग में प्रिया के पांव से कांटा निकालने वाले। अपने मुनिवेश में कामदेव को लज्जित करने वाले हैं। मनोहर, अनुपम सौंदर्यवान् हैं। आंखों में रखने योग्य हैं। ग्रामीण स्त्री और पुरुष दुखी हो कर कहते हैं कि रानी ने इन्हें वनवास क्यों दे दिया है?

वनवासी राम का सुंदर बदन है, सिर पर मुकुट रुप में जटाएं हैं, वक्षस्थल और भुजाएं विशाल हैं, नेत्र अरुणवर्ण हैं, भौंहें तिरछी हैं, मनोमुग्धकारी छवि है। सूर्य सदृश हैं। अलौकिक स्वरूप हैं, साक्षात् कामदेव हैं (पंच प्रयाग में धरैं रति नायकु) राम की उदारता का परिचय विभीषण के राज्याभिषेक के प्रसंग में मिलता है।राम के पराक्रम की प्रशंसा में कहे गए शब्द हैं कि रामचंद्र के क्रोध से सैकड़ों ब्रह्मा, विष्णु और शिव भी रक्षा नहीं कर सकते। राम की कृपालुता अद्‌भुत है। बालिवध के उपरांत राम सुग्रीव का राज्य दिला देते हैं। गोसाईं जी कहते हैं कि कोसलेश्वर श्रीरामचंद्र के अतिरिक्त कोई दूसरा ऐसा कृपालु और शरणागतों की रक्षा करने वाला नहीं है।

कोसलपति बिना तुलसी सरनागतपाल कृपाल न दूजो।

क्रू, कुजाति, कपूत, अभी, सुधरै, जो करै नरउ पूजो।।

(उत्तरकाण्ड–5)

सेवकों से भारी अपराध हो जाने पर भी राम उन्हें अपने मन में नहीं लाते हैं। गणिका, गज, गीध और अजामिल को क्षमा करने वाले अनाथों के सच्चे स्वामी हैं।

अपराध अगाध भएं जनतें, अपने उर आनत नाहिन जू।

गनिका, गज, गीध, अजामिलके गनि पातकपुंज सिराहिं न जू ।।

लिएं बारक नामु सुधामु दियो, जेहि धाम महामुनि जाहिं न जू।

तुलसी! भजु दीनदयालहि रे ! रघुनाथ अनाथहि दाहिन जू।।

(उत्तरकाण्ड 7)

राम के शील की सराहना करनी चाहिए। आर्त, दीन और अनाथों को रघुनाथ की छाया मिली है। धूल के समान

लघु सेवक को सुमेरु से भी बड़ा बनाने वाले, तुम्हारे समान सुशील, समर्थ और सुजान स्वामी हैं।

तुलसी तेहि सेवत कौन मरे! रजतें लघु को मेरुतें बारे ?

स्वामि सुसील समर्थ सुजान, सो तो सो तुम्हीं दसरत्थ दुलारे। (उत्तरकाण्ड, 12) तुलसीदास कहते हैं कि हे नाथ ! आपने निशाचर, भालु, वानर, केवट, पक्षी–जिस–जिसको अपनाया, वही तुरंत काम का हो गया। दुखी, अनाथ, दीन, मलीन–जो भी शरण में आए उन्हीं को अपना लिया, ऐसा आपका स्वभाव है। (वही, 13)

राम अनाथों का पालन करने वाले समर्थ साहब हैं। दोष, दुःख और दरिद्रता का नाश करने वाले हैं, दीनबंधु हैं, दयानिधान हैं। मित्रता निभाने वाले हैं। वे दयालु देव हैं। कुमति की निवृत्ति करने वाले स्वामी हैं। रूप और शील के सागर हैं, गुणों के समुद्र हैं, दीनों के बंधु, दया के निधान, ज्ञानियों में शिरोमणि तथा वचन और बाहुबल में शूरवीर हैं, उन्होंने गृद्ध का श्राद्ध किया, शबरी के फलों की प्रशंसा की, शिला बनी हुई अहल्या के शाप का शमन किया और भीलों के साथ प्रेम निबाहा। (15) राम वीरों के शिरोमणि और महाराजों के महाराज हैं, जिनका नाम लेते ही बंजड़ जमीन भी उपजाऊ हो जाती है। उनके समान बात का पक्का और भुजाओं का आश्रय देने वाला तथा दुखियों का सगा, दुर्बलों का दानी और दया का भण्डार दूसरा कौन है? (16) तुलसी को राम के शील स्वभाव पर खूब भरोसा है। वे दयानिकेत हैं, गरीबों के सदा सहायक हैं।

तुलसी स्वअर्जित सत्यभाव से कहते हैं– ''भला, किस स्वामी ने रीछ और वानरों को अपना खास माहली बनाया है ? श्रीराम चंद्र के द्वारा मेरे समान दीन, दुर्बल, कुपूत, कायर, और आलसी को बुलाकर सम्मान किया है। (23) दरिद्रता रूपी दोष को जलाने के लिए दावानल के समान और करोड़ों संकटों को काटने के लिए कृपाण रूप राम को भजने की सलाह तुलसी ने दिया है ।

तुलसीदास को राम पर अपरंपार भरोसा है। वे ही उनके लिए सबकुछ हैं। विनय भाव से रामको स्मरण करते हुए तुलसी लिखते हैं–

रामु हैं मातु, पिता, गुरु, बंधुऔ संगी, सखा, सुतु, स्वामि, सनेही।
रामकी सौंह, भरोसो है रामको, राम रंग्यो, रुचि राच्यो न केही।।
जीअत रामुमुएं पुनि रामु, सदा रघुनाथहि की गति जेहि।
सोई जिऐ जगमें तुलसी नतु डोलत और मुए धरि देही।।

(वही 36)

राम दानि दया दरिया है। रक्षक हैं। दुखियों के मित्र हैं। श्रीराम अनाथों के नाथ तथा विपत्ति के दिनों में अपने भक्तजनों के सच्चे सहायक हैं। राम की महिमा अपरंपार है। कोई भी मनुष्य चाहे योग, वैराग्य आदि बड़े–बड़े यज्ञ–अनुष्ठान करे, वह चाहे दान, दया, इंद्रिय निग्रह आदि करोड़ों उपाय करे, मुनि, सिद्ध, सुरेश, गणेश और महेश जैसे देवताओं की अनेक जन्मों तक सेवा करते–करते मृत्यु को प्राप्त कर ले, वेद और शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर ले, पुराणों का अध्ययन करे तथा अनेक युगों तक तपस्या की अग्नि में जलता रहे, परंतु तुलसी अपने राम से प्राण रोप कर कहता है कि रामचंद्र के अलावा कौन दुःख दूर कर सकता है। अर्थात् किसी अन्य की सामर्थ्य में नहीं है। राम क्षमाशील हैं। दुःखों का नाश करने वाले हैं। संकटमोचक हैं। अनाथों के नाथ तथा विपत्ति में सहायक हैं। दीनों के बन्धु और दयालु हैं। तुलसीदास के लिए राम माता, पिता, बंधु, आत्मीय, गुरु, पूज्य और परम हितकारी हैं। वे ही तुलसी के स्वामी, सखा और सहायक हैं। हमारे देश, कुल, धर्म–कर्म, धन, धाम और गति भी राम हैं। ऐसे गुण संपन्न राम पर तुलसी स्वयं को न्यौछावर कर देते हैं।

बलि जाउं ,राम ! करुनायतन,प्रनतपाल, पातकहरन।
बलि जाउं, राम ! कलि–भय–विकल तुलसिदासु राखिअ सरन।।

(उत्तरकाण्ड 111)

राम धर्म के सेतु हैं, वह भगवान हैं, वह संसार का कल्याण करने के लिए और पृथ्वी का भार उतारने के लिए मनुष्य के रूप में अवतीर्ण हुए हैं। नीति, प्रतीति और प्रीति का पालन करना प्रभु राम का स्वभाव है तथा लोक और वेद की मर्यादा बनाए रखना भी श्री रघुवीर का प्रण है। (उत्तरकाण्ड, 122) एक अन्य छंद में तुलसी राम का बखान करते हुए कहते हैं–

ईसनके इस, महाराजनके महाराज,
देवनके देव, देव ! प्रानहुके प्रान हो।

कालहूके काल, महाभूतनके महाभूत,
कर्महूके कर्म, निदान के निदान हो।।
निगमको अगम, सुगम तुलसीहू–सेको
एते मान सीलसिंधु, करुनानिधान हो।
महिमा अपार, काहू बोलको न वारापार,
बड़ी साहबीमें नाथ! बड़े सावधान हो।।

(उत्तरकाण्ड, 126)

कवितावली के राम सामाजिक एवं ग्रामीण स्तर पर राजनीति से जुड़ते हैं। विनयपत्रिका के ऐश्वर्यपूर्ण दरबारी राम राजदरबार त्याग कर गरीबों के बीच गांव में पदार्पण करते हैं। राम और सीता ग्रामीण दंपति के रूप में उपस्थित हैं। गांव में जाते हुए राम रतिपति, सीता रति तथा लक्ष्मण वसंत सदृश दिखाई देते हैं, जिन्हें देखकर ग्राम वधुएं, पशु–पक्षी, मुनि आदि मुग्ध हो जाते हैं। ये राम ऐसे लगते हैं कि मानो कामदेव पंचबाण धारण किए हुए हैं– 'जानि सिलीमुख पंच धरैं रतिनायकु हैं।' ये राम ग्रामवधू–सी सीता की आतुरता देखकर अश्रुमुख हो जाते हैं तथा सीता के पैरों में चुभे कांटे भी निकालते हैं। ग्रामवधुओं और ग्रामीण लोगों के भोलेपन पर वशीभूत होते हैं। सामाजिक जीवन में रघुनाथ एवं रघुनायक हैं। ये पंचबाणधारी रतिपति हैं। परब्रह्म के अवतार की अपेक्षा अनाथों के नाथ और गरीबों के पालक हैं। रमेश कुंतल मेघ के शब्दों में–''यहां श्रीराम के माध्यम से उन्होंने समकालीन ग्रामीण भारत की इतिहास कथा तथा अपनी करुण आत्मकथा, दोनों ही लिखी है। अतः यहां श्रीराम का स्वरूप कवि तथा लोक, दोनों को प्रतिबिंबित करता है।'' (तुलसी : आधुनिक वातायन से, पृष्ठ 46)

गीतावली में राम

''गीतावली'' में कवि ने राम के सौंदर्य पर विशेष ध्यान दिया है। बालक, किशोर और युवा राम के सौंदर्य दर्शन से कवि का मन अतिशय तन्मयता के साथ रमता है। सात कांडों में विभक्त इस कृति में माधुर्य भाव को महत्त्व मिला है। इसे राम कथा का सार संग्रह भी कहा गया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'गीतावली की रचना गोस्वामी जी ने सूरदास के अनुकरण पर की है।.... सूरदास में जिस प्रकार गोपियों के साथ श्रीकृष्ण हिंडोला झूलते हैं, होली खेलते हैं, वही करते हुए राम भी दिखाये गए हैं। इतना अवश्य है कि सीता की सखियों और पुरनारियों का राम की ओर पूज्यभाव ही प्रकट होता है।'' (हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ 101) वस्तुतः तुलसी श्रीराम के सौंदर्य और दिव्य गुणों से अभिभूत दिखाई देते हैं। गीतावली में राम के जन्म, नामकरण, कौशल्या का वात्सल्य प्रेम, बाललीला, धनुही लिए बालक राम का मृगया तथा चौगान आदि ऊंचे घराने वाला खेल खेलना तथा अवध की गलियों में गोली, भौंरा, चकडोरी जैसा सामान्य खेल भी खेलते हुए देखा गया है। राजकुमार राम, दूल्हा राम भी तुलसी को भाये हैं। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि राम का बालरूप, राजकुमार और दूल्हा स्वरूप के वर्णन में कवि तुलसीदास के अपने जीवन के अभावों की संतृप्ति है। यही रामचंद्र रामलला नहछू, जानकी मंगल और श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड एवं अयोध्याकाण्ड में अवतरित हुए हैं। राम के अयोध्यापुरी वापस आने पर आनन्दोल्लास छा जाता है।वे राजा बनाये जाते हैं। उनकी विरुदावली गाई जाती है, सूर की गोपियों की तरह सखियां राम के रूप सौंदर्य पर न्यौछावर हो जाती हैं। यह प्रेमाभक्ति की मधुरोपासना है। राम का माधुर्य स्वरूप आकर्षक है। वसंत विहार के प्रसंग में नागरी स्त्रियां हंसी–ठिठोली करती हैं। उन्हें रसीली गालियां देती हैं। राम मगन होते हैं। इस मौके पर उनके साथ तीनों भाई भी आनंदित होते हैं। लोकोत्सवों की ऐसी परंपरा अवध में बराबर मौजूद रही है।

गीतावली में राम की जीवनकथा के उन महत्त्वपूर्ण प्रसंगों को सम्मिलित किया गया है जिससे राम के उदारमना और करुणाशील व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। तुलसी ने विनयावनत होकर भक्तिभाव से राम का गुणगान किया है। वे कहते हैं कि रघुनाथ जी सर्वदा सत्पुरुषों को सुख देने वाले हैं–''रघुपति सदा संत सुखदायक (अयोध्या, 3/1) राम का सौंदर्य मनोमुग्धकारी है। कुछ पंक्तियां उद्धृत हैं—

नृपति–कुंवर राजत मग जात।
सुन्दर बदन, सरोरुह–लोचन, मरकत–कनक बरन मृदुगात। 15
मरकत–कलधौंत–बरन, काम–कोटि–कांति हरन (16/1)

करोड़ों कामदेव के सौंदर्य को भी फीका करने वाले राम का रूप सौन्दर्य शब्दातीत है। तुलसी ने राम के सौंदर्य

की अद्भुत कल्पना कर अपना भक्तिभाव अभिव्यक्त किया है। देखिए–

रोम रोम छबि निहारि आलि वारि फेरि डारि
कोटि भानु–सुवन सरद–सोम, कोटि अनंग।। 17/1

राम शोभा रूप समुद्र के सुन्दर रत्न के समान हैं। ये रूप, शोभा और प्रेम की मनोहर मूर्तियां हैं।ये वीर, बलवान्, धैर्यवान और धनुर्धरों में अग्रगण्य अथवा चौदहों भुवनों की रक्षा करने वाले महाकीर्तिशाली हरि ही हैं।

रूप–सोभा–प्रेम के–सए कमनीय काया हैं
मुनिवेश किये किधौं ब्रह्म–जीव–माय हैं।।
वीर, बरियार, धीर, धनुधर–राय हैं
दसचारि–पुर–पाल आली उरगाय हैं।।

(28/3–4)

तुलसी के राम बड़े ही धीर वीर हैं, कृपालु हैं और सभी का पालन करने वाले हैं। वे धर्मधुरीण हैं। उनका मनोहर मुखमंडल, विशाल वक्षस्थल और भुजाएं हैं। अपने शरीर की कांति से वे करोड़ों कामदेवों को लज्जित करते हैं। उनके नेत्र कमल के समान है। शरच्चंद्र के समान सुन्दर मुखमंडल है, सिर पर जटाएं हैं तथा अरुण कमल के समान अतिसुंदर नेत्र हैं, वे करोड़ों कामदेवों के मद का मंथन करने वाले हैं।

भुज प्रलंब, सब अंग मनोहर, धन्य हो जनक–जननी जेहि आए।

सरद–बिमल–बिधु–बदन, जटासिर, मंजुल अर्जुन सरोरुह लोचन।
तुलसीदास मनमय मारग में राजत कोटि–मदन–मदमोचन।। (36/2–3)
सुंदर बदन, बिसाल बाहु–उर, सीस जटा रचित मुकुट बनाए।
चितवत मोहि लगी चौंधी सी, जानौं न, कौन, कहां तें धौं आए।। (35/2–3)

राम का विरही रूप सीता हरण के पश्चात् हमारे सम्मुख उपस्थित होता है। विरही राम, जिनकी दशा देखकर देवता लोग बड़े व्याकुल हो गये और वन अग्नि के बिना ही दग्ध से हो गये हैं। (अरण्य काण्ड 10/3)

राम करुणाशील हैं। वे अपने भक्तों एवं शुभचिंतकों के प्रति विशेष द्रवित होते हैं। तभी तो पक्षिराज जटायु को क्षत–विक्षत देखकर राम बहुत द्रवित हो जाते हैं। उन्होंने गीध को गोद में उठा लिया और उनके नेत्रों से अश्रुधार बह निकली। राम की दशा का वर्णन तुलसी ने इन शब्दों में किया है–

राघौ गीध गोद करि लीन्हों।
नयन–सरोज सनेह–सलिल सुचि मनहु अरघजल दीन्हों।
सुनहु, लषन ! खगपतिहि मिले बन मैं पितु–मरन न जान्यौ।
सहित न सक्यऔ सो कठिन विधाता, बड़ो पछु आजुहि भान्यौ।।

(अरण्यकाण्ड 13/1–2)

जटायु भी भली–भांति राम की शरणागतवत्सलता से परिचित है।

नीके कै जानत राम हियो हौं।
प्रनतपाल, सेवक–कृपालु–चित, पितु–पटतरहिदियो

(अरण्यकाण्ड 14/1)

राम ने मृत जटायु का अंतिम संस्कार किया और उसे अपने निजधाम भेज दिया।

शबरी से भी राम की भेंट होती है। शबरी एक आदिवासी नारी है जो राम की परमभक्त है और अनेक वर्षों से अपने क्षेत्र में राम के आगमन और उनके दर्शन की बलवती इच्छा लिए हुए प्रतीक्षा कर रही थी। उसके लिए राम प्रानप्रिय पाहुंने हैं। राम दीनवत्सल, मृदुलचित्त, गरीबनवाज, पतित पावन हैं। (अरण्यकाण्ड 2) शबरी भी राम के लिए माता है।

राम की शरणागतवत्सलता अप्रतिम है। सुग्रीव हों चाहे विभीषण, उन्हें राम केवल शरण ही नहीं देते हैं, अपितु उन्हें उनका अधिकार अर्थात् राज्य दिलाने का वचन भी निभाते हैं। राम ने विभीषण को शरण दिया है। अपने प्रिय भाई भरत की तरह विभीषण को गले लगाया। उनका कुशलक्षेम पूछा। करुणाकर राम की करुणा होने पर विभीषण का मृत्युभय दूर हो गया। लंका का राज्य पाने की शंका दूर हो गई तथा कोई ईर्ष्या–द्वेष नहीं रह गया है।

करुनाकर की करुना भई ।
मिटी मीचु, लहि लंक संक गइ, काहूसों न खुनिस खई।।

(सुन्दरकाण्ड 37/1)

दीन–हीन लोग भी राम की कृपा के पात्र हैं। तुलसी कहते हैं कि जिनकी भुजाएं दीनों की रक्षा करने के लिए दीवार रूप हैं तथा जो उदारशिरोमणि हैं। राम की शरण में जाने पर सभी का भला होता है, चाहे वह धनी हो या निर्धन, बड़ा हो या छोटा, बुद्धिमान् हो या मूर्ख अथवा दुर्बल हो या अति बलवान। जो पंगु, अन्धे, गुणहीन और अकिंचन हैं, जिन्हें मांगने पर जल तक नहीं मिलता, उन्होंने भी यदि संसार में जन्म लेकर राम के राजमार्ग (भक्ति योग) का अवलंबन किया है तो प्रभु ने उनको खूब निभाया है। रामनाम के प्रताप रूप सूर्य की प्रखर किरणों में कलिकल्मष भी तुषार के समान पिघल जाता है। अजामिल जैसा दुष्ट भी भवसागर से पार हो गया था। प्रभु का नाम स्मरण करते ही सबके लिए आकाश, जल और स्थल सभी मंगलमय हो जाते हैं।

गये राम सरन सबकौ भलो।
गनई–गरीब बड़ो–छोटो, बुध–मूढ़, हीनबल–अतिबलो।
पंगु–अंध, निरगुनी–निसंबल, जो न लहै जाचे जलो।
सो निबह्यो नीके, जो जनमि जग राम–राजमारग चलो।
नाम–प्रताप–दिवाकर कर खर गरत तुहिन ज्यों कलिमलो।
सुतहित नाम लेत भवनिधि तरि गयो अजामिल–सो खलो।।
प्रभुपद प्रेम प्रनाम–कामतरु सद्य बिभीषन को फलो।
तुलसी सुमिरत नाम सबनिको मंगलमय नभ–जल थलो।।

(सुन्दरकाण्ड, 42)

राम के भ्रातृप्रेम का अनूठापन लक्ष्मण मूर्छा प्रसंग में दिखाई देता है। राम का सारा पुरुषार्थ थक गया भरोसेमंद भाई लक्ष्मण के प्राण संकट में पड़ गए हैं। राम का करुण विलाप हर किसी के मन को विगलित कर देता है।

मेरो सब पुरुषारथ थाको ।
बिपति बंटावन बंधु–बाहु बिनु करौं भरोसो काको ?
सुन, सुग्रीव ! सांचेहूं मोपर फेरयो वदन बिधाता।
ऐसे समय समर– संकट हौं तथ्यों लषन–सो भ्राता।।

(लंकाकाण्ड, 7/1–2)

लक्ष्मण अपने प्रति राम के प्रेम को जानते हैं। तभी तो वे कहते हैं– 'हृदय घाउ मेरे, पीर रघुबीरै।।' उत्तरकाण्ड में रामरूप वर्णन (2, 3, 4) में तुलसी की अपनी दृष्टि प्रकट हुई है।

गीतावली में रामजन्म के अवसर पर छायी खुशियां देखते बनती है। यहां राजकुमार राम प्रमुख हैं जबकि अंत में रामराज्य की प्रतिष्ठा करने वाले राम प्रमुख हैं। राजमहल में जन्मे राम, किशोर वय के राजकुमार राम तथा आदर्श राजा राम हैं। राम हिंदू सम्राट् हैं। तुलसी ने धर्मपारायण तथा आनंदपूर्ण जीवन की कल्पना कर एक राजकुमार की सुंदर छवि गढ़ी है। राम का व्यक्तित्व ललित और ऐश्वर्यमंडित है।

विनयपत्रिका के राम

तुलसीदास ने अपने आराध्य को प्रार्थना पत्र अर्थात् अरजी भेजकर आत्मनिवेदन किया है। यह विनयपत्रिका आध्यात्मिक है न कि भौतिक। विनय के पदों में तुलसी ने अपनी दीनता और कमजोरियों का जो वर्णन किया है वह सभी देश–कालों में सांसारिक मनुष्यों की कमजोरियां हैं। यह संपूर्ण जगत् कलिकाल से पीड़ित है। तुलसी सभी की फरियाद लेकर राम के सम्मुख उपस्थित होते हैं। विनयपत्रिका के राम सम्राटों के भी सम्राट् हैं। राजाधिराज श्रीराम साहिब हैं जो मध्यकालीन बादशाह के सभी नियम–कानूनों तथा प्रशासनिक मर्यादाओं से पदविभूषित हैं। ईश्वर ही जगदीश्वर के रूप में सिंहासन पर बैठा है। फरियाद करने वाले तुलसीदास जी हैं।

विनयपत्रिका में जिन सात ड्योढ़ियों की चर्चा की गई है उन परिसरों पर अधिकारी तैनात हैं। सातवीं ड्योढ़ी के पार भगवान राम का राजमहल है जहां तीन विशिष्ट अंगरक्षक–लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न तैनात हैं। तुलसीदास वहां प्रवेश करते हैं और जगजननी जानकी से राम के लिए सिफारिश करने की प्रार्थना करते हैं और अंत में अविरल रामभक्ति का वरदान मांगते हैं। तुलसी के राम गरीबनिवाज हैं। तुलसी प्रार्थना पत्र लेकर महाराजा राम के सम्मुख उपस्थित होते हैं। बहुविध विनय के पश्चात उनका राम से साक्षात् होता है। तुलसी का निवेदन है कि विनयपत्रिका पर राम की स्वीकृति और हस्ताक्षर आवश्यक है। अंत में तुलसी राम से अविरल रामभक्ति का वरदान मानते हैं।

विनयपत्रिका में राम की ईश्वरीयता का प्रतिपादन हुआ है। राम ब्रह्म हैं, राम सच्चिदानंद स्वरूप, सर्वज्ञ और आनंदनिधान हैं। (43/1, 51/1, 53/6, 55/1) तुलसी जानते हैं कि राम ही उसका उद्धार करेंगे, बांह पकड़ कर उसे अपना लेंगे, वे रघुराई प्रीति की रीति जानते हैं, वे

अकारण ही परोपकारी हैं, वे गणमान्यों, श्रेष्ठियों का अनादर करके गरीब का आदर करते हैं। उन्हीं की कृपा से गणिका, गीध, और बधिक को भी मुक्ति मिल गई। इस तरह तुलसी के सिंहासनारूढ़ श्रीराम साहिब दीनदयाल, दीनबंधु, गरीबनिवाज, पतितपावन, दास पर प्रीति करने वाले और सहजशील स्वभाव वाले हैं। वे विश्वकर्ता, पालक एवं संहारक हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शिव की शक्ति के प्रतीक हैं और उन्हीं की शक्ति से शक्तिमान हैं। (61/8, 53/6, 55/9, 135/3) उनका स्वरूप अनिर्वचनीय है। वे तत्त्वत : निर्गुण और सगुण दोनों हैं। प्राकृत गुणों से रहित और दिव्य गुणों से युक्त हैं, विरोधी गुणों के आशय हैं। (50/8, 56/3, 53/3)

ब्रह्म राम देवों तथा सज्जनों की रक्षा पृथ्वी के भार –हरण करने वाले, धर्म–संस्थापन एवं भक्तों के कल्याण के लिए विभिन्न प्रकार के अवतार धारण करते हैं (248/2, 43/1, 52/7) माया राम की वशवर्तिनी है । माया के बंधन की निवृत्ति के लिए राम की दया आवश्यक है। डॉ माताप्रसाद गुप्त का कथन है कि ''निर्गुण राम को उनकी लीला से उनकी माया जब ढंक लेती है तो उसकी संज्ञा मूल प्रकृति होती है। राम के क्षुभित होने पर इस मूल प्रकृति से महत् तत्त्व उत्पन्न होता है।'' (तुलसीदास, पृष्ठ 448) राम के द्वारा क्षोभित माया ही विश्व की रचना करती है। सृष्टि प्रक्रिया के वर्णन में तुलसी ने वैष्णव वेदांत और सांख्य का समन्वय किया है। उसमें कहा गया है कि माया राम की अभिन्न शक्ति है और जगत राम का अस्वीकृत परिणाम है । माया ही प्रकृति के रूप में जगत का उपादान कारण बनकर विश्व का निर्माण करती है। तुलसी ने न्याय वैशेषिक और शैव शाक्त मतों की ओर भी संकेतित किया है। उनके अनुसार विश्व राम से निर्मित, शासित, अनुस्यूत और व्याप्त है–विश्व रामरूप है, राम विश्वरूप है । जगत् राम का लीला विलास है । जीव राम का अंश है, सच्चिदानंद स्वरुप है। राम सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी हैं। विनयपत्रिका में गोस्वामी जी ने लोक में फैले अधर्म, अनाचार, अत्याचार आदि का भी वर्णन किया है। वे स्वयं कलिकाल की पीड़ा झेल रहे हैं। आत्मनिर्वासित तुलसी की दीनता और हीनता श्री राम की कृपा तथा प्रीति से समाप्त हो सकती है। तुलसी को लगता है कि श्रीराम साहिब गरीबनिवाज होकर भी दरबार के शिष्टाचारों में बंध गए हैं और सामान्य जनों के बीच जा नहीं पाते हैं। वास्तव में विनयपत्रिका के रघुराज श्रीराम साहिब गीतावली के राजाधिराज राम की तरह भक्त की व्यथा और उसके आत्मसंघर्ष को प्रतिबिंबित करते हैं।

वस्तुतः श्रीराम तुलसी काव्य के ऐसे महानायक हैं जिनके दिव्य चरित्र के आभामंडल में मनुष्य ही नहीं, मानवेतर समस्त जगत्, यहां तक की देव असुर सभी अनुप्राणित हुए हैं। वाल्मीकि से लेकर तुलसी तक और आगे भी कवियों ने राम की चरितकथा का ऐसा ताना–बाना बुना है जिससे भारतीय जनमानस युगों तक स्पंदित होता रहेगा। तुलसी की कविता के रेशे–रेशे में राम के महनीय व्यक्तित्व की झलक मिलती है। रामचरितमानसेतर काव्य में तुलसी ने जिस राम की खोज की है उसका समग्र चरित्र मानस में ही उद्घाटित होता है। अपनी पूर्ववर्ती काव्यकृतियों में तुलसी ने जिस राम के चरित का गायन किया है उसके विराट स्वरूप की अभिव्यक्ति मानस में ही संभव हुई है। आरंभिक कृतियों में राम को समझने–बूझने की जो दृष्टि क्रमशः तुलसी में विकसित होती गई है वही मानस के व्यापक कथा फलक पर जीवन–दर्शन बन जाती है। दरअसल तुलसी ने अपने आरंभिक जीवनानुभवों के आरंभिक ज्ञान को भक्ति भाव में निमज्जित होकर मानसेतर रचनाओं में पदे–पदे पिरोया है। युवा कवि तुलसी के राम राजकुमार और दूल्हा हैं। प्रौढ़ावस्था में आते हुए तुलसी के मन में भय और भक्ति यानी जीवन की यथार्थता और आध्यात्मिकता का आत्मसंघर्ष होता है।तुलसी के प्रिय राम उन्हें अपने लगते हैं जो गांवों में, वनों में सामान्य जनों के बीच घूमते फिरते हुए दिखाई देते हैं। परब्रह्म राम तथा राजराजेश्वर राम तुलसी के दार्शनिक और अध्यात्मिक मन को अवश्य भाये हैं, किंतु उनकी आत्मा का जुड़ाव संघर्षशील राम से है। यदि हमें मानस के राम और उनकी जीवन कथा के आरंभिक सूत्रों की तलाश करना है तो रामचरितमानसेतर साहित्य का अवलोकन करना अपरिहार्य है।

◆

मो. : 9425656284

अयोध्या में लौटा स्वर्णिम इतिहास

—अशोक कुमार सिन्हा

भगवान विष्णु ने त्रेतायुग में अयोध्या में जब राम के रूप में अवतार लिया था तब अयोध्या की धरती धन्य हो गई थी। इस धरती की पुण्यता, भव्यता और उल्लास तब भी कितना भव्य रहा होगा जब चौदह वर्ष का वनवास बिता कर प्रभु राम, जानकी और लक्ष्मण ने अयोध्या की भूमि पर पुनः अपने चरणों से इस धरती को धन्य किया होगा। अयोध्यावासियों ने इस अवसर पर भव्य दीपावली मनाई थी। नर–नारी, बाल, पशु, पक्षी और यहां का कण–कण पुलकित, मुदित और हर्षित था। यह वर्णन हमें प्राचीन ग्रन्थों रामायण और रामचरित्र मानस में पढ़ने को मिलता है। जनमानस, संत–महंत पुलकित और प्रफुल्लित थे। दुंदुभि के साथ मंगल ध्वनि के मध्य आकाश से पुष्प वर्षा भी हो रही थी। दिग्विजय का शंखनाद हो रहा था। दरवाजों पर बन्दनवार सजे थे और चौक चन्दन से रंगोली उकेरी गई थी। अयोध्या में रामनाम की गूंज हो रही थी। यह जानकारी मनोहारी रूप में हमारे सनातन सद्ग्रन्थों में वर्णित है। हम त्रेतायुग के उस परमानन्द की अनुभूति कर के अपने जीवन को धन्य मनाते है।

त्रेता में श्रीराम के अयोध्या पुनरागमन का वही दृश्य कलिकाल में पुनः पौष शुक्ल द्वादसी, विक्रमी संवत 2080, सोमवार, 22 जनवरी, 2024 को उपस्थित हुआ जब श्रीराम जन्म भूमि, अयोध्या में रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन हुआ। नक्षत्र मृगशिरा, मुहूर्त अभिजीत की शुभ घड़ी 12.29.08 से 12.30.32 के मध्य प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भी भौतिक भवनों से लेकर मानव मानस के द्वार गैरिक ध्वजाओं और बन्दनवार से सज गये। रामोत्सव–लोकोत्सव एकाकार हो गये। प्राण प्रतिष्ठा प्रक्रिया वैश्विक पर्व का स्वरूप ले चुकी थी। जनआकांक्षाएं शंख ध्वनि और भजन कीर्तन से अपने मुदित मन को अभिसिंचित कर रहा था। सरयू की लहरें नृत्य कर रहीं थी। हनुमान गढ़ी, कनक भवन और पूरी विश्व में हिन्दू निवास जैसे स्वर्णिम आभा से प्रमुदित थी। इस बार अवध में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व

में दीपावली मनाई जा रही थी। भारत सहित विश्व के अनेक स्थानों पर श्री रामचन्द्र कृपालु व मंगल भवन अमंगल हारी के भजन गूंज रहे थे। अयोध्या में इन्द्र योग मेष लग्न के समय जब भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघ चालक डा. मोहन भागवत, उ.प्र. के कर्मशील मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ काशी के आचार्य श्री गणेशवर शास्त्री उनकी टीम, जब वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य कार्यक्रम सम्पन्न कर रहे थे तब सम्पूर्ण भारत ही नहीं विश्व में जहाँ–जहाँ सनातनी व भारतवंशी थे, सभी राममय हो कर रघुनन्दन का अभिनन्दन कर राम का जय घोष कर रहे थे। मन्दिर के बाहर उपस्थित भक्तों पर हेलीकाप्टर से पुष्पवर्षा हो रही थी। कंचन कलश, बन्दनवार, ध्वज और टनों फूल से सुसज्जित नयनाभिराम सजावट पूरा विश्व देख रहा था। भगवान राम, राजा राम नाम की वर्षा हो रही थी। भाव विह्वल अयोध्या भक्ति की शक्ति की अनुभूति कर रही थी। सम्पूर्ण देश और विदेशों में राम नाम भाव की व्यापकता, अद्वितीय सभ्यतागत कार्यक्रमों से ओत प्रोत था। हर भारतीय की आंखें भावुक थीं, आस्था का समुद्र उमड़ा था। अयोध्या में सर्वपंथों के आचार्य, प्रमुख संत उपस्थित रहे। क्या नयनाभिराम दृश्य था। विधाता से की गई शपथ पूर्ण हो रही थी। मनोरथ सफल हो रहा था। यह अवसर भगवान विष्णु के कर्मावतार की पवित्र तिथि भी थी। वर्तमान पीढ़ी अपनी इन्हीं आंखों से ध्येय का दर्शन कर रही थी। आरती के समय मृदगंम स्वरगंम, शहनाई, घन्टा घड़ियाल और पवित्र मंत्रोच्चार हो रहे थे। इसी समय दूरदर्शन सहित सभी टी.वी. चैनल 22 देशी और 7 विदेशी भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित

कर रहे थे। कहीं कोई व्यवधान नहीं सर्वत्र शान्ति का संदेश जा रहा था। जिस सरयू का वर्णन ऋग्वेद में है, उसकी लहरें आनन्द की अनुभूति से हिलोरें ले रही थीं। सूर्य भगवान ने भी इस अवसर पर घने कोहरे को छांट कर अपनी आंखें खोली थीं अतः गुनगुनी धूप निकल आई थी। मन्दिर के इशानकोण व आग्नेय कोण में बैठे भारत भर से आये संत महात्मा, अपने अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध नागरिक, कलाकार, खिलाड़ी सहित अनेक गणमान्य अतिथि व रामजन्मभूमि आन्दोलन में संघर्षरत रहे परिवारजन अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की मर्यादा बढ़ा रहे थे। अनुष्ठान सिद्धी की भावना से ओतप्रोत साधना और तपस्या पूर्ण कर मनसा–वाचा–कर्मणा तप द्वारा परिशुद्ध हो कर 'तप–तप शर्त तपश्चर्य' की भावना को व्यक्त कर रहे थे।

यह कार्यक्रम वस्तुतः त्रेतायुग की याद दिला गया। भारत को इसी दिव्य दिन की प्रतीक्षा थी। त्रेतायुग के वैभ्व की आज पूरी दुनिया दर्शन कर रही थी। बालरूप रामलला की प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति की भव्यता व सुदर्शन रूप से पूरी दुनिया दर्शन कर परम संतोष का अनुभव कर रही थी। अपने सम्बोधन में डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि रामलला के साथ भारत का 'स्व' लौट आया है। नया भारत खड़ा हो रहा है। अयोध्या उस नगरी का नाम है जहां द्वन्द्व नहीं है। आगे हमें रामराज्य का वर्णन हमें पूरा करना है। बिना अहंकार के धर्म के चार मूल सत्य करुणा, अहिंसा व तपस्या के बल पर मन्दिर पूरा होते–होते विश्व गुरु बनाने का कार्य पूरा करना है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि हमारे सभी के राम आ गये हैं। गर्भ गृह में ईश्वरीय चेतना का साक्षी बन कर मैं अनुभव कर रहा हूं कि आज का दिन नये कालचक्र का उद्‌गम सिद्ध होगा। मन्दिर न्यायबद्ध हो कर बना है यही कारण है कि सागर से सरयू तक की यात्रा में हमें भारत के एकत्व की अनुभूति हुई। राम आग नहीं ऊर्जा हैं। विवाद नहीं समाधान हैं। वर्तमान नहीं अनन्तकाल हैं। आज का रामोत्सव सर्वव्यापकता और परम्पराओं का उत्सव है। हमें अगले एक हजार वर्षों की नींव रखनी है। हमें राम से राष्ट्र तक, देव से देश तक चेतना का विस्तार करना है। इस अवसर पर उन्होंने शबरी, निषादराज, जटायू और गिलहरी का स्मरण करते हुये कहा कि आने वाला समय भारत के अभ्युदय का है। उन्होंने प्राचीन कुबेर टीला पर प्राचीन शिवलिंग की भी उपासना की तथा जटायूराज की विशाल प्रतिमा को वन्दन पूजन भी किया। श्रमबीरों का सम्मान किया तथा उनकी तुलना त्रेतायुग के नल–नील व वानरगणों से करते हुए उनके ऊपर पुष्पवर्षा भी की। यह दिन विजय नहीं विनय का दिन है यही नहीं उन्होंने नवप्रतिष्ठित राम विग्रह के समक्ष साष्टांग दण्डवत भी किया।

अवध पुरी सोहइ एहि भांती।
प्रभुहि मिलन आई जनु राती।।

◆

मो. 8303982542

को कहि सकई प्रयाग प्रभाऊ

प्रयागराज

सांस्कृतिक धरोहरों की पुनर्प्रतिष्ठा

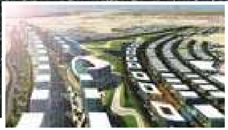

- कुम्भ-19 में रिकॉर्ड 24 करोड़ श्रद्धालुओं/पर्यटकों का आगमन
- महाकुंभ-2025 के भव्य आयोजन के लिए ₹2,500 करोड़ का प्रावधान
- नैनी में 1,138.78 एकड़ में सरस्वती हाईटेक सिटी का विकास
- प्रयागराज में सॉफ्टवेयर पार्क की स्थापना का कार्य प्रगति पर
- प्रयागराज किले में स्थित पौराणिक अक्षयवट की परिक्रमा सुविधा
- भारद्वाज आश्रम के द्वार एवं गलियारे का विकास, सौंदर्यीकरण
- 'द्वादश माधव' सर्किट के तहत 'द्वादश माधव' मंदिरों का कायाकल्प

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

सदियों की तपस्या के बाद मिले राम

—गोलेश स्वामी

सदियों की तपस्या अंततः रंग लाई। अपने अयोध्या धाम में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान का भव्य मंदिर बन गया और उसमें बाल रूप में राम लला विराजमान हो गए। इस शुभ अवसर पर अयोध्या में एक बार फिर से त्रेतायुग लौट आया। अयोध्या में आस्था का समुद्र उमड़ पड़ा। यह बात दीगर है कि इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि किसी देश के बहुसंख्यक समाज को अपने धर्म स्थल के लिए इतने लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा। इन वर्षों में सैकड़ों लोगों ने अपने आराध्य भगवान राम के मंदिर निर्माण की खातिर अपना बलिदान दिया। देश की सर्वोच्च अदालत के फैसले से राम मंदिर निर्माण का रास्ता साफ हुआ। यह सही है कि अदालत के फैसले के बाद भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण ट्रस्ट के जरिए जनता के पैसे से हुआ। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि सुप्रीम कोर्ट में प्रभावी पैरवी कराने और राम मंदिर के भव्य मंदिर का निर्माण जल्द से जल्द कराने में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अहम भूमिका निभाई। यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि मोदी जी और योगी जी की दृढ़ इच्छा शक्ति ने ही गर्भ गृह में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा कराकर 22 जनवरी, 2024 के दिन को दुनियां के इतिहास में दर्ज़ करा दिया।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघ चालक डा. मोहन भागवत ने इस मौके पर कहा कि राम मंदिर के निर्माण से भारत का स्वाभिमान लौट आया है। यह नए भारत का प्रतीक है। पांच सौ साल के बाद यह स्वर्ण दिन देख रहे हैं। इसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने तय किया है, अब हमें भी तय करना है कि राम राज्य लाना है। आपस में समन्वय करके सेवा, परोपकार करना है। सरकार तो अपना कार्य कर ही रही है, हमारा भी कर्तव्य है कि जहां पीड़ा हो तो वहां दौड़े जाएं।

राम क्यों कहलाए मर्यादा पुरुषोत्तम

यह सर्वविदित है कि अयोध्या धाम देश–विदेश के करोड़ों हिन्दुओं की आस्था का केंद्र है। क्योंकि उनके आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने यहीं जन्म लिया था। मर्यादा पुरुषोत्तम भी वे यूं ही नहीं कहलाए। इसके लिए उन्हें अनेक कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ा। सूर्यवंश के

प्रतापी राजा दशरथ और महारानी कौशल्या के महाप्रतापी सुपुत्र राम भगवान विष्णु के अवतार थे। लेकिन भगवान विष्णु के अवतार होते हुए भी उन्होंने 14 साल का वनवास काटा और राजा होते हुए भी आम आदमी की तरह अनेक कष्ट सहे। जंगल जंगल भटके। खीर मोहन की जगह कंदमूल फल खाकर गुज़ारा किया। लेकिन चौदह साल के इतने लंबे समय में भी उन्होंने कड़ी से कड़ी परीक्षा के समय भी अपना धैर्य, नैतिकता और मर्यादा को नहीं छोड़ा। इसीलिए वे भगवान श्रीराम के साथ–साथ मर्यादा पुरुषोत्तम भी कहलाए।

इतिहास में दर्ज हुआ 22 जनवरी का दिन

बाईस जनवरी, 2024 के ऐतिहासिक दिन का इंतजार काफी लंबा था, लेकिन करोड़ों हिन्दुओं के चेहरे पर स्वाभिमान, मुस्कुराहट और सुकून लाने वाला है। क्योंकि इस दिन उनके आराध्य राम लला को वर्षों टेंट में गुजारने के बाद भव्य मंदिर नसीब हुआ। राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के समारोह का दृश्य नयनाभिराम था। सबके मन में उत्साह, चेहरे पर मुस्कुराहट और आंखों में खुशी के आंसू थे। लगा जैसे त्रेतायुग साकार हो उठा। सरयू का जल हिलोरें मार रहा था। उसकी लहरें प्रभु से मिलने को व्याकुल थीं। सरयू की व्याकुलता में भी अपनापन है, आखिरकार एक वही तो है जो अपने राम के जन्म से लेकर सांसारिक होने तक की गवाह है। सरयू गवाह हैं त्रेतायुग से लेकर कलयुग तक की। अयोध्या धाम की राजशाही, उसके उदासीन होने और अब फिर सजने की गवाह।

त्रेतायुग की तरह सजी अयोध्या

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने जहां अयोध्या को फिर से सजाने संवारने में पूरा सहयोग किया, वहीं योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली उत्तर प्रदेश सरकार ने इस कलयुग में भी अयोध्या धाम को त्रेतायुग का अयोध्या धाम बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। उनके प्रयास अभी भी जारी हैं। योगी सरकार ने यहां काफी विकास कराया है। यहां आने वाले लाखों–करोड़ों श्रद्धालुओं की

अयोध्या यात्रा और दर्शन को आसान बनाने के लिए वहां बुनियादी सुविधाओं के लिए अरबों रुपये की अनेक योजनाओं–परियोजनाओं पर कार्य शुरू किया है। गंगा जी की तरह हर की पैड़ी की तर्ज पर सरयू जी पर राम की पैड़ी विकसित की गई है। भविष्य में और भी घाटों और कुंडों के सुंदरीकरण की योजना है। विकास और सुंदरीकरण की कई योजनाओं और परियोजनाओं के पूरा होने से अयोध्या धाम काफी सुंदर हो गया है। इसे और सुंदर बनाने का योगी सरकार का काम जारी है। अयोध्या में रिकार्ड समय में भव्य हवाई अड्डा भी तैयार हो गया है। केंद्र की मोदी सरकार ने यहां अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे को एनओसी दे दी है। इससे यहां पर भविष्य में विदेशी श्रद्धालु भी सीधे हवाई जहाज से आ–जा सकेंगे।देश के अनेक शहरों की सीधी फ्लाइट अयोध्या आ–जा रही हैं। इसका शुभारम्भ योगी जी कर चुके हैं। प्राण प्रतिष्ठा वाले खास दिन जैसे ही रामलला के दर्शन के लिए मंदिर के पट खोले गए करोड़ों लोग राम लला की नयनाभिराम छवि देख मोहित हो उठे। उनके बाल स्वरूप में एक आश्चर्यजनक दिव्य आभा है। सम्मोहन की शक्ति है। जिसे देखकर क्या आम और क्या खास सभी राम का जय–जयकार कर उठे। संतों के खुशी के आंसू छलछला आए। अयोध्या त्रेतायुग की तरह सजी–धजी और सुंदर नज़र आई। सनातन की अपरम्पार खुशी इसी से नजर आई कि अयोध्या धाम में राम लला के विग्रह के प्राण प्रतिष्ठा के दिन त्रेतायुग की तरह ही करोड़ों लोगों ने दीपावली मनाई। घर–घर में राम पूजे गए। दीप जलाए गए और जमकर आतिशबाजी की गई।

अमेरिका और ब्रिटेन भी नहीं रहे पीछे

सबसे बड़ी बात यह है कि राम लला की प्राण प्रतिष्ठा की खुशी का इज़हार करने में विदेशी भी पीछे नहीं रहे। देखा गया कि अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया और कनाडा सहित दुनियां के कई देशों के सनातनियों ने खुलकर खुशी मनाई। अमेरिका में तो हिन्दुओं ने बाकायदा मंहगी कारों से सड़कों पर रैली निकालकर भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर के निर्माण और गर्भ गृह में राम लला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा की अपने ही अंदाज में खुशी मनाई। यहां तक कि स्वयं को गर्व के साथ हिन्दू बताने वाले ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने सैकड़ों सनातनियों के साथ भजन–कीर्तन में भाग लिया। करें भी क्यों ना, आख़िरकार राम उनके भी तो आराध्य हैं। ऐसे में किसको खुशी नहीं होगी।

गोरक्षपीठ की रही अहम भूमिका

यूं तो राम मंदिर निर्माण के लिए संघर्ष की गाथा सदियों लंबी है। राम मंदिर के लिए संतों, महंतों, कारसेवकों के साथ–साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल और अन्य सनातनी संगठनों ने जमीन से लेकर अदालत तक लड़ाई लड़ी। लेकिन इसमें सबसे अहम भूमिका गोरक्षपीठ की पांच पीढ़ियों की रही। आजादी के बाद इस आंदोलन को पीठाधीश्वर महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज और महंत अवेद्यनाथ जी महाराज तथा उनके बाद महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने बढ़ाया। महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज ने राम मंदिर निर्माण का सपना देखा और नाथ संप्रदाय के साधु–संतों के साथ इस मुद्दे को उठाया। उनके शरीर छोड़ने के बाद महंत अवेद्यनाथ ने बाकायदा इसे राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप दिया और सड़क से संसद तक इसे मुद्दे की लड़ाई लड़ी। उनके साथ और

उनके बाद गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने यह लड़ाई लड़ी। यह सोने में सुहागे वाली बात है कि गोरक्षपीठ के ही महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज आगे चलकर इस प्रदेश के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर आसीन हुए और शायह यह रामजी की ही इच्छा और उनके गुरुओं का ही आशीर्वाद था कि उनके मुख्यमंत्री रहते राम मंदिर का भव्य निर्माण और राम लाल की प्राण प्रतिष्ठा का शुभ कार्य सानंद संपन्न हो सका। इससे योगी जी महाराज और उनके गुरूओं का सपना पूरा हो सका। योगी जी ने भी एक मुख्यमंत्री के रूप में पूरे मन, कर्म और वचन से राम मंदिर के भव्य निर्माण, राम लला की प्राण प्रतिष्ठा और अयोध्या के विकास को पूरा कराने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी।

संघर्ष करने वालों में ये भी रहे शामिल

राम मंदिर निर्माण के लिए संघर्ष करने वालों में गुरु गोलवलकर, डा. हेडगेवार, बाला साहब देवरस, अटल विहारी बाजपेई, लाल कृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, नरेंद्र मोदी, प्रो. राजेंद्र सिंह उपाख्य रज्जू भैय्या, सुदर्शन जी, भाऊराव देवरस, कुशाभाऊ ठाकरे, सुंदर सिंह भंडारी, कल्याण सिंह, अशोक सिंहल, मोहन भागवत, कलराज मिश्र, राजनाथ सिंह, महाराणा भगवत सिंह, विष्णुहरि डालमियां, हरमोहन लाल, आचार्य गिरिराज किशोर, आचार्य धर्मेन्द्र, संत वामदेव, महंत रामचंद्रदास परमहंस, महंत नृत्यगोपाल दास, साध्वी उमा भारती, साध्वी ऋतम्भरा, बाला साहब ठाकरे, चंपत राय और विनय कटियार प्रमुख रूप से शामिल हैं। इनमें अनेक शख्सियतें ऐसी हैं जो अब इस दुनियां में नहीं हैं। लेकिन इनमें कुछ सौभाग्यशाली शख्सियतें भी हैं जिन्होंने अपने जीते जी राम मंदिर निर्माण और राम लाल की प्राण प्रतिष्ठा अपनी आंखों से देखी।

भगवान राम के भव्य मंदिर में उनके बाल स्वरूप विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर मुख्य यजमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि राम भारत की आत्मा हैं। वे देश को एकत्व में समायोजित करने वाले सूत्र हैं। हर युग ने राम को जिया है। यह अवसर विजय का ही नहीं, विनय का भी है। काल चक्र बदल रहा है। आज से हमारा भविष्य अतीत से सुंदर होने जा रहा है। राम मंदिर हर वर्ग को प्रगति पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। राम विवाद नहीं, राम समाधान हैं। राम सबके हैं। राम आदि हैं, राम अनंत हैं। राम मंदिर राष्ट्र चेतना का भी मंदिर है। लेकिन सोचने की बात यह है कि राम मंदिर बन गया, अब आगे क्या, यही समय है जब हम सक्षम भारत के निर्माण की सौगंध लेते हैं। मां शबरी कब से कहती थी कि राम आएंगे। यही विश्वास सक्षम भारत के निर्माण का आधार बनेगा।

राम भारत की आत्मा–नरेन्द्र मोदी

भगवान राम के भव्य मंदिर में उनके बाल स्वरूप विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर मुख्य यजमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि राम भारत की आत्मा हैं। वे देश को एकत्व में समायोजित करने वाले सूत्र हैं। हर युग ने राम को जिया है। यह अवसर विजय का ही नहीं, विनय का भी है। काल चक्र बदल रहा है। आज से हमारा भविष्य अतीत से सुंदर होने जा रहा है। राम मंदिर हर वर्ग को प्रगति पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। राम विवाद नहीं, राम समाधान हैं। राम सबके हैं। राम आदि हैं, राम अनंत हैं। राम मंदिर राष्ट्र चेतना का भी मंदिर है। लेकिन सोचने की बात यह है कि राम मंदिर बन गया, अब आगे क्या, यही समय है जब हम सक्षम भारत के निर्माण की सौगंध लेते हैं। मां शबरी कब से कहती थी कि राम आएंगे। यही विश्वास सक्षम भारत के निर्माण का आधार बनेगा। निषादराज की राम से मित्रता संबंधों से परे है। इससे राम हमें अपनत्व, समानता, बंधुत्व और शांति की भावना का संदेश देते हैं। आज सभी छोटे–बड़ों को राष्ट्र निर्माण के लिए अपने जीवन का पल पल लगाने का संकल्प लेना होगा। हमें अब चूक नहीं करनी है। राम मंदिर विकसित भव्य भारत का साक्षी बनेगा। भारत अब आगे बढ़ने वाला है। अब हम रुकेंगे नहीं बल्कि आकाश की ऊंचाइयों पर जाकर रहेंगे। राम मंदिर का यह दिन एक हजार साल बाद भी याद रहेगा। मोदी जी इस मौके पर भावुक होकर बलिदानियों को याद करना नहीं भूले।

राम मंदिर से भारत का स्वाभिमान लौटा–भागवत

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघ चालक डॉ. मोहन भागवत ने इस मौके पर कहा कि राम मंदिर के निर्माण से

भारत का स्वाभिमान लौट आया है। यह नए भारत का प्रतीक है। पांच सौ साल के बाद यह स्वर्ण दिन देख रहे हैं। इसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने तय किया है, अब हमें भी तय करना है कि राम राज्य लाना है। आपस में समन्वय करके सेवा, परोपकार करना है। सरकार तो अपना कार्य कर ही रही है, हमारा भी कर्तव्य है कि जहां पीड़ा हो तो वहां दौड़े जाएं। उन्होंने विश्वास जताया कि राम मंदिर पूरा होते–होते भारत विश्व गुरू बन जाएगा।

मंदिर बनाने का संकल्प पूरा हुआ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने इस मौके पर कहा कि राम मंदिर वहीं बना है, जहां मंदिर बनाने का संकल्प लिया गया था। मन भावुक, भावविभोर है और अंतर्मन की स्थिति व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं। आज देश का हर शहर और गांव अयोध्या धाम है। पूरा देश राममय है। ऐसा लग रहा है कि जैसे हम त्रेता युग में आ गए हैं। राम लला सिंहासन पर विराज मान हैं। पांच सदियों के बाद आया यह पल गर्व और प्रसन्नता का प्रतीक है। लंबी प्रतीक्षा के बाद यह शुभ समय आया है। किसी देश के बहुसंख्यकों ने मंदिर के लिए इतने वर्ष लडाई नहीं लड़ी होगी। यह राम मंदिर एक राष्ट्रीय अनुष्ठान है। अयोध्या की गलियों में अब कभी गोलियों की गड़गड़ाहट नहीं गूंजेगी और परिक्रमा में कोई बाधा नहीं होगी। इसी के साथ उन्होंने राम राज्य की घोषणा की जिसमें भेदभाव रहित शासन होगा। अयोध्या का तेज विकास कराया जाएगा। कुंडों और घाटों का कायाकल्प होगा। योगी जी ने पूर्व के शासकों पर तंज कसा कि अयोध्या सदियों से उपेक्षित रही। यदि मंदिर निर्माण में सहयोग नहीं कर सकते थे तो कम से कम विकास तो कर ही सकते थे। इससे किसने रोका था। राम की अयोध्या के प्रति यह सोच कल्पना से परे है। जबकि हम हजारों करोड़ की योजनाओं के जरिए एक भव्य और दिव्य अयोध्या बना रहे हैं।

ये बने प्राण प्रतिष्ठा समारोह के साक्षी

यूं तो राम मंदिर के भव्य निर्माण और गर्भ गृह में राम लला के बालविग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के देश–विदेश के करोड़ों सनातनी साक्षी बने। लेकिन समारोह में कुछ खास हस्तियां मौजूद रहीं। इनमें उद्योग जगत के मुकेश अंबानी, नीता अंबानी, अनिल अंबानी, कुमार मंगलम बिरला, फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन, रजनीकांत, अभिषेक बच्चन, रणवीर कपूर, आलिया भट्ट कपूर, कंगना रनौत, हेमा मालिनी, सोनू निगम, शंकर महादेवन, अनुराधा पौड़वाल, विक्की

कौशल, कैटरीना कैफ, माधुरी दीक्षित, डॉ. नेने, योग गुरु बाबा रामदेव, श्रीश्री रवि शंकर, महंत नृत्यगोपाल दास, स्वामी गोविंद देव जी महाराज, चंपत राय, अफसरों में पूर्व आईएएस अधिकारी नृपेंद्र मिश्रा, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव संजय प्रसाद, सूचना निदेशक शिशिर, तत्कालीन डीजीपी विजय कुमार व विशेष डीजी कानून व्यवस्था (वर्मनान में डीजीपी) प्रशांत कुमार, आईजी प्रवीण कुमार, कमिश्नर गौरव दयाल, मुख्यमंत्री के मीडिया सलाहकार मृत्युजंय कुमार और मीडिया जगत की अनेक हस्तियां प्रमुख रूप से शामिल हैं। इस मौके पर सभी अतिथियों और संतों को राम लला के दर्शन का सौभाग्य मिला। मीडिया को रामलला के दर्शन कराने में सूचना निदेशक शिशिर जी की अहम भूमिका रही। दूसरे दिन से यानी 23 जनवरी को राम मंदिर आम लोगों के दर्शन के लिए खोला गया। दूसरे दिन से लाखों श्रद्धालु अयोध्या पहुंचकर राम लला के दर्शनों का लाभ उठा रहे हैं। इसके लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने जिला प्रशासन और मंदिर प्रशासन को खास निर्देश दिए हैं।

◆

मो. : 9415003798

मोक्षदायिनी

काशी

सांस्कृतिक धरोहरों की पुनर्प्रतिष्ठा

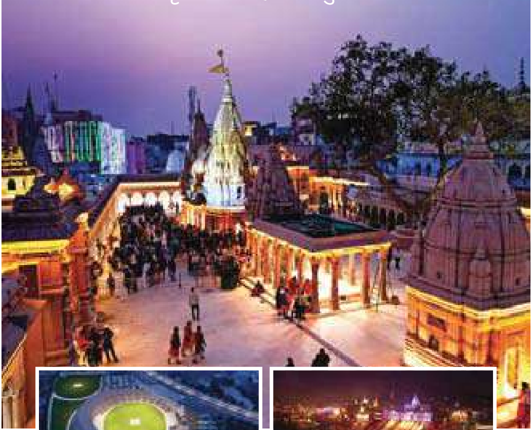

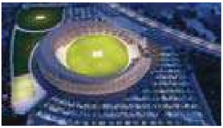

- श्रीकाशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर का विकास
- गंगा घाटों का सौंदर्यीकरण एवं देव-दीपावली का आयोजन
- उत्तर प्रदेश के तीसरे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण
- वाराणसी से हल्दिया के बीच कार्गो एवं क्रूज का परिवहन सेवा
- देश की पहली नगरीय रोपवे परियोजना का निर्माण प्रगति पर
- काशी में देश का पहले डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर की स्थापना
- अंतर्राष्ट्रीय रुद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर एवं अमूल प्लांट का निर्माण

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

हमारे सबके राम

–रेनू सैनी

अयोध्या में रामलला के विराजमान होने से केवल भारत में ही नहीं, अपितु पूरे विश्व में खुशियां मनाई गई हैं। राम किसी एक के नहीं अपितु प्रत्येक के हैं। प्रत्येक में विश्व के सभी धर्मों के लोग शामिल हैं। अरबों लोगों के हृदय में राम अयोध्या में निवास करते हैं। भगवान राम छोटे से लेकर बड़ों तक के लिए पग–पग पर प्रेरणा स्रोत भगवान के शब्द को कभी करीब से समझने का प्रयास किया है:–

भगवआन

भ–भूमि

ग–गगन

व–वायु

आ–अग्नि

न–नीर

इन पंचतत्वों से मिलकर ही शरीर बनता है। इसका सीधा अभिप्राय यह है कि भगवान हम सभी के तन–मन में विराजमान हैं। चाहे फिर वह हिन्दू हो या मुस्लिम, सिख हो या ईसाई, जैन हो या बौद्ध।

अयोध्या राम की जन्मभूमि है। पौराणिक शास्त्रों के विभिन्न पदों में अयोध्या के संदर्भ में यह कहा गया है कि यह अत्यंत पवित्र नगरी है।

वैष्णवों के पुरातन भारतीय शास्त्र गरुड़पुराण से यह बात स्पष्ट हो जाती है:–

अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची,

अवंतिका एवं द्वारावती। ये सातों स्थल मोक्ष प्रदान करने वाले हैं। अयोध्या को वेद में ईश्वर का नगर बताया गया है। यह एक पौराणिक नगर है। ऐसा कहा जाता है कि इसे मनु ने अपने पुत्र इक्ष्वाकु के लिए बसाया था। इसी अयोध्या को बाद में अनगिनत युद्धों का सामना करना पड़ा। 712 ई. के बाद से मुस्लिम हमलावरों ने भारत पर आक्रमण किया। उन्होंने सभी मंदिरों में तोड़–फोड़ की और मस्जिदों एवं मदरसों का निर्माण किया। हालांकि सभी धर्म करुणा, प्रेम और अहिंसा का पाठ पढ़ाते हैं लेकिन ये बात हिंसा के मार्ग पर चलने वाले लोग नहीं समझते। इस तरह अयोध्या अपने रामलला की बरसों तक प्रतीक्षारत रही। देश स्वतंत्र हुआ। आखिरकार 09 नवम्बर, 2019 को वह चिर–प्रतीक्षित निर्णय आया, जिसकी प्रतीक्षा में अनेक लोग इस दुनिया से जा चुके थे, तो कइयों की आंखें पथरा गई थीं। 1045 पृष्ठों के इस फैसले में अनेक बातें कहीं गईं। जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैंः–

- विवादित भूमिका कब्जा देवता रामलला को सौंपा जाए, जा कि इस मामले में तीन में से एक विवादी हैं।
- सुन्नी वक्फबोर्ड को 05 एकड़ की एक वैकल्पिक भूमि दी जाए, जिस पर वह एक नई मस्ज़िद का निर्माण करे।
- केंद्र सरकार को तीन माह के अंदर, मंदिर निर्माण के लिए, एक योजना का ढांचा तैयार करना होगा तथा एक ट्रस्ट की स्थापना करनी होगी।

इस ऐतिहासिक निर्णय के अंतिम शब्द थे, ''निष्कर्ष यह है कि मस्ज़िद बनने से पहले भी हिंदुओं की आस्था यही थी कि भगवान राम का जन्म स्थान वही है, जहां बाबरी मस्ज़िद थी और इस आस्था की पुष्टि दस्तावेज़ों व मौखिक गवाही से हो चुकी है।

भारत राम की जन्मभूमि है। इसलिए यहां के लोग राममय हैं। यहां की सभ्यता–संस्कृति में राम के दर्शन होते हैं। अभिवादन के समय कहे जाने वाले 'राम–राम' से यह बात ज्ञात हो जाती है कि हमारी संस्कृति में राम का अस्तित्व, उनकी चेतना और उनके कार्यों की उपलब्धियाँ गहराई तक जुड़ी हुई हैं। हमारे यहां राम को घट–घट व्यापी बताया गया है। जब व्यक्ति का जन्म होता है तो उस समय भी राम की महिमा बताई जाती है और व्यक्ति जब मृत्यु को प्राप्त होता है तो उसकी अंतिम यात्रा में भी 'रामनाम सत्य है' कहकर राम की प्रतिष्ठा को इंगित किया जाता है।

हालांकि इतिहास में ऐसी भी बातें जानने–सुनने को मिलती हैं जो ये बताती हैं कि राम को अपना आदर्श मानने वाले केवल हिन्दू ही नहीं अपितु मुसलमान भी हैं। कुछ सूफी फकीर सदियों पहले अयोध्या की पावन धरती पर आए और यहीं के होकर रह गए। वे राममय हो गए थे।

- इस सदंर्भ में पहला नाम कलंदर शाह का लिया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि वे 16वीं सदी के प्रसिद्ध सूफी संत थे। वे जानकी बाग में रहते थे। उनको मूलतः अरब का बताया जाता है। उनका कहना था कि उन्हें साक्षात सीता मां के दर्शन वहां पर हुए। इसके बाद वे वहीं के होकर रह गए।
- इसी तरह एक थे हनुमान भक्त शीश। वे भी अरब के रहने वाले थे। जब ये अयोध्या आए तो यहां की भक्ति में रंगते चले गए। इन्होंने स्वयं को भक्ति के लिए समर्पित कर दिया। ये प्रतिदिन गणेशकुंड में स्नान करते थे। इनका कहना था कि इन्हें प्रतिदिन वहां पर पवन पुत्र हनुमान के दर्शन होते थे। उनके दर्शनों ने ही उनके अंदर भक्ति और तपस्या का भगवा रंग भरा।
- जिक्रशाह 30 साल की आयु में अयोध्या आए। ये ईरान के रहने वाले थे। इनके बारे में कहा जाता है कि ये केवल जौं का सेवन करते थे। दिन रात राम–राम–राम नाम का जाप करते थे। इनको एक बार ऐसा प्रतीत हुआ मानो कोई कह रहा है कि, ''जिक्रशाह, अयोध्या पाक स्थान है। तुम यहां रहकर बंदगी करो।'' इसके बाद तो जिक्रशाह आजीवन अयोध्या के ही होकर रह गए। अयोध्या में ही इन्होंने अंतिम श्वास ली।

ऐसा माना जाता है कि दुनिया के 182 देशों में भगवान राम को किसी न किसी तरह पूजा जाता है।

यहां तक कहा जाता है कि पाकिस्तान के लाहौर का ऐतिहासिक नाम लवपुरी था। इसकी स्थापना प्रभु राम के बड़े सुपुत्र लव ने की थी। बाद में इस का नाम लौहपुरी हुआ और फिर इसे धीरे–धीरे लाहौर के नाम से पुकारा जाने लगा।

इसी तरह श्रीलंका और बर्मा में भी रामायण अनेक रूपों में प्रचलित है। बर्मा में एक नगर है रामवती नगर। ऐसा माना जाता है कि यह नगर राम नाम के कारण ही स्थापित हुआ था। बर्मा में रामायण को 'यमयान' कहा जाता है।

इंडोनेशिया को विश्व का सबसे बड़ा मुस्लिम बहुल देश माना जाता है। वहां भी रामायण और राम है। रामायण के अनेक स्वरूप अनेक देशों में देखने को मिलते हैं।

इबोनिया का मालागासी महाकाव्य कथानक में भारत के महाकाव्यरामायण से मिलता–जुलता बताया जाता है। कंबोडिया में भी रामायण के अलग–अलग स्वरूप देखने को मिलते हैं। लाओ में, मलेशिया में, थाइलैंड में, ईरान में और चीन में भी रामायण के प्रसंग और कथाएं देखने–सुनने को मिलती हैं।

थाइलैंड में रामायण को राम कयन कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि प्रारंभिक थाइलैंड की राजधानी को अयुत्या कहा जाता है, इसका नाम श्रीराम की अयोध्या की राजधानी के नाम पर रखा गया था।

इसी तरह इटली में पुरातात्विक खुदाई में प्राचीन इटालियन की घरों की दीवारों पर ऐसे चित्रों के बारे में पता चला, जो रामायण के दृश्यों पर आधारित हैं। उनमें से कुछ चित्रों में दो पुरुषों के साथ पूंछ वाले व्यक्ति देखने को मिले।

राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे सबको गले लगाते हैं। हर किसी की मदद को आतुर रहते हैं।

भारत राम की जन्मभूमि है। इसलिए यहां के लोग राममय हैं। यहां की सभ्यता–संस्कृति में राम के दर्शन होते हैं। अभिवादन के समय कहे जाने वाले 'राम–राम' से यह बात ज्ञात हो जाती है कि हमारी संस्कृति में राम का अस्तित्व, उनकी चेतना और उनके कार्यों की उपलब्धियाँ गहराई तक जुड़ी हुई हैं। हमारे यहां राम को घट–घट व्यापी बताया गया है। जब व्यक्ति का जन्म होता है तो उस समय भी राम की महिमा बताई जाती है और व्यक्ति जब मृत्यु को प्राप्त होता है तो उसकी अंतिम यात्रा में भी 'रामनाम सत्य है' कहकर राम की प्रतिष्ठा

को इंगित किया जाता है।

राम से बड़ा राम का नाम कहा जाता है। इसलिए भारतीय राम नाम का महत्व समझते हैं।

राम पूरी दुनिया के लिए नायक नहीं बल्कि महानायक हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे पुरुषोत्तम हैं। वैदिक संहिताओं, पुराणों और महाकाव्यों में पुरुषोत्तम के लिए नौ गुणों की प्रस्तावना है। ये इस प्रकार हैः–

पहली जिजीविषा, यानी कि जूझने का साहस। पर यह जिजीविषा अनुशासन और मर्यादा के साथ हो। ये दोनों ही बातें राम के व्यक्तित्व में थीं। वे अनुशासितऔर मर्यादित दोनों ही थे।

दूसरी, रक्षा और सुरक्षा। एक साहसी और वीर ही निर्बलों की दुष्टों और दुष्टप्रवृत्ति के व्यक्तियों से रक्षा कर सकता है। श्रीराम ने अनेक बार निर्बलों की रक्षा की थी। तीसरी, दीप्तिशील अर्थात उसके सौंदर्य से हर ओर दीप्ति की आभा बिखर जाए। श्री राम ऐसे ही थे। उनका मनोहारी रूप हर किसी को चकित कर देता था। उनके रूप में सभी सुध–बुध खो बैठते थे।

चौथी, पुरुषार्थ। पुरुषार्थ अर्थात कर्मठता। श्रीराम ने हर कठिन कार्यों को सदैव स्वयं आगे बढ़कर किया। उन्होंने बड़े से बड़ा त्याग भी मुस्कुराहट और धैर्य के साथ किया। पांचवीं, महा करुणा। श्रीराम अत्यंत करुणामयी थे। शबरी उनके इंतजार में पलक पांवड़े बिछाए उनकी राह निहारती थी। उनके पास पहुंच करवे स्वयं भी करुणा से भर गए थे। अहिल्या की करुणा से भी वे मर्मांत कहो उठे थे।

राम किसी एक व्यक्ति के हृदय में नहीं हैं, अपितुकण–कण में हैं। हर व्यक्ति उनके गुणों को अपने अपने न जरिए से देखते हैं। भारत के लोक गीत राम की प्रेरणा से अटे पड़े हैं। राम एक ऐसे नायक हैं जिनकी कल्पना प्रत्येक व्यक्ति करता है। लेकिन राम बनने के लिए अनुपम धैर्य, शौर्य, बुद्धि, ज्ञान और अहिंसा की आवश्यकता होती है। श्रीराम ऐसे हैं जो अपने कृत्यों से यह भी बता देते हैं कि शत्रु का सम्मान करना चाहिए, उसके गुणों से सीख लेनी चाहिए। वे रावण के ज्ञान और साहस का सम्मान करते थे।

छठी, प्रचोदन। यानी कि भविष्य के लिए प्रेरणा बनने की शक्ति। श्रीराम पग–पग पर ऐसे कार्य करते थे कि उनके समक्ष उपस्थित लोग प्रेरणा से भर उठते थे और स्वयं को सुधार लेते थे। श्रीराम की छत्र–छाया में उनसे प्रेरणा लेकर अनेक लोगों ने अपनी गलतियों और भूलों को सुधारा था।

सातवीं, सबलता। इसका अभिप्राय यहां पर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार करने से है।इस कसौटी पर भी श्रीराम खरे उतरते हैं। उन्होंने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का विस्तार किया। चाहे वे जंगलों में राक्षसों के आंतक से मुक्ति दिलाने का हो, अथवा सुग्रीव से मित्रता निभाने का। उन्होंने सुग्रीव से मित्रता निभाई। रावण का वध कर न्याय प्रिय विभीषण को लंका सौंपी।

आठवीं, भूमा। यानी कि यश और प्रताप का विस्तार। राम का यश हर कार्य और बाधा को पार करने के बाद बढ़ता जाता था।

नौंवी एवं अंतिम रिद्धि। रिद्धि यानि कि ऐश्वर्य। रामऐश्वर्य एवं समृद्धि से भी विभूषित थे। इन बातों को पढ़कर यह स्वतः ही समझा जा सकता है कि जो मनुष्य इन गुणों से आच्छादित हो, वह केवल किसी एक देश का नहीं हो सकता। ऐसे व्यक्तित्व तो पूरे ब्रह्मांड के लिए प्रेरक हैं। दुनिया के हर

व्यक्ति को श्रीराम के व्यक्तित्व से अत्यंत प्रेरणा मिलती है। ऐसी विभूति जिससे प्रेरणा मिलती है और उनका हर गुण रोमांचित कर देता है, वह पूजनीय है।

भारतीय कथाओं में ये नौ गुण अलग–अलग नायकों में मिलते हैं। देवताओं में केवल भगवान विष्णु ऐसे हैं जो इन नौ गुणों से पूरित हैं। जबकि राम मनुष्य होकर भी इन नौ गुणों से परिपूरित हैं।

राम किसी एक व्यक्ति के हृदय में नहीं हैं, अपितुकण–कण में हैं। हर व्यक्ति उनके गुणों को अपने अपने नजरिए से देखते हैं। भारत के लोक गीत राम की प्रेरणा से अटे पड़े हैं। राम एक ऐसे नायक हैं जिनकी कल्पना प्रत्येक व्यक्ति करता है। लेकिन राम बनने के लिए अनुपम धैर्य, शौर्य, बुद्धि, ज्ञान और अहिंसा की आवश्यकता होती है। श्रीराम ऐसे हैं जो अपने कृत्यों से यह भी बता देते हैं कि शत्रु का सम्मान करना चाहिए, उसके गुणों से सीख लेनी चाहिए। वे रावण के ज्ञान और साहस का सम्मान करते थे।

रावण के भाई विभीषण अहिंसा एवं ईमानदारी पर बल देते हैं। इसलिए वे श्रीराम का साथ देते हैं। रावण का अंत होने पर जब वे उसके अंतिम संस्कार से हिचकिचाते हैं तो श्रीराम कहते हैं, ''मरणान्तानि वैराणि निवृतंनः प्रयोजन।'' अर्थात मरने के बाद बैर का अंत स्वतः ही हो जाता है। इसी सीख को यदि विश्व के अधिकतर देश सीखकर आचरण करें तो कोई किसी का शत्रु न हो। भारत इसलिए महान है क्योंकि वह सदैव राम की शिक्षा का पालन करते हैं और 'वसुधैवकुटुंबकम्' की नीति पर चलते हैं।

राम सबके प्रिय इसलिए हैं क्योंकि वे चमत्कार नहीं करते, अपितु मनुष्य स्वरूप में हर समस्या का निरुपण करते हैं, बुद्धिमता से उसे दूर करने का प्रयास करते हैं। इसी बीच में जब, जहां किसी को उनकी आवश्यकता होती है, तो वे उसकी हर संभव मदद भी करते हैं।

अगर हम अपने अंतर्मन में झांककर देखें तो क्या हम अपने आस–पास ऐसे ही व्यक्तियों की कल्पना नहीं करते जिनके अंदर राम सरीखे गुण व्याप्त हों। बस हम यहां एक चूक कर जाते हैं कि हम अपने आस–पास तो राम का सा व्यक्तित्व चाहते हैं किंतु स्वयं को राम जैसे व्यक्तित्व में ढालना नहीं चाहते। यदि हम अपनी इन गलतियों को दूर कर लें तो अयोध्या में स्थापित रामलला पूरी दुनिया के लिए एक नव संदेश स्थापित करेंगे। राम मंदिर राष्ट्र मंदिर बन जाएगा। मेरे राम सबके राम होंगे। कहीं कोई शत्रु नहीं होगा। कहीं किसी को आक्रमण का भय नहीं होगा। हर ओर रामराज्य होगा। यही तो प्रत्येक व्यक्ति का स्वप्न है–रामराज्य। केवल भारत में ही नहीं अपितु विश्व के हर कोने में।

चलो संकल्प करते हैं, एक छोटी सी शुरुआत स्वयं से करते हैं। दूसरों में राम तलाशने के बजाय स्वयं में राम को खोजते हैं। यह संकल्प सार्थक होगा, बस हमारे–तुम्हारे कदम बढ़ाने की देरी है।

◆

मो. : 9971125858

राम मंदिर की स्थापना सांस्कृतिक गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा

—प्रदीप उपाध्याय

अयोध्या में भव्य राम मंदिर की स्थापना तथा उसमें नवीन विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा एक ऐतिहासिक घटना है। विक्रम संवत 2080 में पौष शुक्ल द्वादशी अर्थात 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में आयोजित एक भव्य समारोह में मर्यादा पुरुषोत्तम राम की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की गयी; प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जहां इस समारोह के मुख्य यजमान की भूमिका में थे, वहीं हजारों गणमान्य नागरिकों एवं अतिथियों की गरिमापूर्ण उपस्थिति रही। आज अयोध्या ही नहीं समूचा देश राममय है। चारों ओर लहराती—फहराती पताकाओं के बीच राम नाम की अनुगूंज अलौकिक छटा बिखेर रही है। राम हमारी चेतना में समाए हैं, वे हमारी सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक चेतना के मूलाधार हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार मनु और शतरूपा ने वर्षों की घोर तपस्या के बाद सृष्टि के पालनकर्ता विष्णु से यह वरदान पाया कि ईश्वर त्रेता युग में उनके अंश से जन्म लेंगे। वे मानव मात्र के रूप में धरती पर आएंगे तथा समस्त मानव जाति के कष्ट एवं संताप को हरेंगे। यही मनु और शतरूपा रघुकुल में दशरथ और कौशल्या कहलाये जिनके अंश से पुत्रयेष्टि यज्ञ के बाद राम ने जन्म लिया। जो लोग मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के प्रति आस्था से अभिसिंचित हैं और उन्हें अपने नायक के रूप में देखते हैं, उनके लिए पांच सौ वर्षों की यह सुदीर्घ प्रतीक्षा थी। भारतीय समाज विभिन्न मत—मतांतरों, परम्पराओं, आस्था के सोपानों और विचारों का ऐसा बहुलतावादी समुच्चय है जिसके केंद्र में राम, कृष्ण और शिव अवस्थित हैं। इसे संयोग ही कहेंगे कि इन तीनों से जुड़े प्रमुख स्थल अयोध्या, मथुरा तथा काशी हमारे राज्य उत्तर प्रदेश का अंग हैं।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, प्रखर चिंतक, राजनीतिज्ञ तथा समाजवादी राजनेता डाक्टर राम मनोहर लोहिया ने अपने सुप्रसिद्ध आलेख पूर्ण मर्यादा का स्वप्न के अंतर्गत लिखा है कि राम, कृष्ण और शिव भारत में पूर्णता के तीन महान स्वप्न हैं। सबका रास्ता अलग—अलग है। राम की

पूर्णता मर्यादित व्यक्तित्व में है, कृष्ण की उन्मुक्त या सम्पूर्ण व्यक्तित्व में और शिव की असीमित व्यक्तित्व में लेकिन हर एक पूर्ण है। किसी एक का एक या दूसरे से अधिक या कम पूर्ण होने का कोई सवाल नहीं उठता। भारत में शैव और वैष्णव दो प्रमुख परम्परायें हैं। ईश्वर के सगुण तथा निर्गुण रूप की आराधना की जाती है। सगुण उपासकों के बीच राम और कृष्ण की उपासना का विधान है । दरअसल यह विष्णु के ही अवतार हैं जो त्रेता और द्वापर युग में हुए। शिव अहर्निष हैं, घोर तपस्या में लीन, सृष्टि के संहारकर्ता, नीलकंठ, अपनी जटाओं में जीवन दायिनी गंगा को समाये हुए। शिव राम के प्रिय हैं और राम शिव के प्रति अगाध श्रद्धा और भक्ति भाव से ओतः प्रोत नजर आते हैं। राम और कृष्ण में कोई विभेद नहीं, दरअसल यह दोनों एक ही हैं। डाक्टर लोहिया अपनी बात बढ़ाते हुए आगे कहते हैं कि पूर्णता में विभेद कैसे हो सकता है। पूर्णता में केवल गुण और किस्म का विभेद होता है। हर आदमी अपनी पसंद कर सकता है या अपने जीवन के किसी विशेष क्षण से संबंधित गुण या पूर्णता चुन सकता है। कुछ लोगों के लिए यह भी संभव है पूर्णता की तीनों किस्में साथ–साथ चलें, मर्यादित, उन्मुक्त और असीमित व्यक्तित्व साथ– साथ रह सकते हैं। वे कहते हैं कि हिंदुस्तान के महान ऋषियों ने सचमुच इसकी कोशिश की है। वे शिव को राम के पास और कृष्ण को शिव के पास ले आये हैं और उन्होंने यमुना के तीर पर राम को होली खेलते बताया है। राम और कृष्ण, विष्णु के दो मनुष्य रूप हैं, जिनका अवतार धरती पर धर्म का नाश और अधर्म के बढ़ने पर होता है। राम धरती पर त्रेता में आये जब धर्म का रूप इतना अधिक नष्ट नहीं हुआ था। वह आठ कलाओं से बने थे, इसलिए मर्यादित पुरुष थे। कृष्ण द्वापर में तब आये जब अधर्म बढ़ रहा था। वे सोलह कलाओं में निपुण थे और पूर्ण पुरुष थे। जब विष्णु ने कृष्ण का अवतार लिया तो स्वर्ग में उनका सिंहासन बिल्कुल सूना था जबकि राम के रूप में जब वह धरा धाम पर आये तो विष्णु अंशतः स्वर्ग में थे और अंशतः धरती पर।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, प्रखर चिंतक, राजनीतिज्ञ तथा समाजवादी राजनेता डाक्टर राम मनोहर लोहिया ने अपने सुप्रसिद्ध आलेख पूर्ण मर्यादा का स्वप्न के अंतर्गत लिखा है कि राम, कृष्ण और शिव भारत में पूर्णता के तीन महान स्वप्न हैं। सबका रास्ता अलग–अलग है। राम की पूर्णता मर्यादित व्यक्तित्व में है, कृष्ण की उन्मुक्त या सम्पूर्ण व्यक्तित्व में और शिव की असीमित व्यक्तित्व में लेकिन हर एक पूर्ण है। किसी एक का एक या दूसरे से अधिक या कम पूर्ण होने का कोई सवाल नहीं उठता।

राम ने अपनी दृष्टि केवल एक महिला तक सीमित रखी। वे एक पत्नीव्रत धर्म का पालन करते रहे। याद करिए जब प्रेम वश सूर्पणखा उनके पास आई तो उन्होंने शालीनतापूर्वक उसे मना किया। आतुर सूर्पणखा ने जब जिद की तो उन्होंने उसे कौतुकवश अपने छोटे भाई लक्ष्मण के पास भेज दिया। राम और लक्ष्मण के प्रति अतिशय प्रेम और काम भावना से वशीभूत सूर्पणखा को जब अपने प्रणय निवेदन में सफलता नहीं मिल सकी और उसकी नाक और कान लक्ष्मण ने काट लिए तो अपमान से आहत होकर वह अपने भाई तथा लंकाधिराज रावण के दरबार में पहुंची। राम–रावण युद्ध के पीछे संभवतया यह भी एक प्रमुख कारण माना जा सकता है। जब सीता का अपहरण हुआ तो राम बेहद व्याकुल थे। वे रो रोकर कंकड़, पत्थरों और वृक्षों की लताओं से सीता का पता पूछते हैं। हे खग कुल, हे मधुकर श्रेनी तुमने देखी सीता मृगनयनी। उनका यह विलाप एक मनुष्य का अपनी पत्नी के प्रति सहज संताप था जो उससे बिछड़ गयी थी। उधर कृष्ण ने गोपियों के साथ महारास रचाया। राधा और कृष्ण का प्रेम विरल है। कृष्ण की असंख्य प्रेमिकायें थीं। उनकी सोलह हजार एक सौ आठ पत्नियां थीं। इनमें भी रुक्मिणी और सत्यभामा के मध्य सदैव प्रतिद्वंद्विता रही कि कृष्ण किसके अधिक प्रिय हैं। कृष्ण द्रौपदी के भी सखा हैं, वे उन्हें सखी कहते हैं उधर मीरा की कृष्ण के प्रति दीवानगी गजब की है। उद्धव जब ब्रज की गोपियों को उपनिषद तथा ज्ञान के उपदेश देते हैं तो गोपियां उन्हें निरुत्तर कर देती हैं–उधो मन न भये दस बीस। सबको थिरकाने वाला कृष्ण स्वयं अचल था। आनंद, अटूट और अभेद्य था, उसमें तृष्णा नहीं थी। कृष्ण के पीछे चैतन्य महाप्रभु पागलों की तरह दीवानगी से भरे हुए थे। कृष्ण के प्रति सहज

प्रेम का बखान सूरदास और रसखान के यहां मिलता है। वहीं कबीर के प्रिय राम हैं। वही उनके साहेब हैं। निर्गुण परम्परा में जिस निराकार परब्रह्म की कल्पना की गयी है वह कबीर की वाणी में उल्लिखित है। राम वाल्मीकि से लेकर तुलसी, नरेन्द्र कोहली, श्रीनरेश मेहता सबके यहां मिल जाएंगे। राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में रमा है सबमें राम, वही सलोना श्याम। जितने अधिक रहें अच्छा है अपने छोटे छंद, अतुलित जो है उधर अलौकिक, उसका वह आनंद लूट लो, न लो विराम, रमा है सबमें राम। अल्लामा इकबाल ने राम की शान में कलाम पेश किया है– है राम के वजूद पे, हिंदोस्तां को नाज, अहल–ए–नज़र समझते हैं, इसको इमाम–ए–हिंद । नज़ीर बनारसी की नज्म देखें तुलसी पे लिखकर तो यहां तक पहुंचा, श्रीराम पर लिखूं तो कहां तक पहुंचूं।

सीता का अपहरण मानव जाति की कहानियों में महानतम घटनाओं में से एक है। मर्यादित पुरुष सदैव नियमों के दायरे में रहता है। जबकि उन्मुक्त पुरुष नियम और कानून को तभी तक मानता है जब तक उसकी इच्छा होती है और प्रशासन में कठिनाई पैदा होते ही उनका उल्लंघन करता है। मर्यादा में बंधे राम एक धोबी के कहने से महारानी सीता का तब परित्याग करते हैं जब वे गर्भवती थीं। हालांकि सीता कठिन अग्निपरीक्षा से सफल होकर बाहर आई थीं। यह राम राज्य की उत्कृष्ट कसौटी है जिसमें एक सामान्य नागरिक का संदेह महाराज को अपनी पत्नी के परित्याग के लिए प्रेरित करता है। इसी राम राज्य के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कायल थे, जिनका प्रिय भजन था–रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीता राम। राम मर्यादा पुरुष थे। ऐसा रहना उन्होंने बूझकर और चेतन रूप से चुना था। राम सचमुच एक नियंत्रित व्यक्ति थे लेकिन उनका केवल इतना ही वर्णन करना गलत होगा। वे साथ–साथ मर्यादित पुरुष थे और नियमों के दायरे में चलते थे। राम ने अंतिम क्षणों में लक्ष्मण को रावण के पास भेजा। अनिच्छावश लक्ष्मण आये और रावण के सिरहाने बैठ गए। उनमें विजेता होने का गौरव बोध था। रावण मौन रहा। लौटकर लक्ष्मण ने जब राम को समस्त कथा सुनाई तो राम ने उन्हें दुबारा भेजा। लक्ष्मण इस बार विनीत भाव के साथ जिज्ञासु बालक की भांति आये, लंकापति ने उन्हें रावण संहिता का ज्ञान दिया। शिष्टाचार उतना ही महत्वपूर्ण है जितनी नैतिकता। राम अद्भुत श्रोता हैं जबकि कृष्ण बेहद वाकपटु। राम में शील और संयम है। कृष्ण दुष्टों के नाश में छल–बल और भेद के प्रयोग को अनुचित नहीं ठहराते। वे युद्धभूमि में मोहग्रस्त अर्जुन को निष्काम कर्म की शिक्षा देते हैं। यही श्रीमदभगवतगीता है। यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अभ्युत्थामधर्मस्य तदात्मानमं सृजाम्यहम्। राम चुप्पी का जादू जानते हैं। वे दूसरों को बोलने देते हैं, जब तक आवश्यक नहीं होता वे हस्तक्षेप नहीं करते। रामकथा विश्व के अनेक देशों में लोकप्रिय है। रामलीलाओं के मंचन की समूचे उत्तर भारत में सदियों पुरानी परम्परा है। यह हमारी गंगा–जमुनी संस्कृति की अप्रतिम विशिष्टता है। जब नाटकों के बाद फिल्मों का दौर शुरू हुआ तो बीसवी सदी के पांचवें और छठे दशक में राम राज्य और सम्पूर्ण रामायण जैसी बेहद लोकप्रिय फिल्में बनीं। इन्हें देश की जनता ने अपने मन मस्तिष्क और दिलों में बसा लिया। प्रेम अदीब ने राम और शोभना समर्थ (जानी मानी अभिनेत्रियों नूतन और तनूजा की मां) ने सीता की भूमिकाएं निभाई थीं। लोकप्रिय चरित्र अभिनेता और अपने ज़माने के बेहद मशहूर विलेन जीवन, जो किरण कुमार के पिता थे, अक्सर नारद की भूमिका अदा करते थे। इसी तरह उन दिनों की लोकप्रिय अभिनेत्री निरूपा राय और अभिनेता महीपाल ने कई धार्मिक फिल्मों में काम किया था। भारत में धार्मिक फिल्मों का अच्छा खासा दर्शक वर्ग था। रामानंद सागर ने जब रामायण टेली सीरियल बनाया तो यह घर–घर लोकप्रिय हो गया। इसमें अरुण गोविल ने राम, दीपिका चिल्खिया ने सीता तथा अरविंद त्रिवेदी ने रावण की भूमिकाएं निभाई थीं। इसका संगीत जाने माने संगीतकार रवीन्द्र जैन ने दिया था जो उस दौर में अपार लोकप्रियता एवं प्रसिद्धि बटोर रहा था। आज भी इसे चाव से सुना जाता है। इसी तरह बीती सदी के सातवें दशक में 72–73 के दौरान श्रीराम सेंटर नई दिल्ली द्वारा रामायण पर बेहद लोकप्रिय नृत्य नाटिका तैयार की गयी थी, जिसका मंचन देश के कई प्रमुख शहरों में हुआ था। हमारे कवि, कलाकार, लेखक, अभिनेता, नर्तक, गायक, गायिकाएं और संगीतकार अपनी रचनाओं में अक्सर राम को संजोकर प्रस्तुत करते रहते हैं। युवा जुबिन नौटियाल हों या सुरभि मिश्रा इनके गाए राम भजन आज लोगों की जुबान पर हैं। राम कण–कण में हैं। राम जन–जन में हैं। बच्चों की

मुस्कुराहट में हैं राम। बहन की चूड़ियों की खनखनाहट में हैं राम, मां के चेहरे की जगमगाहट में हैं राम, खेतों में फसलों की लहलहाहट में हैं राम, ऐसा मानते हैं हिंदी और उर्दू के मशहूर शायर निदा फाज़ली।

हिंदी के प्रतिष्ठित कवि, व्यास सम्मान और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कैलाश वाजपेयी का मत है कि राम कोई कोरा शब्द नहीं है। वह हमारी देह में रुधिर बनकर दौड़ रहा है। हृदय बनकर धड़क रहा है। वह सहस्त्राभिधानी है। वह हमारी सांसों की सांस है। उसकी महत्ता का तब पता चलता है जब उसके स्मरण मात्र से सारे कष्ट नष्ट हो जाते हैं। यह कह पाना कठिन है कि कितने कवियों ने राम के विराट व्यक्तित्व से उत्प्रेरित होकर, अभ्यर्थना–गीत गाए हैं। वे कहते हैं कि आस्था शब्द का अर्थ है श्रद्धा, आदर, समर्पण का भाव। जन्म से तो हम कोरे ही होते हैं, मगर समय के साथ–साथ हम पर, जो संस्कार छोड़े जाते हैं धीरे–धीरे उनके अनुरूप हमारी समझ में, भीतर ही भीतर एक प्रतीक विकसित होने लगता है जो हमारी अंतश्चेतना में एक सुगंध, एक तरंग के झूले में एक सपने की तरह पल्लवित होने लगता है। हमारे परिवेश की रिमझिम बरसाती बदरिया इस सपने को पुष्पित करने, इसे खिलाने में संलग्न हो जाती है। वे लिखते हैं वाल्मीकि और व्यास हमारे सांस्कृतिक इतिहास की दो दृष्टियां हैं, एक के शिखर पुरुष श्रीराम हैं और दूसरी के श्रीकृष्ण। एक को समन्वयात्मक तथा दूसरे को विश्लेषणात्मक पटल पर स्थापित कर इन दोनों क्रांतदृष्टा कवियों के रचनात्मक चिंतन ने आदमी की श्रेष्ठतम प्रभा के माध्यम से देवता या कि द्वियता को मानवीय तल पर अध्यारोपित किया है।

आखिरकार कुछ तो है राम के चरित्र में कि रामायण की कहानी, एक हरहराती हुई नदी की तरह दुर्गम पठारों और जंगलों को मंझाती हुई अंततः सागर संगम तक पहुंचती है। देश के सांस्कृतिक क्षितिज का कौन सा ऐसा कोना है जिसे आजानुभुज राम ने न छुआ हो। यह शायद राम के चुम्बकीय व्यक्तित्व का ही प्रभाव रहा होगा कि उनकी जीवनगाथा जावा, सुमात्रा, जापान, कम्बोडिया, यूनान और थाईलैंड तक वहां की जातीय स्मृति में हीरक हार की तरह पड़ी है। अयोध्या और कोरिया के मध्य तो मधुर संबंध तक स्थापित हुए। रामायण और रामचरितमानस की रचनाशीलता मात्र कविता के लिए कविता नहीं कही जा सकती। आदिकवि वाल्मीकि की वाणी मानव जीवन की शुभ्रता का काव्य विम्ब है। एक ऐसा सम्प्रत्यय जीवन के हर पुरुषार्थ को उसकी अलोनी शुचिता के साथ उजागर करता है। आदिकवि वाल्मीकि के महाकाव्य में चौबीस हजार श्लोक और पांच सौ सर्ग हैं। प्रत्येक सहस्त्र श्लोक का आरंभ गायत्री मंत्र के प्रथम अक्षर से होता है। गायत्री मंत्र में भी चौबीस अक्षर हैं।

राम का प्राचीनतम संदर्भ यजुर्वेद 29/59 में मिलता है– अधो रामो सावित्रिः । गोस्वामी तुलसीदास ने रामकथा को श्रुतिसम्मत कहकर इसे वैदिक परम्परा सम्मत माना है। उनकी आस्था इतनी निष्कंप थी कि उनकी वाणी परायणी हो गयी। वे राम को ईश्वर का सहज अवतार मानते हुए उनके मानव चरित्र का वर्णन करते हैं। तुलसी अवधी में अपना

महाकाव्य लिखते हैं जो लोकभाषा थी। सदियों से इसके गायन एवं पाठ की वाचिक परम्परा देखने को मिलती है। मानस की चौपाई और दोहे न सिर्फ विद्वतजनों बल्कि निरक्षर ग्रामीणों, मजदूरों और समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों को कंठस्थ हैं। वे अक्सर इसका उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। एक काव्य की जीवंतता इससे बढ़कर और क्या हो सकती है। शायद यही कारण रहा होगा कि हिंदी आलोचना के शलाका पुरुष पंडित राम चंद्र शुक्ल ने अपनी सुप्रसिद्ध कृति हिंदी साहित्य का इतिहास में सर्वाधिक महत्व महाकवि तुलसीदास के रचनाकर्म को प्रदान किया है। जिंदगी में दो ही मार्ग हैं – एक मार्ग हृदय का, आस्था का, समर्पण का है और दूसरा तर्क का, बुद्धि का, अनास्था का। तुलसीदास ने अपनी गति और नियति दोनों राम को सौंप दी। उनकी आस्था का शिखर बिंदु राम थे। उन्होंने संवत 1631 में अयोध्या आकर रामचरितमानस का लेखन आरंभ किया और इसे दो वर्ष सात महीनों में पूरा कर लिया। कुछ अंश संभवतया काशी में रचा गया था। जनश्रुति है कि गोस्वामी तुलसीदास पर ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती तथा हनुमान जी की कृपा थी जिसकी वजह से मानस की रचना संभव हो सकी। उनकी आस्था में धर्म और ज्ञान दोनों का समावेश है। जहां तक समर्पण और आस्था का प्रश्न है गोस्वामी तुलसीदास के इष्ट एकमात्र राम हैं।

सद्गुरु कबीर को राम बहुत ही प्यारा है। वह उनके निर्गुण रूप पर रीझे हुए हैं। इसलिए वे बारम्बार कहते हैं राम नाम जानै बिना, भौ बूड़ि मुवा संसार। बदे कबीर राम वमि रहिये, राम न रमसि मोह वो गाते सुमिरन कबहु राम वा। कबीर वाणी में राम की चर्चा सर्वाधिक है। वही उनके साहेब हैं, कबीर का राम सबके हृदय में वास करता है, वह अयोध्या नरेश दशरथ का पुत्र नहीं है। वे कहते हैं हृदय बसे तेहि राम न जाना, दिल मां खोजि, दिलहि मां खोजौ इहै बरीमा रामा। कबीर बेलाग और बेलौस थे। साम्प्रदायिक कठमुल्लापन पर उन्होंने सीधी चोट की थी लेकिन निराकार परब्रम्ह में उनकी गहन आस्था थी। वे गुरु को ईश्वर के समकक्ष मानते हैं। गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय। बलिहारी गुरु आपनो गोविंद दियो बताय।।

सुप्रसिद्ध लेखक और वरिष्ठ पत्रकार विद्यानिवास मिश्र ने राम कथा को आत्मसात करते हुए बहुत लिखा है। उनकी अनेक रचनाएं बेहद लोकप्रिय हुई हैं जिनमें एक है रामायण का काव्यमर्म। इस पुस्तक के चार अध्याय हैं– वाल्मीकि, भवभूति, तुलसी और जन–जन के राम। सभी अध्यायों में राम की उपस्थिति को दर्ज कराते हुए व्याख्यान संकलित हैं। यह किताब पूरी तरह काव्य यात्रा है, जो रस सिद्धांत और अर्थवत्ता के धरातल पर अवस्थित है। संस्कृत के कवियों महाकवि वाल्मीकि, भास, कालिदास और भवभूति की रचनाओं की वीथिकाओं से होते हुए हम तुलसी के राम तक पहुंचते हैं। अंततः हमारा साक्षात्कार लोक में समाये हुए उस राम से होता है जिनके बिना कोई भी पर्व, अनुष्ठान या परम्परा पूर्ण नहीं होती। उनका एक बेहद लोकप्रिय ललित निबंध है– मेरे राम का मुकुट भीग रहा है। इसमें वे दादी–नानी के गीतों को सहज ही याद करते हैं– मोरे राम के भीजे मुकुटवा, लछिमन के पटुकवा, मोरी सीता के भीजै सेनुरवा, त राम घर लौटहि। राम ने सहज ही राजकीय वेश उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौशल्या के मातृ

स्नेह में था, वह कैसे उतरता। वह मस्तक पर विराजमान रहा और राम भींगे तो भींगे, मुकुट न भींगने पाए, इसकी चिंता बनी रही। राजा राम के साथ उनके अंगरक्षक लक्ष्मण का कमरबंद दुपट्टा भी (प्रहरी की जागरूकता का उपलक्षण) न भीगने पाए और अखंड सौभाग्यवती सीता की मांग का सिंदूर न भींगने पाए, सीता भले ही भीग जाएं। राम तो वन से लौट आए, सीता को लक्ष्मण फिर निर्वासित कर आए पर लोक मानस में राम की वन यात्रा अभी नहीं रुकी। मुकुट, दुपट्टे और सिंदूर के भींगने की आशंका अभी भी साल रही है। वे लिखते हैं राम भींगे तो भींगे, राम के उत्कर्ष की कल्पना न भींगे, वह हर बारिश में, हर दुर्दिन में सुरक्षित रहे। नर के रूप में लीला करने वाले नारायण निर्वासन की व्यवस्था झेलें, पर नर रूप में उनकी ईश्वरता का बोध दमकता रहे, पानी की बूंदों की झालर में उसकी दीप्ति छिपने न पाए। उस नारायण की सुख सेज बने अनंत के अवतार लक्ष्मण भले भींगते रहें, उनका दुपट्टा, उनका अहर्निशि जागर न भीजे, शेष नारायण के ऐश्वर्य का गौरव अनंत शेष के जागर–संकल्प से ही सुरक्षित हो सकेगा और इन दोनों का गौरव जगज्जननी आद्या शक्ति के अखंड सौभाग्य, सीमंत, सिंदूर से रक्षित हो सकेगा, उस शक्ति का एकनिष्ठ प्रेम पाकर राम का मुकुट है क्योंकि राम का निर्वासन वस्तुतः सीता का दोहरा निर्वासन है। राम तो लौटकर राजा होते हैं पर रानी होते ही सीता राजा राम द्वारा वन में निर्वासित कर दी जाती हैं। उधर कौशल्या हैं कि हर बारिश में बिसुर रही हैं मोरे राम के भीजै मुकुटवा। ऐश्वर्य निर्वासित हो रहा है। जिसे राज सौंपा जा रहा था उसे वन जाना पड़ा, निर्वासन भोगना पड़ा। पंडित विद्यानिवास मिश्र प्राच्य विद्या के अभूतपूर्व विद्वान थे, वे नवभारत टाइम्स सरीखे लब्धप्रतिष्ठित समाचारपत्र के प्रधान सम्पादक भी रहे।

राम का प्राचीनतम संदर्भ यजुर्वेद 29/59 में मिलता है– अधो रामो सावित्रिः। गोस्वामी तुलसीदास ने रामकथा को श्रुतिसम्मत कहकर इसे वैदिक परम्परा सम्मत माना है। वे राम को ईश्वर का सहज अवतार मानते हुए उनके मानव चरित्र का वर्णन करते हैं। तुलसी अवधी में अपना महाकाव्य लिखते हैं जो लोकभाषा थी। सदियों से इसके गायन एवं पाठ की वाचिक परम्परा देखने को मिलती है। मानस की चौपाई और दोहे न सिर्फ विद्वतजनों बल्कि निरक्षर ग्रामीणों, मजदूरों और समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों को कंठस्थ है। वे अक्सर इसका उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। एक काव्य की जीवंतता इससे बढ़कर और क्या हो सकती है।

भूदान आंदोलन के प्रणेता, महान सर्वोदयी नेता विनोबा भावे लिखते हैं अंतिम घड़ी में गांधीजी ने क्या किया, जब उनको गोली मारी गयी, तब अत्यंत सहज भाव से उन्होंने भगवान का नाम लिया–हे राम। नई दिल्ली स्थित राजघाट पर बापू के समाधि–स्थल पर यही दो शब्द अंकित हैं जो आज भी हमें प्रेरणा देते हैं। संत विनोबा भावे लिखते हैं अंतिम दिनों में गांधीजी के अंतःकरण में अपार वेदना थी। वे देश के विभाजन, अपने राजनैतिक शिष्यों के बीच मची रार और कांग्रेसियों के शुरू हो गए अधोपतन को लेकर व्यथित थे। ऐसी ही व्यथा कृष्ण को अपने अंतिम दिनों में यदुकुल के बिखराव और मूल्यहीनता को लेकर थी। गांधी जी के रामराज्य की कल्पना अद्भुत है। यही भारतीय लोकतंत्र का आदर्श स्वरूप है जहां समाज में आख़िरी पंक्ति में खड़े व्यक्ति की जीवन दशा में सुधार का स्वप्न एक महान संकल्प है। इस संकल्प की सिद्धि के लिए विगत 77 वर्षों से हम प्रयासरत हैं। प्रत्येक देशवासी की यही कामना है कि हम मिलजुल कर साथ–साथ आगे बढ़ें। तरक्की की दिशा में कदम बढ़ाएं। अयोध्या में राम मंदिर में हुए प्राण प्रतिष्ठा समारोह ने हमारे जीवन में अद्भुत आलोक और आनंद भर दिया। चतुर्दिश उत्साह , उमंग और अनुराग का माहौल है। सबकी आंखें अयोध्या की ओर टकटकी लगाए हुए हैं। सबके मन में सहज लालसा है कि अयोध्या जाने का सुअवसर प्राप्त हो तथा भव्य राम मंदिर में स्थापित नवीन विग्रह को देखने और अपने आराध्य के सम्मुख सिर नवाने की अभिलाषा पूर्ण हो।

◆

मो. : 969523288

प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही खड़ी होती अयोध्या

—दिनेश गर्ग

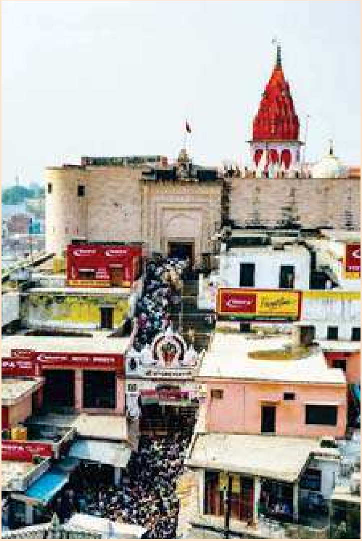

भगवान राम आज के नहीं हैं, राम बहुत प्राचीन हैं, राम सेतु की वर्तमान वैज्ञानिक गणना की दृष्टि से श्री राम 17 लाख वर्ष पुराने हैं, तो भी वह आज के माहौल में प्रासंगिक और नवीन हैं। यही उनका ईश्वरत्व है। हमारे शास्त्रों ने भगवान राम को ईश्वर का पूर्णावतार नहीं माना गया बल्कि उनको मर्यादा पुरुषोत्तम कह कर याद रखा गया क्योंकि ईश्वर रोल मॉडल नहीं हो सकते जबकि कोई भी उत्कृष्ट पुरुष रोल मॉडल हो सकता है। मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में राम मानवीय और ईश्वरीय दोनों ही एक साथ दिखते हैं।

कल्पना कीजिए 17 लाख वर्ष पुराने वैदिक भारतीय समाज का जो राक्षसों से आक्रान्त हो गया था—मतलब भारतीय समाज के रत्न जैसे यज्ञ, ईश्वर का अनुसन्धान, तप, त्याग, ब्रह्मचर्य, दान, अपरिग्रह आदि के विरुद्ध लंका से एक आन्दोलन चला और ब्रह्मचारियों, ऋषियों, तपस्वियो, अध्यात्म केन्द्रों पर हमले कर, उनका अपवित्रीकरण करके उन्हें बन्द कराया जाने लगा। इस आन्दोलन का नेता रावण था जिसने प्रतिपादित किया कि समस्त धन—वैभव पर उसी का अथवा उसके अनुयाई राक्षसों का अधिकार है, भोजन के लिए केवल महिष, मानुष, धेनु खर अज का मांस—भक्षण है, समस्त सुन्दर महिलाएं पकड़ कर लंका लाए जाने लायक हैं, लक्ष्य को पाने के लिए किसी भी प्रकार की नीति—अनीति का प्रयोग किया जा सकता है।

रावण की यह नयी राक्षसी राजनीतिक विचारधारा ने पूरे विश्व को चुनौती दी। सामान्य सहज जीवन को रद किया जाने लाग। ऐसे में क्षत्रिय कुल के राजकुमार राम परिदृश्य में आते हैं और उनके द्वारा खर—दूषण के वध के बाद वह रावण राम से इतना भयभीत हो गया था कि वनवास कर रहे राम की भार्या सुन्दरी सीता को पाने के लिए बाहुबल की जगह छल और चोरी की वृत्ति उसने अपनाई।

रावण ने जिस रक्ष संस्कृति का प्रतिपादन किया उसके केन्द्र में समाज नहीं था बल्कि व्यक्ति या लंका जैसी भौगोलिक सीमा में रहने वाले उसके राक्षस अनुयाई ही थे जबकि राम ने जिस वैदिक विचार धारा के लिए हाथ में धनुष उठाया था उसके केन्द्र में संस्कारिक समाज था। राम की

स्कूलिंग तत्कालीन समाज के अप्रतिम गुरु विश्वामित्र के हाथों हुई जिसके केन्द्र में मूल्य आधारित आदर्श समाज रहा। राम और लक्ष्मण कोमल वय के थे जब उनकी रिगरस ट्रेनिंग के लिए विश्वामित्र उन्हें पैदल मिथिला की तरफ ले गये पर मिथिला पहुंचने में काफी समय लगा जिस दौरान राम की शस्त्र ट्रेनिंग कुछ इस तरह की हुई कि कहावत चल पड़ी– रामः शस्त्रभृतामहं और राम बाण आदि। भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने अपने उपदेश में अपने को शस्त्र धारियों के रूप में राम से आइडेन्टीफाई किया– रामः शस्त्र भृताम्यहम्। रास्ते में राम के हाथों ताड़का नामक भयंकर राक्षसी का वध होता है। राक्षस विनाश का आन्दोलन का सूत्रपात ताड़का वध वर्तमान के बक्सर जिले से शुरू हुआ और फिर घटनाओं की चेन लंका तक गयी। राम की यह एक ऐसी सफलता रही जिसकी गूंज लंका तक गयी लेकिन रावण ने जिस तरह से लंका से विन्ध्य तक राक्षस समाज की पिचिंग की थी उसमें छल–कपट विद्या महारथी मारीच, खर–दूषण, सूर्पणखा आदि आदि थे और रावण ने ताड़का वध को बहुत गहराई से नहीं लिया।

राम ने रावण और उसके जैसे समाज को दूसरी बार फिर से झटका दिया जनकपुरी में आयोजित धनुष यज्ञ में। जिस शिव धनुष को रावणादि हिला नहीं सके उसे राम ने –''लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े लखा न कोऊ रहे सब ठाढ़े।'' खरदूषण वध, सूर्पनखा के नाक कान काटना, कपि समाज से मैत्री, समुद्र पार हनुमान का पहुंचना, लंका दहन आदि ने रावण की सत्ता को हिला दिया। राक्षसों के बीच राम के समर्थक लोगों का रावण पक्ष को छोड़कर कर आना आदि और फिर रावण वध ऐसी घटनाएं हैं जो राम के मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप और ईश्वरत्व दोनों को रेखांकित करती हैं। पिता की आज्ञा से राज–पाट छोड़कर कर 14 वर्ष के लिए वन जाना भी राम के मर्यादा पुरुषोत्तमत्व और ईश्वरत्व को स्थापित करते हैं।

मर्यादापुरुषोत्तम राम की यह कथा भगवान शंकर

अशोक खन्ना

प्रणीत है और समाज में काकभुशुण्डि से होते हुए ऋषि वाल्मिकि और संत तुलसी के माध्यम से हम सब को आज भी 17 लाख साल पहले के इतिहास और शिक्षा से जोड़ती है। राम का यही महत्व है कि जब समाज स्त्री लोलुप, धन लोलुप, राज्य लोलुप हो रहा था उन्होंने इन लोलुपताओं के केन्द्रों, प्रचारकों को निर्मूल कर दिया। भगवान राम के बारे में एक श्लोक है– रामो राजमणिः सदा विजयते रामम् रमेशं भजे रामेणाभिहता निशाचर चमू रामाय तस्मै नमः। राम राजाओं रत्न स्वरूप हैं सबसे ज्यादा चमकदार, सदा विजय प्राप्त करने वाले हैं, यानी समरांगण में विजय ही वरण करते हैं, समस्त निशाचर सैन्य का विनाश करने वाले हैं, ऐसे राम को नमन है।

चूंकि राम अयोध्या के प्रतापी राजा दशरथ के घर पैदा हुए थे, वही अयोध्या जो पुराणों के अनुसार सरयू के तट पर है। 17 लाख वर्षों के सुदीर्घ चक्र में अयोध्या बसी, बिगड़ी और फिर बसी पर सरयू से अयोध्या का सम्बन्ध यथावत है।

मर्यादापुरुषोत्तम राम की यह कथा भगवान शंकर प्रणीत है और समाज में काकभुशुण्डि से होते हुए ऋषि वाल्मिकि और संत तुलसी के माध्यम से हम सब को आज भी 17 लाख साल पहले के इतिहास और शिक्षा से जोड़ती है। राम का यही महत्व है कि जब समाज स्त्री लोलुप, धन लोलुप, राज्य लोलुप हो रहा था उन्होंने इन लोलुपताओं के केन्द्रों, प्रचारकों को निर्मूल कर दिया। भगवान राम के बारे में एक श्लोक है– रामो राजमणिः सदा विजयते रामम् रमेशं भजे रामेणाभिहता निशाचर चमू रामाय तस्मै नमः। राम राजाओं में रत्न स्वरूप हैं सबसे ज्यादा चमकदार, सदा विजय प्राप्त करने वाले हैं, यानी समरांगण में विजय ही वरण करते हैं, समस्त निशाचर सैन्य का विनाश करने वाले हैं, ऐसे राम को नमन है।

भगवान विष्णु की अश्रुधारा से सरयू प्रवाहित हुई बतायी जाती है। गंगा भी भगवान विष्णु के दाहिने चरण से प्रवाहित हैं। इस तरह सरयू और गंगा दोनों मोक्षदायिनी हैं। पुराणों में राम को भगवान विष्णु का अवतार बताया जाता है। कृष्ण भी विष्णु के पूर्णावतार हैं इसलिए उनके जन्मस्थान मथुरा को भी वही महत्व प्राप्त है जो अयोध्या को है।

भारतीय परम्परा में राम को त्रेतायुगीन बताया जाता है। त्रेतायुग का समय 12 लाख 96 हजार वर्ष हैं जिसके बाद द्वापर युग आता है और इस युग की समयसीमा 8 लाख 64 हजार वर्ष बताई गयी है। हम सब आज कलियुग में हैं जिसका 5 हजार वर्ष बीत चुका है। इस लम्बे दौर में मुस्लिम काल और ब्रिटिश काल में अयोध्या को हतभाग्य बनाने का हर सम्भव प्रयास विदेशी शासकों और एकेडेमिया द्वारा किया गया। स्वतंत्रता के बाद भी यह विदेशी प्रभाव बना रहा। अयोध्या में राम से जुड़े प्रमुख सभी प्रमुख स्थानों पर विदेशियों नें ध्वंस किया और कब्ज़ा किया। अयोध्या को श्रीहीन करने के लिए फैज़ाबाद को बसाया गया और उसे प्रशासनिक केन्द्र बनाया गया। अयोध्या को एक अव्यस्थित कस्बें में बदल दिया गया।

समय चक्र चलता रहा और 2014 में केन्द्र में तथा 2017 में उत्तर प्रदेश में प्रचण्ड जनादेश से ऐसी सरकारें गठित हुईं कि अयोध्याधाम के विलुप्त से पुराणोक्त भव्य स्वरूप की प्रतिस्थापना हुई। भव्य श्री राम मन्दिर के साथ ही अन्तरराष्ट्रीय एयर पोर्ट, विशाल रेलवे स्टेशन, चौड़ी सड़कों, फाइव स्टार अतिथि शालाओं के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। अब अयोध्या पुराणोक्त अयोध्या की प्रतिनिधि बन रही है, अभी पुनर्निमाण का काम चल रहा है और यह आगे नित नयी मंजिलें प्राप्त करेगा क्योंकि अयोध्याधाम में भारी पूंजीनिवेश के प्रस्ताव आ रहे हैं । यात्रा चलती रहेगी, राख के ढेर से निकलती अयोध्या की कथा हम सबको राम कथा के साथ मिलती रहेगी।

◆

मो. :9454457316

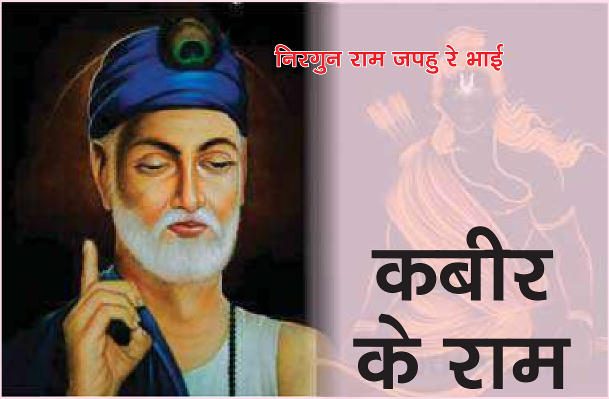

निरगुन राम जपहु रे भाई

कबीर के राम

—चित्रलेखा वर्मा

सन्त कबीर या भक्त कबीर पन्द्रहवीं शताब्दी के, रहस्य वादी कवि और सन्त थे। वे हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल युग में ज्ञानाश्रयी—निर्गुण शाखा के प्रवर्तक कवि थे। कबीर दास ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाओं ने हिन्दी प्रदेश के भक्ति आन्दोलन को गहरे स्तर तक प्रभावित किया था। कबीर दास कर्म प्रधान कवि थे। उनका पूरा जीवन समाज कल्याण और समाज हित के लिए समर्पित था। वे किसी एक धर्म को नहीं मानते थे। धर्म निरपेक्ष थे। सिक्खों के आदि ग्रन्थ में कबीर का लेखन भी देखने को मिलता है। कबीर पढ़े लिखे नहीं थे। वे जो कुछ बोलते थे उनके शिष्य उसे लिख लिया करते थे। उनका जीवन बहुत ही सरल, एवं सादा था, उनकी भाषा बहुत ही सरल और पंचमेल खिचड़ी थी—एवं उसमें भारत की बहुत सी भाषाओं के शब्द मिलते हैं। सभी सम्प्रदायों के लोग उनके अनुयायी थे। उनकी अपनी भाषा बहुत ही सरल थी। इस प्रभावशाली भाषा ने समाज में एक दूसरे को बहुत ही करीब कर दिया था। उस समय के भक्ति के आन्दोलन को एक दिशा दी जो एक विचारधारा के रूप में स्थापित हुआ जिसे सभी धर्मों के लोगों ने माना। आप की भाषा और विचारों की वजह से कबीर ने केवल देश में ही नहीं विदेशों में भी बहुत ख्याति प्राप्त की है, कबीर के राम अगम हैं। वे कण कण में व्याप्त हैं। कबीर को पढ़ते हैं तो राम के होने के कई अर्थ खुलते हैं।

कबीर के समस्त विचारों में राम नाम की महिमा ध्वनित होती है ! कर्म कांड मूर्ति पूजा, मन्दिर, मस्ज़िद में इनका विश्वास नहीं था, कबीर के राम एकेश्वरवादी हैं। कबीर के राम परम समर्थ हैं वे जगत के सभी जीवों में रहने वाले रमता राम ही हैं। कबीर कहते हैं.......

"व्यापक ब्रह्म सबनि मै एकै, का पंडित का जोगी
रावण राव कवन सूं कवन वेद को रोगी"

वे अपने को "हरि मोर पिउ, मैं राम की बहुरिया, तो कभी कहते हरि जननी मैं बालक तोरा"

कबीर के राम अगम तो थे ही और उनकी एक दृढ़ मान्यता यह भी थी कि कर्मों के अनुसार ही गति मिलती है! स्थान विशेष के कारण नहीं! लोगों की मान्यता थी की काशी में शरीर त्यागने पर स्वर्ग और मगहर में मरने पर नरक मिलता है! इसलिए उन्होंने अपना अन्त समय मगहर में व्यतीत किया और वहीं अपना शरीर छोड़ा आज भी वहां पर उनकी समाधि है ! उन्होंने कहा भी है,,,,,, "जो काशी तन तजै कबीरा, रामै कौन निहोरा रे!" कबीर राम की कोइ खास रूपाकृति की कल्पना नहीं करते क्योंकि ऐसा करने से राम

एक ढाचें में बंध जाते हैं, और एक ढाँचे में राम को कैद करना कबीर को पसन्द नहीं, कबीर राम की अवधारणा को एक व्यापक स्वरूप देना चाहते थे! राम के साथ वे एक व्यक्तिगत और पारिवारिक सम्बन्ध अवश्य ही स्थापित करने की कोशिश करते हैं। राम की महिमाशाली सत्ता को एक क्षण के लिए विस्मृत किये बिना वे अपने राम के साथ सम्बन्ध प्रेम के सरल, सरस मानवीय धरातल पर बनाते हैं।

कबीर राम रूप से अधिक नाम को महत्व देते थे। वैसे भक्ति संवेदना के सिद्धांत के हिसाब से रूप से अधिक नाम का ही महत्व है और कबीर ने 'राम नाम' का बहुत ही क्रान्ति–धर्मी उपयोग किया है। तथा शताब्दियों से चले आ रहे लोक मानस में राम के संशलिष्ट भावों को व्यापक रूप दे दिया है, उनके राम निर्गुण सगुण के अन्तर से अधिक निर्गुण राम है। यह राम शास्त्र द्वारा प्रतिपादित अवतारी सगुण वर्चस्व शील वर्णाश्रम के संरक्षक राम से बिलकुल भिन्न हैं। कबीर ने अपने राम को 'निर्गुणराम' कहा है और इसीलिए वे कहते हैं, 'निरगुन राम जपहु रे भाई' इसमें कोई संदेह की बात नहीं होनी चाहिए उनका कहना है कि ईश्वर को किसी नाम, रूप, गुण, अवतार आदि की सीमा या परिधि में नहीं बांधा जा सकता है। जो सभी सीमाओं से परे है और सर्वत्र है वही केवल और केवल कबीर के निर्गुण राम हैं। कबीर के राम निर्गुण हैं फिर भी अपने राम के साथ उनका प्रेम और मानवीय संबंध है। कभी वे उसी निर्गुण राम को माधुर्य भाव से पति, प्रेमी कभी दास्य भाव से स्वामी, कभी तो वे वात्सल्य भाव से माँ के बालक भी बन जाते हैं। निर्गुण, निराकार ब्रह्म के साथ वे इस तरह के मानवीय संबंध और प्रेम स्थापित करते हैं।

प्रोफेसर महावीर प्रसाद जैन जी का कबीर के राम और उनकी साधना के विषय में कहना है कि, "कबीर का सारा जीवन सत्य की खोज और असत्य के खण्डन में ही व्यतीत हुआ था। कबीर की साधना मानने से नहीं जानने से होती है' वे किसी के शिष्य नहीं है वे रामानन्द के चेताए हुए शिष्य हैं। कबीर के राम दशरथी राम नहीं है, उनके राम किसी सम्प्रदाय, जाति, देश की सीमा से नहीं बंधें हैं, उनके राम रूप के नहीं साधना के प्रतीक हैं। प्रकृति के कण–कण में व्याप्त हैं, अंग अंग में व्याप्त होने पर भी वे अनंग हैं वे अलख, अविनाशी परम तत्व ही कबीर के राम है। उनके राम, मनुष्य और मनुष्य के बीच किसी तरह के भेदभाव के कारक तत्व नहीं है। वे तो प्रेम तत्व के प्रतीक हैं भाव से बहुत ऊपर महाभाव या प्रेम के आराध्य हैं।

कबीर के अनुसार प्रेम के लिए पोथी पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं होती है उसके लिए तो बस ढाई अक्षर ही जरूरी है। आप का कहना है कि........।

'पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय'।

'प्रेम जगावै विरह को, विरह जगावै पीउ, पिउ जगावै जीव को' जो पीउ, सो जीव, जो है जीव वही है पिउ। इसी कारण उनकी पूरी साधना "हंस उबारन आए की साधना है"। इस हंस उबारने की साधना पोथियाँ पढ़ने से नहीं आती है ढाई आखर प्रेम के पढ़ने से ही होती है। धर्म के बारे में कबीर जी का कहना है कि 'धर्म कोई ओढ़ने, बिछाने की चीज नहीं है कि आपने ओढ़, बिछा कर अपने आप को ढाँक लिया और आप ने धर्म का आचरण कर लिया। धर्म के लिए सतत आचरण करना पड़ता है, निरन्तर साधना करनी पड़ती हैं। यह साधना प्रेम से होती है। यह साधना इतनी गहरी होनी चाहिए कि वही प्रेम तुम्हारे लिए परमात्मा हो जाए उसको पाने की इतनी लालसा हो जाए कि सब वैराग्य हो जाए विरह भाव हो जाए तभी उस ध्यान समाधि में पीउ जागरण हो जाएगा। और यही पीउ तुम्हारे अन्तर्निहित जीव को जगा सकता है। जो पिउहै सो जीव है। जब तुम पूरे संसार से प्रेम करोगे तब संसार का प्रत्येक जीव तुम्हारे प्रेम का पात्र हो जायेगा तुम्हारा सारा सारा अहंकार राग, द्वेष दूर हो जायेगा। एक महा भाव जगेगा कि यह पूरा संसार पिउ का घर है।' तभी तो कबीर कहते हैं–

'सूरज, चन्द्र का एक ही उजियारा, सब यही पसरा ब्रह्म पसारा,
जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है, बाहर भीतर पानी
फूटा कुम्भ जल जलहीं समाना, यह तथ कथौ गियानी',

कबीर राम के नाम को महत्व देते हैं और कहते हैं–

'राम नाम की लूट है लूट सको तो लूट
अंत समय पछतायेगा, जब प्राण जायेंगे छूट

कबीर के दोहों में समाज के सभी वर्गों के लिए सीख है। यह सीख जीवन के हर पहलू के लिए हैं। अगर मनुष्य उन दोहों के सारगर्भित अर्थ के अनुसार जीवन यापन करें तो समाज का रूप ही बदल जायेगा। अपने जीवन काल में मनुष्य को प्रेम और राम नाम को अपनाना चाहिए और अपना जीवन सार्थक करने का प्रयास करना चाहिए।

◆

मो. : 7007184526

जी हां! यह भगवान राम की अयोध्या है

–यशोदा श्रीवास्तव

भगवान राम की तितर बितर और बिखरी हुई अयोध्या अब पूर्णता हासिल कर ली है। देशवासियों का यहां भगवान राम का भव्य मंदिर और उसमें भगवान बालक राम की प्राण प्रतिष्ठा का बहुप्रतीक्षित सपना साकार हुआ और इसी के साथ बिखरी हुई अयोध्या को एक गुलदस्ते की भांति सजाया संवारा भी गया। अयोध्या की भव्य व खूबसूरत छटा देख हर किसी के भी मुंह से बरबस ही निकल उठता है, वाह मोदी!वाह योगी! कहना न होगा कि राम की इस अयोध्या का भव्य रूप मोदी और योगी की दृढ़ इच्छा शक्ति और संकल्प से ही संभव हो पाया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अयोध्या के चारों दिशाओं के लंबे चौड़े भू क्षेत्र को तीर्थ क्षेत्र घोषित करने के पीछे भी धार्मिक महत्व है। इतिहास की ओर झांकें तो अयोध्या की चारों दिशाओं में राम और राजा दशरथ से जुड़े स्थल मौजूद हैं। इसी में एक नाम मखौड़ा धाम का भी है। यह स्थल अयोध्या से करीब 50 किमी बस्ती जिले में स्थित है। उद्दालक ऋषि के तपोबल से प्रकट हुई उद्दालिकी गंगा (मनोरमा नदी) जिसे आठवीं गंगा भी कहा गया हैं, मखौड़ा धाम इसी तट पर स्थित है। यह वही स्थान है जहां कुल गुरु वशिष्ठ की सलाह पर श्रंगेर ऋषि ने राजा दशरथ के लिए पुत्र प्राप्ति का यज्ञ कराया था। तमाम धार्मिक ग्रंथों में उल्लिखित है कि इसके बाद ही राजा दशरथ को राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न के रूप में चार पुत्रों की प्राप्ति हुई। यहां स्थित सिंगीनारी गांव और आस–पास में स्थित पौराणिक मंदिर यहां श्रृंगी ऋषि की उपस्थिति का एहसास कराते हैं। यहां के सरवन पाकड़ गांव का पौराणिक पोखरा इसी जगह श्रवण कुमार के तीर लगने की कथा को बयां करते है। मखौड़ा धाम के इर्द–गिर्द रामायण काल से जुड़े कई स्थल हैं जो राम सीता के पदगमन के गवाह हैं। जनश्रुति के अनुसार विवाह के बाद बारात वापसी के वक्त सीता माता के पैर में मनोरमा और सरयू नदी के बीच चने की खूंटी चुभ गई थी। दोनों नदियों के बीच की बड़ी आबादी चाहे हिन्दू हों या मुसलमान तभी से चने की खेती को अभिशाप मानकर आज भी चने की खेती नहीं करती है। बताते हैं कि अयोध्या के आसपास 84 कोस के क्षेत्रों में राम और सीता से जुड़े धार्मिक महत्व के पवित्र स्थल मौजूद हैं। अयोध्या की प्रख्यात 84 कोसी परिक्रमा के पीछे भी यही कारण है कि श्रद्धालु भगवान राम और सीता से जुड़े सभी स्थलों की पूजा कर सकें।

अयोध्या का संबंध राजा इक्ष्वाकु रघु दिलीप हरिश्चंद्र भगीरथ से होते हुए श्रीराम तक का रहा है। वैदिक काल गणना में यह राजकुल सतयुग से त्रेता तक एक समृद्ध राज कुल रहा है जहां सदैव सनातन और वैदिक संस्कृति पुष्पित पल्लवित होती रही है। अयोध्या एक पवित्र नगर ही नहीं है, विश्व मानचित्र पर इसकी पहचान सनातन धर्म के संस्थापक के रूप में भी है। राजा रघु, राजा दिलीप, राजा हरिश्चंद्र, राजा भागीरथ और राजा राम ने सनातन और वैदिक संस्कृति को पूर्णतया आत्मसात करते हुए वैदिक संस्कृति और सनातन मूल्य के आधार पर अपनी राज्य सत्ता का संचालन किया था। इसीलिए जब जब राज संचालन की बात आती है तो राम राज्य की परिकल्पना को ही सर्वोच्च राज्य सत्ता का मानक माना जाता है।

भगवान श्री राम ने अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम की भूमिका में अपने राज्य का संचालन किया जिसका मूलाधार वैदिक एवं सनातन संस्कृति ही रही है। सनातन और हिंदू मूल्य से प्रभावित अनेक विचारधाराएं अयोध्या की धारा से प्रवाहित हुई जो भारत ही नहीं पूरे विश्व के मानचित्र पर अपने मूल्य और अपनी उपासना पद्धति के लिए जानी गई।अयोध्या के सनातन की सबसे बड़ी पहचान है कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम द्वारा स्थापित मूल्य आज भी पूरे विश्व के धर्म दर्शन में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अयोध्या सर्वदा से अभिजीत रही है। जब भारत में भारतीय उपमहाद्वीप के अंदर सनातन के विरोधियों का प्रवेश हुआ तो उनके द्वारा लगातार सनातन संस्कृति के प्रतीक स्थलों को मिटाने का प्रयास किया गया जबकि ऐसी मान्यता है कि अयोध्या में कभी भी युद्ध नहीं हुआ। इसीलिए इस स्थान का नाम अयोध्या रखा गया। वैदिक गणना के त्रेता युग में अयोध्या के राजा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम ने जो सामाजिक मर्यादाओं की अवधारणा प्रतिपादित की वह सनातन समाज में हमेशा पूज्यनीय और वंदनीय मानी गई है। अयोध्या के इतिहास एवं सामाजिक परिदृश्य को देखा जाए तो भगवान राम के राज काल में चारों भाइयों के बीच जो प्यार और सद्भाव था वह अपने आप में अनूठा और अभूतपूर्व था। साथ ही साथ भगवान राम की माताओं और

कौशल्या माता के आपसी प्रेम का भी कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। इस तरह अनेक ऐसे पौराणिक उदाहरण मिलते हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रथम पुरुष मनु और प्रथम शक्ति शतरूपा ही दशरथ और कौशल्या के रूप में त्रेता में उत्पन्न हुए थे और वैदिक सनातन आराधनाओं के प्रतिफल स्वरूप उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम जैसा पुत्र प्राप्त हुआ था।सनातन के मूल्यों का ही प्रतिफल था कि पिता की आज्ञा पर राज्य सत्ता को छोड़ना यह राम जैसे ही मर्यादा पुरुषोत्तम द्वारा संभव था।अयोध्या के इतिहास का जो वैदिक काल का आकलन होगा वह स्पष्ट करता है कि सनातन के मूल्यों के आधार पर ही अयोध्या और अयोध्यावासी पूरे विश्व में सनातन संस्कृति के अति महत्वपूर्ण ध्वजवाहक रहे हैं। सनातन अयोध्या के रोम–रोम में बसा हुआ है।

अयोध्या एक पवित्र नगर ही नहीं है, विश्व के मानचित्र पर इसकी पहचान सनातन धर्म के संस्थापक के रूप में भी है। राजा रघु, राजा दिलीप, राजा हरिश्चंद्र, राजा भागीरथ और राजा राम ने सनातन और वैदिक संस्कृति को पूर्णतया आत्मसात करते हुए वैदिक संस्कृति और सनातन मूल्य के आधार पर अपनी राज्य सत्ता का संचालन किया था। इसीलिए जब जब राज संचालन की बात आती है तो राम राज्य की परिकल्पना को ही सर्वोच्च राज्य सत्ता का मानक माना जाता है।

पूर्व में अयोध्या को साकेत के नाम से भी जाना जाता था। बौद्ध और जैनीय ग्रंथों में उल्लेख है कि गौतम बुद्ध और महावीर यहां आकर बस गए थे। जैन ग्रंथों में साकेत को पांच तीर्थंकरों, ऋषभनाथ, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ और अनंतनाथ की जन्मस्थली के रूप में बताया गया है और इसे पौराणिक भरत चक्रवर्ती के साथ जोड़ा गया है। गुप्त काल के बाद के तमाम तथ्यों के आधार पर अयोध्या और साकेत को एक ही शहर के रूप में साबित होना पाया गया है और इस पवित्र धरती को भगवान राम का जन्म स्थान बताया गया। अयोध्या के राम जन्मभूमि होने का विश्वास ही अयोध्या को हिंदुओं के लिए अत्यंत पवित्र शहर के रूप में प्रतिष्ठित करता है। और यही वह प्रमुख कारण है कि अयोध्या को हिंदुओं के सात सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से पहला माना गया है। राम के जन्म स्थान पर एक मंदिर था, जिसे मुगल सम्राट बाबर या औरंगजेब के आदेश से ध्वस्त कर दिया गया था और उसके स्थान पर एक मस्जिद बनाई गई थी। सैकड़ों साल तक राम जन्मभूमि का मामला अदालत में लटका रहा। हिंदू जनभावना के विपरित केंद्र तथा राज्य की सरकारें एक पक्ष को राय देती रहीं। 1992 में राम जन्मभूमि मुक्ति के आंदोलन कारियों पर गोलियां चली थीं जिसमें कई राम भक्तों को अपनी जान गंवानी पड़ी थी। 2019 में सुप्रीम कोर्ट के पांच न्यायधीशों की पीठ के फैसले के बाद राम जन्म भूमि मंदिर ट्रस्ट को सौंप दिया गया और उसके बाद अगस्त 2020 से राम मंदिर का निर्माण शुरू हुआ जिसका उद्‌घाटन भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी और यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ जी के कर कमलों से संपन्न हुआ।

◆

मो. : 9918955583, 8795087975

सर्वं राममयं जगत्

—दिनेश कुमार गुप्ता

5 अगस्त, 2020 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने श्री राम जन्म भूमि का पूजन किया था। 22 जनवरी, 2024 को करोड़ों हिन्दुओं का सपना साकार हुआ। भगवान राघव अपने भव्य मंदिर में विराजमान हुए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नाथ के लिए यह अत्यंत भावुक क्षण था। योगी आदित्यनाथ के दादा गुरु महंत दिग्विजय नाथ जी राम मंदिर आन्दोलन के अगुआ रहे। उनके बाद योगी आदित्यनाथ के गुरु महंत अवेद्यनाथ जी ने राम मंदिर निर्माण के लिए संघर्ष किया। पांच सदी के संघर्ष के बाद भगवान राघव का मंदिर बन कर तैयार हो गया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ कहते हैं कि "यह दिन इतिहास में सबसे अहम् और लोकतंत्र में भरोसा रखने वालों का दिन है। यह तिथि 500 सालों बाद आई है। शांतिपूर्ण ढंग से पूरा विवाद निपटा चुका है। एक समय वह भी था जब राम भक्तों पर गोलियां चलाई गईं। अब बिना भेदभाव के राम राज्य आएगा। सुरक्षा हमारा दायित्व है। जो लोग आज मंदिर में दर्शन कर के जनता को दिखाना चाहते हैं कि वे हिन्दुओं के समर्थक हैं। उनसे मैं पूछना चाहता हूं कि उस समय कहां थे ? जब यह कहा गया था कि मंदिर का निर्माण करना हो तो जन्म भूमि से कुछ दूरी पर मंदिर का निर्माण कर लिया जाय मगर विवादित ढांचा अपनी जगह पर बना रहेगा। सुप्रीम कोर्ट में चल रही सुनवाई को यह कर टलवाया गया कि अगर इस मुकदमे का फैसला वर्ष 2019 के पहले आ गया तो इसका भाजपा को फायदा होगा। अगर इन लोगों ने साथ दिया होता तो मंदिर कब का बन गया होता। इन सभी लोगों ने अयोध्या की ताकत को समझा ही नहीं। अयोध्या को उपेक्षित किया। अयोध्या पर प्रहार हुए। मेरे पहले के मुख्यमंत्री अयोध्या आने से डरते थे। मैंने जनपद का नाम बदल कर अयोध्या किया। उसके बाद अयोध्या की नगर पालिका को नगर निगम का दर्ज़ा दिया। अयोध्या में सड़कों को चौड़ा किया गया है।"

22 जनवरी को दिन में बारह बजे जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपने हाथ में पारंपरिक वस्त्रों में श्रीरामलला का छत्र और लाल वस्त्र लेकर मंदिर परिसर पहुंचे। पूरे वातावरण में जय सिया राम गुंजायमान हो उठा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कमल के फूल से पूजा–अर्चना की और फिर गर्भगृह में भगवान राम के बाल स्वरूप के दर्शन किए। प्राण–प्रतिष्ठा कार्यक्रम अभिजित मुहूर्त में संपन्न किया गया। वाराणसी के गणेश्वर शास्त्री द्रविड़ की निगरानी, समन्वय और दिशा निर्देशन में अनुष्ठान की सभी प्रक्रियाओं को मुख्य आचार्य काशी के लक्ष्मीकांत दीक्षित ने संपन्न कराया। इसके बाद उन्होंने श्री राम लला के विग्रह की दिव्य आरती भी उतारी। इस दौरान गर्भ गृह में उनके साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल

के साथ रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास भी उपस्थित रहे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने महंत नृत्य गोपाल दास का पैर छू कर उनका आशीर्वाद लिया।

आरती के समय परिसर में उपस्थित सभी अतिथियों ने घंटी बजाई। आरती के समय सेना के हेलीकॉप्टर मंदिर परिसर में मौजूद अतिथियों के साथ–साथ पूरी अयोध्या में पुष्प वर्षा की। इस दौरान परिसर में 30 कलाकारों ने अलग अलग भारतीय वाद्यों का वादन किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 11 दिन का विशेष अनुष्ठान व्रत पूर्ण किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को स्वामी गोविंद गिरि जी महाराज ने चम्मच से चरणामृत पिलाया। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के बाद प्रधानमंत्री मोदी कुबेर टीला पहुंचे, जहां उन्होंने शिव मंदिर में पूजा अर्चना की। कुबेर टीले पर स्थित यह अत्यंत प्राचीन शिवलिंग है। श्री राम मंदिर निर्माण के समय शिवलिंग को

संरक्षित किया गया था। शिवलिंग पर पूजा–अर्चना के बाद प्रधानमंत्री ने मंदिर निर्माण में लगे श्रमिकों से मुलाकात की और अपने हाथों से सभी श्रमिकों पर पुष्प वर्षा की।

भगवान राम के अयोध्या लौटने पर त्रेता युग में जो हर्ष और उल्लास का वातावरण था वही हर्ष–उल्लास 22 जनवरी, 2024 को पूरे देश और दुनिया के कई देशों में देखने को मिला। पूरे देश और दुनिया के कई देशों में दीपावली की तरह उत्सव मनाया गया। हिन्दुओं ने अपने घरों में दीप प्रज्वलित किये। नगर के हर चौराहे को सजाया गया और हर जगह भंडारे का आयोजन किया गया। अयोध्या के साथ पूरे भारत में राममय वातावरण देखने को मिला। प्राण–प्रतिष्ठा के दिन पूरी अयोध्या के सभी धार्मिक भवन, मठ, मंदिर एवं मुख्य मार्गों को भी बेहद आकर्षक ढंग से सजाया गया था। भगवान राघव की

सात दिवसीय अनुष्ठान

भगवान राघव के प्राण–प्रतिष्ठा का अनुष्ठान सात दिन तक चला। सात दिवसीय अनुष्ठान में साढ़े पांच लाख मंत्रों का जाप रामजन्मभूमि परिसर में किया गया। जिन मन्त्रों का जाप किया गया वो सभी मन्त्र रामनगरी के पौराणिक ग्रंथों से लिए गए थे। पुराण, श्रीमद्भागवत व वाल्मीकि रामायण के मंत्रों का जप किया गया। वाराणसी और भारत के अन्य स्थानों से 121 वैदिक कर्मकांडी ब्राह्मणों को बुलाया गया था।

द्वादश अधिवास आयोजित हुए। 16 जनवरी को प्रायश्चित और कर्मकूटि पूजन, 17 जनवरी को मूर्ति का परिसर प्रवेश, 18 जनवरी को सायंकाल तीर्थ पूजन, जल यात्रा, जलाधिवास और गंधाधिवास, 19 जनवरी को प्रातः औषध्याधिवास, केसराधिवास और घृताधिवास, 19 जनवरी को सायंकाल धान्याधिवास, 20 जनवरी को प्रातः शर्कराधिवास, फलाधिवास, 20 जनवरी को सायंकाल पुष्पाधिवास, 21 जनवरी को प्रातः मध्याधिवास और 21 जनवरी को सायंकाल शैय्याधिवास किया गया।

अभी तक के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ कि पहाड़ों, वनों, तटीय क्षेत्रों, द्वीपों आदि के वासियों ने प्राण–प्रतिष्ठा कार्यक्रम में भाग लिया। शैव, वैष्णव, शाक्त, गाणपत्य, पात्य, सिख, बौद्ध, जैन, दशनाम शंकर, रामानंद, रामानुज, निम्बार्क, माध्व, विष्णु नामी, रामसनेही, घिसापंथ, गरीबदासी, गौड़ीय, कबीरपंथी, वाल्मीकि, शंकरदेव (असम), माधव देव, इस्कॉन, रामकृष्ण मिशन, चिन्मय मिशन, भारत सेवाश्रम संघ, गायत्री परिवार, अनुकूल चंद्र ठाकुर परंपरा, ओडिशा के महिमा समाज, अकाली, निरंकारी, नामधारी (पंजाब), राधास्वामी सत्संग व्यास और स्वामीनारायण, वारकरी, वीर शैव इत्यादि कई सम्मानित परम्पराओं ने प्राण–प्रतिष्ठा में भाग लिया। यह सब कुछ अद्वितीय रहा।

प्राण–प्रतिष्ठा के बाद रोज की तरह सरयू जी की आरती की गई। सभी साधु–संतों के साथ विशिष्ट लोगों ने भी सरयू जी की आरती की प्राण–प्रतिष्ठा के बाद शाम को राम की पैड़ी पर प्रोजेक्शन शो और लेजर शो का आयोजन किया गया। इसके बाद इको फ्रेंडली आतिशबाज़ी की गई।

अयोध्या में जहां एक ओर भगवान विराजमान हो रहे थे तो वहीं दूसरी ओर रामनगरी, समूचे भारत की सांस्कृतिक गतिविधियों से सराबोर थी। गत 22 जनवरी को 'सांस्कृतिक अयोध्या' का दिव्य रूप लोगों ने देखा। 100 से अधिक मंचों पर सांस्कृतिक आयोजन किये गए। जनवरी की जबदरस्त ठंड में भी कलाकारों ने लगातार अपनी प्रस्तुति दी। डमरू वादन, शंख वादन से अतिथि देवो भव की परंपरा का साक्षात्कार हुआ। धोबिया लोकनृत्य, फरुआही नृत्य से माटी की खुशबू बिखरी। उधर गोरखपुर के वनटांगिया जनजातीय लोक नृत्य भी लोगों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहे। अवधी व उत्तरांचल के नृत्य से अतिथियों का स्वागत किया गया। अवध में मयूर लोक नृत्य के माध्यम से ब्रज की झलक देखने को मिली। धर्मपथ से लेकर राम पथ, जन्मभूमि पथ, एयरपोर्ट, लता चौक के पास व अन्य कई स्थानों पर नृत्य, वादन व गायन से पूरा वातावरण राम मय हो उठा था। उत्तर प्रदेश के विभिन्न अंचलों के लोक नृत्यों के कलाकारों के साथ ही हिमाचल प्रदेश, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, राजस्थान समेत कई राज्यों के कलाकारों ने भी सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।

◆

मो. : 9412674759

सहस्त्रायु होगा राममन्दिर

—सीमा राय

भगवान राघव का मंदिर भूतल पर बनकर तैयार हो गया। गत 22 जनवरी को प्राण–प्रतिष्ठा का कार्यक्रम सम्पन्न हो गया। अब लक्ष्य है कि वर्ष 2025 तक मंदिर के प्रथम तल पर राम दरबार और फिर शिखर का निर्माण का कार्य पूरा किया जाय। प्राण–प्रतिष्ठा के बाद मंदिर जन–मानस के दर्शन के लिए खोल दिया गया है। लाखों की संख्या में श्रद्धालु भगवान राघव का दर्शन–पूजन कर रहे हैं। भगवान राघव के मंदिर के निर्माण के लिए 500 वर्षों तक संघर्ष चला। यह संघर्ष इस बात के लिए था कि–मंदिर वहीं बनाएंगे। जब मंदिर बनाने के लिए निर्माण शुरू हुआ तब अभियंताओं को कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस कठिन चुनौती को पार करके ठीक वहीं पर एक हजार से ढाई हजार वर्ष तक अडिग रहने वाले भव्य मंदिर का भूतल बनकर तैयार हो गया है।

श्री राम मंदिर के दक्षिण तरफ 70 एकड़ भूमि में केवल 25 फीसदी हिस्से में ही निर्माण कार्य होगा। शेष 75 फीसदी हिस्से में हरियाली रहेगी। करीब 70 एकड़ भूमि के बाद भूतल पर श्री राम लला विराजमान हैं। इतना बड़ा भू दृ भाग छोड़कर मंदिर वहीं पर इसलिए बनाया गया है क्योंकि मंदिर वहीं बनाया जाना था। मंदिर के निर्माण के ठीक पहले जब स्वायल परीक्षण कराया गया तब मालूम हुआ कि चुनौतियां अभी और भी हैं। श्री राम लला विराजमान के जन्म स्थान का स्वायल परीक्षण फेल हो गया था। परीक्षण में निकल कर आया कि जमीन के नीचे रेत है और रेत में किसी भी प्रकार का पाइल फाउंडेशन बना पाना संभव नहीं था। अभियंताओं के सामने चुनौती बड़ी थी क्योंकि मंदिर का गर्भ गृह तो वहीं बनना था। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय बताते हैं 'गर्भगृह के ठीक ऊपर जहां ढांचा था उसी स्थान पर श्री राम लला विराजमान को स्थापित होना था। अभियंताओं को कड़ी मेहनत करनी पड़ी।

मंदिर निर्माण जब शुरू हुआ तब कोरोना काल चल रहा था। स्वायल परीक्षण फेल हो जाने के बाद आईआईटी दिल्ली, आईआईटी गुवाहाटी, आईआईटी चेन्नई, केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान रूड़की, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी सूरत और राष्ट्रीय भूभौतिकी अनुसंधान संस्थान हैदराबाद के विशेषज्ञों के साथ लगातार बैठक की गई। फिर यह तय हुआ कि 6 एकड़ के क्षेत्रफल में जमीन के नीचे करीब 15 मीटर गहरी खुदाई की जायेगी और वहां की पूरी रेत को हटाया जाएगा। गड्ढा खोद कर पूरी रेत हटाई गई। उसके बाद उसमे कंक्रीट भरा गया। इस कंक्रीट में सीमेंट केवल 2.5

प्रतिशत ही उपयोग की गई है। मोरंग की जगह फ्लाई ऐश का प्रयोग किया गया। रोलर कॉम्पैक्टेड कंक्रीट (आरसीसी) बनाई गई। 15 मीटर तक 56 लेयर की एक कृत्रिम चट्टान तैयार की गई।

श्री राम लला विराजमान के मंदिर को परम्परागत नागर शैली में बनाया गया है। पूरब से पश्चिम दिशा में मंदिर की लंबाई 380 फीट है और उत्तर से दक्षिण दिशा में चौड़ाई 250 फीट है। मंन्दिर के परिसर में जहां भक्तगण खड़े होंगे से वहां से मंदिर के शिखर की ऊंचाई 161 फीट होगी। मंदिर के भूतल पर भगवान राघव हैं। मंदिर के भूतल पर भगवान श्री राम, बाल रूप में विराजमान हैं इसलिए माता सीता जी की मूर्ति भूतल पर नहीं है। प्रथम तल पर श्री राम दरबार होगा। राम दरबार में भगवान राम, माता सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन एवं हनुमान जी की मूर्ति स्थापित की जायेगी। मंदिर के प्रत्येक मंजिल की ऊंचाई 20 फीट है। इसमें कुल 392 खंभे, 44 द्वार बनाये जायेंगे। महाराष्ट्र से सागौन की लकड़ी से सभी 44 द्वार बनाये जायेंगे। गर्भ गृह के 14 दरवाज़ों पर सोने का आवरण चढ़ाया गया है। सभी दरवाज़े की मोटाई 6 इंच रखी गई है। दरवाज़ों पर तीन इंच गहराई में नक्काशी की गई है। पूरे मंदिर के लिए करीब साढ़े 4 करोड़ रूपये की लकड़ी खरीदी गई है।

श्री राम मंदिर को शंकराचार्य जी की पंचायतन अवधारणा पर बनाया गया। भगवान गणपति, भगवान सूर्य, भगवान शंकर एवं मां भगवती का मंदिर होगा। चारों मंदिरों के बीच में भगवान विष्णु के अवतार भगवान राम का मंदिर है। गर्भगृह के दक्षिण की ओर हनुमान जी और उत्तर की ओर मां अन्नपूर्णा का मंदिर बन रहा है। प्रवेश द्वार पर दो रैम्प है। यह रैम्प वृद्ध एवं दिव्यांग जनों के लिए बनाये गए हैं। वृद्ध एवं दिव्यांग जनों के लिए लिफ्ट भी लगाई जायेगी। प्रवेश केवल पूरब की ओर से होगा और निकास दक्षिण की ओर होगा।

मंदिर को पूरी तरह आत्मनिर्भर बनाया गया है। मंदिर परिसर में दो सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाये गए हैं। नगर निगम का सीवर प्रयोग में नहीं लाया जाएगा। एक वाटर ट्रीटमेंट प्लांट मंदिर परिसर में बनाया गया है। पेयजल के लिए भी नगर निगम पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा। पीने के पानी के लिए बोरिंग की गई है। आरओ मशीन नहीं लगाई जाएगी क्योंकि 50 फीसदी पानी फिल्टर करने में ही खराब हो जाता है इसलिए 400 फीट गहरी बोरिंग की गई है।

फायर ब्रिगेड के लिए भूमिगत पानी की व्यवस्था की गई है। वहां पर पानी को सुरक्षित रखा जाएगा। अगर कभी ऐसी कोई जरूरत पड़ी तो मंदिर के एक किनारे संरक्षित पानी को फायर ब्रिगेड को उपलब्ध करा दिया जाएगा। 100 शौचालय एवं 100 स्नानागार बनाये गए हैं। मंदिर में कोई भी व्यक्ति मोबाइल फोन लेकर नहीं जा सकेगा। यात्री सुविधा केंद्र पर एक साथ 25 हजार लोग अपना जूता और मोबाइल फोन रख सकेंगे। यात्री सुविधा केंद्र पर योग्य चिकित्सकों द्वारा चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी। वहां पर बैठने की भी सुविधा होगी। श्रद्धालुओं को यात्री सुविधा केंद्र पर सभी सुविधाएं मुफ्त में उपलब्ध कराई जायेगी।

मंदिर के 70 एकड़ वाले क्षेत्र में करीब 600 पेड़ हैं, इन सभी पेड़ों की रक्षा की गई है। इस परिसर में आपातकाल के लिए सड़क बनाई गई है। इसी परिसर में भगवान राम के जीवन काल से जुड़े सात मंदिर बनाये जायेंगे। वाल्मीकि जी, वशिष्ठ जी, विश्वामित्र जी, अगस्त ऋषि, निषादराजा, माता शबरी एवं अहिल्या का मंदिर बनाया जाएगा। परिसर में कुबेर टीले पर जटायु की स्थापना कर दी गई है। कुबेर टीले पर ही शिवलिंग है। मंदिर निर्माण के समय शिवलिंग को संरक्षित किया गया है।। प्राण–प्रतिष्ठा के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, प्राचीन शिवलिंग के दर्शन करने गए थे।

श्री राम मंदिर की बीस विशेषताएं–

1. मंदिर परम्परागत नागर शैली में बनाया गया है।
2. मंदिर की लंबाई (पूरब से पश्चिम) 380 फीट, चौड़ाई 250 फीट (उत्तर से दक्षिण) और ऊंचाई 161 फीट है।
3. मंदिर भूतल, प्रथम तल और द्वितीय तल में बनेगा, प्रत्येक मंजिल की ऊंचाई 20 फीट, कुल 392 खंभे और 44 द्वार हैं।
4. भूतल गर्भगृह में प्रभु श्रीराम का बाल रूप (श्री रामलला का विग्रह) और प्रथम तल गर्भगृह–श्री राम दरबार है।
5. नृत्य मंडप, रंग मंडप, सभा मंडप, प्रार्थना व कीर्तन मंडप है।
6. खंभे व दीवारों में देवी देवता तथा देवांगनाओं की मूर्तियां हैं।
7. प्रवेश पूर्व दिशा से होगा। उसके बाद 32 सीढ़ियां चढ़कर सिंहद्वार से प्रवेश होगा।
8. दिव्यांगजन एवं वृद्धों के लिए रैम्प व लिफ्ट की व्यवस्था की गई है।
9. चारों ओर आयताकार परकोटा बनाया गया है।
10. परकोटा के चार कोनों पर भगवान सूर्य, मां भगवती, गणपति व भगवान शिव का मंदिर है। उत्तरी दिशा में मां अन्नपूर्णा व दक्षिण दिशा में हनुमान जी का मंदिर होगा।
11. मंदिर के समीप पौराणिक काल का सीताकूप है।
12. महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य, निषादराज, माता शबरी व ऋषिपत्नी देवी अहिल्या का मंदिर, परिसर में प्रस्तावित है।
13. दक्षिण पश्चिमी भाग में नवरत्न कुबेर टीला पर भगवान शिव का प्राचीन मंदिर (जीर्णोद्धार किया गया) एवं जटायु की स्थापना की गई।
14. मंदिर में लोहे का प्रयोग नहीं किया गया है, धरती के ऊपर कंक्रीट का प्रयोग नहीं किया गया है।
15. जमीन के नीचे गर्भगृह पर 14 मीटर मोटी रोलर कॉम्पेक्टेड कंक्रीट (आरसीसी), इसे कृत्रिम चट्टान का रूप दिया गया।
16. धरती की नमी से बचाव के लिए 21 फीट ऊंची प्लिंथ ग्रेनाइट से बनाई गई है।
17. मंदिर परिसर में सीवर ट्रीटमेंट प्लांट, वाटर ट्रीटमेंट प्लांट, अग्निशमन के लिए जल व्यवस्था एवं स्वतंत्र पावर स्टेशन होगा।
18. दर्शनार्थी सुविधा केंद्र में 25 हजार दर्शनार्थियों के सामान रखने के लिए लॉकर व चिकित्सा व्यवस्था रहेगी।
19. ब्लॉक सुविधा स्नानागार, शौचालय, वॉश बेसिन आदि है।
20. पूर्णतया भारतीय परम्परा व स्वदेशी तकनीक से निर्माण, पर्यावरण–जल संरक्षण पर विशेष ध्यान, 70 एकड़ क्षेत्र का 70 प्रतिशत हिस्से में हरियाली रहेगी।

मंदिर के फर्श पर राजस्थान के नागौर जनपद के मकराना का सफेद संगमरमर लगाया गया है। राजस्थान के भरतपुर जनपद के वंशीपहाड़पुर गांव का रेतीला पत्थर लगाया गया है। 5 लाख घन फुट गुलाबी रेतीला पत्थर मंदिर के निर्माण में लगाया गया है। मंदिर के निचले भाग में इन सभी रेतीले पत्थरों का प्रयोग किया गया है। रेतीला पत्थर नमी सोखता है। नमी मंदिर की दीवार पर न आने पाए इसके लिए मंदिर के प्लिंथ में तेलंगाना के ग्रेनाइट का प्रयोग किया गया है। 17 हजार ग्रेनाइट का प्रयोग किया गया है। रेतीला पत्थर और ग्रेनाइट मिलाकर पूरे मंदिर में 21 लाख क्यूबिक घन फुट पत्थर का प्रयोग किया गया है। राष्ट्रीय शिला यांत्रिकी संस्थान के अभियंताओं ने एक–एक पत्थर ठोक कर लगाया है। खराब पत्थर को हटा दिया गया है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय बताते हैं कि "ऐसे– ऐसे अभियंता हैं जो पत्थर को ठोक कर बता देते हैं कि पत्थर अन्दर से चटका हुआ है। एक–एक पत्थर को अभियंताओं ने कसौटी पर कसा तब उसके बाद उसे मंदिर में लगाया गया है। जितने भी अभियंताओं और वैज्ञानिकों ने मंदिर में योगदान दिया सभी के सभी भारतीय हैं। ऐसा कोई नहीं है कि भारतीय तो है मगर विदेश में जा कर बस गया है। मैं कहूंगा कि यह भारत के अभियंताओं का यह कलेक्टिव विज़डम है। राम नवमी के दिन भगवान श्री राम के मस्तक पर ढाई से पौने तीन मिनट तक सूर्य किरण रहेगी।

श्री राम मंदिर निर्माण के इस कार्य में कंस्ट्रक्शन एवं डिजाइन प्रबंधक का दायित्व निभा रहे गिरीश सहस्त्र भजनी बताते हैं कि 'मंदिर को काफी हद तक भूकंपरोधी बनाया गया है। मंदिर में आधुनिक तकनीक का प्रयोग इसलिए नहीं किया गया क्योंकि हम मंदिर ऐसा चाहते थे जो एक हजार से अधिक आयु का हो। आधुनिक तकनीक से ऐसा मंदिर बना पाना संभव नहीं था। दक्षिण में अत्यंत प्राचीन मंदिर आज भी अस्तित्व में हैं। इसका कारण है कि उन मंदिरों में सिर्फ पत्थर का प्रयोग किया गया है। बेहद सुन्दर तंजौर मंदिर इसका सबसे बड़ा उदहारण है। कांची का मंदिर हो या फिर कुम्भ कोणम का मंदिर हो इन सभी मंदिरों को पत्थरों के प्रयोग से बनाया गया है। कोई पक्षी जब घोंसला बनाता है तो एक बरसात का सीजन गुजारना उसका लक्ष्य होता है। इसी तरह मिट्टी के घर की हर दो–तीन साल में मरम्मत करानी पड़ती है। सीमेंट की अपनी एक आयु है। लोहे की भी आयु 100 साल है। उसके बाद लोहा धीरे–धीरे खराब होने लगता है। प्रकृति का अपना नियम है। मिट्टी से बनी हुई चीज फिर उसी मिट्टी में मिलना चाहती है। मगर पत्थर नैसर्गिक रूप से निर्मित होता है इसलिए उसकी आयु सबसे अधिक है। हवा और पानी के प्रभाव में आकर पत्थर एक हजार साल के बाद खराब होना शुरू होता है। जो भी आधुनिक तकनीक हमारे सामने थी। उसमें कोई भी ऐसी तकनीक नहीं थी जो एक हजार साल से अधिक की गारंटी दे पाती जिस तकनीक का प्रयोग करके मंदिर बनाया जा रहा है। उस हिसाब एक हजार से अधिक वर्ष तक इस मंदिर की आयु होगी।''

श्री राम मंदिर को बनाने से पहले सरयू नदी का सर्वे कराया गया। यह देखा गया कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि नदी की कटान मंदिर की ओर आ रही हो और भविष्य में कोई दिक्कत सामने आये। सर्वे में पाया गया कि सरयू का कटान मंदिर की उल्टी दिशा में जा रहा है। इससे यह साफ हो गया कि नदी की कटान से मंदिर को कोई दिक्कत नहीं होगी। उसके बाद भी मंदिर की सुरक्षा के लिए एक रिटेनिंग वाल बनाई गई है। इस रिटेनिंग वाल को सरयू की गहराई तक ले जाया गया है। भूमि से नीचे 12 मीटर गहरी रिटेनिंग वाल बनाई गई है। भविष्य में किसी प्रकार की कोई कटान होती भी है तो भी मंदिर पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

◆

मो. : 9415132728

कुछ यूं सँवरी है राम की अयोध्या

—चित्रांशी

अयोध्या की भव्यता में राम मंदिर तो प्रमुख है ही, यहां राम भक्त और नागरिकों की सुविधओं के भी ढेर सारे ऐसे कार्य हुए हैं जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। देखा जाए तो यहां का चंहुओर विकास ही अयोध्या को अयोध्या बनाता है। अयोध्या शहर में यदि दस पांच किलोमीटर क्षेत्र के विकास की बात करें तो इसमें एक टेंट सिटी भी है।सरयू के तट पर बसाए गए इस टेंट सिटी की डिजायनिंग अयोध्या विकास प्राधिकरण द्वारा किया गया है। कहने को यह टेंट सिटी है लेकिन यह टेंट में ही बना खूबसूरत होटल है जो डबल आक्यूपेंसी वाली लग्जरी व सेमी लग्जरी कैटेगरी सुइट जैसा है। अयोध्या विकास प्राधिकरण की देखरेख में बने इस टेंट सिटी में संपूर्ण अयोध्या दर्शन की अनुभूति का पूरा प्रयास है। यहां ठहरने वालों को फाइव स्टार होटल जैसी सुविधाएं उपलब्ध है।वुडन डेक बेस्ड इस टेंट सिटी में ठहरने वालों को शानदार इंटीरियर्स के साथ हर कमरे में आराम दायक कुर्सी, सोफे, डायनिंग लाउंज, पर्सनल वाल्ट, रूम हीटर, ऐसी सहित हाई स्पीड इंटरनेट सुविधा के साथ यह और भी तमाम सुविधाओं से लैस है। इस परिसर में प्रवेश करते ही यहां वोनफायर, कल्चरल इवेंट्स के लिए ओपन एरिया थिएटर और सोविनियर शॉप आगुंतकों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

अयोध्या के संपूर्ण विकास में यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ तथा देश के यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी का ही योगदान है। आज अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन का जो अत्याधुनिक व विकसित स्वरूप है, वह योगी आदित्यनाथ और प्रधानमंत्री मोदी का सपना था। अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन पर उतरते ही आपको किसी धर्मनगरी में प्रवेश की अनुभूति होता है। रेलवे स्टेशन पूर्णतया वातानुकूलित है। 241 करोड़ की लागत में करीब 10,650 वर्ग मीटर में बने इस रेलवे स्टेशन की क्षमता 50,000 यात्रियों की है। इसे अभी एक

लाख क्षमता तक किया जाना है। स्टेशन की इमारत ही किसी मंदिर से कम नहीं है। रेलवे पुलिस के लिए शानदार कार्यालय, वेल फर्निस्ड तीन प्लेटफार्म, कर्मचारियों के आधुनिक डिजायनिंग के आवास, पार्किंग की अच्छी सुविधा, मुख्य सड़क से स्टेशन तक अच्छी सड़क के साथ प्लेटफार्म पर बुजुर्गों और दिव्यांगों के लिए लिफ्ट और एस्केलेटर की सुविधा भी उपलब्ध है। यहां वीआईपी लाउंज, क्लार्क रूम, पर्यटक और तीर्थयात्रियों के लिए 24 घंटे सूचना केन्द्र,यात्री डेस्क तथा शिशु देखभाल केंद्र की सुविधा भी उपलब्ध है। देखा जाए तो अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन ऐसी तमाम सुविधाओं से लैस है जो देश के बड़े–बड़े रेलवे स्टेशनों पर है।

अयोध्या के संपूर्ण विकास में यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ तथा देश के यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी का ही योगदान है। आज अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन का जो अत्याधुनिक व विकसित स्वरूप है, वह योगी आदित्यनाथ और प्रधानमंत्री मोदी का सपना था। अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन पर उतरते ही आपको किसी धर्मनगरी में प्रवेश की अनुभूति होता है। रेलवे स्टेशन पूर्णतया वातानुकूलित है। 241 करोड़ की लागत में करीब 10,650 वर्ग मीटर में बने इस रेलवे स्टेशन की क्षमता 50,000 यात्रियों की है। इसे अभी एक लाख क्षमता तक किया जाना है। स्टेशन की इमारत ही किसी मंदिर से कम नहीं है।

पूरी अयोध्या सोलर सिस्टम से जगमगा रही है। लक्ष्मण घाट से गुप्तार घाट तक करीब दो किलोमीटर 470 मीटर तक 310 सोलर लाइट लगाए गए हैं। राम नगरी के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों तक सोलर लाइट से ही जगमग है। यहां कलेक्ट्रेट के निकट राज्य स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत 3708.49 लाख रुपए की लागत से मल्टीलेवल पार्किंग का निर्माण कराया गया है। नवनिर्मित लक्ष्मण कुंज स्मार्ट व्हीकल मल्टी स्टोरी में 228 चार पहिया तथा 309 दो पहिया वाहन खड़े करने की व्यवस्था है। वैसे नवनिर्मित भवनों के सामने ऐसी व्यवस्था की गई है कि यहां 1500से अधिक दुपहिया वाहन खड़े किए जा सकें। रामनगरी को ट्रैफिक मुक्त रखने के लिए जगह जगह और भी पार्किंग की व्यवस्था की गई है।

अयोध्या में श्रीराम मंदिर तक पहुँचने के लिए देश विदेश के पर्यटकों और श्रद्धालुओं को लेश मात्र भी कठिनाई न हो इसके लिए सड़कों के विस्तार और चौड़ीकरण का काम तेज गति से चल रहा है। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से अयोध्या तक पहुँचने के लिए इसे और सुगम बनाने की प्रक्रिया शुरू है। लखनऊ से गाजीपुर तक यह लंबा एक्सप्रेस वे अमेठी, सुल्तान पुर, अयोध्या, अंबेडकर नगर, आजमगढ़, मऊ होकर गुजरता है। पूर्वांचल एक्सप्रेस वे गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस वे से भी जुड़ेगा। लखनऊ से गोरखपुर मार्ग को 6 लेन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की मंशानुरूप गोरखपुर, आजमगढ़, अंबेडकर नगर तथा संतकबीरनगर से अयोध्या तक आवागमन आसान किया जा रहा है।

मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम की नगरी अयोध्या में भक्तों के पहुंचने के मार्ग को आसान बनाने के लिए

अंतरराष्ट्रीय एयर पोर्ट बनाया गया है जिसका नामकरण आदि कवि महर्षि वाल्मीकि के नाम पर हुआ। पूर्व में इस हवाई अड्डे का नाम श्रीराम हवाई अड्डा था। इस हवाई अड्डे के अंतर्राष्ट्रीय स्तर का दर्जा प्राप्त हो जाने से विदेश में रहने वाले श्रद्धालु भी आसानी से अयोध्या पहुँच कर प्रभु श्री राम का दर्शन कर सकेंगे।

अयोध्या के जर्रे जर्रे को धार्मिक पहचान में परिवर्तित करने के लिए कई कोणों से काम हुए हैं। अयोध्या में जहां तुलसी उद्यान था, वहां राम पथ विकसित हुआ है। नया घाट मार्ग से सहादत गंज तक करीब 13 किमी मार्ग को 4 लेन कर दिया गया है और इस मार्ग पर पड़ने वाले दुकानों और भवनों को एक रंग में रंगा गया है। यह मार्ग और यहां स्थित भवन व दुकानें अलग ही छटा बिखेर रही हैं। साकेत धाम से लता मंगेशकर चौक तक करीब दो किलोमीटर तक निर्मित धर्म पथ को भी 4 लेन तक किया गया है। यहां भव्य द्वार का निर्माण तथा इसका सौंदर्यी कृत कर इसे व्यापक रूप से विकसित किया गया है। अयोध्या मुख्य मार्ग से हनुमान गढ़ी होते हुए श्री राम जन्मभूमि मंदिर मार्ग को भक्ति पथ का नाम दिया गया है।इस मार्ग को अतिक्रमण मुक्त कर इसे भी 4 लेन में परिवर्तित किया गया है। इस मार्ग को पूरी तरह राम मय दर्शाने की कोशिश की गई है। चारों ओर टेराकोटा की कलाकृतियां और भित्ति चित्र की योजना बद्ध कलाकारी कर अयोध्या की विरासत को संरक्षित किया गया है जो अयोध्या की जीवंतता को दर्शाता है। सुग्रीव किला से श्री राम जन्मभूमि मंदिर मार्ग को श्री राम जन्मभूमि पथ के रूप में विकसित किया गया है। इस मार्ग को 2 लेन के साथ यह हाई स्पीड इंटरनेट एक्सप्रेस जोन भी है। यहां भक्तों की सुविधा के लिए 5 जी और फ्री वाई फाई भी उपलब्ध है। इस मार्ग को पूरी तरह सीसीटीवी से लैस करते हुए यहां सर्विलांस की व्यवस्था भी है। इस तरह देखें तो अयोध्या को अयोध्या बनाने में प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी तथा प्रधानमंत्री मोदी जी का विजन भी झलकता है।

◆

मो. : 7905525699

पूरी अयोध्या सोलर सिस्टम से जगमगा रही है। लक्ष्मण घाट से गुप्तार घाट तक करीब दो किलोमीटर 470 मीटर तक 310 सोलर लाइट लगाए गए हैं। राम नगरी के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों तक सोलर लाइट से ही जगमग है। यहां कलेक्ट्रेट के निकट राज्य स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत 3708.49 लाख रुपए की लागत से मल्टीलेवल पार्किंग का निर्माण कराया गया है। नवनिर्मित लक्ष्मण कुंज स्मार्ट व्हीकल मल्टी स्टोरी में 228 चार पहिया तथा 309 दो पहिया वाहन खड़े करने की व्यवस्था है। वैसे नवनिर्मित भवनों के सामने ऐसी व्यवस्था की गई है कि यहां 1500से अधिक दुपहिया वाहन खड़े किए जा सकें।

नव्य, भव्य, दिव्य अयोध्या

—अन्जु अग्निहोत्री

अयोध्या में श्रीरामलला के नव विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा से अतीत की राजधानी का गौरव हासिल कर अयोध्या प्रदेश का सबसे तेज विकसित होता व्यापारिक केन्द्र के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। प्रदेश सरकार ने अयोध्या अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के लिए 821 एकड़ भूमि उपलब्ध कराई तथा केंद्रीय नागर विमानन मंत्रालय द्वारा समयबद्धता के साथ विश्वस्तरीय एयरपोर्ट तैयार कराया गया। इंडिगो द्वारा प्रदेश के 08 नगरों—लखनऊ, गोरखपुर, वाराणसी, कानपुर, आगरा, प्रयागराज, बरेली तथा अयोध्या से उड़ान की सुविधा दी है। 'जटायु क्रूज सेवा संचालित की जा चुकी है। प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरूप अयोध्या को सड़क, रेल तथा वायु मार्ग की बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान की गई है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी परिकल्पना नव्य भव्य, दिव्य अयोध्या देश दुनियां में अपनी गौरवशाली पहचान स्थापित कर रहा है। 22 जनवरी के बाद अयोध्या में हर दिन 2—3 लाख श्रद्धालुओं के आगमन की सम्भावना को दृष्टिगत होटलों/धर्मशालाओं/टेंट सिटी और होम स्टे की आवासीय सुविधा को और बेहतर ढंग से उपलब्ध कराने के साथ आगंतुक को स्मृति उपहार के रूप में गुणवत्ता पूर्ण सामग्री क्रय करने की सुविधा है। देश और प्रदेश के लिए विदेशी मुद्रा प्राप्त करने का केन्द्र अयोध्या बन गया है। योगी सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में, विशेष रूप से आर्थिक क्षेत्र में, लगातार कई बड़े फैसले लिए हैं, जिनका प्रभाव अब अयोध्या में व्यापारिक केन्द्र के रूप में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। वैश्विक स्तर की सुविधाओं से युक्त नव रूप रंग में सजी त्रेतायुगीन वैभव के अनुरूप संवरी अवधपुरी का

विकास सर्व समावेशी वैश्विक पर्यटन स्थली के रूप 'नव्य अयोध्या की स्थापना लगभग 1893 एकड़ में अत्याधुनिक नगरीय सुविधाओं से युक्त नवीन ग्रीनफील्ड वैदिक सिटी के विकास की प्रक्रिया भी गतिमान है। पार्क में मेडिटेशन हॉल, क्वीन पवेलियन, किंग पवेलियन, पाथ–वे, फाउंटेन, म्यूरल, ऑडियो–वीडियो इत्यादि स्थलों का निर्माण, मंदिर संग्रहालय की स्थापना, श्रीराम मंदिर के डिजाइन से प्रेरित अयोध्या के भव्य प्रवेश द्वार का निर्माण। पावन 84 कोसी परिक्रमा मार्ग को राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित। भव्य अयोध्या की परिकल्पना के तहत नगर के तेरह किलोमीटर मुख्य मार्ग का चौड़ीकरण, मार्ग के दोनों ओर रामायण कालीन वृक्षों की छाया, गुप्तार घाट से जानकी घाट तक के विकास और सुंदरीकरण का कार्य, पर्यटन सुविधाओं के विकास के लिए नया घाट के निकट भव्य पर्यटन सुविधा केंद्र का निर्माण किया जा रहा है।

लगभग दो हजार वर्गमीटर के परिक्षेत्र में क्वीन मेमोरियल पार्क का विकास किया जा रहा है। इससे दक्षिण कोरिया और भारत के प्राचीन मैत्री संबंधों को नवीन आयाम मिलेगा। पार्क में मेडिटेशन हॉल, क्वीन पवेलियन, किंग पवेलियन, पाथ–वे, फाउंटेन, म्यूरल, ऑडियो–वीडियो इत्यादि का निर्माण तेज गति से जारी है। इसके अलावा मंदिर संग्रहालय की स्थापना, श्रीराम मंदिर के डिजाइन से प्रेरित अयोध्या के भव्य प्रवेश द्वार का निर्माण। भव्य अयोध्या की परिकल्पना के तहत नगर के तेरह किलोमीटर मुख्य मार्ग का चौड़ीकरण, मार्ग के दोनों ओर रामायण कालीन वृक्षों की छाया, गुप्तार घाट से जानकी घाट तक के विकास और सुंदरीकरण का कार्य, पर्यटन सुविधाओं के विकास के लिए नया घाट के निकट भव्य पर्यटन सुविधा केंद्र का निर्माण हो रहा है।

योगी सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में, विशेष रूप से आर्थिक क्षेत्र में, लगातार कई बड़े फैसले लिए हैं, जिनका प्रभाव अब अयोध्या में व्यापारिक केन्द्र के रूप में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। वैश्विक स्तर की सुविधाओं से युक्त नव रूप रंग में सजी त्रेतायुगीन वैभव के अनुरूप संवरी अवधपुरी का विकास सर्व समावेशी वैश्विक पर्यटन स्थली के रूप 'नव्य अयोध्या की स्थापना लगभग 1893 एकड़ में अत्याधुनिक नगरीय सुविधाओं से युक्त नवीन ग्रीनफील्ड वैदिक सिटी के विकास की प्रक्रिया भी गतिमान है।

108 से अधिक कुंडों का पुनरोद्धार

श्रीराम कथा संग्रहालय के संचालन के लिए श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट से अनुबंध हो चुका है। सरयू तट पर स्थित जामतारा में पीपीपी के माध्यम से राम अरण्य की परिकल्पना पूरी हो चुकी है, जहां श्री राम के 14 वर्ष के वनवास की कथाओं को विभिन्न माध्यमों से सजीव किया जाएगा। 'कुंडों का नगर कहे जाने वाले अयोध्या के 108 से भी अधिक कुंडों का पुनरोद्धार होना शुरू हो गया है। साथ ही साथ पौराणिक सूर्यकुंड पर लाइट एंड साउंड शो का संचालन भी योगी सरकार में होने लगा है। 67 हेक्टेयर के झील समदा वेटलैंड का इकोलॉजिकल संरक्षण से प्रकृति प्रेमी पर्यटकों के लिए संपन्न जैव–विविधता हॉटस्पॉट बन गया।

बढ़ी कनेक्टिविटी, खुल रहे अच्छे होटल

योगी सरकार की ओर से अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन का कायाकल्प के साथ भारत के विभिन्न नगरों से अयोध्या की 4 या 6 लेन रोड कनेक्टिविटी लोगों को अचंभित करने वाली हैं। सबसे अनूठी बात ये है कि अयोध्या में विभिन्न राज्यों, धार्मिक पीठों, मठ–मंदिरों की ओर से अतिथि ग्रहों का निर्माण तथा विश्वस्तरीय होटल चेन कम्पनियों द्वारा 5–7 सितारा होटल बनाने के लिए प्रस्ताव मिले हैं। अयोध्या में निर्मित हो रहे रामजन्मभूमि मन्दिर तथा अयोध्या की वास्तु परम्परा के अनुसार आधुनिकीकरण हो रहा है, रेलवे स्टेशन तथा विश्व की सबसे ऊंची राम प्रतिमा आकर्षण का केन्द्र बनेगी।

अयोध्या के माहात्म्य व प्रशस्ति–वर्णन से इस नगरी के महत्व और लोकप्रियता का स्वयं ही अनुभव हो जाता है। अर्थववेद में इसे देव–निर्मित आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली स्वर्गिक नगरी के रूप में रेखांकित किया गया है। अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्यातस्यां हिरण्यमयः कोशः स्वर्गों ज्योतिषावृतः। महर्षि वाल्मीकि–कृत रामायण अयोध्या का मानवेन्द्र मनु द्वारा निर्मित लोक–विख्यात नगरी के रूप में उल्लेख करती है

कोसलो नाम मुदितः, स्फीतो जनपदो महान। निविष्टः

सरयू तीरे, प्रभूत धन धान्यवान्।। अयोध्या नाम नगरी, तत्रासील्लोक विश्रुता। मनुना मानवेन्द्रेण, या पुरी निर्मिता स्वयम्।।

पुराणादि ग्रन्थों में भारत की प्राचीन एवं सात मोक्षदायिनी पुरियों में अयोध्या का अग्रगण्य नामोल्लेख हुआ है। चीनी यात्रीद्वय फाह्यान व ह्वेनसांग के यात्रा–वृत्तान्तों में भी अयोध्या नगरी का उल्लेख मिलता है। प्राचीन ग्रन्थों–पुराणों, रामायण, श्री रामचरित मानस एवं अगणित अन्य अमर कृतियों में अयोध्या, कोसलपुरी, अवधपुरी, साकेत आदि नामों से वर्णित यह नगरी अपने विशिष्ट माहात्म्य के कारण देश–विदेश के श्रद्धालुजनों में आस्था व प्रेरणा के पावन केन्द्र के रूप में समादृत है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने तभी तो अवधपुरी का वर्णन करते हुए कहा है

बंदऊँ अवध पुरी अति पावनि, सरजूसरि कलि कलुष नसावनि

अयोध्या के प्रमुख दर्शनीय स्थान

रामकोट

यह नगर की पश्चिमी दिशा में स्थित है, जहाँ अनेक मन्दिर एवं दर्शनीय स्थान अवस्थित हैं। चैत्रमास की रामनवमी (मार्च–अप्रैल) को भगवान् राम के जन्मोत्सव के पावन पर्व पर यहाँ देश–विदेश के श्रद्धालुओं का बड़ी संख्या में आवागमन होता है।

कनक भवन

कनक भवन वास्तु शिल्प कला की प्राचीन धरोहर से परिपूर्ण अयोध्या का एक मात्र मन्दिर है। कनक भवन के

विषय में एक रोचक जनश्रुति प्रचलित है कि जब जानकी जी विवाह के पश्चात् अयोध्या आईं, तो महारानी कैकेयी ने कनक–निर्मित अपना महल उनको प्रथम भेंट स्वरूप प्रदान किया था। महाराजा विक्रमादित्य ने इसका पुनर्निर्माण करवाया। बाद में टीकमगढ़ रियासत की महारानी वृषभानु कुंवारी ने एक सुन्दर विशाल भवन इसी स्थान पर पुनः निर्मित करवाया, जो आज भी विद्यमान है। कनक भवन में स्थित मन्दिर में श्री राम और किशोरी जी की दिव्य प्रतिमाएं स्थापित हैं।

नागेश्वरनाथ

नागेश्वरनाथ जी द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक हैं। श्री रामचन्द्र जी के पुत्र महाराजा कुश द्वारा स्थापित इस मन्दिर की स्थापना के संबंध में कथा प्रचलित है कि एक दिन जब महाराजा कुश सरयू नदी में स्नान कर रहे थे, तो उनके एक हाथ का कंगन जल में गिर गया, जिसे नाग–कन्या उठा ले

गयी। बहुत खोजने के बाद भी जब महाराज कंगन प्राप्त नहीं कर सके, तब कुपित होकर उन्होंने जल को सुखा देने की इच्छा से अग्निशर का संधान किया, जिसके परिणामस्वरूप जल–जन्तु व्याकुल होने लगे। तब नागराज ने स्वयं वह कंगन लाकर महाराजा कुश को सादर भेंट किया तथा उनसे अपनी पुत्री से विवाह का अनुरोध किया। महाराजा कुश ने नाग–कन्या से विवाह करके उस घटना की स्मृति में उस स्थान पर नागेश्वरनाथ मंदिर की स्थापना की। उसी स्थान पर आज एक विशाल शिव मंदिर स्थित है। शिवरात्रि महापर्व पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु तीर्थ यात्री सरयू–स्नान करके इस मन्दिर में जल चढ़ाने आते हैं।

हनुमानगढ़ी

रामकोट के पश्चिम द्वार पर महाराजा विक्रमादित्य ने हनुमान जी का एक मन्दिर बनवाया था, जो कालान्तर में हनुमान टीले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह मंदिर राजद्वार के सामने ऊंचे टीले पर स्थित है। कहा जाता है कि हनुमान जी यहाँ एक गुफा में रहते थे और रामजन्मभूमि और रामकोट की रक्षा करते थे।

प्रभु श्रीराम ने हनुमान जी को ये अधिकार दिया था कि जो भी भक्त मेरे दर्शनों के लिए अयोध्या आएगा उसे पहले तुम्हारा दर्शन पूजन करना होगा। यहां आज भी छोटी दीपावली के दिन आधी रात को संकटमोचन का जन्म दिवस मनाया जाता है। मंदिर तक पहुंचने के लिए लगभग छिहत्तर सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। इसके बाद पवनपुत्र हनुमान की 6 इंच की प्रतिमा के दर्शन होते हैं, जो हमेशा फूल–मालाओं से सुशोभित रहती है। मुख्य मंदिर में बाल हनुमान के साथ अंजनी माता की प्रतिमा है।

छोटी देवकाली मन्दिर

यह मन्दिर नये घाट के समीप एक गली में स्थित है। छोटी देवकाली जी अवध की ग्राम–देवी मानी जाती हैं। मान्यतानुसार विवाहोपरान्त जब सीता जी अयोध्या आने लगीं, तो अपने साथ अपनी पूज्या देवी गिरिजा जी को भी साथ लायीं। महाराज दशरथ ने उनकी स्थापना सप्तसागर के समीप एक सुन्दर मन्दिर में की। जानकी जी नित्य नियमपूर्वक प्रातः काल परम शक्तिस्वरूपा माँ गिरिजा जी की विधिवत उपासना करती थीं। वर्तमान में यहाँ श्री देवकाली जी की देदीप्यमान भव्य प्रतिमा स्थापित है।

मत्तगयन्द (मातगैंड) जी का स्थान

मत्तगयन्द जी लंकाधिपति विभीषण के पुत्र थे, उनका स्थान कनक भवन मंदिर के उत्तर–पूर्व दिशा में स्थित है। ये रामकोट के उत्तरी फाटक के प्रधान रक्षक थे। प्रतिवर्ष होली

के बाद पड़ने वाले प्रथम मंगल के दिन यहाँ विशाल मेला लगता है।

कालेराम जी का मन्दिर

नागेश्वरनाथ मन्दिर के समीप सरयू नदी के पावन तट पर स्वर्गद्वार मुहल्ले में कालेराम जी का मन्दिर है। यहाँ विक्रमादित्य कालीन मूर्तियाँ स्थापित हैं।

मणिपर्वत

विद्याकुण्ड के समीप 65 फीट की ऊंचाई पर स्थित मणिपर्वत के बारे में जनश्रुति है कि हिमालय से संजीवनी बूटी को लेकर लंका जाते हुए पवनसुत हनुमान जी ने संजीवनी बूटी के पर्वत–खण्ड को रखकर यहाँ विश्राम किया था। ऊपर

मन्दिर एवं झला दर्शनीय हैं। श्रावण मास में अयोध्या में सम्पन्न होने वाले प्रसिद्ध झूलनोत्सव का प्रारम्भ यहीं से होता है।

आचार्यपीठ श्री लक्ष्मण किला

श्री लक्ष्मण किला

महान संत स्वामी श्री युगलानन्यशरण जी महाराज की तपस्थली यह स्थान देश भर में रसिकोपासना के आचार्यपीठ के रूप में प्रसिद्ध है। श्री स्वामी जी चिरान्द (छपरा) निवासी स्वामी श्री युगलप्रिया शरण 'जीवारामश् जी महाराज के शिष्य थे। आपने श्री सरयू के तट पर स्थित यह आश्रम श्री सीताराम जी आराधना के साथ संत–गो–ब्राह्मण सेवा संचालित करता है। सरयू की धार से सटा होने के कारण

यहाँ सूर्यास्त दर्शन आकर्षण का केंद्र होता है।

क्षीरेश्वरनाथ महादेव मन्दिर

हनुमानगढ़ी चौराहे से लखनऊ जाने वाले मार्ग पर क्षीरसागर स्थित है। इसके समीप ही श्री क्षीरेश्वरनाथ महादेव जी का भव्य शिवालय स्थित है।

कौशलेश सदन

यह मन्दिर कटरा मुहल्ले में स्थित है। अयोध्या स्थित रामानुजी वैष्णवों की तिंगल शाखा के प्रमुख मन्दिरों में यह मन्दिर अद्वितीय है।

लव–कुश मन्दिर

भगवान राम के पुत्रों–लव व कुश के नाम पर निर्मित इस मन्दिर में लव व कुश की मूर्ति के साथ महर्षि वाल्मीकि जी की प्रतिमा भी स्थापित है। इसके समीप ही अंबरदास जी राम कचेहरी मन्दिर, जगन्नाथ मन्दिर तथा रंगमहल मन्दिर हैं, जो अयोध्या के प्रमुख दक्षिण भारतीय मन्दिरों में गिने जाते हैं।

विजयराघव मन्दिर

यह मन्दिर विभीषण कुण्ड जाने वाले मार्ग पर स्थित है। इसकी स्थापना 1915 ईस्वी में की गयी थी। आचारी सम्प्रदाय के सिंगल शाखा के अयोध्या स्थित मन्दिरों में इसका प्रमुख स्थान है।

'रानी हो' की जन्मस्थली

'रानी हो' की जन्मस्थली अयोध्या लगभग 2000 वर्ष पूर्व अयोध्या की 'रानी हो' जल मार्ग द्वारा भारत से कोरिया गई थी जिन्हें कोरियन नाम हू–वांग ऑक के नाम से जाना जाता है। कोरिया जाकर उनका विवाह, करक साम्राज्य के राजा 'किम सूरो' के साथ हुआ था। अयोध्या में 'रानी हो' की

जन्मस्थली की स्मृति में वर्ष 2000 में निर्मित स्मारक आज कोरियन गणराज्य का धार्मिक स्थल बन चुका है।

राजगद्दी

रत्नसिंहासन (राजगद्दी) यह भवन कनक भवन की दक्षिण दिशा में है। मान्यतानुसार यहाँ भगवान राम का राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ था।

दन्तधावन कुण्ड

श्री वैष्णव के वड़गल शाखा के अन्तर्गत आने वाला यह मन्दिर हनुमानगढ़ी चौराहे से रामघाट तुलसी स्मारक जाने वाले मार्ग पर स्थित है। किंवदन्ती के अनुसार इसी स्थान पर श्री रामचन्द्र जी चारों भाइयों के साथ प्रातः दतुवन करते थे।

वाल्मीकि रामायण भवन

इस भवन में सम्पूर्ण वाल्मीकि रामायण को संगमरमर पर अंकित किया गया है।

तुलसी स्मारक भवन/अयोध्या शोध संस्थान/राम–कथा–संग्रहालय

यहाँ विशाल ग्रन्थागार, पुस्तकालय–वाचनालय एवं हस्तशिल्प का राम–कथा–विषयक सामग्रियों का संग्रह तथा अनुसंधाताओं के लिए तुलसी–साहित्य पर उत्तम सामग्री भी उपलब्ध है।

राम–कथा–संग्रहालय

तुलसी स्मारक भवन में स्थित राम–कथा–संग्रहालय में राम–कथा से संबंधित विभिन्न प्रकार की पेंटिंग, हाथी–दाँत के मुखौटे, प्राचीन दर्शनीय वस्तुएं और देश के विभिन्न संग्रहालयों में संग्रहीत राम–कथा से संबंधित मूल सामग्रियों के चित्र उपलब्ध हैं।

गुरुद्वारा ब्रह्मकुण्ड

ब्रह्मकुण्ड घाट के निकट ब्रह्मदेव जी का एक छोटा–सा मन्दिर है, जिसमें ब्रह्मा जी की चतुर्भुजी मूर्ति स्थापित है। मान्यता है कि गुरुनानकदेव जी को चतुरानन ब्रह्मा जी के साक्षात दर्शन यहीं प्राप्त हुए थे। गुरु तेगबहादुर जी एवं गुरु गोविन्द सिंह जी का भी पावन प्रवास अयोध्या नगरी में हुआ था। घाट के पास विशाल गुरुद्वारा स्थित है, जहाँ प्रतिवर्ष सिख तीर्थ यात्री दर्शन के लिए आते हैं।

अयोध्या के जैन मन्दिर

अयोध्या को पाँच जैन तीर्थकरों की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। यहाँ पाँचों तीर्थकरों के मन्दिर हैं–तीर्थकर आदिनाथ मन्दिर (मुरारी टोला, स्वर्गद्वार), तीर्थकर अजितनाथ मन्दिर (सप्तसागर, इटौआ), तीर्थकर अभिनन्दननाथ मन्दिर (सराय के निकट), तीर्थकर सुमन्तनाथ मन्दिर (रामकोट), तीर्थकर अनन्तनाथ मन्दिर, (गोलाघाट)। रायगंज मुहल्ले में ऋषभदेव जी का विशाल मन्दिर है। इस मन्दिर में ऋषभदेव जी की 21 फुट ऊँची संगमरमर की दिगम्बर मूर्ति स्थापित है, जो अयोध्या स्थित जैन मन्दिरों में स्थापित मूर्तियों में विशालतम है।

अयोध्या की प्रमुख परिकमाएं 'चौरासी कोसी परिक्रमा–चौत्र शुक्ल रामनवमी को प्रारम्भ चौदह कोसी परिकमा– कार्तिक शुक्ल नवमी या अक्षय नवमी पर पंचकोसी परिक्रमा–कार्तिक एकादशी को अर्न्तगृही परिक्रमा–नित्यप्रति (यह परिकमा वशिष्ठ कुण्ड से प्रारम्भ होकर हनुमानगढ़ी से दक्षिण होते हुए श्री वशिष्ठ आश्रम पर समाप्त होती है। अयोध्या के सभी प्रमुख मन्दिर एवं तीर्थ इस परिक्रमा में आ जाते हैं।)

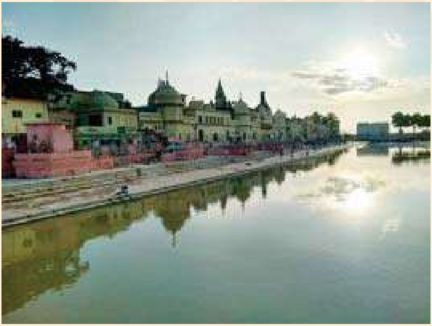

राम की पैड़ी

राम की पैड़ी अयोध्या–गोरखपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर सरयू के पुल के निकट नदी के किनारे स्थित राम की पैड़ी अयोध्या का महत्वपूर्ण स्थान है। उद्यान एवं जलाशय यहाँ के आकर्षण हैं।

ऐतिहासिक स्थल

सरयूतटवर्ती गुप्तारघाट (जहाँ लोक–मान्यतानुसार भगवान् श्रीराम ने जल–समाधि ली थी, जिसके कारण यह गुप्तारघाट के नाम से जाना जाता है), सीता–राम मन्दिर, चक्रहरि–गुप्तहरि, नृसिंह एवं बड़ी देवकाली मन्दिर जैसे आस्था के पावन स्थल हैं।

बालार्क तीर्थ (सूर्य कुण्ड) (लगभग 4 किमी.)। चौदह कोसी परिक्रमा मार्ग पर अवस्थित, यहाँ राजा दर्शन सिंह ने सूर्यदेव का मन्दिर एवं विशाल सूर्यकुण्ड बनवाया था।

नन्दिग्राम (भरतकुण्ड) अयोध्या–सुल्तानपुर मार्ग पर अवस्थित, मान्यतानुसार श्रीराम की वनवास से वापसी के लिए भरतजी ने यहाँ तपस्या की थी। तभी से इसका नाम नंदीग्राम (भरत कुण्ड) पड़ा। यहाँ पिण्ड–दान की अत्यधिक मान्यता है। यहाँ भरतजी का मन्दिर भी है। मखौड़ा (मखभूमि) मान्यता है कि यहाँ राजा दशरथ ने पुत्रेष्टि–यज्ञ किया था। श्रृंगी ऋषि आश्रम टाण्डा मार्ग पर महबूबगंज के सरयू नदी के तट पर स्थित श्रृंगीऋषि का प्राचीन मन्दिर है। यहाँ प्रतिवर्ष राम नवमी पर मेला लगता है। वाराही देवी (उत्तरी भवानी मन्दिर) यहाँ वाराही देवी का प्राचीन मन्दिर है, जो उत्तरी भवानी के नाम से प्रसिद्ध है। स्वामी नारायण मन्दिर, छपिया छपिया स्वामी नारायण सम्प्रदाय के प्रवर्तक स्वामी सहजानन्द जी की जन्म–स्थली है।

◆

मो. : 8787093085

गोरक्षपीठ के महंत दिग्विजय नाथ रहे राम मंदिर आंदोलन के प्रणेता

–शशि प्रकाश

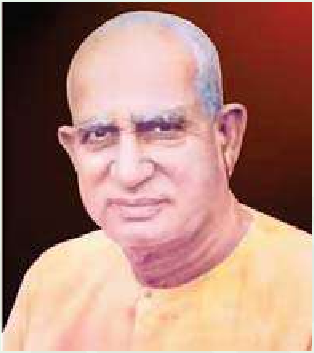

गोरक्षपीठ और राम मंदिर आंदोलन का रिश्ता नया नहीं है। राम मंदिर आंदोलन के इतिहास की ओर झांके तो पता चलता है कि इस पीठ के महंत दिग्विजय नाथ ने 16वीं सदी के प्रारंभ से इस आंदोलन को नई दिशा दी थी। वे 1949 में अयोध्या में प्राकट्य राम की मूर्ति के गवाह थे। आगे चलकर गोरक्ष पीठ के महंत अवेद्यनाथ और वर्तमान महंत तथा यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने राम मंदिर आंदोलन को अंजाम तक पहुंचाने में अपनी भूमिका का निर्वहन किया। महंत दिग्विजय नाथ, अवेद्यनाथ और आदित्य नाथ लोकसभा के सदस्य चुने जाते रहे।

गोरखपुर स्थित गोरक्षपीठ के राम आंदोलन से जुड़े होने के ढेर सारे एतिहासिक तथ्यों के बीच एक यह तथ्य भी सामने आया है कि मंदिर के लिए आंदोलन का विचार योगी आदित्यनाथ के दादागुरु ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ के मन में तभी आया था जब वर्ष 1949 में प्रभु श्रीराम की मूर्ति के प्रकट होने के समय वह वहां मौजूद थे। राम मंदिर के निर्माण के लिए 16वीं सदी से लेकर 20वीं सदी तक हुए 79 युद्ध में गोरक्षपीठ की भूमिका अगुवा की रही है। इस तरह राम मंदिर आंदोलन को जन आंदोलन बना देने का श्रेय गोरक्षपीठ को जाता है। महंत गोपाल नाथ के बाद उनके शिष्य योगिराज बाबा गम्भीरनाथ और गोरक्ष पीठाधीश्वर महंत ब्रह्मनाथ ने भी रामजन्मभूमि मुक्ति के लिए प्रयास जारी रखा।

गोरखपुर स्थित गोरक्षपीठ के राम आंदोलन से जुड़े होने के ढेर सारे एतिहासिक तथ्यों के बीच एक यह तथ्य भी सामने आया है कि मंदिर के लिए आंदोलन का विचार योगी आदित्यनाथ के दादागुरु ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ के मन में तभी आया था जब वर्ष 1949 में प्रभु श्रीराम की मूर्ति के प्रकट होने के समय वह वहां मौजूद थे। राम मंदिर के निर्माण के लिए 16वीं सदी से लेकर 20वीं सदी तक हुए 79 युद्ध में गोरक्षपीठ की भूमिका अगुवा की रही है। इस तरह राम मंदिर आंदोलन को जन आंदोलन बना देने का श्रेय गोरक्षपीठ को जाता है। महंत गोपाल नाथ के बाद उनके शिष्य योगिराज बाबा गम्भीरनाथ और गोरक्ष पीठाधीश्वर महंत ब्रह्मनाथ ने भी रामजन्मभूमि मुक्ति के लिए प्रयास जारी रखा।

अयोध्या से जुड़े ढेर सारे तथ्यों में एक यह भी है कि 23 दिसम्बर, 1949 को अयोध्या थाने में दर्ज़ एक एफआईआर के मुताबिक राम मंदिर में एक बहुत बड़े जन समूह द्वारा भगवान श्रीराम की मूर्ति की स्थापना की गई थी। वहीं संत समाज इसे ख़ारिज करते हुए कहता है

कि उस रात जन्मभूमि पर रामलला का प्राकट्य हुआ था। पुलिस की एफआईआर में इसे छिपाया गया है। जनसमूह द्वारा मूर्ति स्थापना के बहाने पुलिस ने मंदिर के दरवाजे बंद कर उस पर ताला लगा दिया। ज़ाहिर पुलिस की इस कार्रवाई के बाद अयोध्या में जनाक्रोश फैलना ही था। सो ऐसा ही हुआ। पुलिस की इस कार्रवाई के खिलाफ लोगों में गुस्सा भड़क गया। इस जनाक्रोश का फायदा उठाते हुए अयोध्या के तत्कालीन डीएम केके नायर ने राम जन्मभूमि को 'विवादित' स्थल घोषित कर दिया। तत्पश्चात आईपीसी की धारा–145 के तहत प्रशासन ने इस पूरे क्षेत्र को अपने अधिकार में ले लिया। इस घटना से दिग्विजय नाथ बहुत आहत हुए थे। उन्होंने डीएम से रामलला की मूर्ति की नियमित पूजा–अर्चना की मांग की थी। डीएम केके नैयर भांप चुके थे कि दिग्विजय नाथ की मांग को इग्नोर करने का परिणाम क्या हो सकता है। अंततः डीएम को महंत दिग्विजय नाथ की मांग को मानने को मजबूर होना पड़ा। कथित विवादित स्थल पर पूजा अर्चना की व्यवस्था कराई गई।

अयोध्या का राम जन्मभूमि विवाद ब्रिटिश महारानी विक्टोरिया तक पहुंचा तो उन्होंने उक्त स्थल का नक्शा मंगवाया और इस प्रांगण के बीच में दीवार खड़ी करने के साथ आदेश हुआ कि मुसलमान भीतर नमाज पढ़ें और हिन्दू बाहर के चबूतरे पर पूजा पाठ करें। महंत दिग्विजयनाथ ने 1935 में गोरक्ष पीठाधीश्वर बनने के साथ ही मंदिर आंदोलन की भी कमान संभाल ली थी। बताते हैं कि महंत दिग्विजय नाथ राममंदिर मुक्त आंदोलन में इस तरह जुटे थे कि उन्हें 22–23 दिसम्बर 1949 की रात को रामलला के प्राक्ट्य होने का एहसास हो गया था। संभवतः यही वजह थी कि वे नौ दिन पहले से ही अयोध्या पहुंच गए थे तथा 22–23 की रात भक्तों के भारी भीड़ के साथ भगवान राम की आरती में शामिल हो गई। यह वही क्षंण था जब सदियों से चले आ रहे जन्मभूमि मुक्ति संग्राम का सूत्रपात हुआ और महंत दिग्विजयनाथ ने मंदिर आंदोलन से जन–जन को जोड़ने में बड़ी कामयाबी हासिल की।

कुछ समय बाद ठाकुर गोपाल सिंह नाम के एक भक्त ने फैजाबाद के सिविल जज न्यायालय में एक याचिका दाखिल की। इस पर 16 जनवरी, 1950 को अंतरिम निषेधाज्ञा जारी करते हुए न्यायालय ने केंद्रीय गुंबद के नीचे श्रीराम की मूर्ति को हटाने या पूजा में हस्तक्षेप किए जाने पर रोक लगा दी गई। इस तरह राम जन्मभूमि मुक्ति की लड़ाई सड़क से संसद और न्यायालय तक एक साथ शुरू हो गई जिसके क्रम में लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा भी शामिल थी। महंत दिग्विजयनाथ इस लड़ाई की अगुवाई हर मोर्चे पर करते हुए नज़र आए। 1967 में गोरखपुर से सांसद बने महंत दिग्विजयनाथ 1969 में समाधि लेने तक रामजन्म भूमि आंदोलन में सक्रिय रहे।

अयोध्या का राम जन्मभूमि विवाद ब्रिटिश महारानी विक्टोरिया तक पहुंचा तो उन्होंने उक्त स्थल का नक्शा मंगवाया और इस प्रांगण के बीच में दीवार खड़ी करने के साथ आदेश हुआ कि मुसलमान भीतर नमाज पढ़ें और हिन्दू बाहर के चबूतरे पर पूजा पाठ करें। महंत दिग्विजयनाथ ने 1935 में गोरक्ष पीठाधीश्वर बनने के साथ ही मंदिर आंदोलन की भी कमान संभाल ली थी। बताते हैं कि महंत दिग्विजय नाथ राममंदिर मुक्त आंदोलन में इस तरह जुटे थे कि उन्हें 22–23 दिसम्बर 1949 की रात को रामलला के प्राक्ट्य होने का एहसास हो गया था। संभवतः यही वजह थी कि वे नौ दिन पहले से ही अयोध्या पहुंच गए थे तथा 22–23 की रात भक्तों के भारी भीड़ के साथ भगवान राम की आरती में शामिल हुए थे। यह वही क्षंण था जब सदियों से चले आ रहे जन्मभूमि मुक्ति संग्राम का सूत्रपात हुआ और महंत दिग्विजयनाथ ने मंदिर आंदोलन से जन–जन को जोड़ने में बड़ी कामयाबी हासिल की।

◆

मो. : 9616134344

रामो विग्रहवान धर्मः

—प्रेमशंकर अवस्थी

अजेय अयोध्या धाम आह्लाद के अनहद से अभिभूत है। सम्प्रति अखण्ड भारत की समूची भाव–भूमि सीय राममय है। अयोध्या भी धन्य हो गई, रामलला के विग्रह की प्राण–प्रतिष्ठा से, पृथ्वी के तृण–तृण और मानव के हर मन को जैसे जीवन मिल गया हो। समूचे भारत में आजादी जैसा जश्न का माहौल रामोत्सव से तो मना ही वैश्विक मंच में अधिकाँश देश राममय हो गये। रामोत्सव की भव्यता और दिव्यता देकर भारतीय संस्कृति, परम्परा और गरिमा के पुनरुत्थान के युग का सूत्रपात कर आस्था भक्ति का संगम बना दिया। वाल्मीकि रामायण राम के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा को 'धर्म' की प्रतिमूर्ति संज्ञा दी है। 'राम ही धर्म है' को सनातन संस्कृति की श्रेष्ठ विरासत मानकर संस्थापक भगवान विष्णु के अवतार रूप राम का महामंत्र है।

'रामरक्षा स्त्रोत' में 'शिव पार्वती' संवाद में

'राम–रामेति–रामेति रमे रामे मनोरमे,

सहस्रनाम–तत्तुल्यं रमे रामे मनोरमे।'

शिव स्वयं एक मात्र राम नाम को ही मुक्ति का महामंत्र घोषित करते हैं। महर्षि वाल्मीकि से लेकर गोस्वामी तुलसीदास तक 'राम नाम' ही महामंत्र के रूप में कोटि–कोटि व्याकुल जनों के जीवन में आस, विश्वास बनकर ज्योतित होता दिखाई देता है। 'निराकार' शब्द संसार की विद्युतीय हलचल उस हल–चल से शब्द को साकार रूप में परिवर्तन करने वाले कण्ठ के मध्य आकंठ जिस परम परमात्मा ध्वनि का साक्षात्कार सनातन काल से ऋषि–मुनि करते आ रहे हैं। वह निरंतर गूँजती ध्वनि मंगलकारी राम हैं। निर्गुण निराकार ओंकार जब साकार होने की यात्रा मार्ग पर बढ़ता है तो उसे राम बनना पड़ता है। 'रामं शब्द रम् धातु घञ् प्रत्यय कर बनता है :—

रमन्ते सर्वेशु हृदयेशु इति रामः,

अक्षर 'रा' अग्नि का प्रतीक है। यही कारण है कि कई प्राचीन संस्कृतियों में सूर्य को 'रा' कहा जाता था। यह न केवल ऊर्जा का प्रकाश है बल्कि 'ज्ञान' और आत्मज्ञान का भी प्रकाश है। अक्षर 'म' 'मन' (मानस) का प्रतीक है। इसमें स्व (आत्मा) और

मनुष्य भी शामिल है। इस प्रकार मन, मस्तिष्क अथवा मानव को प्रकाशित करने का सबसे सुलभ साधन है रामनाम। प्रातः स्मरणीय संत तुलसी दास जी इसे कलियुग में भव सागर से पार जाने का एकमात्र साधन बताते हैं

कलयुग केवल राम अधारा
सुमिर–सुमिर नर उतरहिं पारा।

तुलसीदास के मानस में रची गई इस चौपाई के आश्रित आज के युग में ऐसे क्या साधन उपलब्ध हैं जिनके द्वारा आसानी से आत्मज्ञान अर्थात् मोक्ष पाया जा सकता है? नाम जप में किसी विधि–विधान, देश, काल, अवस्था की कोई बाधा नहीं है।

अविजित अयोध्या दिव्य–भव्य और नव्य राम मंदिर के निर्माण और प्राण–प्रतिष्ठा से लगता है कि कलियुग में त्रेता युग अवतरित होकर समूचे विश्व का ध्यान आकृष्ट कर नये भारत को गौरवान्वित कर रहा है।

नये भारत की सूत्रपात की आधार शिला यशस्वी प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से ही 'राम मंदिर' की प्राण प्रतिष्ठा से वैश्विक मंच में राम के बिना भारत निष्प्राण था, का संदेश दिया गया है।

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण की अवस्थापना की शुरुआत 09 नवम्बर, 2019 से ही हो गई थी। जब उच्चतम न्यायालय ने राम मंदिर के पक्ष में निर्णय देकर भारत के जन–जन को निहाल कर हर्षोल्लासित कर दिया था।

05 अगस्त, 2020 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के लिए भूमि पूजन कर अपनी आस्था और भक्ति से अपना यह संदेश देश को देने का प्रयास किया कि उनकी व उनकी सरकार में 'राम' व 'राम मंदिर' आस्था के केन्द्र बिन्दु हैं। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से उत्तर प्रदेश के कर्मशील मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ ने तो राम मंदिर निर्माण के लिए अयोध्या को

उत्तर प्रदेश की अघोषित राजधानी बनाकर अपना ख़ज़ाना ही खोल दिया। राम जन्मभूमि क्षेत्र ट्रस्ट की देख–रेख के साथ वे निरन्तर समीक्षा करते ही दिखे। यहाँ तक कि अयोध्या को उनकी गरिमा और महिमा के अनुकूल कलियुग में त्रेता युग को अवतरित कराने का भरसक सार्थक प्रयास किये। अपनी सरकार के कैबिनेट की बैठक अयोध्या में करके अब तक 47 नीतिगत निर्णय किये हैं। निर्णयों को अमली जामा पहनाने में भी कहीं वित्तीय संकट आड़े न आये, इसके लिए बजट का पूरा ध्यान रखा गया। भव्य, दिव्य, नव्य अयोध्या के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 61 बार अयोध्या पहुँचे और छोटी–बड़ी परियोजनाओं का खुद मौके पर ही स्थलीय निरीक्षण करने से लेकर अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठकें कीं। अब तक उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से 31 हजार करोड़ की सरकारी सहायता से मंदिर निर्माण व यहाँ के अन्य पौराणिक स्थलों के विकास में खर्च करके राम मंदिर के अनुकूल चित्रकारी के जरिये वातावरण बनाया गया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से उत्तर प्रदेश के कर्मशील मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ ने तो राम मंदिर निर्माण के लिए अयोध्या को उत्तर प्रदेश की अघोषित राजधानी बनाकर अपना खजाना ही खोल दिया। राम जन्मभूमि क्षेत्र ट्रस्ट की देख–रेख के साथ वे निरन्तर समीक्षा करते ही दिखे। यहाँ तक कि अयोध्या को उनकी गरिमा और महिमा के अनुकूल कलियुग में त्रेता युग को अवतरित कराने का भरसक सार्थक प्रयास किये। अपनी सरकार के कैबिनेट की बैठक अयोध्या में करके अब तक 47 नीतिगत निर्णय किये हैं।

सनातन परम्परा के अनुसार आध्यात्मिक केन्द्र के रूप के साथ ही सर्वसमावेशी वैश्विक पर्यटन स्थली और सतत् आत्मनिर्भर के अनुरूप अयोध्या के विकास के लिए साधु–संतों से विचार–विमर्श करते रहे हैं। योगी सरकार की पहल का ही नतीजा है कि अयोध्या राम–मंदिर और दीपोत्सव वैश्विक मंच पर भारत की पहचान बना चुका है।

योगी आदित्यनाथ 2017 में ही मुख्यमंत्री की कुर्सी संभालते ही 13 नवम्बर, 2018 को फैज़ाबाद जिला व मंडल का नाम बदलकर अयोध्या करना ही उनकी आस्था और श्रद्धा का कर्मयोगी परिचय पहले ही दे चुके हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निर्धारित 22 जनवरी, 2024 को राम विग्रह की प्राण–प्रतिष्ठा के पूर्व 'सीय राम मैं सब जग जानी' के भाव से विभोर योगी आदित्यनाथ जी सम्पूर्ण अयोध्या को राम मय माहौल बनाने के लिए अनुपूरक बजट से 100 करोड़ दिये। अयोध्या के साथ समूचे उत्तर प्रदेश को राम मय तो बनाया ही गया अपितु प्रदेश के हर ज़िलेवार मंदिरों में रामचरितमानस का अनवरत् पाठ का संदेश देकर घरों में यज्ञादि हवन आदि से आस्था और भक्ति का बीजारोपण कर जन–जन में दीपोत्सव जैसा उत्साह देकर पूरे वातावरण को राममय बना दिया।

22 जनवरी, 2024 को श्री राम जन्मभूमि क्षेत्र ट्रस्ट द्वारा सम्पन्न प्राण प्रतिष्ठा समारोह में मुख्य यजमान प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों वैदिक मन्त्रोच्चार के विधि विधान के बीच राम के बालकराम के रूप में विग्रह को प्राण–प्रतिष्ठित कर दिया।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता को बचाने में लगभग 700 वर्ष लग गये। आज की भावी पीढ़ी हजारों बलिदान व संघर्षों के प्रतीक श्री राम जन्म भूमि पर दिव्य, भव्य, नव्य श्रीराम मंदिर निर्माण व प्राण प्रतिष्ठा से अपने संकल्पों की पूर्ण आहुति देकर देख पा रही है।

अयोध्या जिनकी कर्म–भूमि रही है, हमारी ऋषि परम्परा में गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, शरभंग, श्रृंगी परशुराम, शतानन्द, जैसे चिरंजीव, ऋषि, प्राण प्रतिष्ठा के साक्षी बने सन्तगणों के हृदय में प्रतिष्ठित होकर मोदी व योगी की कर्मशीलता के लिए अन्तर्मन से आशीष दे रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी भाषण में उन लोगों के प्रति आभार व कृतज्ञता व्यक्त की, जिनका राम मंदिर निर्माण में किसी भी प्रकार का योगदान रहा है। 'लाज बचाने' की बात कहकर उच्चतम न्यायालय के न्याय मूर्तियों के प्रति भी आभार प्रकट करने से गुरेज़ नहीं किया।

ऋषि परम्परा में प्रधान मंत्री के साथ राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष नृत्य गोपाल दास जी, मुख्यमंत्री

योगी आदित्यनाथ, राज्यपाल आनंदी बेन पटेल की उपस्थिति समारोह को गौरवपूर्ण बनाने की भी साक्षी रही।

यह देश में पहला अवसर जब 150 परम्पराओं के संत समूह सभी विधाओं के श्रेष्ठ 25 हजार लोग एक ही परिसर में परिवार के हिस्सा बने 139 करोड़ों आँखें इसकी साक्षी रही हैं। राष्ट्र में ऐसे समवेत उल्लास के आनन्दमय वातावरण का दूसरा उदाहरण हाल मी कई शताब्दियों में देखने को नहीं मिलता। अयोध्या गौरवान्वित है कि उसे शैव, वैष्णव, शाक्त, गणपत्य, पाव्य, सिख, बौद्ध, जैन, दशनाम, शंकर, रामानन्द, रामानुज, निम्बार्क, माध्व, विष्णु नामी, रामस्नेही, दिरसापंथ, गरीबदासी, अकाली, निरंकारी, कबीरपंथी, सहित सभी धर्म सम्प्रदाय व परंपराओं के लिए स्वागत का अवसर मिला है :–

अवधपुरी सम प्रिय नहि सोई।
यह प्रसंग जानइ कोउ–कोउ।।
जन्म भूमि मम पुरी सुहावनि।
उत्तर दिसि बह सरयू पावनि।।
जा मज्जन से बिनहि प्रयासा।
मम समीप नर पावहिं बासा।।
अतिप्रिय मोहि इहाँ के वासी।
मम धामदा पुरी सुखरासी।।

भगवान की भावना को तुलसीदास जी अपने शब्दों में व्यक्त कर अयोध्या और सरयू की प्रति अगाध प्रेम प्रकट करके अवध के लोगों का अवगाहन किया है।

भारत वर्ष के चाहे जितने नाम हों। इसके चाहे जितने भी स्वरूप और दर्शन रहे हों पर सभी के मूल में अयोध्या ही मिलती है। चाहे भरत हो, मान्धाता हो, सगर, भगीरथ, दिलीप, पृथु, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, या विदेह राज जनक ही क्यों न हो सभी पर भारत को गर्व है। अयोध्या ही साक्षी है सतयुग की अयोध्या ने ही त्रेता युग में मानव और रक्ष सभ्यताओं का संघर्ष देखा है। अयोध्या ने ही द्वापर में संस्कारों और परिवारों का संघर्ष देखा है। अयोध्या ही है जो अब मनुष्य और उसकी श्वास के बीच का संघर्ष भी देख रही है। अयोध्या इस पृथ्वी पर तब से है जब से यह सृष्टि है। मानव जाति की उत्पत्ति, उसकी संस्कृति और उसके समग्र सभ्यताओं के विकास की वास्तविक राजधानी है। आदि पुरुष मनु का आविर्भाव इसी अयोध्या के साथ हुआ और इन्हीं मनु से मानव समुदाय का विकास संभव हो पाया। अयोध्या को अथर्ववेद में ईश्वर का नगर बताया गया है और इसकी सम्पन्नता की तुलना स्वर्ग से की गई है, अयोध्या हिन्दुओं के प्राचीन और सात पवित्र तीर्थस्थलों में एक श्रेष्ठता पर है :–

> **अयोध्या ही साक्षी है सतयुग की अयोध्या ने ही त्रेता युग में मानव और रक्ष सभ्यताओं का संघर्ष देखा है। अयोध्या ने ही द्वापर में संस्कारों और परिवारों का संघर्ष देखा है। अयोध्या ही है जो अब मनुष्य और उसकी भवास के बीच का संघर्ष भी देख रही है। अयोध्या इस पृथ्वी पर तब से है जब से यह सृष्टि है। मानव जाति की उत्पत्ति, उसकी संस्कृति और उसके समग्र सभ्यताओं के विकास की वास्तविक राजधानी है। आदि पुरुष मनु का आविर्भाव इसी अयोध्या के साथ हुआ और इन्हीं मनु से मानव समुदाय का विकास संभव हो पाया। अयोध्या को अथर्ववेद में ईश्वर का नगर बताया गया है और इसकी सम्पन्नता की तुलना स्वर्ग से की गई है।**

अयोध्या–मथुरा माया काशी कांचीत्वन्तिका,
पुरी द्वारावतीचैव सप्तैते मोक्षदायिका।

'अयोध्या, न जायते युद्धः यस्मिन स्थाने सा अयोध्या' यानी 'जहाँ युद्ध न हो', संघर्ष मुक्त स्थान, वह नगर ऐसा है। सम्पूर्ण देश में इस निमित्त मन में अयोध्या का पुनः निर्माण आज की आवश्यकता है और सभी का कर्तव्य भी है।

हजारों वर्षों से काशी के महाश्मशान की आग कभी बुझी नहीं और भगवान शिव का निवास भी बताया गया है। भगवान शिव के वहाँ रहने का एक मात्र कारण है हर समय अखण्ड रूप से 'राम' नाम सत्य है के उद्घोष का सुनाई पड़ना। बिना रामाश्रय के तारक मंत्र देने का विधान भी पूर्ण नहीं होता। जीव जगत को 84 लाख योनियों में भ्रमण के बाद मनुष्य योनि के प्राप्ति के उपरान्त मोक्ष के लिए सप्त मोक्ष नगरी जाना होता है उनके भी अयोध्या और काशी विशिष्ट हैं।

'काशी मरत जन्तु अवलोकी,
जाशु नाम फल करई विशोकी।'

कलिकाल में भगवान श्री राम के नाम के आश्रय से जीव जगत की मुक्ति का मंत्र भगवान शिव देते हैं। वहीं भगवान श्री राम अपने इष्ट के लिए :–

'लिंग थापि विधिवत कर पूजा,
शिव समान मोहिं प्रियहि न दूजा।'
शिवद्रोही मम दास कहावा,
सो नर मोहि सपनेहु नहि पावा।'

जो सम्बन्ध भगवान राम और भगवान शिव का है वहीं काशी का अयोध्या से है। गोस्वामी तुलसीदास के संसार में सिर्फ एक ही राजा है वह श्री रामचन्द्र जी हैं। कबीर ने भगवान 'राम' को भरतार बताते हुए कहा 'दुलहिन गाँवहु मंगलचार, मोरे घर आये राजा राम भरतार' रैदास की कुटिया 'राम भजन से बरबस भीगने लगी। रहीमदास ने तो मात्र एक दोहे में राम के प्रति अपार अपनत्व का प्रकटीकरण कर दिखाया' 'गहि सरनागत राम की, भवसागर की नाव। रहिमन जगत उधार को, और न कछु उपाव।।' रघुवंश महाकाव्य के प्रणेता महाकवि कालिदास ने अपने काव्य, 'इक्ष्वाकु वंश प्रभवो रामा नाम जनैश्रुतः कह उनके रघुवंश का गुणगान किया है। इसी कारण रघुवंशी कहलाये।

आज फिर वहीं श्री राम अयोध्या में पुनः भारत की राजनीति के आदर्श राम राज्य की संकल्पना को साकार होते प्राण प्रतिष्ठित हो गये हैं। सम्पूर्ण मानव जाति के लिए भारत की ओर से नियति का यह संदेश सुना और सुनाया जाना चाहिए कि 'राम' सभी के हैं। सभी जन राम के हैं।

वह मर्यादा के आदर्श हैं, समन्वय के आधार हैं, जीव की सद्गति हैं। निरन्तर सृजित होते और मिटते जीवन की वह संजीवनी है। राम राष्ट्र के प्राण हैं, राम राष्ट्र हैं, राम राज्य हैं और राज्य के आदर्श भी, राम भारत के लोक हैं, उसकी मंगलकामना भी, अमंगल को हरण करने वाले, राम घट–घट और कण–कण में व्याप्त ईश्वर हैं तो राम अयोध्या में सशरीर प्रकट होने वाले रामलला भी हैं।

सदियों के बाद भारत में हो रहे नव विहान को घटित होता देख अयोध्या समेत भारत का वर्तमान आनंदित है। भाग्यवान है यह पीढ़ी और वो लोग जो इस राम काज के साक्षी और कारण बने हैं और उससे भी बड़भागी हैं वो जिन्होंने अपना सर्वस्व इस राम काज के लिए समर्पित कर दिया है। महर्षि वाल्मीकि स्वनाम धन्य हैं जो श्री राम के सम्पूर्ण जीवन लीला के दृष्टा रहे हैं। 'राम' को रामायण में विग्रहवान धर्म बताकर उल्लेख किया है।

रामो विग्रहवान धर्मः साधु सत्यपराक्रमः,
राजा सर्वस्य लोकस्य देवानामिव वासवः।

ऐसे 'राम' की साधना जब तक भारत करेगा वह अपने आत्मनिर्भर ध्येय पथ पर अविकल चलता रहेगा। पूर्वकाल से पूर्वजों से दिया गया पाथेय है। मैं भी राम को चरणों में अपने को अर्पित कर कर पा रहा हूँ :–

रामाय रामचंद्राय राम भद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।

◆

मो. : 945040322

नए कालचक्र के नायक

—डॉ अजय कुमार मिश्रा

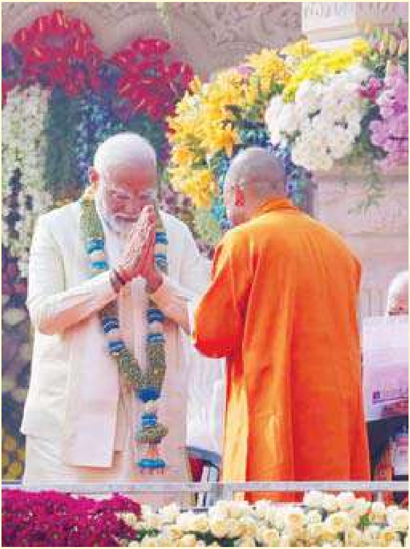

वर्ष 1528 से श्री राम जन्मभूमि मंदिर के लिए चल रहा विवाद 22 जनवरी, 2024 को न केवल पूर्ण रूप से समाप्त हो गया, बल्कि सभी के आदर्श श्री राम जी की भव्य प्रतिमा का अनावरण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत देश के प्रत्येक क्षेत्र के दिग्गजों की गरिमामयी उपस्थिति में होने के पश्चात, मंदिर आम जनता के लिए खोल दिया गया है। अब तक 35 लाख से अधिक श्रद्धालु दर्शन कर चुके हैं। विगत के 500 वर्षों के संघर्ष के ऐतिहासिक विवरणों का अनुसरण करने पर इस बात से कोई भी इंकार नहीं कर सकता की मंदिर निर्माण की प्रतिबद्धता और समर्पण भावना जितनी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी में दिखी ठीक उन्हीं के कन्धे से कन्धा मिलाकर उत्तर प्रदेश के मुखिया ने उन सभी पहलुओं पर कार्य किया जिसके बारे में दक्षतापूर्ण अधिकांश लोग भी सोच नहीं सकते। मंदिर को लेकर साधना, समर्पण, कार्य, विचार, उद्देश्यों का निर्धारण, तकनीकी का प्रयोग, अंतराष्ट्रीय स्तर की विशालता और भव्यता का निर्धारण, शहर की चौड़ी सड़कें, ओवर ब्रिज, यातायात व्यवस्था, सुरक्षा, रुकने की उत्तम व्यवस्था से लेकर किसी भी पहलू में शायद ही कोई कमी किसी द्वारा निकाली जा सकें। आज मंदिर के स्वरुप की चर्चा दुनियाभर में हो रही है। इन उपलब्धियों और की गयी कार्य विधि तथा ऐतिहासिक लड़ी गयी लड़ाई में कई सरकारें नेतृत्व में रही, परन्तु मोदी और योगी के द्वारा किया गया कार्य सभी से सर्वोपरि है और एक नए सार्थक और उद्देश्यपूर्ण इतिहास का निर्माण करने में सफल रहा है।

कुछ लोगों के मतानुसार सरकार का मंदिर के प्रति इतना झुकाव राजनीतिक प्रतिबद्धता है जबकि ऐसे सभी लोगों को इस बात का ज्ञान होना चाहिए की सरकार चुनावी

घोषणा पत्रों के आधार पर जनता चुनती है और उसकी पूर्ति करना एक सरकार का नैतिक दायित्व भी है। भारतीय जनता पार्टी ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में श्री राम मंदिर के निर्माण की प्रतिबद्धता को आम जन तक पहुँचाया था और उसी को केंद्र बिंदु में रखकर जनता ने सरकार को भारी बहुमत दिया। ऐसे में मोदी योगी द्वारा श्री राम मंदिर का भव्यता से प्रारम्भ करना आम जनता को न केवल सुकून देने वाला है बल्कि इस बात का भी प्रमाण है कि जनता का विश्वास इस सरकार में कितना गहरा है। हमारे जन्म लेने और मृत्यु को प्राप्त होने के बीच की अवधि में हमें ज्ञान से पूर्ण करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका धर्म और हमारी धार्मिक संस्कृति की है इस बात से कोई भी इंकार नहीं कर सकता और यह हमारी संस्कृति ही है जो हमारी पहचान सबसे प्राचीन धर्म के रूप में दुनियाभर में है। ऐसे में धर्म और व्यक्ति को किसी भी पद और दायित्व से देखना एक ही चश्में से अलग–अगल लोगों की नज़र की विसंगतियों को देखने जैसा है।

श्री राम मंदिर के निर्माण को लेकर ऐतिहासिक रूप में दर्ज अनेक लोगों का शारीरिक बलिदान, मानसिक बलिदान, सामाजिक बलिदान, धार्मिक बलिदान, व्यवहारिक बलिदान, समेत अनेक बलिदान और त्याग को शायद ही कोई भूल सके। संघर्षों की लम्बी लड़ाई को वास्तविक स्वरुप तब प्राप्त हुआ जबकि स्वयं दो दिग्गजों ने हैं सभी चुनौतियों पर विजय प्राप्त कर अकल्पनीय विचारों को कल्पनीय करके आज मूर्त रूप देकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया है। स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि ''आज अयोध्या में, केवल श्रीराम के विग्रह रूप की प्राण प्रतिष्ठा नहीं हुई है। यह श्रीराम के रूप में साक्षात् भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की भी प्राण प्रतिष्ठा है। यह साक्षात् मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राण प्रतिष्ठा है।''

श्री राम मंदिर के निर्माण को लेकर ऐतिहासिक रूप में दर्ज़ अनेक लोगों का शारीरिक बलिदान, मानसिक बलिदान, सामाजिक बलिदान, धार्मिक बलिदान, व्यावहारिक बलिदान, समेत अनेकों बलिदान और त्याग को शायद ही कोई भूल सके। संघर्षों की लम्बी लड़ाई को वास्तविक स्वरुप तब प्राप्त हुआ जबकि स्वयं दो दिग्गजों ने सभी चुनौतियों पर विजय प्राप्त कर अकल्पनीय विचारों को कल्पनीय करके आज मूर्त रूप देकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया है। स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि

"आज अयोध्या में, केवल श्रीराम के विग्रह रूप की प्राण प्रतिष्ठा नहीं हुई है।'' यह श्रीराम के रूप में साक्षात् भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की भी प्राण प्रतिष्ठा है। यह साक्षात् मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राण प्रतिष्ठा है। इन मूल्यों की, इन आदर्शों की आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व को है। सर्वे भवन्तु सुखिनः ये संकल्प हम सदियों से दोहराते आए हैं। आज उसी संकल्प को श्री राम मंदिर के रूप में साक्षात् अकार मिला है।" इन शब्दों में एक महामानव की सजीव झलक है जो सिर्फ और सिर्फ आम लोगों के लिए कठोर तपस्या में तल्लीन हैं। यह नरेंद्र मोदी का समर्पण है जो अब मोदी सरकार से, मोदी की गारंटी में सभी जगह स्वीकार्य है। उत्तर प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ ने कहा कि "भाव–विभोर कर देने वाले इस दिन की प्रतीक्षा में लगभग पांच शताब्दियाँ व्यतीत हो गईं। दर्जनों पीढ़ियां अधूरी कामना लिए इस धराधाम से साकेतधाम में लीन हो गईं, किन्तु प्रतीक्षा और संघर्ष का क्रम सतत जारी रहा। श्री राम जन्मभूमि, संभवतः विश्व में पहला ऐसा अनूठा प्रकरण होगा, जिसमें किसी राष्ट्र के बहुसंख्यक समाज ने अपने ही देश में अपने आराध्य की जन्मस्थली पर मंदिर निर्माण के लिए इतने वर्षों तक और इतने स्तरों पर लड़ाई लड़ी हो।" योगी आदित्यनाथ की समय बद्ध प्रभावशाली रणनीति आज सभी जगह स्वीकार्य है इनके इन शब्दों से आसानी से यह प्रदर्शित हो रहा है कि श्री राम मंदिर निर्माण में इन्होंने किस तरह से कठोर साधना की है।

निसंदेह यह कहा जा सकता है कि श्री राम मंदिर में राम जी के आगमन का क्षण अलौकिक रहा है। वह पल पवित्रतम रहा है। वहां का माहौल, वहां का वातावरण, वहां की ऊर्जा, घड़ी... प्रभु श्रीराम जी के नियंत्रण में उस दिन कार्य कर रही थी। उस दिन का सूरज एक अद्भुत आभा लेकर आया और एक नए कालचक्र का उद्गम कर दिया है। श्री राम मंदिर के प्रारम्भ होने के बाद से प्रतिदिन पूरे देश में उमंग और उत्साह तेजी से बढ़ता जा रहा है। यह मजबूती से कहा जा सकता है की नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ दोनों न केवल महामानव है बल्कि ईश्वर के देव दूत है जिन्होंने अपने कार्यों से देश को संस्कृति और विरासत से जोड़ने के साथ–साथ एक महान राजा के सभी दायित्व का निर्वाण, स्थापित उच्च मानकों से भी ऊपर उठकर कर रहे हैं, जिसकी चर्चा एवं प्रशंसा देश–विदेश में हो रही है।

◆

मो. : 9335226715

काम से बना सीएम का नाम

–सुयश मिश्रा

एक समय ऐसा था जब अयोध्या को नगर पालिका परिषद से नगर निगम बनाने तक में सरकार हिचक रही थी। समय का चक्र बदला, सरकार बदली और आज भव्य–दिव्य और नव्य अयोध्या के सपने को साकार होते देश ही नहीं पूरी दुनिया ने देखा। साल 2017 में जैसे ही उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली वैसे ही अयोध्या के कायाकल्प की रूपरेखा तैयार हो गई। ऐतिहासिक परिवर्तन हुए, सत्ता संभालने के दो माह के अंदर ही नौ मई 2017 को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में साकेतपुरी के चहुंमुखी विकास के लिए अयोध्या और फैजाबाद नगर पालिका परिषद को मिलाकर नगर निगम बनाने का अहम निर्णय लिया गया। राजधानी के साथ ही रामलला की नगरी में भी हुई योगी कैबिनेट की बैठक में अयोध्या को लेकर अब तक 47 नीतिगत निर्णय किए गए हैं।

भव्य–दिव्य–नव्य अयोध्या के सपने को साकार करने के लिए योगी सरकार ने 2017 से अब तक 47 अहम निर्णय किए और खजाने से लगभग 31 हजार करोड़ रुपये खर्च करने में कहीं कोई हीला–हवाली नहीं होने दी। रामलला की नगरी में सभी योजनाओं और परियोजनाओं के कार्यों को मिशन मोड में सुनिश्चित करने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 61 बार खुद ग्राउंड जीरो पर उतरे।उत्तर प्रदेश में योगी सरकार बनने के पूर्व किसी ने यह नहीं सोचा था कि धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व रखने के बावजूद अरसे से उपेक्षित–तिरस्कृत अयोध्या अपनी भव्यता को पा सकेगी। भव्य, दिव्य और नव्य अयोध्या के सपने को साकार करने के लिए वैसे तो वर्ष 2017 में मुख्यमंत्री की कुर्सी संभालने के साथ ही योगी आदित्यनाथ जुट गए थे, लेकिन मंदिर निर्माण के पक्ष में सर्वोच्च अदालत के निर्णय के बाद भव्य श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण शुरू होने के साथ ही योगी सरकार इसमें पूरे संकल्प से जुट गई। निर्णयों को अमली जामा पहनाने में कहीं कोई वित्तीय संकट न आए इसके लिए बजट का पूरा ध्यान रखा गया। अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि अब तक योगी सरकार खजाने से लगभग 31 हजार करोड़ रुपये अयोध्या को दे चुकी है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह से पहले चौतरफा राममय माहौल बनाने के लिए अनुपूरक बजट के माध्यम से 100 करोड़ रुपये दिए गए

थे। पैसा देने के साथ ही उच्च गुणवत्ता का कार्य समय से सुनिश्चित करने के लिए सीएम योगी न केवल लखनऊ में बैठकें करते रहे बल्कि लगातार अयोध्या जाकर योजनाओं का निरीक्षण भी करते रहे। अब तक 65 से ज्यादा बार सीएम योगी ने अयोध्या जाकर सैकड़ों छोटी–बड़ी परियोजनाओं का स्थलीय निरीक्षण करने से लेकर अफसरों के साथ समीक्षा बैठकें की। सनातन परंपरा के अनुसार आध्यात्मिक केंद्र के रूप के साथ ही सर्व समावेशी वैश्विक पर्यटन स्थली और सतत आत्मनिर्भर नगर के अनुरूप अयोध्या के विकास के लिए साधु–संतों से भी विचार–विमर्श करते रहे।

अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा सौर ऊर्जा

इन आठ संकल्पित 'मॉडल' में विकास कार्यों की एक लंबी फेहरिस्त है, जिसमें सबसे पहला नाम अयोध्या में बनकर तैयार हो चुके अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का है। 14 सौ करोड़ के इस प्रोजेक्ट में 11 सौ करोड़ रुपए योगी सरकार की ओर से प्रदान किये गये। साथ ही भूमि अधिग्रहण जैसे पेचीदा मामलों में स्वयं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भू–स्वामियों से संवाद कर एयरपोर्ट के लिए ज़मीन अधिग्रहण के कार्य को शांतिपूर्वक संपन्न कराया। नव्य अयोध्या धाम जंक्शन रेलवे स्टेशन भी लोकार्पित हो चुका है। वहीं सूर्यवंशी राजा राम की नगरी को सौर ऊर्जा से प्रकाशमान बनाने के लिए योगी सरकार की ओर से सबसे बड़ा तोहफा इसी साल मार्च तक सोलर सिटी के रूप में मिलने वाला है।

इस साल पूरी होंगी ये बड़ी परियोजनाएं

जनवरी में जहां एक तरफ भव्य श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ वहीं 394 करोड़ से 4 लेन अयोध्या अकबरपुर बसखारी मार्ग, एनएच 27 से रामपथ तक रेलवे समपार, पंचकोसी परिक्रमा मार्ग पर बड़ी बुआ रेलवे क्रॉसिंग पर ओवर ब्रिज, दर्शन नगर के पास रेलवे ओवर ब्रिज, अमानीगंज में मल्टी लेवल पार्किंग, कलेक्ट्रेट के पास स्मार्ट वाहन पार्किंग, पंचकोसी और चौदहकोसी मार्ग पर इंटरप्रिटेशन वॉल का निर्माण, परिक्रमा मार्ग पर 25 से ज्यादा पर्यटन स्थलों और कुंडों का विकास, डेकोरेटिव पोल और हेरिटेज लाइटों की स्थापना का कार्य, कौशल्या सदन का निर्माण, मुक्ति वैकुंठ धाम के विकास का कार्य भी पूरा हो जाएगा। वहीं फरवरी में अयोध्या के 7 वार्डों में 24 घंटे जलापूर्ति, सूर्यकुंड के पास आरओबी, मार्च में अयोध्या अकबरपुर मार्ग पर फतेहगंज आरओबी, अयोध्या बिल्हौरघाट 4 लेन सड़क, गुप्तार घाट का सौंदर्यीकरण, नया घाट से लक्ष्मण घाट तक पर्यटन सुविधाओं का विकास, अयोध्या सोलर सिटी का कार्य पूरा कर लिया जाएगा। अप्रैल में अवध बस स्टैंड के पास आश्रय गृह का निर्माण, नाका बाइपास के पास कल्याण भवन का निर्माण, चार ऐतिहासिक प्रवेश द्वारों का निर्माण पूरा कर लिया जाएगा। जून में अयोध्या सीवरेज योजना का पार्ट वन पूरा कर लिया जाएगा। जुलाई में 473 करोड़ से पंचकोसी परिक्रमा मार्ग चौड़ीकरण कार्य को पूरा कर लिया जाएगा। सितंबर में डॉ भीमराव अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय खेल परिसर को पूरा कर लिया जाएगा। अक्टूबर में 1140 करोड़ से चौदह कोसी परिक्रमा मार्ग का विस्तारीकरण पूरा कर लिया जाएगा। नवंबर–दिसंबर तक अयोध्या में जोनल अर्बन फैसिलिटेशन सेंटर का निर्माण, अयोध्या नगर निगम और अयोध्या विकास प्राधिकरण के विशाल भवनों का निर्माण कार्य भी पूरा कर लिया जाएगा।

योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली वैसे ही अयोध्या के कायाकल्प की रूपरेखा तैयार हो गई। ऐतिहासिक परिवर्तन हुए, सत्ता संभालने के दो माह के अंदर ही नौ मई 2017 को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में साकेतपुरी के चहुंमुखी विकास के लिए अयोध्या और फैजाबाद नगर पालिका परिषद को मिलाकर नगर निगम बनाने का अहम निर्णय लिया गया। राजधानी के साथ ही रामलला की नगरी में भी हुई योगी कैबिनेट की बैठक में अयोध्या को लेकर अब तक 47 नीतिगत निर्णय किए गए हैं।

ये परियोजनाएं भी देंगी विकास को गति

इसके साथ ही एनएच 27 में लखनऊ अयोध्या खंड का चौड़ीकरण और सुदृढ़ीकरण का कार्य, ग्रीन फील्ड टाउनशिप परियोजना, वशिष्ठ कुंज आवासीय परियोजना, नगर निगम और विकास प्राधिकरण कार्यालय भवन, सीपेट

अयोध्या के लिए सीएम योगी के अहम् फैसले

- अयोध्या–फैजाबाद को मिलाकर अयोध्या नगर निगम का गठन–09 मई, 2017
- विद्युत व्यवस्था सुधारने को 220 केवी उपकेंद्र का निर्माण–22 मई, 2018
- अयोध्या बाईपास पर भव्य बस स्टेशन का निर्माण–19 जून, 2018
- फैजाबाद जिला व मंडल का नाम बदलकर अयोध्या करना–13 नवंबर, 2018
- अयोध्या में मेडिकल कॉलेज का निर्माण–19 जनवरी, 2019
- भजन संध्या स्थल, म्यूजियम, श्रीराम प्रतिमा का निर्माण–02 मार्च, 2019
- अयोध्या को स्मार्ट सिटी के तौर पर विकास करना–24 सितंबर, 2019
- दीपोत्सव मेले का प्रांतीयकरण करना–22 अक्टूबर, 2019
- हवाई पट्टी को एयरपोर्ट के रूप में विकसित करना– 25 जनवरी, 2021
- अयोध्या के आसपास के कई मार्गों को चार लेन बनाना–21 जुलाई, 2021
- श्रीराम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या में मार्ग चौड़ीकरण–सुंदरीकरण–02 अगस्त, 2022
- अयोध्या को मॉडल सोलर सिटी के रूप में विकसित करना–16 नवंबर, 2022
- अयोध्या नगर निगम के कार्यालय भवन का निर्माण– 25 नवंबर, 2022
- अयोध्या में धर्मपथ के साथ कई और मार्गों का विस्तारीकरण–10 मार्च, 2023
- महर्षि महेश योगी रामायण विश्वविद्यालय की स्थापना–12 मई, 2023
- चार लेन के रामपथ का निर्माण एवं चौड़ीकरण–22 अगस्त, 2023
- अयोध्या को समग्र विकास योजना के तहत सीड कैपिटल–31 अक्टूबर, 2023
- उप्र श्री अयोध्या जी तीर्थ विकास परिषद का गठन–09 नवंबर, 2023
- भारतीय मंदिर वास्तुकला संग्रहालय की स्थापना–09 नवंबर, 2023
- अंतरराष्ट्रीय अयोध्या रामायण एवं वैदिक शोध संस्थान बनाना–09 नवंबर, 2023।
- मकर संक्रांति व बसंत पंचमी मेला का प्रांतीयकरण–09 नवंबर, 2023

केंद्र, गुप्तार घाट और राजघाट के बीच नये पक्के घाटों का निर्माण और पुराने घाटों का जीर्णोद्धार, राम की पैड़ी पर दर्शक दीर्घा, राम की पैड़ी से राजघाट तक और राजघाट से श्रीराम जन्मभूमि मंदिर तक श्रद्धालु भ्रमण पथ का सुदृढ़ीकरण और सौंदर्यीकरण का कार्य भी योगी सरकार द्वारा तेज गति से संपन्न कराया जा रहा है।

दीपोत्सव का कार्यक्रम

देश के इतिहास में अब 22 जनवरी हमेशा के लिए एक विशेष उत्सव के रूप में दर्ज़ हो गई है। भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा के बाद अब हर साल देश दुनिया में इस तारीख को याद किया जाएगा। योगी सरकार की पहल का ही नतीजा है कि साल 2017 में अयोध्या में दीपोत्सव का कार्यक्रम शुरू हुआ, जिसमें पहली बार 1.71 लाख दीप जलाए गये थे। वर्ष 2018 में 3.01 लाख, 2019 में 4.04 लाख,

2020 में 6.06 लाख, 2021 में 9.41 लाख, 2022 में 15.76 लाख और वर्ष 2023 में लगातार सातवीं बार राम की पैड़ी पर एक साथ 22.23 लाख दीपों के आलोकित होने के साथ नया विश्व रिकॉर्ड बनाया गया। ड्रोन से गणना के बाद गिनीज बुक की टीम ने इस वैश्विक उपलब्धि की घोषणा की थी। राज्यपाल और मुख्यमंत्री के साथ 52 देशों के राजदूत इस अविस्मरणीय क्षण के साक्षी बने थे। इस दौरान राम की पैड़ी पर 10,000 से अधिक लोगों की मौजूदगी में जय श्रीराम के उदघोष से गूंज उठी थी।

रामराज्य में प्रवेश करने जैसा अनुभव

उत्तर प्रदेश में अब आगंतुक प्रवेश करते समय रामराज्य में प्रवेश करने जैसा अनुभव महसूस करेंगे। उत्तर प्रदेश में दूसरे राज्यों से आने वाले 104 मार्गों पर प्रवेश द्वार

का निर्माण किया जा रहा है। इन प्रवेश द्वारों पर बनाए जाने वाले खंभों की डिजाइन अयोध्या में श्रीराम पथ पर बने खंभों जैसी होगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशों पर निर्मित किए जा रहे इन प्रवेश द्वारों का निर्माण मार्च तक पूरा करने का लक्ष्य लोक निर्माण विभाग को दिया गया है। अयोध्या में श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा के पहले ही सरकार की कोशिश थी कि प्रदेश के सभी प्रवेश मार्गों पर द्वारों का निर्माण करवा लिया जाए। उत्तर प्रदेश पहला राज्य होगा जहां लगभग सभी प्रवेश मार्गों पर इस प्रकार के द्वारों का निर्माण किया जा रहा है। झारखंड, हरियाणा, राजस्थान, उत्तराखंड, दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश व बिहार से उत्तर प्रदेश में आने वाले मार्गों के अलावा नेपाल से भी उत्तर प्रदेश में प्रवेश के लिए कई–कई मार्ग हैं। इनका निर्माण आगरा के लाल रंग के पत्थर से किया जाएगा। सभी प्रवेश द्वारों को सोलर लाइटों से सुसज्जित किया जाएगा, जिससे रात में भी लोगों को इस बात की जानकारी मिल जाए कि वह उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर रहे हैं। इन प्रवेश द्वारों पर उत्तर प्रदेश में प्रवेश करने व आगंतुकों के स्वागत करने संबंधी सूचना बोर्ड भी लगाए जाएंगे। प्रवेश द्वारों पर दोनों तरफ 25–25 फीट के दो खंभे बनाए जाएंगे। इनके आगे व पीछे दो–दो छोटे खंभे बनाए जाएंगे। दोनों तरफ फुटपाथों का निर्माण किया जाएगा। एक प्रवेश द्वार के निर्माण पर करीब 1.25 करोड़ रुपये का खर्च आएगा। सहारनपुर व आगरा मंडल में इनका निर्माण शुरू करवाया जा चुका है। सरकार ने लोक निर्माण विभाग को मार्च तक इनका निर्माण पूरा करने का लक्ष्य दिया है। नेपाल व मध्यप्रदेश से प्रवेश करने वाले मार्गों पर द्वारों के निर्माण के लिए वन विभाग से अभी तक मंजूरी नहीं मिली है। इन मार्गों पर वन विभाग की मंजूरी के बाद प्रवेश द्वारों का निर्माण करवाया जाएगा।

◆

मो. : 8924856004

अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित होती अयोध्या

–विदर्भ कुमार

अयोध्या में श्रीरामलला के नव विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा अयोध्या प्रदेश और का सबसे तेज विकसित होता व्यापारिक केन्द्र के रूप में अपनी उपस्थति दर्ज करा रहा है। अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर से पूरे विश्व में निवासरत हिंदू धर्मावलम्बियों की आस्था जगी है धर्म प्रभावना हेतु अयोध्या आगमन से देश में धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था को जबरदस्त लाभ होने जा रहा है। अयोध्या को नव्य, भव्य आकार दिया गया ताकि वह धार्मिक एवं आध्यात्मिक वैश्विक पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित रहे। भक्तों तथा पर्यटकों को भारत भूमि पर अयोध्या सहज ही खींच रहा है। दीपावली त्यौहार के शुभ अवसर पर अयोध्या में 22.23 लाख दिए जलाए गए थे, यह दीपोत्सव गिनीज विश्व रिकार्ड के रूप में है। वर्तमान में 2.5 करोड़ पर्यटक प्रतिवर्ष अयोध्या में पहुंचते हैं। प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण हो जाने से पर्यटकों की यह संख्या 10 गुना तक बढ़ने का अनुमान है अर्थात 25–30 करोड़ पर्यटक प्रतिवर्ष अयोध्या में

आ सकते हैं। एक पर्यटक यदि अयोध्या में रहते हुए 2000 रुपए का खर्च भी करता है तो 50,000 करोड़ रुपए का व्यापार अकेले अयोध्या में प्रतिवर्ष होने की सम्भावना अपने आप में नवीन व्यापारिक केन्द्र का आधार होगा। धार्मिक पर्यटन के साथ ही पूरे वर्ष भर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कई प्रकार के भव्य समारोह भी अयोध्या में आयोजित होने से प्रतिवर्ष एक लाख करोड़ रुपए का व्यापार केवल अयोध्या में ही होने लगेगा। अयोध्या में बढ़ने वाले धार्मिक पर्यटन से लाखों की संख्या में नए रोजगार के अवसर निर्मित होने जा रहे हैं।

रोजगार के अनेक अवसर

प्रतिवर्ष लगभग 25–30 करोड़ पर्यटकों के अयोध्या पहुंचने से स्थानीय स्तर पर छोटे छोटे व्यवसायियों को भी अपार आर्थिक लाभ होगा। धर्मशाला, होटल, यातायात व्यवस्था, खाद्य सामग्री, फल, फूल आदि अन्य कई प्रकार के पदार्थों की मांग बढ़ेगी, जिसकी आपूर्ति बनाए रखने के लिए कई प्रकार के छोटे–छोटे उद्योग धंधे भी अयोध्या के आस पास के गावों में विकसित होंगे। फल, सब्जी, फूल आदि पदार्थों की पैदावार भी ग्रामीण इलाकों में होने लगेगी जिससे इस क्षेत्र के किसानों को भी भरपूर लाभ होने लगेगा। अपने आप में अयोध्या आस्था के केंद्र के साथ साथ एक वाणिज्यिक केंद्र के रूप में भी विकसित होने जा रहा है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि प्रभु श्रीराम तो अपने मंदिर में बिराजेंगे ही, साथ ही इस क्षेत्र में निवास कर रहे नागरिकों को भी आर्थिक रूप से अत्यधिक लाभ होने जा रहा है। अयोध्याधाम आने वाले श्रद्धालुओं/पर्यटकों को नव्य, दिव्य, भव्य अयोध्या की महिमा से परिचय कराने प्रशिक्षित टूरिस्ट गाइड के रूप में रोजगार सृजन हो रहा। अयोध्या में पूरे विश्व से पर्यटकों के आने से उत्तरप्रदेश की अर्थव्यवस्था को तो जैसे पंख ही लग जाएंगे।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी परिकल्पना है कि नव्य अयोध्या व्यापारिक केन्द्र के रूप में सुविधाओं से परिपूर्ण केन्द्र के रूप में देश दुनियां में अपनी गौरवशाली पहचान स्थापित करेगा। आगामी 22 जनवरी के बाद अयोध्या में हर दिन 2–3 लाख श्रद्धालुओं के आगमन की सम्भावना को दृष्टिगत होटलों/धर्मशालाओं/टेंट सिटी और होम स्टे की आवासीय सुविधा को और बेहतर ढग से उपलब्ध कराने के साथ आगंतुक को स्मृति उपहार के रूप में गुणवत्ता पूर्णसामग्री क्रय करने की सुविधा की दिशा में प्रयास किये गये है।

जल, वायु थल मार्ग से सुगम यातायात

प्रदेश सरकार ने महर्षि वाल्मीकि इंटरनेशनल एयरपोर्ट अयोध्याधाम विश्वस्तरीय एयरपोर्ट से इंडिगो द्वारा प्रदेश के 08 नगरों–लखनऊ, गोरखपुर, वाराणसी, कानपुर, आगरा, प्रयागराज, बरेली तथा अयोध्या से उड़ान सुविधा उपलब्ध हैं, अन्य स्थानों के लिए विस्तार हो रहा है। जल परिवहन के रूप में 'जटायु क्रूज सेवा संचालित की जा चुकी है। प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरूप अयोध्या को सड़क, रेल की बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान की गई है।

अयोध्या में हर दिन 2–3 लाख श्रद्धालुओं के आगमन की सम्भावना

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी परिकल्पना है कि नव्य अयोध्या व्यापारिक केन्द्र के रूप में सुविधाओं से परिपूर्ण केन्द्र के रूप में देश दुनियां में अपनी गौरवशाली पहचान स्थापित करेगा। अयोध्या में हर दिन 2–3 लाख श्रद्धालुओं के आगमन की सम्भावना को दृष्टिगत होटलों/धर्मशालाओं/टेंट सिटी और होम स्टे की आवासीय सुविधा को और बेहतर।

आतिथ्य संस्कार की परंपरा, 2200 कमरों में ठहर सकेंगे श्रद्धालु व पर्यटक

आतिथ्य संस्कार की परम्परा को जीवन्त रूप देने तथा अतिथि को बेहतर सुविधायें देकर सांस्कृतिक सम्बंध प्रगाढ़ करने की दिशा में अतिथि देवो भवः की भावना से प्रेरित होम स्टेध्पेइंग गेस्ट योजना उ.प्र. सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना है, जो पर्यटन विभाग द्वारा संचालित की जा रही है। अयोध्या होम स्टे पेइंग गेस्ट योजना के तहत ऐसे भवन स्वामी जिनके मकान में 2 से 5 तक अतिरिक्त कमरे हो वो इस योजना से जुड़ कर अतिरिक्त आय सृजित कर लाभ उठा सकते है। उनके कमरों की सुविधा के अनुसार यात्री/श्रद्धालुओं के ठहरने पर प्रतिदिन प्रति कमरे 1500 से

2500 किराया प्राप्त होगा। अयोध्या नगर के 500 भवनों को किया गया होम स्टे के अंतर्गत पंजीकृत, योजना के तहत 2200 कमरों में ठहर सकेंगे श्रद्धालु व पर्यटक–''होली अयोध्या'' ऐप के जरिए अयोध्या में ठहरने के लिए उचित होम स्टे के चयन का लाभ उठा सकेंगे इससे स्थानीय निवासीयों को आर्थिक रूप से मजबूत होंने का अवसर के साथ विचारों, संस्कृति आदि का आदान प्रदान भी होगा।

14 स्थानों पर लगाए गए पब्लिक एड्रेस सिस्टम

अयोध्या के 14 स्थानों पर पब्लिक एड्रेस सिस्टम लगाए हैं। इसके जरिए यात्रियों को समय–समय पर ट्रैफिक नियमों के बारे में जानकारी दी जाती है। सिग्नल के उल्लंघन पर मॉनिटरिंग रूम से चेतावनी भी दी जाती है। यही नहीं 20 स्थानों पर इमरजेन्सी कॉल बॉक्स लगाए गए हैं। किसी भी आपातकालीन स्थिति में यह बॉक्स कंट्रोल रूम को सूचना भेज देगा। आपात स्थिति में इससे काफी मदद मिलेगी।

श्रीराम नगरी में सोलर ट्री से दूधिया रोशनी में नहाए 34 पार्क

सूर्य वंश की राजधानी अयोध्या को सौर ऊर्जा के रूप में विकसित करने का सपना साकार हो रहा है। अयोध्या सौर ऊर्जा से दूधिया रंग से गुलजार हो रही है। उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपीनेडा) एक के बाद एक नये प्रयोग कर रहा है। इसी कड़ी में पार्कों में लगाए जा रहे सोलर ट्री भी अब दूधिया रोशनी बिखेरने के लिए तैयार होने लगे हैं। अयोध्या की गलियों, प्रमुख चौराहों, मार्गों, घाटों के बाद अब पार्कों में सोलर ट्री लगाए जा रहे हैं। फिलहाल 34 पार्कों में एक किलोवाट तथा आठ पार्कों में ढाई किलोवाट के सोलर ट्री लगाए जा चुके हैं। इसके अलावा एक किलोवाट के छह व ढाई किलोवाट से जुड़े 10 स्थानों पर तेजी से काम चल रहा है। अयोध्या के पार्कों को सौर ऊर्जा से आच्छादित करने की दिशा में प्रयास शुरू हो गया है। फिलवक्त शहर के 52 स्थानों को चयनित किया गया है।

अयोध्या के विशेष विकास के लिए करीब 30 हजार 500 करोड़ की 178 योजनाओं पर तेजी से काम पूरा करने के साथ अयोध्याधाम तीर्थक्षेत्र परिषद का भी गठन हुआ। अयोध्या शोध संस्थान को बड़े पैमाने पर अंतरराष्ट्रीय शोध केंद्र के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव में हुआ। अयोध्या में 130 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से 4.40 एकड़ क्षेत्र में टूरिज़्म फैसिलिटेशन सेंटर विकसित करने की कार्य योजना पर कार्य हुआ। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग अयोध्या में नेशनल हाइवे 330 व नेशनल हाइवे 27 से कनेक्टिविटी को ध्यान में रखकर पूर्व निर्धारित जगह पर इस टूरिज़्म सेंटर का विकास करने जा रही है।

नागर शैली नवनिर्मित भव्य राम मंदिर

नवनिर्मित राम मंदिर में नागर शैली का उपयोग किया गया है। मुख्य गर्भगृह 20 गुणा और 20 फीट का अष्टकोणीय आकार में है, जो भगवान विष्णु के 8 रूपों को दर्शाता है। मंदिर में 366 स्तंभ होंगे। प्रत्येक पर 16 मूर्तियों को दर्शाया गया है। जिसमें शिव के विभिन्न अवतारों, दशावतारों, चौसठ योगिनियों से लेकर देवी सरस्वती के बारह रूपों तक की दिव्य आकृतियां प्रदर्शित की है।वैश्विक पटल पर राम जन्मभूमि पर रामलला के भव्य दिव्य मंदिर आजादी के अमृत काल में स्वर्णिम

अभायुक्त सनातन का जय घोष करेगा। मंदिर की वास्तुकला शिल्प अद्भुत अनुपम तथा पवन होने के कारण दुनिया भर के सनातन प्रेमी इस दिव्य और पावन मंदिर को देखने के लिए आतुर है।

अयोध्याधाम तीर्थक्षेत्र परिषद

अयोध्या के विशेष विकास के लिए करीब 30 हजार 500 करोड़ की 178 योजनाओं पर तेजी से काम पूरा करने के साथ अयोध्याधाम तीर्थक्षेत्र परिषद का भी गठन हुआ। अयोध्या शोध संस्थान को बड़े पैमाने पर अंतरराष्ट्रीय शोध केंद्र के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव में हुआ। अयोध्या में 130 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से 4.40 एकड़ क्षेत्र में टूरिज्म फैसिलिटेशन सेंटर विकसित करने की कार्य योजना पर कार्य हुआ। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग अयोध्या में नेशनल हाइवे 330 व नेशनल हाइवे 27 से कनेक्टिविटी को ध्यान में रखकर पूर्व निर्धारित जगह पर इस टूरिज्म सेंटर का विकास करने जा रही है।

अयोध्या एक दिन देश का ही नहीं दुनिया के लिए रोल मॉडल और आदर्श एवं पर्यटन का केंद्र होगा। अध्यात्म की अयोध्या ने आर्थिक क्षेत्र में लिखा सफलता का नया अध्याय योगी सरकार के नेतृत्व में तेजी से विकास के पथ पर बढ़ रही रामनगरी 2021–22 में 110 करोड़ का हुआ निर्यात, जो 2022–23 में बढ़कर 254 करोड़ हो गया है। अध्यात्म से समृद्ध राम नगरी अब आर्थिक क्षेत्र में भी सफलता का नया अध्याय लिख रही है। योगी सरकार के कुशल नेतृत्व में ग्लोबल इनवेस्टर्स समिट में उत्तर प्रदेश को 40 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। इसके साथ ही आर्थिक रूप से अयोध्या भी विकास की नई सीढ़ी चढ़ी। कुल मिलाकर 150 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अयोध्या में लगातार केन्द्र तथा राज्य सरकार के प्रयास से विश्व स्तर की सुविधाओं से परिपूर्णता प्राप्त करने के कारण के साथ आर्थिक दृष्टि से अत्यंत ही लाभकारी व्यापारिक केन्द्र के रूप में उभर रहा है।

◆

मो. : 7607354095

अयोध्या की सांस्कृतिक महत्ता

—विजय रंजन

सप्तपुरियों में प्रथम तीर्थ 'अयोध्या' की महत्ता का गुणगान स्कन्दपुराण, अथर्ववेद, रामायणम, रामचरितमानस आदि हमारे अनेक प्राचीन ग्रंथों में और अनेकानेक पाश्चात्य मनीषियों द्वारा लिखित ग्रंथों में विशदता से वर्णित है। फाह्यान, ह्वेनसांग ने भी अयोध्या का गुणगान बौद्ध तीर्थ 'सॉकेड' के रूप में किया है। जैन ग्रंथों में और सिक्ख धर्मावलम्बियों के ग्रंथों में भी अयोध्या की धार्मिक, सांस्कृतिक महिमा का गायन भरपूर विद्यमान है। और तो और, सामी ग्रंथ जो हजरत नूह से सम्बन्धित हैं, उनमें भी अयोध्या का उल्लेख है। इतनी महान, महनीय भूमि रही है अयोध्या। अयोध्या की सद्–संस्कारशीलता के साथ–साथ सत्त्वशील सतत जुझारुपन यहाँ का चारित्रिक वैशिष्ट्य है। इसी का प्रमाण है कि अयोध्या में रामावतरण–भूमि पर भव्य दिव्य राममन्दिर विनिर्मित हो रहा है और इस तरह अयोध्या का तीर्थत्व एक बार फिर प्रकाशित हो रहा है।

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् राम दाशरथ राम की अवतरण–भूमि पर अयोध्या में वर्तमान में भव्य दिव्य मन्दिर का निर्माण सम्पन्न हो चुका है। मन्दिर में श्यामल राम की मूर्ति की प्राण–प्रतिष्ठा भी हमारे भारतीयतावादी, राष्ट्रवादी, धार्मिक, कर्मठ प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी तथा सनातन संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए सतत सन्नद्ध धर्मनिष्ठ मुख्यमंत्री (उ.प्र., शासन) माननीय श्री योगी आदित्यनाथ के सक्रिय प्रयासों के सुफलित से विगत 22 जनवरी, 2024 को सुसम्पन्न हो चुकी है।

यहीं प्रश्न उभर सकता है कि राजकुमार राम से वनवासी राम और अनय–निरोधन के संकल्पों को साकार करने के क्रम में 'सुवर्णमयी लंका के अधिपति, महा अनयी रावण का वध करने वाले राम' और इसके पूर्व 'किष्किंधा के राजा बालि का वध करने वाले राम', 'नयशील, ऋतशील, शिवशील, सत्त्वशील लोकतांत्रिक प्रजाहिती रामराज्य की सुस्थापना करने वाले राम' के रामत्व की क्रियाशीलता की भूमि क्यों बनी अयोध्या? राजकुमार राम से 'मर्यादापुरुषोत्तम राम एवं कालान्तर में 'भगवान बनने वाले श्रीराम' ने अयोध्या को ही अपनी जन्मभूमि या कि अवतरण–भूमि क्यों बनाया? ऐसे प्रश्नों का समाहार सिद्ध करता है कि अयोध्या का तीर्थत्व अति बलशील है। कह सकते हैं कि इस तीर्थत्व की सबल सात्विक शक्ति का बोध अनकथ स्वरूप में प्रमाणित करता है कि त्रेता युग में तत्कालीन देवाश्रया भारत, देवव्रती भारत में अयोध्या–इतर अन्यान्य विशाल क्षेत्र उपलब्ध होने के बावजूद अयोध्या को ही अपने अवतार : रामावतार की भूमि बनाने का

आधार था अयोध्या का पावन अयोध्यात्व और अयोध्या का सबल तीर्थत्व।

इसी तरह, कह सकते हैं कि रामावतार से पूर्व वैवस्वत मनु के समय से वैवस्वत मनु द्वारा इसी भूमि पर कोसल राज की सुस्थापना से लेकर वाल्मीकि रामायण में वर्णित 'विमान इव नगरी' अयोध्या को कोसल की 'राजधानी' बनाने के तथ्यों से भी अवध–भूमि की महनीयता स्वतः प्रभासित होती है। मनुस्मृति, योगवासिष्ठ सदृश ग्रंथों की रचना–भूमि बनने तक या आदितीर्थंकर ऋषभदेव समेत 5 जैन तीर्थंकरों की जन्मभूमि तथा अनेक तीर्थंकरों की कर्मभूमि बनने तक, महात्मा गौतम बुद्ध की चौमासा–प्रवास की भूमि बनने तक, बाद में अश्वघोष, सुबन्धु प्रभृति मनीषियों की कर्मभूमि बनने तक और अश्वघोष–प्रणीत बुद्धचरित की प्रणयन–भूमि बनने तक, कालान्तर में रामचरितमानस सदृश महनीय ग्रंथ की रचना–भूमि बनने तक, मौलाना वसाली की उर्दू रामायण की प्रणयन–भूमि बनने तक, पं. ब्रजनारायण चकबस्त और उर्दू में मरसिया विधा के आविष्कारक मीर अनीस की कर्मभूमि बनने तक, अधुना युग में आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ. राममनोहर लोहिया, बेगम अख्तर और बाबा पागलदास की कर्मभूमि बनने तक अयोध्या ने अनेक सांस्कृतिक, प्रतिमान अपने नाम ही अंकित कराए हैं।

उल्लेख्य है कि महर्षि वाल्मीकि ने अपनी रामायणम् में अयोध्या की महत्ता का, इस भूमि की महनीयता, तपशीलता आदि का जो विशद वर्णन किया है– वह अकारण नहीं है। स्कन्दपुराणकार से लेकर महाकवि कालिदास तक मनीषी काव्यकारगण अयोध्या का गुणगान मुक्त कण्ठ से करते हैं–यह गुणगान भी निराधार नहीं है।

'सियाराममय सब जग जानी' मानने वाले तुलसीदास (जो मथुरा जाकर बाँकेबिहारी से कह सकते हैं 'तुलसी मस्तक तब नवै, धनुष–बाण लो हाथ', ऐसे महाकवि तुलसीदास) भी अयोध्या की अवधभूमि की अपरिमित महिमा का बखान रामचरितमानस में अनेक स्थलों पर करते हैं वह सब भी अकारण, निराधार या निस्सार नहीं है। कालिदास ने भी 'रघुवंशम' में कोसलराज और उसकी राजधानी अयोध्या का यशोगान ही वर्णित किया है। 'रघुवंशम' में कालिदास दाशरथ राम के अनेक पूर्वज राजा दशरथ, अज, दिलीप, भगीरथ आदि प्रायः सभी इक्ष्वाकुवंशियों की प्रशंसा करते हैं। वे सभी अयोध्यावासी ही थे। वहीं, शील और पुण्य के विवेचक जैन तीर्थंकर हों या अधुनाकाल में इस भूमि पर जन्मित मनीषीगण–सभी सद्संस्कारी सभ्यतम समाज के श्रेष्ठ मानक ही निरुपित करते रहे हैं। तथ्यतः अयोध्या की जो धार्मिक, आध्यात्मिक अस्मिता तुलसी के रामचरितमानस से परिस्पष्ट होती है, वह मात्र कवि–कल्पना नहीं है।

क्षेमेन्द्र, कल्हण, गुरुनानक, जैबुन्निसा शक्तिभद्र, केशव, चन्दबरदाई या फायान, व्हेनसांग आदि ने भी अयोध्या का भरपूर गुणगान किया है। अयोध्या में ऐसा कुछ न कुछ है अवश्य कि तुलसी के बाद के निराला हों या मैथिलीशरण गुप्त या कुँवरनारायण या अमेरिकावासी कवि इन्दुकान्त शुक्ल आदि, सभी के रचना–संसार में अयोध्या का स्थान महत्त्वपूर्ण है। तभी टालेमी से लेकर पार्जिटर, कालब्रुक, थार्टन, डॉ. एन.एस. प्रधान, डॉ. बी.बी. लाल, डॉ. सुधा मलैय्या तक के अन्वेषण–साधना का दीर्घवृत्त भी अयोध्या से विलग नहीं हो सका। इन सभी मनीषियों के मन में अयोध्या के प्रति विशिष्ट श्रद्धाभाव है, यह भी अकारण नहीं है। 'अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूः अयोध्या, तस्य हिरण्यममयः कोशः स्वर्गोज्योतिषावृतः' (अथर्ववेद), 'मनुना मानवेन्द्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम् (वाल्मीकि रामायण) और 'अयोध्या नगरी नित्या सच्चिदानन्दस्वरूपिणी यस्यांशेन बैकुण्ठो गोलोकादि प्रतीष्ठितः' (वशिष्ठ संहिता) आदि से भी अयोध्या की पावन भूमि की विशिष्ट महत्ता प्रस्थापित होती है। निस्संदेह, सद्संस्कार और सद्संस्कृति की महनीय भूमि है अयोध्या।

औ..र, महाकवि तुलसी की दृष्टि से अयोध्या को देखें तो अवगत होगा कि अयोध्या के अलावा तीर्थराज प्रयाग, काशी, चित्रकूट की पावनता से भी अभिभूत थे तुलसीदास। तब भी संतकवि तुलसीदास द्वारा अपने रामचरितमानस की प्रणयन–भूमि अयोध्या को बनाने का निहितार्थ भी कुछ विशेष इंगित करता है ।

ज्ञात हो कि डॉ. जयशंकर त्रिपाठी ने 'तुलसीदल' पत्रिका में प्रकाशित अपने एक आलेख में कहा है कि तुलसी की काव्यचेतना का प्रथम प्रस्फुटन चित्रकूट में हुआ था। 'कवितावली' में तुलसी ने चित्रकूट का विशेष गुणगान किया भी है। मानस में भी चित्रकूट का यशोगान विद्यमान है। तुलसी ने तीर्थराज प्रयाग और काशी की धार्मिक अस्मिता को भी बार–बार नमन किया है। इस प्रकार चित्रकूट/प्रयाग/काशी के प्रति भी तुलसी का आदरभाव स्पष्ट है । उन्होंने रामचरितमानस की रचनाभूमि अयोध्या को ही बनाया। डॉ. त्रिपाठी ने इस आलेख में आगे यह भी लिखा है कि 'मानस' यदि चित्रकूट में विरचित होता, तो वह ग्रन्थ भक्ति के बजाय शक्ति का जनक अधिक होता । डॉ. त्रिपाठी के उपर्युक्त मंतव्य से इतना तो स्पष्ट ही है कि स्थान–विशेष का प्रभाव 'रचना के गुण–धर्म को प्रभावित करता है। चूँकि अयोध्या सदा से ज्ञान–शक्ति का तीर्थ रही है, अतएव संभव है कि रामचरितमानस को ज्ञान–भक्ति का अप्रतिम ग्रन्थ बनाने के लिए ही तुलसी ने अयोध्या का सुचिन्तित चयन किया है। चित्रकूट जैसे पावन रम्य वन– प्रान्तर छोड़ कर अयोध्या जैसे नगर में मानस–प्रणयन परम्परा–विपरीत इस अर्थ में भी है कि शास्त्रों में नगर को सरस्वती का विपरीत परिवेश कहा गया है और ज्ञान–साधना के लिए ऋषि–मुनि द्वारा नगर के बाहर सुदूर वन में आश्रम बनाने की परम्परा विद्यमान भी है। फि....र भी तुलसी ने मानस–प्रणयन अयोध्या में ही किया–यह सकारण है।

राम की अवतरण–भूमि पर अयोध्या में वर्तमान में भव्य दिव्य मन्दिर का प्रथम तल का विनिर्माण सम्पन्न हो चुका है। मन्दिर में श्यामल राम की मूर्ति की प्राण–प्रतिष्ठा भी हमारे भारतीयतावादी, राष्ट्रवादी, धार्मिक, कर्मठ प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी तथा सनातन संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए सतत सन्नद्ध धर्मनिष्ठ मुख्यमंत्री (उ.प्र., शासन) माननीय श्री योगी आदित्यनाथ के सक्रिय प्रयासों के सुफलित से विगत 22 जनवरी, 2024 को सुसम्पन्न हो चुकी है।

वस्तुतः ''वन्द्यौः पुसां रघुपति पदैरंकित मेखलासु'' की कालिदास–परम्परा में (जहाँ राम के चरण पड़े थे उस भूमि की वन्दना करने की परम्परा में) क्या आश्चर्य कि जो भूमि तुलसी के आराध्य श्रीराम की जन्मभूमि, लीलाभूमि रही हो और जो भूमि स्वयं तुलसी के आराध्य श्रीराम के लिए वन्दनीय हो, उसी पावन अवधभूमि से अधिक उपयुक्त कोई अन्य भूमि संतकवि तुलसी को अपने आराध्य के चरित–प्रकाश के लिए सर्वोचित प्रतीत न हुई हो !

ज्ञात हो कि इस बिन्दु पर कोई विवाद नहीं है कि संवत् 1631 के चैत्र शुक्ल की नवमी तिथि को रामचरितमानस जैसे अमर ग्रन्थ का प्रणयन सरयू तट पर स्थित अयोध्या में आरम्भ किया गया था और रामचरितमानस का बहुलांश यहीं विरचित किया गया– नौमी भौम बार मधुमासा। अवधपुरी यह चरित प्रकासा।।

ज्ञातव्य है यह भी कि रामचरितमानस–रचना के पूर्व भी तुलसी की प्रवास–भूमि अयोध्या ही रही थी। 'माँग' के खाइबो, मसीत में सोइबो सदृश पंक्तियाँ तुलसी–मन में अयोध्या के प्रति असीम लगाव की द्योतक हैं। रामचरितमानस 2 वर्ष 7 माह 26 दिन में विरचित हुआ था। स्पष्ट है कि बालकाण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड तक विरचित करने में ढाई वर्ष से अधिक समय तक अयोध्या के प्रति आदरभाव तुलसी के मानस में सतत शाश्वत बना रहा।

स्वतः सिद्ध है कि तुलसी की दृष्टि में अयोध्या की विशेष महत्ता थी। तुलसी जैसे मनीषी रचनाकार ने रामचरितमानस जैसे ग्रन्थ का प्रणयन यदि अयोध्या में अकारण या संयोगवशात् नहीं किया वरन् इस विषय में उनके मन में कोई सुनिश्चित योजना थी तो उस दशा में तत्कालीन परिस्थितियों में और आज भी समीचीन है कि हम तर्क के निकष पर मानें कि अयोध्या की कोई न कोई विशिष्टता रही होगी अवश्य। क्या आगमतः सप्तपुरियों में प्रथमगण्य अयोध्या की गरिमा जिस रूप में अन्यान्य कवि मनीषी विद्वत्जनों ने व्याख्यायित की है उसके 'हिप्नोटिक' प्रभाव से तुलसी ने किसी आवेश में मानस – प्रणयन अयोध्या में नहीं किया था और वास्तव में अयोध्या की महत्ता/इयत्ता के प्रति उनके हृदय/मस्तिष्क में भारी श्रद्धा भी विद्यमान थी, जिसके सम्प्रभाव में संदर्भगत प्रकरण में पर्याप्त सोच–विचार के उपरान्त ही सद्संस्कार की सनातन चेतना की भूमि, कलिकलुष वसावति भूमि अयोध्या में मानस–प्रणयन किया।

तथ्यतः रामचरितमानस के अवगाहन से स्वतः स्पष्ट है कि प्रसंगित निष्पत्तियाँ या कि 'संत भक्त कवि तुलसी की दृष्टि में अयोध्या की विशेष महत्ता' या कि 'अयोध्या की कलिकलुष नसावनि सक्षमता से अभिभूत थे महाकवि तुलसी। अपने अन्य ग्रंथ 'कवितावली', 'विनयपत्रिका' आदि में वे अपने आराध्य श्रीराम की अभ्यर्थना अयोध्यानाथ मान कर ही करते हैं। रामचरितमानस में तुलसी लिखते हैं– बंदउँ अवधपुरी अति पावनि। सरयू सरि कलि कलुष नसावनि।।

और देखें–

प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी। ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी।।

रामचरितमानस के बालकाण्ड में प्रारम्भ में ही विनयावनत्/श्रद्धावनत् तुलसी अवधपुरी की वन्दना करते हैं, और अवधपुरी ही नहीं वरन् 'बंदउँ अवध भुआल' और 'प्रवनउँ पुर नर नारि बहोरी...' लिख कर अवधपुरी के नर–नारियों को बहोर–बहोर कर प्रणाम अर्पित करके तुलसी ने स्पष्ट कर दिया है कि अयोध्या में मानस–रचना अकारण या संयोगवशात् नहीं हुई थी।

'अयोध्या' को तुलसी ने बहुलांश स्थलों पर 'पुरी' शब्द से अभिहित किया है। 'पुरी' शब्द में धार्मिक महत्ता तद्गत पावनता एवं महनीयता आदि स्वतः प्रकट हो जाते है, जो प्रतीततया कविश्रेष्ठ तुलसी को अभिभूत करने में सक्षम थे।

अयोध्या के प्रति अपने श्रद्धा भाव को तुलसी ने अतिरिक्ततया भी एकाधिक स्थलों पर व्यक्त किया है। यथा

राजा रामु अवध रजधानी । गावत सुर नर मुनिबर बानी ।।

राम धामदापुरी सुहावनि। लोक समस्त विदित अति पावनि।। चारि खानि जग जीव अपारा। अवध तजे

तदेव, स्वतः सिद्ध है कि तुलसी की दृष्टि में अयोध्या की विशेष महत्ता थी। तुलसी जैसे मनीषी रचनाकार ने रामचरितमानस जैसे ग्रन्थ का प्रणयन यदि अयोध्या में अकारण या संयोगवशात् नहीं किया वरन् इस विषय में उनके मन में कोई सुनिश्चित योजना थी तो उस दशा में तत्कालीन परिस्थितियों में और आज भी समीचीन है कि हम तर्क के निकष पर मानें कि अयोध्या की कोई न कोई विशिष्टता रही होगी अवश्य। क्या आगमतः सप्तपुरियों में प्रथमगण्य अयोध्या की गरिमा जिस रूप में अन्यान्य कवि मनीषी विद्वत्जनों ने व्याख्यायित की है उसके 'हिप्नोटिक' प्रभाव से तुलसी ने किसी आवेश में मानस – प्रणयन अयोध्या में नहीं किया था और वास्तव में अयोध्या की महत्ता/इयत्ता के प्रति उनके हृदय/मस्तिष्क में भारी श्रद्धा भी विद्यमान थी, जिसके सम्प्रभाव में संदर्भगत प्रकरण में प्रतीततया पर्याप्त सोच–विचार के उपरान्त ही सद्संस्कार की सनातन चेतना की भूमि, कलिकलुष वसावति भूमि अयोध्या में मानस–प्रणयन किया।

तनु नहिं संसारा।। सब बिधि पुरी मनोहर जानी। सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी।। पहुँचे दूत रामपुर पावन। हरषे नगर बिलोक सुहावन। जद्यपि अवध सदैव सुहावनि। रामपुरी मंगलमय पावनि ।।

तुलसी ने मानस के बालकाण्ड में ही अयोध्या को 'सबबिधि मनोहारी', 'सिद्धप्रद', 'सुर–नर–मुनि से वन्दित', कविशील या काव्य–चातुर्य मात्र या क्षणिक आवेश/आवेग का फलित नहीं, वरन् तुलसी के मानस का शाश्वत संचारीभाव है। रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड में भी वे लिखते हैं–

रिधि सिधि संपत नदी सुहाई। उमगि अवधि अंबुधिचलि आई।।

'मांगल्य की खानि, पावनि, सुहावन, सुहावनि, सदैव सुहावन आदि विशेषणों से अलंकृत किया है और यह भी बताया है कि यहाँ प्राण–विसर्जन होने से संसार में आवागमन से छुटकारा मिल जाता है। उनकी दृष्टि में रामधाम अयोध्या मोक्षप्रदायिनी है।

ज्ञातव्य है कि रामचरितमानस के बालकाण्ड में 'अवध' की जो आरम्भिक वन्दना तुलसी ने की है, वह परम्परागत

मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुन्दर सब राती।। कहि न जाई कछु नगर बिभूती। जनु एतनिअ बिरंचि करतूती।।

सब बिधि सब पुर लोग सुखारी द्य राम चन्द सुखचन्द निहारी।।

आगे चल कर तुलसी की अयोध्या के प्रति श्रद्धा अधिक प्रबल प्रतीत होती है, जब वे स्वयं अपने आराध्य श्रीराम से

अवध का नमन करा देते हैं। लंकाकाण्ड में रावण—हनन के बाद श्रीराम लक्ष्मण सीता सहित अयोध्या वापस लौट रहे हैं, तो मार्ग में पुष्पक विमान से दूर से ही पावनता—प्रबोधिनी अवधपुरी की झलक उन्हें दिख जाती है, वे तुरन्त हर्षित—पुलकित होकर अयोध्या को अपना प्रणाम अर्पित करते हैं और सीता से भी प्रणाम अर्पित कराते हैं। देखें—

पुनि दिखु अवधपुरी अति पावनि। त्रिविध ताप भवरोग नसावनि ।

सीता सहित अवध कहुँ कीन्ह कृपालु प्रनाम। सजल नयन तन पुलकित पुनि पुनि हर्षित राम।।

आदि—महाकवि महर्षि वाल्मीकि तो इससे भी आगे बढ़ जाते हैं। वनवास के लिए प्रस्थान करते समय माता कैकेयी, राजा दशरथ की आज्ञा के उपरान्त माता कौशल्या से वनवास के लिए अनुमति लेने के बाद अयोध्या—भूमि से बाहर निकलते समय दाशरथ राम अवध—भूमि को प्रणाम करके अवध—भूमि से भी वनवास पर जाने की अनुमति माँगते हैं और 14 वर्ष की अवधि के उपरान्त लौट कर आने की परिस्थितियाँ प्रदान करने की याचना करते हैं। रावण वध के उपरान्त लक्ष्मण से श्रीराम स्वयं कहते हैं— ''नाऽपि स्वर्णमयी लंका रोचते मे लक्ष्मण ......।'' इतना अनुराग और इतना आदरभाव था अयोध्या के प्रति वाल्मीकीय श्रीराम का (आदि—महाकवि वाल्मीकि और संतभक्तकवि तुलसीदास का भी)।

औ... र, रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में भी अयोध्या के प्रति कविवर तुलसी की आस्तिकता और अधिक जाग्रत/मुखरित है—इहाँ भानुकुल कमल दिनाकर। कपिन्ह दिखावत नगर मनोहर।।

सुनु कपीस अंगद लंकेसा। पावनपुरी रुचिर यह देसा।। जदपि सब बैकुण्ठ बखाना। वेदपुरान विदित जग जाना।। अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ। यह प्रसंग जानई को कोऊ द्यद्य जनमभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरजू पावनि।। जा मज्जन ते बिनहि प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा।। अति प्रिय मोहिं इहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुखरासी।।

अवधि पुरी अति रुचिर बनाई। देवन्ह सुमन वृष्टि झरि लाई।।

अयोध्या की महत्ता बताते हुए तुलसी के आराध्य भगवान श्रीराम स्वयं लंकेश, सुग्रीव, अंगद आदि से इस पुरी को पावन, सुहावनि बताते हुए कहते हैं कि यद्यपि वेद, पुराण सभी ने बैकुण्ठ का बखान किया है, लेकिन मुझे (श्रीराम को) अवधपुरी के समान वह बैकुण्ठ भी प्रिय नहीं है। श्रीराम जी के स्वयं के अनुसार (तुलसी के शब्दों में) उत्तर दिशा में बहने वाली पुण्यसलिला सरयू की महिमा है कि सरयू में स्नान करने वाले को भी मृत्यु के उपरान्त उनके (भगवान् श्रीराम के) समीप स्थान प्राप्त होता है । अवध के निवासी भी उन्हें (श्रीराम को) अति प्रिय हैं और पुरी (अयोध्या) मोक्षधाम प्रदान करने वाली है ।

उत्तरकाण्ड में भी मानसकार ने रामराज्य में अवधपुरी की जो शोभा (महत्ता) दोहा 26 से 29 तक में वर्णित है 'गरुड़—कागभुशुण्डि संवाद' में भी रचनाकार ने अयोध्या की सार्वकालिक पावनता को रेखांकित कर दिया है । यथा—

नित नवमंगल कोसलनगरी। हरषित रहहिं लोग सब पुरी।।

अब जाना मैं अवध प्रभावा। निगमागम पुरान जस गावा।।
कवनेउ जनम अवध बस जेई। राम परायन सो परि होई।।

अवध प्रभाव जान तब प्रानी। जब उर बसहिं राम धनु पानी।।

उपर्युक्त पंक्तियों से तुलसी के रामचरितमानस में अयोध्या की जो पावनता/धार्मिक महत्ता आदि अंकित है वह सतत परिलक्षित है। कह सकते हैं कि 'अयोध्या' अजेय 'अयोध्या' ही नहीं, अपितु सद्संस्कार और सद्संस्कृति से (आपवादिक कालखण्डों को छोड़ दें तो) सदैव, आप्लावित भूमि रही है। वाल्मीकि के मर्यादापुरुषोत्तम और तुलसी के सगुण–निर्गुण भगवान राम के अतिरिक्त भी इसी भूमि पर अनेकानेक मनीषी महामनीषी जन्मते रहे हैं या उन्होंने इसे अपनी कर्मभूमि बनाया है।

एक पक्ष और।

विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा हिन्दू समुदाय की आस्था एवं अस्तित्व को विगलित करने के प्रयासों से पीड़ित एवम् उद्भ्रान्त समाज को समुचित दिशा–निर्देश देने के लिए तथा हिन्दू मानस को अपनी धार्मिक अस्मिता अक्षुण्ण रखने के अमूर्त साधन के रूप में रामकथा का जो अप्रतिम काव्यमय सूत्र तुलसी ने प्रदान किया और एतदर्थ रामचरितमानस जैसे प्रबन्धकाव्य ग्रन्थ की विरचना की, उस रामचरितमानस के प्रणयन के लिए तत्कालीन परिस्थितियों में सर्वाधिक अशान्त अवध को शान्ति और सर्वमांगल्य की ओर उन्मुख करने के लक्ष्य–संधान के लिए भी तुलसी ने सुविचारित ढंग से अयोध्या को ही रामचरितमानस सरीखे ग्रंथ की रचना–भूमि बनाया यह सुविचार तर्क के निकष पर औचित्यपूर्ण प्रतीत होता है।

वस्तुतः जिस काल में तुलसी ने रामचरितमानस की रचना की, उससे अनेक दशक पूर्व ही अयोध्यास्थ 'श्रीरामजन्मभूमि मन्दिर' ध्वस्त कर दिया गया था। ऐसी परिस्थिति में तुलसी द्वारा रामचरितमानस की रचना अयोध्या में प्रारम्भ किया जाना मात्र एक संयोग नहीं माना जा सकता। मध्य युग की संक्रान्ति के युग में 'कहाँ जाई का करी' वाले 'तुलसी के कालखण्ड' में रामकथा के सहारे व्यथित हिन्दू मानस को 'शान्ति सम्बल' प्रदान करना भी मंगलकाव्य–प्रणेता तुलसी का सुनिश्चित लक्ष्य रहा होगा। संभवतः इसलिए भी उन्होंने संस्कार और संस्कृति की भूमि अयोध्या में रामचरितमानस का प्रणयन किया। इससे भी बढ़ कर सोने में सुहागा यह कि महाकवि तुलसीदास ने रामचरितमानस प्रभृति अप्रतिम ग्रंथ की रचना ही नहीं की अयोध्या में, अपितु निस्संदेह संतकवि तुलसीदास रामचरितमानस में ही अयोध्या, अवध–भूमि की भरपूर प्रशंसा भी करते हैं। यह सब कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

अयोध्या की महत्ता बताते हुए तुलसी के आराध्य भगवान श्रीराम स्वयं लंकेश, सुग्रीव, अंगद आदि से इस पुरी को पावन, सुहावनि बताते हुए कहते हैं कि यद्यपि वेद, पुराण सभी ने बैकुण्ठ का बखान किया है, लेकिन मुझे (श्रीराम को) अवधपुरी के समान वह बैकुण्ठ भी प्रिय नहीं है। श्रीराम जी के स्वयं के अनुसार (तुलसी के शब्दों में) उत्तर दिशा में बहने वाली पुण्यसलिला सरयू की महिमा है कि सरयू में स्नान करने वाले को भी मृत्यु के उपरान्त उनके (भगवान् श्रीराम के) समीप स्थान प्राप्त होता है । अवध के निवासी भी उन्हें (श्रीराम को) अति प्रिय हैं और पुरी (अयोध्या) मोक्षधाम प्रदान करने वाली है ।

अपरम्पार महत्ता है सद्संस्कारों एवं 'भारतीय' संस्कृति की केन्द्र भूमि अयोध्या की, महनीय प्रथम तीर्थ अयोध्या की–कहँ लौं महिमा कहौं बखानी। मैथिलीशरण गुप्त भी लिखते हैं– 'देख लो साकेत नगरी है यही, स्वर्ग से मिलने जो ऊपर जा रही। निस्संदेह रामावतरण–भूमि पर संदर्भगत भव्य दिव्य मन्दिर बनने के बाद अयोध्या पुनः स्वर्गादपि गरीयसी भूमि हो जाएगी, उसे स्वर्ग की ओर जाते देखने की आवश्यकता नहीं होगी। शर्त यही होगी कि पर्यटन–तीर्थ बनाने के साथ–साथ अयोध्या के तीर्थत्व को भी प्राचीन तीर्थशील महत्ता के समरूप बनाए रखा जाए।

अंत में अथर्ववेदकार, स्कन्दपुराण, महर्षि वाल्मीकि से लेकर कालिदास, तुलसीदास, मैथिलीशरण गुप्त प्रभृति कविगण जिस भूमि की वन्दना करते नहीं अघाते, उस अवध–भूमि के प्रति तुलसी से शब्द उधार लेकर पुनरपि यही कहना होगा– "बन्दउँ अवधपुरी अति पावनी।"

◆

मो. : 8874830492

सनातन संस्कृति का पुनर्जागरण

—अनूप ओझा

भगवान राम की नगरी अयोध्या, मोक्ष की नगरी भगवान शिव की काशी और कर्म का संदेश देने वाली भगवान कृष्ण की नगरी मथुरा सांस्कृतिक पुनर्जागरण के आधार स्तंभ बन गए है। वैश्विक शान्ति का संदेश केंद्र बन गए है। हिंदुत्व की चेतना और सनातन संस्कृति की चेतना को प्रतिष्ठापित करने के लिए पर मोदी और योगी की सरकार प्रतिदिन आगे बढ़ा रही है। पर्यटन, उत्तर प्रदेश में व्यापक रोजगार आय और ग्रामीण विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे पर्यटन वृद्धि के राजस्व में वृद्धि होने के साथ–साथ अप्रत्यक्ष रोजगार सृजन भी हो रहा है।

भारत ने सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रभात काल में प्रवेश किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय संस्कृति की सदियों पुरानी परंपराएं लगातार 9 वर्षों से गाढ़ी हो रही है। इस अद्भुत प्रवाह को आगे बढ़ाने में उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ सरकार की लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है। वैश्विक विकास की भूमिका के इस कालखंड के दौरान देश की जनता को उत्तर प्रदेश सरकार की सांस्कृतिक पुनर्जागरण परियोजनाओं का लाभ मिलने लगा है। यूपी के तीर्थ स्थलों के संपूर्ण विकास की गति तीव्र और निर्बाध है।

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने प्रदेश में धार्मिक पर्यटन की अवधारणा को साक्षात कर दिया है। राम, कृष्ण, बुद्ध के उत्तर प्रदेश में धार्मिक महत्व वाले स्थलों को सजाने का काम पूरा हो रहा है।

प्रदेश में देश और विदेश के सैलानियों को आकर्षित करना है। इससे राज्य में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। निवेश और रोजगार के अवसर भी उत्पन्न हो रहे है। धार्मिक और आध्यात्मिक टूरिज्म सर्किट को भी विकसित करने पर कार्य हो रहा है। रामायण, महाभारत, शक्तिपीठ, कृष्ण, बुद्ध, जैन

और सूफी सर्किट से प्रदेश में धार्मिक पर्यटन को नये रूप में दुनिया के सामने दिखाया जा रहा है। धार्मिक पर्यटन के लिहाज से उत्तर प्रदेश काफी समृद्ध रहा है। योगी सरकार काशी, प्रयागराज, मथुरा–वृंदावन, अयोध्या, मिर्जापुर, गोरखपुर, चित्रकूट, नैमिषारण्य व देवीपाटन क्षेत्रों के तीर्थ स्थलों के वैभवपूर्ण विकास का काम लगातार प्रमुखता से कर रही है। प्रदेश सरकार द्वारा पर्यटन विकास के लिये आधारभूत संरचनाओं में वृद्धि की गयी है।

योगी सरकार राज्य में धार्मिक, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक महत्व के विभिन्न तीर्थ स्थलों के सौंदर्यीकरण और विकास कीर्तिमान गढ़ रही है। आजमगढ़ जिले के हरखोरी में माता कालिका मंदिर और उन्नाव में सिद्धपीठ माता मानसरोवर मंदिर के विकास की प्रक्रिया शुरू हो गई है। बस्ती में विक्रमजोत गांव के झारखंडी मंदिर के सौंदर्यीकरण का काम गति पर है।

प्रदेश में देश और विदेश के सैलानियों को आकर्षित करना है। इससे राज्य में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। निवेश और रोजगार के अवसर भी उत्पन्न हो रहे हैं। धार्मिक और आध्यात्मिक टूरिज्म सर्किट को भी विकसित करने पर कार्य हो रहा है। रामायण, महाभारत, शक्तिपीठ, कृष्ण, बुद्ध, जैन और सूफी सर्किट से प्रदेश में धार्मिक पर्यटन को नये रूप में दुनिया के सामने दिखाया जा रहा है। धार्मिक पर्यटन के लिहाज़ से उत्तर प्रदेश काफी समृद्ध रहा है। योगी सरकार काशी, प्रयागराज, मथुरा–वृंदावन, अयोध्या, मिर्जापुर, गोरखपुर, चित्रकूट, नैमिषारण्य व देवीपाटन क्षेत्रों के तीर्थ स्थलों के वैभवपूर्ण विकास का काम लगातार प्रमुखता से कर रही है। प्रदेश सरकार द्वारा पर्यटन विकास के लिये आधारभूत संरचनाओं में वृद्धि की गयी है।

कौशल के साथ भारतीय संस्कृति के मूल आयामों का फिर से खोजने और एकीकृत करने के लिए एक अनूठा मंच बनाने का सफल प्रयास यूपी में चल रहा है। यूपी तेजी से बदल रहा है। यूपी में धार्मिक सर्किट पर सडक निमार्ण परियोजनाएं, पर्यटकों के लिए आवासीय सुविधाएं, नए एयरपोर्ट का निर्माण प्रदेश की नई तस्वीर में रंग भर रहे हैं । भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण के इस नए दौर में लोक आस्था के सभी बिंदुओं को साकार करने के प्रयास अब धार्मिक पर्यटकों के रूप में साक्षात दिखने लगे हैं।

सांस्कृतिक वैभव को समेटे उत्तर प्रदेश की भूमि को सजाने में योगी सरकार भव्य धार्मिक उत्सवों का आयोजन लगातार कर रही है। इन आयोजनों में जनता की भागीदारी कार्यक्रमों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाती रही है। अयोध्या की देव दीपावली, प्रयागराज का माघ मेला, चित्रकूट कामतानाथ की परिक्रमा, मथुरा वृंदावन तीर्थ स्थलों पर न के कृष्ण उत्सव का आनंद उठाने के लिए श्रद्धालु लाखों की संख्या में एकत्रित होते हैं। उत्तर प्रदेश में योगी सरकार के प्रयासों से सांस्कृतिक उल्लास का अलौकिक वातावरण तैयार हो रहा है। तेजी से हो रहे युग बदलाव के क्रम में योगी सरकार के नेतृत्व में भारतीय संस्कृति की जड़ें गहरी होने की दिशा में अग्रसर हैं। भारतीय संस्कृति के आधार देवता वैष्णव और शैव की संस्कृतियों के समागम के नव रूप का लोक जनमानस स्वागत कर रहा है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक सांस्कृतिक पुनर्जागरण के दौर का समाज निर्माण हो रहा है। भारतीय संस्कृति के प्रतीक राम कृष्ण और शिव के आदर्श संदेशों का नया भारत निर्माण हो रहा है।

प्राचीन ज्ञान के आधुनिक विचार, दर्शन, प्रौद्योगिकी और शिल्प कौशल के नूतन प्रयोग को योगी सरकार स्थापत्य के माध्यम से साकार कर रही है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण के इस दौर में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के दर्शन को आकार देने में योगी सरकार समयबद्ध कार्यक्रमों पूरा कर रही है।

यह सब परिस्थितियां बताती हैं कि देश और उत्तर प्रदेश का दौर बदल रहा है। धर्म और दर्शन की भूमि उत्तर प्रदेश में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के ध्वजवाहक योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सांस्कृतिक चेतना तीक्ष्ण हो रही है। लोक जनमानस को आस्था पथ पर चलने के लिए सामूहिक अवसर मिल रहे हैं और जनमानस राम राम,कृष्ण कृष्ण का उद्घोष कर रहा है।

◆

मो. : 6394576653

अवधी लोक साहित्य में लोकमंगल राम

–शिवचरण चौहान

अवधी लोक साहित्य में राम ही ईश्वर, परमेश्वर, मर्यादा पुरुषोत्तम और आम आदमी हैं। अवधी भाषा के कवियों साहित्यकारों नाटक का रोना जहां राम का गुणगान किया है वहीं लोकमंगल की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। गाई का राम कसाई का राम ऋराम सबके हैं। गाय की भी राम है तो कसाई का भी प्रतिपाल राम करते हैं।

राम की चिरैया, राम का खेत।
खा लेव चिरैया, भर भर पेट।।

अगर चिड़ियां रामजी की हैं तो खेत भी राम जी का है। जो राम चिड़िया का पेट भरेगा वही मेरा भी पेट भरेगा। सबके मंगल की कामना अवधी साहित्य में मिलती है।

राम–रस का माधुर्य ही मधुर है–

'रामक नाम सदा मिसरी।
सोवत जागत ना बिसरी।।

वैसे तो साहित्यकी अनेक विधाएँ हैं किंतु लोक साहित्य के अन्तर्गत लोकगीत, लोक कथाएँ तथा लोकोक्तियाँ ही प्रमुख हैं। गीत लोकजीवन का रस है, लोक कथा उसकी गति। लंबे अनुभव के बाद निकली, रस में पगी लोकोक्तियाँ पग–पगपर पथ–प्रदर्शन करती हैं।

संगीत–रसके बिना जीवन नीरस है। इसीलिये लोक जीवन में गीत का महत्वपूर्ण स्थान है।

लोकगीत, चाहे पर्व त्यौहार के हों या परिस्थिति के, संस्कारों के हों उनका शुभारंभ राम से ही होता है।

हिंदू–संस्कारों में जन्म, नामकरण, अन्न–प्राशन, मुण्डन, कर्ण छेदन, यज्ञोपवीत तथा शादी विवाह मुख्य संस्कार हैं। इन संस्कारों के अवसर पर लोक गीत गाये जाते हैं।

श्रीगणेश वन्दना, भगवती देवी का आह्वान लोकगीतों द्वारा किया जाता है।

आओ माता बड़ो मोरे अंगना सतरंगी मैं देहौं बिछाय।
घिया गुड देवी क होमु करैहों,
जो मोरि जज्ञि पूरन होइ जाय।।

श्माता भगवती ! आइये और मेरे आँगन में बैठिये। मैं सतरंगा बिछौना बिछा दूंगी तथा घी–गुड़ से आपके लिये हवन कराऊँगी, आपकी कृपा से मेरा यज्ञ (शुभ संस्कार) सकुशल सम्पन्न हो जायगा।

यज्ञोपवीत संस्कार में–

पहिला जनेऊ गनेस जी का देव,
दुसरा जनेऊ ब्रह्मा जी का देव,
तीसरा जनेऊ महादेव का देव,
चउथ जनेऊ विष्णुजीका देव।

इसी प्रकार पाँचवाँ सब देवताओं को और छठा पूज्य पूर्वजों को, तब सातवाँ जनेऊ–जनेऊ बरुआ का देव।

कन्या के विवाह में सौभाग्य की कामना के लिये सर्वप्रथम देवाधिदेव महादेवसे याचना की जाती है–

लाये महादेव बैलु लदाय, सोहगवा अपनी गौराका,

देव गउरा देई तिनुकु सोहगवा हमरी बेटी का।

वाको चकोरे धतूरबा, महादेव केरे पाखा गौरा देई का सोहगु मोरी चन्द्रबदनी पै लागा।

इसके पश्चात् अन्य सौभाग्यवती स्त्रियों से सौभाग्य की याचना की जाती है। सयानी बेटी के विवाह की चिन्ता में घर के बड़े–बूढ़ों की मनःस्थिति तथा कन्या की सान्त्वना का चित्र देखिये–

ऊँची महलिया के नीचे दुअरवा, तहँना बाबा उनके सोवें ना।।
लपकि कै चढ़ि गयीं बेटी महलिया की बाबा सोवौ कि जागौ ना।।
ना बेटी सोवौं ना बेटी जागौं, चिन्ता लागि तुम्हारी ना।
काहे को बाबा मोरे सोचु करत हो, पार लगइहैं भगवान राम ना।।

यहाँ कन्या को पिता–को अपने से अधिक भगवान की कृपा पर विश्वास है और उसी विश्वास को कन्या अपने अभिभावकों के सामने प्रकट कर रही है।

राम भजन–लोकजीवन में प्रभु स्मरण का एकमात्र सुगम और मनोरञ्जक साधन है। झोपड़ी से लेकर राजमहलों तक भजन गाकर भगवान की कृपा की आकांक्षा की जाती है।

लोक–कथा

पहले जब मनोरंजन के इतने साधन नहीं थे रेडियो टीवी और मोबाइल फोन नहीं थे तब बचपन में दादी है अथवा नानी रात में सोते समय लोक कथाएं सुनाती थीं। अवधि में हर समस्या के निवारण के लिए लोक कथाएं मौजूद हैं।

कथा किहानी बिज्जोरानी,
चली रामके साथ।

कहानी चलती ही श्रीरामके साथ है

ऐसी ही एक कहानी सुदामा ब्राह्मण की कथा से मिलती जुलती है–

याकै रहैं दुर्बल ब्राह्मन। झोरी भर भीख लावै, ब्राहानी म्याड़ भरि पीसे, कठौता भरि पवै, मुला खायकी

बेरिया रहि जाय रोटियां–कोचिया। ब्राह्मन बड़े परेशान। सबते कहेनि, तो लोगन पूछा–कोऊ तुम्हरे जगन्नाथन के पूजा करता है ? ब्राम्हण देव बोले–हम तो नहीं करित, हमार पिता करत रहैं। लोगन कहा–वसि यह कारन है । वो घरै गे औ ब्राहनी ते कहेनि, लाव मोर फीहा लँग्वाटा मैं जगनाथन जइहौं।

चलते चलते रस्ता माँ जहाँ टिके हुआ चारजने आउर टिके रहैं। उइ चारिव जन भउरा बनायेनि तो सबका एक–एक बढ़िगा। उइ सब परेशान, चारिउ छवार दिखेनि तो उनका दुर्बल ब्राह्मन देसाई परे। उइ सब जने अपन एक–एक भउरा दुबैले ब्राझन का दइ दीन्हेनि। ब्राह्मन एकु भउरा खायेनि और तीन याक राहगीर के हाथे घरै पठे दीन्हेनि। राहगीर जब खोलि के दिखेसि तो वहिमाँ धरे रहैं सोने के भउरा। वहिके मन माँ लालचु आवा, सोनेके भउरा घर माँ धरि लीन्हेसि और आटा के बनाय के दै आवा। साम तक वहिके घरका सब सामान गायब, तब वहिको समझ मा आवा और वहु सोनेका भउरा ब्राह्मनी के दै आवा। वही लागै बहिकै धन–लच्छिमी लउटि आयी।

कहानी बहुत लंबी है। इसमें पद–पग पर भगवान की कृपा के उदाहरण हैं। ब्राह्मण के लौटने से पहले ही ब्राह्मणी मालामाल–खुशहाला हो गयी।

"जस उनके दिन फिरे।
तस सबकै फिरें।।

यही सर्व मंगल की कामना है जो अवधी साहित्य में पाई जाती है।

अवधी साहित्य में लोकोक्तियां और कहावतें भी सर्व मंगल के लिए होती है।

कभी–कभी सूखा पड़ने पर गांव में लेदा मांगा जाता है।

लोग पानी में लोट लोट कर गाते हैं

'कारे मेघा पानी दे, अरे गोसैयां पानी दे।' गोसाईं से पानी

माँगते ही उनकी आशा पूरी होने लगती है।

कौड़ी गिरी रेत माँ
पानी बरसै खेत माँ।'

अवध क्षेत्र के निवासी राम पर अटूट विश्वास करते हैं अकाल संकट और बीमारी पर उनका विश्वास है

राम खबरिया लेबे करिहै, दया ला गि कुछ देवे करिहैं।'

लोक जीवन का यह विश्वास राम की कृपा पर आधारित है। वह कहते हैं—'छूछी भरै भरी ढ़रकावे,

जब चाहे तब फेरि भरावे।।

सब कुछ राम की कृपा पर निर्भर है। —गाइव क राम, कसाइब क राम गाय और कसाई की परिस्थितियों में आकाश—पाताल का अन्तर है। किंतु अवध का जनमानस जानता है कि केवल श्रीराम और कसाई जैसे क्रूरकर्माका कल्याण भी श्रीराम के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं कर सकता। इसीलिये उन्हें सांसारिककोप की जरा भी परवाह नहीं होती—

राम न रिसाँय चहै दुनिया रिसाय।
दुनिया नाराज होके कर भी क्या लेगी!

अवधी साहित्य राम एक रस है। जैसे नमक के बिना भोजन नीरस होता है उसी तरह राम के बिना मनुष्य का जीवन भी नीरस है।

राम नाम के कारना सब धन डारेनि खोय।
मू रखु जानै गिरि परा, दिन—दिन दूना होय।
'रामै औषधि रामै मूरि, रामै करें विथा सब दूरि।'

जैसे उनके दु:ख दूर हुए वैसे सब के दुख दूर हो जाए और सबके पीछे मेरा भी दु:ख दूर हो जाए।

यह अवधी साहित्य की मूल भावना है। राम और लोकमंगल अवधी साहित्य के प्रमुख तत्व हैं। दशरथ के राम अवध के राम हैं और अवध के राम सबके राम हैं जो सबका मंगल करते हैं। सर्व मंगल की भावना अवधी साहित्य का मूल तत्व है। रामचरितमानस के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास से लेकर आज तक के अवधी कवियों में लोकमंगल की भावना प्रबल है।

◆

मो. : 9369766563

दिव्य और भव्य होती अयोध्या

धार्मिक स्थलों का कायाकल्प

—सुरेन्द्र अग्निहोत्री

उत्तर प्रदेश में पूरे उप—महाद्वीप की दो महान प्राचीन नदियों गंगा और यमुना के किनारे संस्कृतियों और धार्मिक रीतियों का उद्गम क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है। भारत के हृदयस्थल में संस्कृतियों के मिलन और आस्था के संगम के अनोखे दृश्यों को समेटे एक अनूठा प्रदेश विश्व के अनेक देशों की राष्ट्रीय आय का बड़ा साधन बने पर्यटन क्षेत्र को योगी सरकार का बड़ा प्लान आकार लेने लगा है। प्रदेश के पांच बड़े धार्मिक स्थल अयोध्या, वाराणसी नैमिषारण्य, चित्रकूट, विंध्याचल का कायाकल्प पर्यटको के लिए एक अच्छे विकल्प के रूप में संभव हो चुका है ।प्रदेश के तीर्थ स्थल योगी सरकार की नीति में बदलाव से धार्मिक पर्यटन का मार्ग प्रशस्त हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने धार्मिक पर्यटन की कमियों की ओर गंभीरता से ध्यान दिया अयोध्या में भव्य दीपावली, मथुरा में होली के माध्यम से उन्होंने धार्मिक पर्यटन के लिए सन्देश देने का काम किया है। पर्यटन के मामले में उत्तर प्रदेश के काशी, मथुरा, अयोध्या, सारनाथ, कुशीनगर दुनियां भर के पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बने हुए है। अयोध्या में श्री राम, मथुरा में श्री कृष्ण ने अवतार लिया। सारनाथ और कुशीनगर गौतम बुद्ध से जुड़े तीर्थ हैं। अनेक देशों के नागरिकों की आस्था यहां से जुड़ी है। लंका से विजय प्राप्त कर जब श्री राम अयोध्या वापस आये थे, तब दीपावली मनाई गई थी। योगी जी के मार्गदर्शन में इस अवसर को जीवंत बनाने का प्रयास निरंतर दीपोत्सव पर्व राम की पैड़ी पर हो रहा है। इस अलौकिक और दीप उत्सव को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज किया गया है । मथुरा में कई दिन पहले होली शुरू हो जाती है। श्री कृष्ण के

नाम और बृज की होली के बिना यह त्योहार अधूरा होता है। उत्तर प्रदेश सरकार का मुख्य फोकस रामायण सर्किट, कृष्णा, बुद्ध, बुंदेलखंड, महाभारत, शक्ति पीठ, जैन सर्किट, आध्यात्मिक सर्किट आदि पर वैश्विक स्तर की सुविधाओं से परिपूर्ण सुनिश्चित विकास को पंख लगाना है। इन सर्किट के बीस किलोमीटर के दायरे में निवेश करने वालों को सरकार अनेक प्रकार के प्रोत्साहन रही है। पर्यटन के लिए निरंतर अधिक राशि का प्रावधान सरकार की कथनी और करने को पूर्ण करने के संकल्प को परिलक्षित हो रहा है। पर्यटन की नीतियां तो पहले भी बनती रही हैं। लेकिन, उत्तर प्रदेश के धार्मिक पर्यटन को जो स्थान मिलना चाहिए था, वह अब से पूर्व नहीं मिल सका था। हमेशा उपेक्षित भाव से देखा जाता रहा है जिसके कारण सबसे महत्वपूर्ण अध्यात्मिक अध्यात्म की अविरल धारा में आने वाले स्थानों पर मूलभूत सुविधाओं का टोटा बना रहा। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में 2017 में आयी नई सरकार की धार्मिक पर्यटन नीति में बदलाव के बाद जनमानस चमत्कृत कर देने वाली सुविधाओं कार्यक्रमों से अभिभूत हुई है। पर्यटन स्थलों की दीप्ति आत्मीय पुरातन संस्कृति के प्रति जनमानस को उत्सुकता से जोड़ रही है। अयोध्या मथुरा की पंचकोशी यात्रा में यात्रियों को शीतल जल और विश्राम स्थल पर छाव मिलने लगी है। इस क्रम में गढ़मुक्तेश्वर को विश्व स्तरीय आध्यत्मिक नगरी बनाने का निर्णय महत्वपूर्ण है। यह योगी आदित्यनाथ के प्रयासों का ही परिणाम है। महाभारतकालीन गढ़मुक्तेश्वर पर्यटन का अंतराष्ट्रीय केंद्र बनेगा। इसे पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के आधार पर विकसित किया जा रहा है। गंगा किनारे स्थित इलाकों को सँवारा जाएगा। अस्सी सती स्तंभ, मुक्तेश्वर महादेव मंदिर, ब्रजघाट, नहुष कूप, मीराबाई की रेती सहित सभी दर्शनीय स्थानों का जीर्णोद्धार होगा। एक ट्वीट में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में काशी में 10300 करोड़ रुपए की विकास परियोजनाएं पूरी की जा चुकी है, जबकि 10,284 करोड़ रुपए की अन्य परियोजनाएं प्रगति पर है और जल्द ही ने धरातल पर साकार किया जाएगा। अर्धचंद्राकार गंगा के तट पर स्थित काशी युगों से तीर्थ विद्या और अध्यात्म का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। दुनियाभर से लोग शहर की प्राचीन संस्कृति को देखने और आत्मिक सुख के लिए आते हैं और यहीं के होकर रह जाते हैं। यह शहर कला और शिल्प, यात्रा

पर्यटन का अनोखा केंद्र रहा हैं। ऐसे में काशी की क्षमता का भरपूर उपयोग करने के लिए एक बुनियादी ढांचे में बदलाव की जरूरत थी, ऐसी बदलाव की जो कि लंबे समय तक टिकाऊ हो और अपने प्राचीन चरित्र के अनुरूप हैं। काशी के ऐतिहासिक स्थापत्य शिल्प, कला और ऐसी हर जानकारी को आकर्षक तरीके से तरीके से पेश करने वाली सुविधाएं भक्तों के साथ–साथ पर्यटकों के लिए भी बहुत महत्त्व मददगार हो सकेगी। गंगा के घाट और काशी विश्वनाथ मंदिर में आरती का प्रसारण शहर भर में बड़े पर्दे के जरिए संभव होने वाला है। काशी के ऐतिहासिक और प्राचीन घाटों के बिना काशी अधूरा है। ये ऐतिहासिक घाट के बड़ा परिवर्तन आए यही कारण है कि घाटों की जगमगाती रोशनी गलियां ऊंची दीवारों पर पेंटिंग और काशी विश्वनाथ धाम से पता चलता है कि अपनी प्राचीन विरासत को जीवित रखते हुए नए रूप में विदेशी और घरेलू पर्यटकों सहित तीर्थयात्रियों को आकर्षित कर रहा है। यहां का एयरपोर्ट व्यस्ततम हवाई अड्डे में शामिल है। शहर को हवाई अड्डा से जोड़ने वाली सड़क जिसमें ट्रैफिक का लोड नहीं के बराबर है। 17 किलोमीटर लंबे हवाई अड्डे सड़क वाराणसी के प्रवेश द्वार के रूप में विकसित किया गया। शहर के नागरिकों को अंतरदेशी जल मार्ग पर मल्टीमॉडल टर्मिनल देखने को मिला है। काशी विश्वनाथ कॉरिडोर का विकास भगवान शिव के भक्तों के लिए किसी वरदान से कम नहीं क्योंकि वह मंदिर गंगा घाट के बीच विकसित हो रहे हैं। पवित्र नगरी काशी बुनियादी ढांचे और सुविधाओं के मामले में परिवर्तन का साक्षी बना है। धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र काशी में विकास की नई धारा नए कलेवर में शहर की आत्मा को पूरी तरह पवित्रता के साथ प्राचीन परंपराओं से जोड़ रही है। काशी विश्वनाथ मंदिर को भगवान शिव के स्थाई निवास द्वादश ज्योतिर्लिंग 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। काशी की विस्तार योजना में श्री काशी विश्वनाथ मंदिर, मंदिर परिसर, मंदिर चौक, प्रदर्शनी केंद्र, वाणिज्यिक दुकानें वैदिक अनुसंधान केंद्र, गोयनका पुस्तकालय, सांस्कृतिक स्थल विस्टा पॉइंट, ललिता घाट, मणिकर्णिका घाट, सुरक्षा सुरक्षा ब्लॉक एंपोरियम, मंदिर ट्रस्ट कार्यालय, अतिथि गृह, धर्मशाला, यात्री सुविधा केंद्र, सार्वजनिक संस्थान, शौचालय, वाराणसी गैलरी, बहुउद्देशीये हॉल, कैफे और अनुष्ठान के लिए लकड़ी की दुकान का विकास शामिल है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यूपी की पर्यटन नीति से अपने को भावनात्मक रूप में जोड़ा है। इसका सकारात्मक परिणाम सामने आ रहा। सूरज अपनी

पहली–पहली किरणों की लालिमा से उत्तर प्रदेश के इतिहास में धार्मिक स्थलों के लिए बदलाव की एक ऐसी इबारत लिख गया है, जो सदैव अमिट रहेगी। नवरात्रि पर्व के दौरान मातृशक्ति की आराधना का एक अद्भुत उदारण प्रस्तुत किया। शुरुआत हुई सपनों को साकार करने की... मुख्यमंत्री के रूप में योगी आदित्यनाथ ने धीरे–धीरे कदम बढ़ाये..उस दिशा में जहाँ कोई रास्ता न था और बढ़ते चले गये... अपने कदमों के निशान छोड़ते चले गये...नया रास्ता बनता चला गया... आज कदमों की गति तेज है... मंजिल भी करीब है... इसे देश और दुनिया देख रही है... मान रही है... मान्यता दे रही है... और सम्मान भी कर रही है....। उत्तर प्रदेश के धार्मिक पर्यटन को विश्वस्तरीय गरिमा के अनुरूप दुनिया मे स्थान दिलाने में लगातार प्रयास सफल हुए हैं। उत्तर प्रदेश के धार्मिक पर्यटन का एक नया रूप पर्यटन तथा संस्कृति विकास के ऐतिहासिक कदम अयोध्या में भव्य राम मंदिर निर्माण से सम्पन्न हुआ है। श्रीराम मन्दिर मॉडल पर डाक टिकट जारी होने के साथ ग्लोबल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रामायण पर आधारित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न सेमिनारों का आयोजन अयोध्या में बृज तीर्थ क्षेत्र विकास परिषद की स्थापना। नैमिषारण्य तीर्थ क्षेत्र विकास परिषद, विन्ध्य तीर्थ क्षेत्र विकास परिषद, शुक्रधाम तीर्थ विकास परिषद, चित्रकूट तीर्थ क्षेत्र विकास परिषद, देवीपाटन तीर्थ विकास परिषद का गठन। महाभारत सर्किट के अन्तर्गत महाभारत से जुड़े स्थलों का विकास। शक्तिपीठ सर्किट एवं आध्यात्मिक सर्किट से जुड़े स्थलों का विकास। जैन तथा सूफी सर्किट के तहत आगरा एवं फतेहपुर सीकरी में पर्यटन सुविधाओं का विकास। गोरखपुर के रामगढ़ताल में वाटर स्पोर्ट्स, पीलीभीत टाइगर रिजर्व तथा चन्दौली में देवदरी राजदरी वाटरफॉल का विकास। उत्तर प्रदेश ट्रेवल मार्ट (लखनऊ) इण्डिया टूरिज्म मार्ट (नई दिल्ली), आममहोत्सव माघ मेला प्रयागराज, गोरखपुर महोत्सव के आयोजन से पर्यटकों की संख्या में 87 प्रतिशत वृद्धि। इको टूरिज्म के लिए दुधवा नेशनल पार्क, कतर्निया वाइल्ड लाइफ सेंक्चुरी, साण्डी पक्षी विहार, चम्बल सेंक्चुरी, नवाबगंज पक्षी विहार, सूर–सरोवर सेंक्चुरी एवं सूरजपुर बर्ड सेंक्चुरी में बर्ड फेस्टिवल का आयोजन वाराणसी में क्रूज सेवा का संचालन। स्पिरीचुअल सर्किट के अन्तर्गत गोरखपुर, देवीपाटन, डुमरियागंज में पर्यटन सुविधाओं का विकास। जेवर, दादरी, नोएडा, खुर्जा एवं बांदा में पर्यटन सुविधाओं का विकास। आगरा में शाहजहाँ पार्क एवं मेहताबबाग–कछपुरा का कार्य एवं वृन्दावन में बाँकेबिहारी जी मन्दिर क्षेत्र में पर्यटन विकास। दुधवा टाईगर रिजर्व तथा पीलीभीत टाईगर रिजर्व स्थलों का विकास। थारू जनजाति पर आधारित विशेष संग्रहालय की स्थापना की कार्यवाही। मगहर में संत कबीर अकादमी की स्थापना। गोरखपुर में 5000 की दर्शक क्षमता के प्रेक्षागृह एवं खुले मंच की स्थापना आदि गनगिनत कार्य हुए हैं।

संस्कृति का सत्कार कैलाश मानसरोवार यात्रियों की अनुदान राशि 50 हजार रु. से बढ़ाकर 1 लाख रु. प्रति यात्री की गयी। सिंधु दर्शन अनुदान 20 हजार रु. प्रतियात्री किया गया। पर्यटन तथा संस्कृति विकास के लिए बुनियादी सुविधाओं का बिस्तार बुनियादी सुविधाओं के विकास के लिए 1322 किलोमीटर की लंबाई में पांच एक्सप्रेस–वे का निर्माण सुनिश्चित किया जा रहा है। 341 किमी. लंबे पूर्वांचल एक्सप्रेस–वे 297 किमी लंबे बुंदेलखंड एक्सप्रेस–वे का निर्माण कार्य भी है। 594 किमी लंबे गंगा एक्सप्रेस–वे के लिए भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गयी है। 91 किमी लंबे गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस–वे का कार्य भी प्रगति पर है। बलिया लिंक एक्सप्रेस–वे के निर्माण की मंजूरी मिल चुकी है। प्रदेश के अंतर्राष्ट्रीय/अंतर्राज्यीय सीमाओं पर पड़ने वाले मार्ग तथा सभी जिला मुख्यालय चार लेन मार्ग से जोड़े जा चुके हैं। ऐसी तहसीलें व विकास खण्ड मुख्यालय, जो अब तक दो लेन मार्ग से नहीं जुड़े थे, उन्हें अब तेजी से जोड़ा जा रहा है। प्रदेश में 17 एयरपोर्ट टर्मिनल को भी दो लेन मार्ग से जोड़ा जा रहा है। कुशीनगर में अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट के साथ जेवर तथा अयोध्या में अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट से पर्यटकों को आवागमन सुलभ रहेगा। वर्तमान में लखनऊ, आगरा, वाराणसी, गोरखपुर, कानपुर, प्रयागराज, हिंडन व बरेली, अयोध्या में 09 हवाई अड्डे क्रियाशील हैं। 12 अन्य एयरपोर्ट एवं एक हवाई पट्टी का विकास किया जा रहा है।

◆

मो. : 9415508695

अयोध्या : अतीत से अब तक

—प्रदीप श्रीवास्तव

भारत की गौरवशाली आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाली अयोध्या प्राचीन काल से ही परम—पावन नगरी के रूप में पूरी दुनिया में विख्यात रही है। मान्यतानुसार प्राचीन अयोध्या का निर्माण महर्षि वशिष्ठ की देख—रेख में विश्वकर्मा जी की सहायता से मनु द्वारा किया गया था। आज उसी अयोध्या का कायाकल्प प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के देखरेख में उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा की जा रही है। आज अयोध्या एक नई अयोध्या के रूप में विश्व मानचित्र पर उभर का आया है। तारीख 22, माह जनवरी, वर्ष 2024 समय की शिला पर लिखी गई, जो अनंत काल तक अमिट रहेगी। पांच शताब्दियों के संघर्ष, आन्दोलन और देश के अटूट भरोसे की तारीख। संस्कृति के सरोकारों और वसुधैव कुटुंबकम की ताकत की तारीख...अद्भुत, अलौकिक चेतना के बदलने की तारीख या यूँ कहें 495 साल के बाद बदलने की तारीख। पाँच शताब्दियों से संजोया गया सपना साकार होने के तारीख, इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित होने की तारीख बन गई।

आज अयोध्या पूरी तरह बदल गई है। चौड़ी सड़कें और ऊंची—ऊंची इमारतों ने इस पूरे कस्बे को नया लुक दिया है। पुरानी लखौरी ईंटें अब अतीत की चीज हो गईं हैं। 22 जनवरी, 2024 के बाद अयोध्या की झलक देख कर दंग रह जायेंगे आप, ऐसी अयोध्या दिख रही है, सन 1980 के बाद तो यह स्थिति हो गई कि परिंदा भी उस जगह पर पर नहीं मार सकता था। 6 दिसंबर, 1992 के बाद की बात तो पूछो ही मत। हमारे राम लला को 32 सालों तक टेंट में रहना पड़ा।

अयोध्या तब बहुत ही छोटा कस्बा था। मुश्किल से चार से पांच किमी की लंबाई चौड़ाई में बसा। मंदिरों, मठों और धर्मशालाओं के अतिरिक्त यहां कुछ भी नहीं था। संकरी और ऊंची—नीची गलियां और दोनों तरफ लखौरी ईंटों से बने मकान। मंदिर, मठ और मकान कोई भी इमारत मुझे वहां सौ—सवा सौ साल से ज्यादा पुरानी नहीं दिखी। मंदिरों और मठों का अगवाड़ा तो खूब रंगा पुता दिखता लेकिन पिछवाड़े की दीवारों पर बुरी तरह काई लगी हुई थी। गलियों में कतार से मिठाई की दुकान जरूर दिखतीं जिसमें बस बेसन के लड्डू, जलेबी, समोसे और चाय ही मिलती थी। तब अयोध्या में पैदल चलना ही बेहतर रहता क्योंकि रिक्शे यहां थे गाड़ी को इन गलियों से गुजरते हुए ले जाना किसी नट के करतब जैसा लगता था। हालांकि अयोध्या में भीड़ कहीं भी नहीं दिखी। ज्यादातर मंदिरों में सन्नाटा था। सिवाय पुलिस और अर्धसैनिक बलों की आवाजाही के और कहीं कोई चहल पहल नहीं।

मंदिरों में पुजारी मशीनी तरीके से प्रसाद को मूर्तियों के ऊपर चढ़ाते रहते। उनकी उदासीन मुद्रा देखकर लगता ही

नहीं था कि यहां किसी को मंदिरों को बनाए रखने में दिलचस्पी है। मठों के बाहर बैरागी साधुओं के जत्थे माथे पर वैष्णवी तिलक लगाए सुमिरिनी फिरते रहते। दुबले पतले इन बैरागियों को देखकर लगता कि जैसे ये घर से भगा दिए गए हों और बाकी की उमर काटने के लिए इन्होंने अयोध्या की पनाह ली हुई है। ये किसी भी तीर्थयात्री से कोई अपनापन नहीं दिखाते थे। तब यहां का हर आदमी का कद छोटा और पीठ पर कूबड़ निकला हुआ–सा लगता। मुझे इन कुबड़े पुजारियों, बैरागी साधुओं और लोकल लोगों को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। कई लोगों से इसकी वजह जानने की कोशिश भी की लेकिन कोई भी ठीक से जवाब नहीं दे पाया। कुछ ने बताया कि यहां का पानी खराब है तो कुछ के मुताबिक अयोध्या के लोगों को सीता जी ने श्राप दिया था कि जैसे यहां के लोगों ने उन्हें कष्ट दिया है वैसे ही यहां के लोग भी कभी खुश नहीं रह पाएंगे।

भारत की गौरवशाली आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाली अयोध्या प्राचीन काल से ही परम–पावन नगरी के रूप में पूरी दुनिया में विख्यात रही है। मान्यतानुसार प्राचीन अयोध्या का निर्माण महर्षि वशिष्ठ की देख–रेख में विश्वकर्मा जी की सहायता से मनु द्वारा किया गया था। आज उसी अयोध्या का कायाकल्प प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के देखरेख में उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा की जा रही है। आज अयोध्या एक नई अयोध्या के रूप में विश्व मानचित्र पर उभर कर आया है। तारीख 22, माह जनवरी, वर्ष 2024 समय की शिला पर लिखी गई, जो अनंत काल तक अमिट रहेगी।

लेकिन अब वही अयोध्या अब पूरी तरह बदल गई है। चौड़ी सड़कें और ऊंची–ऊंची इमारतों ने इस पूरे नगर को नया लुक दिया है. पुरानी लखौरी ईटें अब अतीत की चीज हो गईं हैं। जिस अयोध्या में जरूरत की एक चीज नहीं मिलती थी, वहां अब हर आधुनिक चीज उपलब्ध है। अब वहां धर्मशालाएं नहीं बल्कि स्टार होटल हैं। उस समय अयोध्या से सात किमी दूर फैजाबाद (उस समय जिले का नाम यही था) में दो–तीन होटल ही थे। 2014 तक कोई सोच नहीं सकता कि एक दिन भाजपा का केंद्र और उत्तर प्रदेश दोनों पर राज होगा और अयोध्या में राम मंदिर बन कर रहेगा। महज 14 वर्ष के भीतर अयोध्या का यूँ बदल जाना हर किसी को चौंकाता है।

मनु के पुत्र इक्ष्वाकु ने ही तो मेरी यानी 'अयोध्या' की स्थापना की थी। वहीं 24 में से 22 तीर्थंकारों का इक्ष्वाकू वंश का होना भी तो अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। इन सभी तीर्थंकारों में से पहले तीर्थंकर आदिनाथ अथवा ऋषभदेव जी के साथ चार अन्य तीर्थंकरों की भी जन्म भूमि तो मैं ही हूँ। मेरी इसी धरा पर गौतम बुद्ध ने सोलह वर्षों तक निवास किया था। प्रसिद्ध संत रामानंदी जी का जन्म जरूर प्रयाग में हुआ हो, लेकिन रामानंदी सम्प्रदाय का मुख्य केंद्र मैं ही हूँ। फक्कड़ कवि कबीर भी तो इन्हीं रामानंदी के शिष्य थे।

'अयोध्या' यानी मेरे वंश का इतिहास त्रेता में ही नहीं द्वापर में भी है। महाभारत में अभिमन्यु के हाथों जिस बृहद्रथ की

हत्या का विवरण मिलता है। वह इक्ष्वाकू का वंशज था। मैं ने इतिहास के कई अध्यायों को देखा है। मगध के मौर्यों से लेकर गुप्तों और कन्नौज के शासकों की गुलामी (अधीनता) देखी है। महमूद गजनवी के भांजे सैय्यद सालार के तुर्की शासन को झेला है, जो 1033 ई. में बहराइच में मारा गया था। उसके बाद जब जौनपुर में शकों का शासन हुआ तो में शर्कियों के अधीन हो गई। बाद में 1526 ई में बाबर ने मुगल राज्य की स्थापना की (फिर यहीं से शुरू हुआ मेरे विवाद का कारण)। वही मंदिर–मस्जिद की भूमि का विवाद। अकबर के शासनकाल को भी मैं ने देखा है। जिसके दौरान अवध क्षेत्र का महत्व भू–राजनीतिक और व्यापारिक कारणों से बढ़ गया था। वास्तविकता तो यह है कि यह दौर मेरे 'पराभव' का काल था।

और मैं (अयोध्या) अपनी वास्तविक पहचान से दूर होती चली गई। उस दौरान अकबर ने अपने राज्य को 12 सूबों में बाँटा था, उन्हीं में से एक सूबा 'अवध' बना, और मैं यानी 'अयोध्या' उस सूबे की राजधानी बनी 1707 ई. में मुगल साम्राज्य विघटित होने लगा और अवध स्वतंत्र राज्य बन गया। मुगल बादशाह मुहम्मद शाह ने इलाके को नियंत्रित करने के लिए 1737 ई में 'अवध' सूबे को अपने शिया दीवान वजीर सआदत खाँ को दे दिया। जिन्होंने अपने हिन्दू दीवान दया शंकर के सहयोग से इस सूबे पर शासन किया।

आप मेरे इतिहास के पन्नों को पलटें तो पता चलेगा कि जब मुहम्मद शाह का दामाद मंसूर अली उर्फ सफदरजंग अवध का शासक बना तो उसने इटावा के नवल राय को अवध का प्रांतीय दीवान बना दिया। इस बात से मैं इंकार नहीं करती कि सफदरजंग ने मुझे धार्मिक स्वतंत्रता दी। अयोध्या वासियों को अपने हिसाब से पूजा–पाठ का अधिकार दिया। यहीं से मुझे जिंदगी मिलने के लक्षण मिलने लगे। आज की अयोध्या (पहले फैजाबाद) को सफदरजंग के पुत्र शुजा–उद–दौला ने बसाया। जिनकी मृत्यु 1775 में हो गई। उसके बाद वह जागीर उनकी विधवा बहू बेगम की हो गई। बहू बेगम के बेटे असफ–उद–दौला ने यहाँ से 130 किलोमीटर दूर लखनऊ को अपनी राजधानी बना लिया। वाजिद अली शाह अवध के अंतिम नवाब वजीर थे। बताते चलें कि अवध राज्य का संस्थापक मुगलों के दीवान वजीर थे। इसीलिए यहाँ के संस्थापक अपने को नवाब वजीर कहते रहे। वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल और उनके बड़े बेटे बिलकिस बद्र द्वारा 1857–58 में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के तमाम सबूत आज भी मौजूद हैं।

मैं वही अयोध्या हूँ, रामलला की अयोध्या हूँ, यही उनके पिता राजा दशरथ ने राज किया, यहीं पर सीता जी राजा जनक के घर से विदा होकर आईं। यहीं राजा श्री राम का

अभिषेक हुआ। यहीं बहती है सरयू, लेकिन अब सरयू की मस्ती कुछ बदल सी गई है। कहाँ कल तक वो कल–कल कर बहती थीं और आज वही सरयू सिकुड़ी से धीरे–धीरे, सहमी–सहमी सी बहती है। मुझे नहीं मालूम कि किस तरह सरयू प्रदूषित हो गईं, कुछ तो कूड़े से उससे अधिक सियासत की गंदगी से। सही कह रही हूँ लगभग 32 साल पहले कुछ लोगों ने मेरा (अयोध्या) दिल छलनी कर दिया था। तब वे मेरी मिट्टी में अपने–अपने खुदा की तलाश करने आए थे। यह कोई पहली बार नहीं हुआ, सैकड़ों साल से दोनों धर्मों के अगुआ आते और जोश भरे जहर उगलते, और अपने–अपने लोगों को उकसाते, फिर उसके बाद मिलकर मेरे सीने पर

घाव बना जाते। कभी जै श्री राम की गूंज होती तो कभी अल्लाह–ओ–अकबर के आवाजें आती। लेकिन क्यों यह तो वही ऊंची–ऊंची आवाज लगाने वाले जाने ? लेकिन मैंने तो देखा है... राम का नाम लेते हुए लोगों ने खून की होलियां खेली हैं। वे हमारे घरो से मोहब्बत लूट ले गए, जिन गलियों में रामधुन गूंजती थीं... जहां ईद की सेवइयां खाने हर घरों से लोग इकट्ठा होते थे। वहाँ अभी तक सन्नाटा पसरा रहता था।

लेकिन 9 नवंबर, 2019 का वह दिन स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गया देश की सर्वोच्च न्यायालय ने अपने ऐतिहासिक फैसले में दोनों धर्मों को उनका उचित हक दे दिया। इसके बाद मैंने राहत की सांस ली। आज भी मेरी आँखों के सामने छह दिसंबर 1992 का वह सारा मंजर उभर कर आ जाता है, उसे याद करती हूँ तो पूरा शरीर थर्रा उठता है। धर्म के नाम पर कितना लोग लड़े–भिड़े, लेकिन मिला क्या ? केवल नफरत व हिंसा ही तो। जिन्हें दंगे करने थे, नफरतें पैदा करनी थी, उन्होंने घर जलाए, लूटा और नफरतों का कारोबार किया, और बदनाम हो गई मैं। मैंने किसी का क्या बिगाड़ा था। मेरी ही गलियों में जैन और बौद्ध धर्म फला–फुला। हिन्दू–मुस्लिम दोनों ही धर्म के लोगों के कारोबार की जननी हूँ मैं। मंदिर के सामने टोकरियों में फूल बेचते मुस्लिमों के बच्चों को क्या मालूम दशरथ के पुत्र का मजहब क्या था ? सेवइयों का कारोबार करने वाले हिन्दू हलवाइयों को बाबर के वंशजों से क्या लेना–देना। वे तो बस एक संबंध जानते हैं 'मोहब्बत' का। भला हो देश की सर्वोच्च न्यायालय का जिन्होंने सदियों पुराने इस कलह को एकदम के लिए मिटा दिया। बस अब प्रभु श्री राम के भव्य मंदिर देखने की इच्छा रह गई थी जो अब पुरी हो गई।

जी हाँ, मैं वही अयोध्या हूँ, जो कभी कौशल राज्य की राजधानी हुआ करती थी। जहां महाराजा दशरथ का राज दरबार लगा करता था। यहीं पर भगवान ने जन्म लिया था। उसी के बगल में सीता माता की रसोई हुआ करती थी। घाघरा (जिसे आज सरयू के नाम से जाना जाता है) के जिस तट पर लक्ष्मण जी स्नान किया करते थे वहाँ आज भी एक विशाल मंदिर है। मेरी इसी भूमि पर हनुमानगढ़ी है, जिसमें हनुमान जी की एक विशाल प्रतिमा है, जहां तक पहुँचने के लिए अनगिनत सीढ़ियां चढ़नी पड़ती है।

जी हाँ, मैं वही अयोध्या हूँ, जो कभी कौशल राज्य की राजधानी हुआ करती थी। जहां महाराजा दशरथ का राज दरबार लगा करता था। यहीं पर भगवान ने जन्म लिया था। उसी के बगल में सीता माता की रसोई हुआ करती थी। घाघरा (जिसे आज सरयू के नाम से जाना जाता है) के जिस तट पर लक्ष्मण जी स्नान किया करते थे वहाँ आज भी एक विशाल मंदिर है। मेरी इसी भूमि पर हनुमानगढ़ी है, जिसमें हनुमान जी की एक विशाल प्रतिमा है, जहां तक पहुँचने के लिए अनगिनत सीढ़ियां चढ़नी पड़ती है।

18वीं और 19वीं शताब्दियों में कुछ मंदिरों का जीर्णोद्धार किया गया जिसमें कनक भवन एक सुंदर कृति है, जिसका निर्माण टीकमगढ़ की रानी ने करवाया था। नागेश्वरनाथ एवं दर्शन सिंह का मंदिर अतुलनीय है। पाँच तीर्थंकार की जन्मस्थली के प्रतीक में बनी जैन मंदिर तो है ही, पास में ही एक बड़ा टीला है, जिसे मणि पर्वत के नाम से जाना जाता है। जिसके विषय में कहा जाता है कि जब हनुमान जी हिमालय पर्वत से संजीवनी बूटी वाला पर्वत लेकर जा रहे थे तो उसका कुछ हिस्सा हनुमान जी ने यहीं पर गिरा दिया था। इस जगह के बारे में एक किस्सा और भी प्रचलित है। कहते हैं कि जब रामकोट का निर्माण हो रहा था तब मजदूर हर शाम लौटते वक्त अपनी टोकरियाँ यहाँ फेंक

देते थे, जिससे इस टीले का निर्माण हो गया, लेकिन यह जनश्रुति कितनी सत्य है इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। कुछ लोग तो कहते हैं कि यह किसी स्तूप का खंडहर हो। बात जो भी हो।

लेकिन मेरे यहाँ देखने व दर्शन के लिए बहुत सी जगहें हैं। जिनमें मुख्य रूप से नए घाट के निकट एक गली में स्थित छोटी देवकाली जी का मंदिर कहते हैं कि जब सीता जी शादी के बाद अयोध्या आने लगी तो अपने साथ अपनी पूज्या देवी गिरिजा माता को भी साथ लेतीं आई थीं। जिनकी नियमित पूजा–अर्चना सीता जी किया करती थीं। कनक भवन के उत्तर–पूर्व में विभीषण के पुत्र मत्तगयंद का मंदिर है, जो रामकोट फाटक के प्रधान रक्षक थे। स्वर्गद्वार मोहल्ले में कालेराम जी का मंदिर है, जहां विक्रमादित्य कालीन मूर्तियाँ स्थापित है। यह मंदिर महाराष्ट्र राज्य का प्रतिनिधित्व करता है। जिसका इतिहास मात्र दो से तीन सौ साल पुराना है। सरयू तट स्थित लक्ष्मण किले का निर्माण मुबारक अली खाँ ने करवाया था। बाद में रीवा के दीवान दीनबंधु ने विशाल मंदिर बनवाया।

श्री राम की पैड़ी से श्री राम जन्म भूमि की ओर चलेंगे तो तुलसी उद्यान से थोडा पहले वासुदेव घाट नामक मोहल्ले में श्रवण कुञ्ज मंदिर है, जहाँ पर गोस्वामी तुलसीदास जी ने बालकाण्ड की हस्त लिखित बाल कांड को संशोधित किया था। अस्सी के दशक में विवादों के कारण उसे फैजाबाद के न्यालय के मालघर में जमा करवा दिया गया था। श्रवण कुञ्ज मंदिर से थोड़ा आगे चलने पर धर्म हरि मंदिर है, यह मंदिर चित्रगुप्त भगवान का है, जिसके बारे में कहा जाता है कि सरयू स्नान के बाद इस मंदिर का दर्शन करने के बाद ही 'राम लला के दर्शन करने से ही पुण्य प्राप्त होता है।

वहीं जब आप हनुमानगढ़ी चौराहे से अयोध्या मुख्यालय (पहले फैजाबाद) की ओर चलेंगे तो सड़क से ही लगकर क्षीरेश्वर नाथ मंदिर है, जिसमें विशाल शिवलिंग स्थापित है। हनुमानगढ़ी चौराहे से जब आप तुलसी स्मारक जाने वाले मार्ग पर चलेंगे तो आप को रास्ते में बड़ा कुंड दिखाई देगा, जिसके विषय में कहते हैं कि भगवान श्री राम चारों भाइयों के साथ प्रातः यहीं पर दतुवन करते थे। इसलिए इस जगह को दंतधावन कुंड के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा कौशलेश सदन, लव–कुश मंदिर, विजय राघव मंदिर, रानी हो स्मारक, रत्न सिंहासन मंदिर (जहां पर भगवान राम का राज्याभिषेक हुआ था। वाल्मीकि रामायण भवन, तुलसी स्मारक भवन, राम–कथा संग्रहालय, गुरुद्वारा ब्रह्मकुंड, जैन मंदिर काया कुछ नहीं है दर्शन करने के लिए जब अयोध्या आइये तो शहर मुख्यालय स्थित गुलाबबाड़ी, बहू बेगम का मकबरा, चौक, मिलिटरी मंदिर, गुप्तार घाट, भरतकुंड देखना मत भूलिएगा।

◆

मो. : 8707211135

लोकगीतों में राम और अयोध्या

—शिवराम पाण्डेय

अयोध्या आज चक्रवर्ती सम्राट राजा दशरथ के समय जैसी सुख–सुविधाओं से सम्पन्न समृद्धिशाली और परम पवित्र हो गयी है। बीच के कालखण्ड में विदेशी आक्रांताओं का दंश झेल चुकी अयोध्या पुनः परम सुहावनी और मन भावनी हो गई है। आज बिना बुलाये प्रतिदिन करोड़ों लोग अयोध्या पहुंच कर रामलला की एक झलक पाने को आतुर हैं। पुण्य सलिला सरयू नदी की तकदीर संवर गई है। आज करोड़ों लोग केवल अयोध्या में ही सरयू में स्नान कर अपने को धन्य मान रहे हैं। अयोध्या की हनुमान गढ़ी आज बहुत प्रफुल्लित है। राम जन्मभूमि के निकट ही स्थित हनुमान जी की गढ़ी आज पुनः गुलजार हो गई है।

अयोध्या और आस–पास के जनपदों की जनता बिना अयोध्या पहुंचे ही मनमगन होकर राम के भजन गा रही है। गांव गांव व में सोहर और बधावा गाया जा रहा है मानो राम जी ने अभी–अभी फिर से अवतार लिया है।अवध क्षेत्र के लोगों के मन में राम और अयोध्या आदि काल से रचे बसे हैं। भगवान राम की नवीन मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा भले ही 22 जनवरी, 2024 में हुई मगर अवध क्षेत्र के कण कण और क्षण क्षण में राम सदियों से समाये हुए हैं। यहां के लोगों का प्रत्येक काम राम का ही नाम लेकर शुरू होता है। रीति रिवाजों में भी राम रचे बसे हैं। हर तरह के लोकगीतों में भी राम की कथा की ही प्रधानता है। हर कोई राम का अनुयाई है और यह जानते हुए भी कि राम को 14 वर्षों तक बनवास झेलना पड़ा था, फिर भी हर कोई राम जैसे ही बनना चाहता है। कजरी हो या चौता, भजन हो या निर्गुन, झूला गीत हो या भोरहरी, सोहर हो या विवाहगीत जंतसार हो या फगुआ सभी में राम और उनकी अयोध्या का जिक्र जरूर मिलता है। अवध क्षेत्र के जन–जन और कण–कण में राम और अयोध्या विराजमान हैं। लोकगीतों के आख्यान में राम की ही बहुलता है। राम ही सभी के जीवन आदर्श है, उनके द्वारा निर्मित जीवन मर्यादा सभी के लिए जीवन पथ है। धर्म प्राण जनता राम की खुशी में खुश और राम के दुख में अपना दुख देखती है। उसके लिए अगर राम नहीं तो कुछ भी नहीं। यथा—राजा दशरथ के यहां अभी राम जी का अवतार नहीं हुआ है। बड़ी रानी कौशल्या चिंतित हैं, क्योंकि राजा दशरथ को कोई संतान नहीं है। अयोध्या सूनी–सूनी सी लग रही है। तब तक कोई पण्डित जी आ गए। रानी ने उनसे अपनी चिंता की चर्चा की। पण्डित ने पोथी देख कर बताया कि उनके भाग्य में बालक है नहीं।

रानी की चिंता और बढ़ गई और उन्होंने महल में जाकर यह बात राजा दशरथ को बताया।

राजा दशरथ भी चिंतित हो गए और वह गुरु बशिष्ठ जी के पास गये और उन्हें अपनी चिंता से अवगत कराया। तब गुरू जी ने उन्हें यज्ञ करने का उपाय बताया और आस्वस्त किया कि यह उपाय करने के बाद उन्हें पुत्र लाभ होगा। इसी बात को अवध क्षेत्र की महिलायें सोहर में इस प्रकार गाती हैं।

मचियहिं बैठि कौशल्या तौ पण्डित से अरजि करें पण्डित से अरजि करें हो।

पण्डित सून लागे हमरी अयोध्या,

कछू ना मन भावै ,कछू ना मन भावै हो।

एतना बचनिया सुनि कै पण्डित पोथियां उठावें तो पोथियां उठावें हो।

रानी नाहीं लिखा तोहरे बलकवा, अयोध्या रही सूनइ हो।

एतना बचनि सुनकै रानी तौ धाई कै महल गई महलै में मिले दशरथ तो ओनसे अरज करें, राजा से अरज करें हो।

राजा नाही लिखा बालक हमारे, तो बालक हमारे अजोध्या रही सूनइ हो।

एतना बचनिया सुनि राजा तो गुरू के भवन गये

गुरू से अरज किहे हो।

गुरू जी नाही हमरे न एकउ बलकवा अजोध्या सूनी लागै हो।

एतने पै गुरु जी बचन बोले गुरु जी बचन बोले हो।

राजा एकर एकै उपाय ,उहौ तू नाहीं करब्या हो।

राजा एकरे लिए तूं जज्ञ रोपौ रमैया तोहरे होइहंय हो।

राजा दशरथ ने गुरू की आज्ञानुसार पुत्रेष्टि यज्ञ किया। राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न का जन्म हुआ। बालक अब चलने फिरने और खेलने लगे हैं। एक चौताल फाग गीत में यह दृश्य देखिए–

अरे कौशल्या खेलावें चारिउ बारे, अंगनवां मझारे।

पन्नीदार पांव में पनही, कर सर धनुष सिधारे।

कामदार टोपी अति सुन्दर, दो बार

सिर झलके बार गोभवारे। अंगनवां मझारे।

विविधि भांति पकवान खियावत कंचन के भरि थारे।

लै कै रुमाल माथ मुख पोंछते। दोबार

पलंगह पर देते ओलारे। अंगनवां मझारे।

चमकत मुकुट परा मथवा पर चन्द्र कला उजियारे।

घूमि घूमि घुमरी सब खेलते। दोबार

रबि कर रथ ठाढ़ निहारे। अंगनवां मझारे।

कहत राम मचलाय मातु से उठि उठि भागय द्वारे।

शिव परसाद नाथ हंसी बोलत।

हम लेबै खिलौना हो तारे, अंगनवां मझारे।

उलारा

मां मैं चंद्र खिलौना लै हो–दो बार

गेंद खेलन को तारा मंगाय दो दो बार

मैं तो सुरजहि पतंग उड़ इहों।

मां मुझे तारा मंगाय दो।

फुलवारी प्रसंग–

राम लक्ष्मण अब और बड़े हो चुके हैं। मुनि विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को उनके पिता राजा दशरथ से मांग अपने साथ लेकर आये हैं। विश्वामित्र जी धनुष यज्ञ में शामिल होने के लिए राजा जनक जी निमंत्रण पत्र मिला है। वह राम और लक्ष्मण को साथ लेकर जनकपुर आये हुए हैं। उनकी आज्ञा लेकर दोनों भाई फूल लेने के लिए राजा जनक की पुष्प वाटिका में आये हुए हैं। उसी समय सीता जी भी पुष्प वाटिका स्थित माता गौरी के मंदिर में पूजा अर्चना करने आयी हैं। दोनों एक दूसरे को देख लेते हैं। इसका वर्णन इस चौताल फाग में देखिए –

श्री राम लखन दोउ भाई, घुमत फुलवाई।

गिरजा पूजन चली जानकी संग में सखियां सयानी।दो बार

करि पूजा गिरजा जी कां विनवत।

माता पुरवउ आस हमारी। घुमत फुलवारी

करि पूजा जब लौटी जानकी–दो बार

मिले राम लखन दोउ भाई। घुमत फुलवाई

तिरछी नजर से राम जी चितवत–दो बार

लागे हनिकै करेजवा कटारी। घुमत फुलवाई।

केहु ब्रह्मा विधि जोग मिलावें—दोबार।

भला यनहीं पुरुष हम नारी। घुमत फुलवाई

चारों बालक और बड़े हो गए। जनकपुर सीता के विवाह के लिए राजा जनक जी ने स्वयंवर का आयोजन किया। राम चन्द्र जी ने शिव धनुष को उठा कर चाप चढ़ाया, धनुष टूट भी गया और राम जी की बारात सीता जी को ब्याहने के लिए अवधपुरी से जनकपुर के लिए प्रस्थान कर रही है। यह सब कैसे हुआ इस चौताल फगुआ गीत में देखिए।—

अब इहां से करहु पयाना। जनकपुर जाना।

सजी आलकी, सजी पालकी, चौडण्डी चौम्याना।

तासा तुरही अउर नरसिंहा, बाजत सुन्दर बाजा। सब भरत कय करत बखाना। जनकपुर

आई बरात जनकपुर उतरी, अब आइए गये अगुआना। जनकपुर जाना।

आई बरात दुआरे पै पहुंचत। अब होए लाग द्वारचार।

गुरू वशिष्ठ औ विश्वामित्र जी करैं मंत्र उच्चारा।

जनकपुर जाना।

कन्यादान किये है जनक जी

कृतकृत्य है जनक घराना। जनकपुर जाना।

सुनि यह बात मुदित कौशल्या कैकेई सुमित्रा से बोली,करो परिछन को इंतजामा। अवधपुर आना।

आई कय डोली अवधपुर उतरत।सब दुलहिन कय करैं अगुआना, अवधपुर आना।

सब सखियां मिलि मंगल गावत। तीनों मइया करत अगवाना। अवधपुर आना।

राम चंद्र से विवाह हो जाने पर सभी ने सीता के भाग्य की सराहना किया। माता कौशल्या इस फगुआ गीत में सीता के भाग्य की सराहना करते हुए कहती हैं —

धन्य धन्य सिया तोरा भाग्य राम बर पाई।

बृन्दा बन से बांस मंगाये। बृन्दा बन से बांस मंगाये

तब रचि रचि माड़व छाई। राम बर पाई

सुबरन कलश धरे बेदिया पर जहां मानिक दियना जराई। राम बर पाई।

चिठिया लिखि लिख धरे जनक जी विश्वामित्र पठाई।—राम बर पाई।

साजि बरात चले हैं राजा दशरथ, सब पहुंचे जनक पुर आई। राम बर पाई।

सिया जयमाल राम गले डारत,सब देव सुमन बरसाई। राम बर पाई।।

राम लोक जीवन में इस कदर समाये हुए हैं कि अयोध्या में कब क्या हो रहा है जनता सभी से वाकिफ है। राजा दशरथ के यहां बहुत दिनों तक संतान न होने की बात तो मालूम है ही, उसे राम के विवाह की भी चिंता है। लोकगीतों में इस चिंता को देखिए। माता कौशल्या कहती हैं कि पहले मैं राम के जन्म के लिए तरसती रही और जब जन्म भी हुआ तो अब विवाह राम के विवाह के लिए तरस रही हूं—

—पहिले मैं झंख्यौं रामा के जन्म कां,

अब झंख्यौं राम के बियाह।।

माता की चिंता देख राम जी भला चुप कैसे बैठे रहते। तुरंत धनुष धारण उठा कर दुल्हन खोजने के लिए तैयार हो गये।

यतना बचनियां रामा सुनहूं न पाये,

कि लिहलेन उठाई धनुहा बान।।

अवध क्षेत्र में पान और दोहरा खाने का प्रचलन आज भी है। उसी के अनुरूप लोकगीत में वह रास्ता के खर्च के रूप में खैर सुपारी और एक ढोली (200) मगही पान मांगते हैं।

देहू न माता मोहीं खयर सोपरिया,

अउर मगहिया ढोली पान।

खात पियत चला जइबै जनकपुर,

जहां बाटीं सीता सुकुमार।।

राम जी दुल्हन की खोज में सीधे जनकपुर पहुंचे। शायद इसीलिए कि जानकी का जन्म उस समय की विशेष घटना थी। उनका जन्म सीधे धरती से हुआ था इसलिए उन्हें देखने की जिज्ञासा सबको थी। राम जी सीधे पहुंचे जनक जी की फुलवारी में। वहां पर उनकी भेंट सीधे जनक जी से हुई।

राजा जनक को लगा कि राजकुमार सा दिखने वाला लड़का या तो प्यासा होगा और अगर किसी ऋषि मुनि ने

भेजा होगा तो शायद भिक्षाटन करने आया होगा। इसीलिए वह कहते हैं कि हे पुत्र तुम्हें प्यास लगी है या फिर भिक्षा चाहिए। इस प्रश्न पर राम सीधे सीता का हाथ मांग लेते हैं।

एक बन गये रामा दूसरे बन पहुंचे,
तीसरे मां राजा फुलवारि।
हथवा में लोटा डोरी,कान्हें पै धोतिया,
राजा श्रृषि चले हैं नहाय।।
की हया तुही बेटा भिखिया के भूखा,
कि तोहरे लागी बा पियासि।
नाहीं हम हयी राजा भिखिया के भूखा,
नाहीं हमरे लागि बा पियासि।।
तोहर घरा में बेटी सीता कुआंरी हईं,
कइ देता हमरा बियाह।।

विवाह संबंधी एक और लोकगीत देखिए जिसमें सीता के जन्म और उनके लिए वर की चिंता दर्शाई गई है।

राजा जनक जी के सीता बिटियवा,
जइसे दुइजिया के चांद,
सुपवा लोढ़त कन्या वर मांगै,
केहि विधि पूरन होय।
इड़हर हेरेन बिड़हर हेरेन,
बर हेरेन देश सरुआरि।
तोहरे जोगे बर नाहीं मिला बेटी,
कइसे के रचहउं बियाह।।

इसमें समस्या का समाधान सीता जी स्वयं करते हुए कहती हैं –

काहें कां खोज्या इड़हर बइड़हर,
काहें बर खोज्या सरुआरि।
पांच परग भुईं अयोध्या न खोज्या,
जहां चारिउ बर खेलत कुआंर।।
चारिव भइया में जो बर सांवर,
ओनही के तिलक चढ़ाउ।।
सांवर बर देखि जिनि भरम्या बाबा,
सांवर श्री भगवान।

सीता और राम का विवाह हो जाता है। अब माता कौशल्या जी राम और सीता के दाम्पत्य प्रेम की परीक्षा लेने के लिए कहती हैं। हे बटा तुम अपनी दुल्हन मायके भेज दो और दूसरी शादी कर लो।

मचियहिं बैठि बोली मातु कौशल्या,
सुना बेटा बचन हमार।
अपनी दुल्हन बेटा नैहर पठवत्या,
कइ लेत्या दूसर बियाह।।

आदर्शवादी राम, माता की अवज्ञा तो नहीं कर सकते मगर यह सवाल तो पूछ ही लेते हैं कि सीता में आखिर खोट क्या है। न तो वह चंचल है,न झगड़ालू न तो अगली पगली है क्यों छोड़ दें सीता को।

न सीता चंचल न सीता बाउरि,
नाहीं सीता मुंहवा कर जोरि।
कवन गुनहियां लगाइव मोरी मइया,
कइसे करी दूसर वियाह।।

उधर सीता से भी माता कौशल्या ने, प्रश्न किया कि क्या उपाय करने पर राम तुम्हें पति के रूप में मिले।

सासु दुलारि के बउहरि कां बुलावें,
सुना बउहरि अरजि हमार।
कवनि कवन तप किह्यू मोरी बउहरि
पाई गइव राम कां सोहाग।।

इस प्रश्न के उत्तर में सीता बताती हैं कि –

माघ नहायौं अगिनि नाहीं ताप्यौं,
जेठवा न झल्यौ मैं बयार।
सावन मास जवरिया न खायौं
भादों भइसिया के दूध।
नैहर मां रही ,भउजी के तरहीं,
तब पाये राम सोहाग।।

बिपत्ति पर बिपत्ति राम के वनवास काल में खर–दूषण का वध और उसके बाद सीता का हरण। एक चौताल फाग गीत में सीता हरण की घटना दृष्टब्य है–

राम चन्द्र जी का राज तिलक होते होते वनवास हो गया। लक्ष्मण और सीता भी उनके साथ वनवास के लिए चले

गये हैं अब ।अब माता कौशल्या क्या कह रही हैं–

राम बिना मोरी सूनी अयोध्या

लखन बिना चौपाई।

सीता बिना मोरी सूनी रसोइया

के मोरा जेवना बनाई।।

बिपत्ति पर बिपत्ति वनवास काल में खर–दूषण का वध और उसके बाद सीता का हरण। एक चौताल फाग गीत में सीता हरण की घटना दृष्टव्य है ।–

लै गै जनक लली कां उठाई, दशानन आई।

मिरगा मारन हेतु गये बन राम लखन दोउ भाई।

–दशानन आई।

भवन अकेली जानि सिया सुंदरि पहुंचा रावन जाई।

रूप जती के धइकै रावन भीख भीख गोहराईं। दशानन आई।

भिक्षा लइ सिया कुटिया से निकली, रेखा बाहेर आई।

धाई उठाई लंकपति रावन लिहिस है रथ बैठाई।दशानन आई।

करते विलाप जगत की जननी लछिमन कां गोहराईं।

–दशानन आई।

हाथ उठाई उठाइ लछिमन कां पुकारत रावन के संग जाई,

देवर हमकां तू लेहु छोड़ाई।

–दशानन आई

रावण सीता जी का हरण करके लंका आ चुका है। उसने सीता जी को उनके अनुरोध पर राजमहल के अशोक वाटिका में रखा है।

अशोक वाटिका–सीता के वियोग में व्याकुल राम लक्ष्मण की हनुमान और सग्रीव से भेंट, दोनों में मित्रता, और समुद्र पार करके हनुमान जी का लंका में प्रवेश माता जानकी से अशोक वाटिका में मुलाकात। सीता और हनुमान की वार्ता चौताल फगुआ गीत इस प्रकार होती है।

कपि कब अइहैं अवध विहारी, हमैं दुख भारी।

जबसे छूटा राज अवध कय, हमकां विपत्ति पछारी, हो अवध विहारी।।

देवर एक रहे मोरे संग अब ओनहूं हैं सुरति बिसारी। हमैं दुख भारी।।

माह भरे मां रघुपति नाही अइहैं तौ खाय मरब करियारी। हमैं दुख भारी।

कहैं हनुमान धीर धरु माता। दो बार

अइहैं तुहैं लेन प्रभु रघुवर, रावण कां संहारी।

हमैं दुख भारी।

तुलसी दास प्रभु तुहैं लइ जैहैं। दशकंधर कां उजारी हमें दुख भारी।

प्रसंग लंका ही है। लक्ष्मण जी को शक्ति लांच लग चुका है। शुषेन वैद्य ने प्राणों की रक्षा के लिए रात भीतर ही संजीवनी बूटी पिलाने का सुझाव दिया है। संजीवनी बूटी लाने हनुमान जी गये भी हैं मगर आने में विलम्ब हो रहा जिससे चिंतित राम चन्द्र जी कहते हैं –

मोहि तात निहारत रात गई। हनुमान कहां अरुझाने ।भोर नगचाने।

बूटी सजीवनि अइहैं,न कामा। होतै भोर जैहैं सुरधामा। अरे आवत काल नेराने। भोर नगचाने।

अवध के वासी मिलेंगे जब आई के।

कवन जवाब देब हम जाइकै।

माता जब अइहैं लेन गोद। हमसे बनिहैं न करत बहाने भोर नगचाने।

भरि आये नयना बहे लागे नीरा। उठो लखन कहां लागे हैं तीरा।

कोमल गात सुखाने। भोर नगचाने।

खोलहु नयन विलोकहु ताता। एक संग जन्म नहीं लेते विधाता।

एक नारि गयी तो मिलेंगी कयी। पर भाई को मिलन दुलाना ।भोर नगचाना।

कर्मगति की गति होती है है न्यारी। जो विधान लिखा दीन्हा लिलारी अब वह टारें टरे न।

द्विज संता सोचत भगवाना। बूटी सजीवनि लइ लाये हनुमाना।

उठि बैठे लखन बूटी घूंटि लिये,सुर बरसे सुमन विमाना। भोर नगचाना

प्रसंग लंका ही है। लक्ष्मण जी को शक्ति वाण लग चुका है। शुषेन वैद्य ने लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा के लिए रात भीतर ही संजीवनी बूटी पिलाने का सुझाव दिया है। संजीवनी बूटी लाने के लिए हनुमान जी गये भी हैं मगर आने में विलम्ब हो रहा जिससे चिंतित राम चन्द्र जी कहते हैं –

मोहि तात निहारत रात गई। हनुमान कहां अरुझाने। भोर नगचाने।

बूटी सजीवनि अइहैं, न कामा। होतै भोर जैहैं सुरधामा। अरे आवत काल नेराने ।भोर नगचाने।

अवध के वासी मिलेंगे जब आई के।

कवन जवाब देब हम जाइकै।

माता जब अइहैं लेन गोद ।हमसे बनिहैं न करत बहाने भोर नगचाने।

भरि आये नयना बहे लागे नीरा। उठो लखन कहां लागे हैं तीरा।

कोमल गात सुखाने। भोर नगचाने।

खोलहु नयन विलोकहुं ताता। एक संग जन्म नहीं लेते विधाता।

एक नारि गयी तो मिलेंगी कयी। पर भाई को मिलन दुलाना। भोर नगचाना।

कर्मगति की गति होती है है न्यारी। जो विधान लिखा दीन्हा लिलारी अब वह टारें टरे न।

द्विज संता सोचत भगवाना। बूटी सजीवनि लइ आये हनुमाना।

उठि बैठे लखन बूटी घूंटि लिये, सुर बरसे सुमन विमाना भोर नगचाना।

और अब प्रस्तुत है कुछ भजन और भोरहरी गीत–

1

रामहिं राम रटन लागीं जिभिया हो।

गोड़वा कहइ हम तीरथ करबै रामा

हथवा कहै हम करबइ दान ।

रटन लागी जिभिया हो ————— ।

अंखियां कहइ हम दरशन करबइ रामा

कनवा कहइ हम सुनबइ पुरान हो

रटन लागी जिभिया हो ————— ।

2

कइ ल्या असनान हो विमल जल सरयू कय।

यहि सरजू जी में राम नहाये हो,

राम नहाये संग लक्ष्मण नहाये हो।

सीता जी नहानी इहां चादरि तानि हो

विमल जल सरजू कय।

भरत जी नहाने इहां शत्रुघ्न नहाने हो।

संत जन नहाये इहां संझा विज्ञान हो ।

विमल जल सरजू कय।

इस डेढ़ताल फाग गीत के माध्यम से आप अयोध्या नगर। वहां का वातावरण और विशेषताएं देख सकते हैं।–

3

सजनी तोरे कारन छोड़ा धाम, कछु दिन वैराग्य करेंगे।

————अवध में रहेंगे।

हाथे कमण्डल, बगल मृग छाला।

माथे तिलक गले तुलसी के माला

प्रेम सहित पहिरेंगे ।अवध मैं रहगे

राम घाट पर कुटिया छवाई के, भोरेंह उठि सरयू में नहाइ के, संतन संग टेरेब राम नाम।

रामायण नित्य पढ़ेंगे ।————अवध में रहेंगे।

दरशन करि बजरंग बली को। औरो रसोई श्री जनक लली कै। नैना पसारा लखेंगे।

अवध में रहेंगे।

मातगैंड और कनक भवन में करि सत्संग श्रीसंता सदन में।

कछु देर वहां करिके विराम, चरणामृत लै विनवैंगे। अवध मैं रहेंगे।

छोडि अवध कतहूं नहीं जाबै। दर्शन करब मधुर फल खाबै ।नयना पसारा लखैंगे। अवध में रहेंगे।

या तौ तू आई के दरश देखइबू, नाही तो साधू को नाम धरइबू। अब हमरो है अभिलाष श्याम।

निज जीवन सफल करेंगे, अवध में रहेंगे।

◆

मो. : 9415757822

रामचरितमानस में भगवान राम की छवियाँ

—डॉ. रामकृष्ण

राम अनंत है, उनके गुण अनंत है, उनकी कथाओं का अनंत विस्तार है, राम शक्ति, शील, एवं सौन्दर्य के समान्वित रूप है। राम की सरलता, सौम्यता, धीरता, गम्भीरता, मर्यादा एवं अन्य श्रेष्ठ मानवीय गुण, वर्तमान युवा वर्ग के आदर्श है। राम का बाल रूप हो, किशोर रूप हो या युवा रूप हो, जन–सामान्य का प्रेरक एवं उत्प्रेरक रहा है। राम का बालरूप तो अप्रतिम आनन्द एवं सौन्दर्य का स्रोत है। ऋषि मुनि युगों से राम के बाल रूप का ध्यान करके असीम आनन्द सागर में गोते लगाते रहे है। 'राम' के बाल रूप की वन्दना करते तुलसीदास 'रामचरितमानस' में लिखते हैः–

बन्दउँ बालरूप सोइ रामू।
सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू।।
मंगल भवन अमंगल हारी।
द्रबहु सो दसरथ अजिर बिहारी।।[1]

भगवान राम की अनंत छवियाँ हैं, जो युगों–युगों से भारतीय जनमानस में बसी हुई हैं। 'रामचरितमानस' में राम की प्रथम छबि वहाँ दृष्टिगोचर होती है, जब वे मनु और शतरूपा की तपस्या से प्रभावित होकर उन्हें दर्शन देते हैं। राम की वह छवि अतुल्य है, उपमातीत है, कल्पनातीत है। वह छवि लोकविमुग्धकारी है। मनु एवं शतरूपा राम की उस छवि से इतना प्रभावित होते है, कि शरीर की सुध–बुध भूल जाते है। उक्त पँक्तियाँ दर्शनीय हैं–

नील सरोरूह नील मनि नील नीर धर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि–कोटि सत काम।।
सरद मयंक बदन छवि नासा।
बिधु का निकर बिनिंदक हासा।।
नव अंबुज अंबक छबि नीकी।
चितवनि ललित भाँवती जी की।।

भृकुटि मनोज चाप छबि हारी।
तिलक ललाट पटल दुतिकारी।
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा।
कुटिल केस जनु मधुप समाजा।।
उर श्रीबत्स रूचिर बनमाला।
पदिक हार भूषन मनि जाला।।
केहरि कंधर चारू जनेऊ।
बाहु बिभूषन सुंदर तेऊ।।
करि कर सरिस सुभग भुजदंडा।
कटि निषंग कर सर कोदंडा।।
तड़ित बिनिंदक पीत पट उदर रेख बर तीनि।
नाभि मनोहर लेति जनु जमुन भँवर छबि छीनि।।

जब श्रीराम, मनु एवं शतरूपा को दर्शन देते हैं, उस अद्वितीय छबि का वर्णन करता हुआ कवि कहता हैः वे राम नील कमल, नीलमणि तथा नीलवर्ण बादलों के समान श्यामवर्ण वाले हैं। उनके सुन्दर शरीर पर करोड़ों कामदेव न्योछावर हैं।

उनके मुख की छवि शरद ऋतु की पूर्ण चन्द्रमा के समान है। गाल अत्यन्त सुंदर है। गर्दन अत्यन्त सुडौल है। ओंठ लाल है। नासिका मनोरम है। हास्य चन्द्रमा की किरणों के समान है। नवोदित कमल के समान उनकी आँखों की शोभा है। उनकी दृष्टि लालित्यमयी मनोभावनी है। भौंहे काम धनुष की छवि का मर्दन करने वाली हैं। ललाट पर कान्तिमान तिलक शोभायमान है। मकर के समान कुंडल है। शिर पर मुकुट शोभायमान है। उनके बालों की शोभा मधुप समाज जैसी है। गले में कमल की माला शोभायमान है। इसके साथ गले में रत्न एवं मणियों की माला सुशोभित है। सिंह के समान चौड़े कंधे है, जिन पर यज्ञोपवीत शोभायमान है। बाहों में सुन्दर आभूषण सुशोभित है। हाथी की सूँढ़ के समान सुंदर हाथ हैं कमर में तरकस शोभायमान है। हाथों में धनुष वाण सुशोभित है। विद्युत कान्ति को परास्त करने वाला पीला वस्त्र भगवान राम धारण किये हुए हैं। उदर की त्रिवली का सौन्दर्य अद्वितीय है। उनकी नाभि यमुना के भँवर के सौन्दर्य को परास्त करने वाली है। उनके कमल रूपी चरणों के सौन्दर्य का वर्णन असंभव है, मुनि के मन रूपी भ्रमर जिनमें निरन्तर वास करते रहते है। उनमें बाम भाग में सीता जी विराजमान है, जो साक्षात् आदि शक्ति का रूप हैं।

भगवान राम की छवि जनमानस में त्राता, रक्षक, पालक एवं सब प्रकार से अपने भक्त की रक्षा में सन्नद्ध पूर्ण पुरूष के रूप में विद्यमान है। जिस प्रकार 'श्रीमद्भगवद्गीता' में भगवान कृष्ण ने कहा है– 'न मे भक्तो प्रणश्यति'। उसी प्रकार 'रामचरितमानस' में राम नारद को सम्बोधित करते हुए कहते हैं, कि मैं अपने भक्त की रक्षा उसी प्रकार करता हूँ, जिसप्रकार माँ अपने शिशु की रक्षा करती है।

भगवान राम की छवि उनके सुन्दर रूप के साथ–साथ उनके सौम्य गुणों में भी देखी जा सकती है। तुलसी द्वारा वर्णित भगवान राम की रूप एवं गुणों से युक्त छवि का विश्लेषण करती हुई प्रसिद्ध समीक्षक डॉ. मालती तिवारी ने कहा है–

'तुलसी ने राम के स्वरूप वर्णन के साथ ही साथ उनके गुणों का भी विस्तृत वर्णन किया है। यह सत्य है कि रूप और गुण दो भिन्न वस्तुएँ कभी नहीं हो सकती है। उनका एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है अथवा उनसे अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होना सार्थक भी होता है। राम का यह अनन्त सौन्दर्य उनकी अनन्त गुण राशि का प्रतिफल भी माना जा सकता है। अगुन, अखण्ड, अनन्त, अनादि, अनीह, अनामय, अविनाशी तथा नित्य एक रस हैं, साथ ही स्रष्टा, पालक, ज्ञान प्रकाशक, परम उदार, भक्त वत्सल, पतितपावन, अशरणशरण और विषय विकारों के विनाशक हैं। परिणाम स्वरूप समग्र जीवों का, अपने हृदय की कुटिलता भूलकर उनके रूप तथा गुण पर मन्त्रमुग्ध हो जाना स्वाभाविक ही है।'[3]

यह भगवान राम की सुन्दर एवं मनभावनी छवि देश के गाँव–गाँव, नगर–नगर जन–जन में बसी हुई है। राम का जीवन जनसामान्य के बीच एक आधार, एक संबल का कार्य करता रहा है। देश के पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण किसी भी कोनें में आप देखें, ऐसे लोगों की संख्या कल्पनातीत जिनका नाम राम से जुड़ा है। देश में 'राम' शब्द जोड़कर नामकरण करने की परम्परा

उनकी जनमानस में व्याप्त अमिट छवि की ओर संकेत करती है। इस संदर्भ में प्रसिद्ध विद्वान आचार्य विद्यानिवास मिश्र के विचार दर्शनीयः—

'राम मेरी अस्मिता के प्राण हैं। हमारे यहाँ बच्चा जन्म लेता है, तो माँ उसमें राम की छवि देखती है। बचपन में 'जागिए रघुनाथ कुँवर पंछी बन बोलें' से कितनी बार जगाया गया हूँ। बच्चे का मुंडन होता है, जनेऊ होता है तो माँ ललक के साथ देखती है कि मेरे राम इतने बड़े हो गये और विवाह में तो वर राम ही बन जाता है और कन्या सीता। इनसे संबद्ध असंख्य लोकगीत मेरी शिराओं में आज भी बह रहे हैं, कभी भी स्मरण करने पर रोमांच हो जाता है और रोंकने की कोशिश करने पर आँखे नम हो जाती हैं।[4]

रामकथा एवं राम का चरित्र भारतीय जन—मानस में इस प्रकार रचा—बसा है, कि व्यापक जनसमुदास अपने राम एवं उनकी छबि को निरन्तर अपने समक्ष उपस्थित पाता है। राम जन्म का प्रसंग एवं राम जन्मोत्सव का प्रसंग देश के प्रत्येक बालक के जन्म एवं जन्मोत्सव के साथ जोड़कर देखा जाता रहा है। किसी लोक कवि द्वारा लिखित उक्त काव्य पँक्तियाँ इस तथ्य की मार्मिकता को सहज स्पष्ट करती हैं। —

चंदन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है।
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा—बच्चा राम है।[5]

इसी प्रकार कवि बेकल उत्साही ने कहा हैः

मनु तुलसी का दास हो, अवध पुरी हो धाम।
साँस—साँस सीता बसें रोम—रोम में राम।।[6]

भगवान राम की छवि का केवल वाह्य रूप ही नहीं हैं वरन् आन्तरिक शुचिता, पावनता, परदुःखकातरता, शरणागत वत्सलता, सत्य के प्रति निष्ठा, सद्‌भाव, भक्तों की रक्षा का व्रत आदि गुण उनकी छवि के आन्तरिक स्वरूप को प्रस्तुत करते है। राम का यह स्वरूप भी देश के जन—जन में व्याप्त है। अनेक संतों एवं महापुरूषों ने राम के जीवन से प्रेरणा लेकर अनेक महनीय कार्य किए है। इस संदर्भ में महात्मागांधी के विचार दर्शनीय हैं।

'जब मैं बच्चा था तो मेरी परिचारिका ने मुझे सिखाया था कि जब भी मुझे भय लगे या कष्ट हो रहा हो, तो राम—नाम का जप करूँ। बढ़ते ज्ञान और ढ़लती उम्र के बावजूद यह आज भी मेरी प्रकृति का अंग बना हुआ है। मैं यहाँ तक कह सकता हूँ कि अगर वस्तुतः होठों पर नहीं तो मेरे ह्रदय में तो चौबीसों घण्टे राम—नाम रहता है। यह मेरा परित्राता है, मेरा अवलंब है। विश्व के धार्मिक साहित्य में तुलसीकृत रामायण का प्रमुख स्थान है। तुलसीदास ने अपने साहित्य में यों तो राम के सम्पूर्ण जीवन की छवि का अत्यन्त मनोहारी चित्रण किया है, किन्तु उनका बाल वर्णन अद्वितीय है।' राम के बालरूप की एक छवि प्रस्तुत करते हुए वे 'रामचरितमानस' में लिखते है :—

'चारिउ सील रूप गुन धामा। तदपि अधिक सुखसागर रामा।।
ह्रदय अनुग्रह इंदु प्रकासा। सूचत किरन मनोहर हासा।।
कबहुँ उछंग कबहुँ बर पलना।
मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना।।
व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद।
से अज प्रेम भगति बस कौसल्या के गोद।।
काम कोटि छबि स्याम सरीरा।
नील कंज बारिद गंभीरा।।
अरून चरन पंकज नख जोती।
कमल दलन्हि बैठे जनु मोती।।
रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे।
नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे।।
कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा।
नाभि गंभीर जान जेहि देखा।।
भुज बिसाल भूषन जुत भूरी।
हियँ हरि नख अति सोभा रूरी।।
उर मनिहार पदिक की सोभा।
बिप्र चरन देखत मन लोभा।।
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई।
आनन अमित मदन छबि छाई।।
दुइ—दुइ दसन अधर अरूनारे।

नासा तिलक को बरनै पारे।।
सुंदर श्रवन सुचारू कपोला।
अति प्रिय मधुर तोतरे बोला।।
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे बहु प्रकार रचि मातु सँवारे।।
पीत झगुलिआ तनु पहिराई।
जानुपानि बिचरनि मोंहि भाई।
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा।
सो जानइ सपनेहुँ जेहि देखा।।
सुख संदोह मोह पर ग्यान गिरा गोतीत।
दंपति परमप्रेम बस कर सिसु चरित पुनीत।।[8]

तात्पर्य है, चारों भाई शील, रूप एवं गुण के भण्डार हैं। राम तो साक्षात् सुख के सागर हैं। उनके हृदय में कृपा रूपी चन्द्रमा प्रकाशित है। उनकी मन को हरने वाली हँसी उस (कृपा रूपी चन्द्रमा) की किरणों को सूचित करती है। माँ कौशल्या कभी गोद में (लेकर) और कभी उत्तम पालने में लिटाकर और प्यारे ललना! कहकर उनका दुलार करती है।

वे राम जो सर्वव्यापक, निरजन, निर्गुण, विनोदरहित, अजन्मा ब्रह्म हैं, वही प्रेम और भक्ति के वश कौशल्या जी की गोद में खेल रहे हैं। भगवान राम के नील कमल एवं जलाच्छादित मेघ के समान श्याम शरीर में करोड़ों कामदेवों की शोभा है। उनके लाल चरण कमलों के नखों की शुभ्र ज्योति, ऐसी प्रतीत होती है, जैसे कमल के पत्तों पर मोती स्थिर हो गए हो। राम की विशाल भुजाएँ विविध आभूषणों से सुशोभित है। उनके हृदय पर बाघ के नख की बहुत ही निराली छटा है। उनके वक्षस्थल पर रत्नों से युक्त हार की शोभा और ब्राह्मण (भृगु) के चरण चिह्न को देखकर मन सहज की लुब्ध हो जाता है।

राम का कण्ठ शंख के समान है और ठोड़ी बहुत ही सुंदर है। मुख पर असंख्य कामदेवों की छटा छा रही है। उनकी नासिका और तिलक के सौन्दर्य का वर्णन किसी के भी द्वारा संभव नहीं है।

भगवान राम के सुन्दर कान और बहुत ही सुंदर गाल हैं, उनके मधुर और तोतले शब्द बहुत ही प्यारे लगते हैं। जन्म के समय से ही रखे हुए चिकने और घुँघराले बाल हैं, जिनको माता ने बहुत प्रकार से बनाकर सँवार दिया है।

माँ द्वारा भगवान राम को पीली झँगुली पहनायी गई है। कवि कहता है, कि उनका घुटने के बल चलना मुझे बहुत ही प्यारा लगता है। राम के बालरूप का वर्णन वेद और शेष जी भी नहीं कर सकते। उसे वही जानता है, जिसने कभी स्वप्न में भी देखा हो।

इस प्रकार भगवान राम सुख के पुंज, मोंह से परे तथा ज्ञान, वाणी, और इन्द्रियों से अतीत हैं। ऐसे वे परम ब्रहम राम दशरथ एवं कौशल्या के अत्यन्त प्रेम के वश होकर पवित्र बाल लीला करते हैं।

'रामचरितमानस' के अन्तर्गत भगवान राम की छबि का अनुसंधान करते हुए उनमें तीन गुणों का समन्वय विशिष्ट रूप में देखा जा सकता है। ये गुण है : शक्ति, शील एवं सौन्दर्य। भगवान राम में इन तीनों गुणों का समन्वय उनके व्यक्तित्व को एक विशिष्ट आयाम प्रदान करता है। राम का सौन्दर्य अद्वितीय है, उनका शील अप्रतिम है तथा उनकी शक्ति असीम है। इन्ही गुणों की विशिष्ट

'तुलसी के राम उनकी आशाओं के केन्द्र ही नहीं है, मनुष्य में वह जिन तमाम नैतिक गुणों को प्यार करते थे, वह उनके प्रतीक भी थे। ब्रह्म रूप में भले ही वह निर्गुण, निर्विकार हों, मानव–रूप में वह किसी देश–काल की सीमाओं में गतिशील समाज के मानव का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चरित्र में पितृभक्ति, भातृप्रेम आदि पर बार–बार लिखा गया है, लेकिन तुलसीदास का लक्ष्य परिवार में पिता के अधिकार की रक्षा करना न था। राम की मानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई, निषाद सभी के लिए है। विशेषता यह है कि जो जितना त्यागी है, निःस्वार्थ है और दलित है, राम का प्रेम उसके लिए उतना ही अधिक है। भरत और निषाद पर उनका प्रेम इसी कारण है। यह प्रेम पारिवारिक सम्बन्धों पर ही निर्भर नहीं है, उसका आधार व्यापक सामाजिक सम्बन्ध है। समाज के चाहे दुःखी–दीनों और निःस्वार्थ सेवकों को कोई न पूछे, राम उन्हें पूछने वाले हैं।

उपलब्धता के कारण वे राम 'जन–जन के राम' बन जाते हैं। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध विद्वान डॉ. रामबिलास शर्मा लिखते है :

'तुलसी के राम उनकी आशाओं के केन्द्र ही नहीं है, मनुष्य में वह जिन तमाम नैतिक गुणों को प्यार करते थे, वह उनके प्रतीक भी थे। ब्रह्म रूप में भले ही वह निर्गुण, निर्विकार हों, मानव–रूप में वह किसी देश–काल की सीमाओं में गतिशील समाज के मानव का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चरित्र में पितृभक्ति, भातृप्रेम आदि पर बार–बार लिखा गया है, लेकिन तुलसीदास का लक्ष्य परिवार में पिता के अधिकार की रक्षा करना न था। राम की मानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई, निषाद सभी के लिए है। विशेषता यह है कि जो जितना त्यागी है, निःस्वार्थ है और दलित है, राम का प्रेम उसके लिए उतना ही अधिक है। भरत और निषाद पर उनका प्रेम इसी कारण है। यह प्रेम पारिवारिक सम्बन्धों पर ही निर्भर नहीं है, उसका आधार व्यापक सामाजिक सम्बन्ध है। समाज के चाहे दुःखी–दीनों और निःस्वार्थ सेवकों को कोई न पूँछे, राम उन्हें पूँछने वाले हैं।'[9]

इस तथ्य पर विचार करते हुए राम की छवि के आवश्यक अंग उनकी अप्रतिम एवं अतुलित शक्ति पर दृष्टि डालना अप्रासंगिक न होगा। राम के शक्ति पूर्ण स्वरूप की वन्दना करते हुए तुलसी लिखते है :–

पुनि मन बचन कर्म रघुनायक।
चरन कमल बन्दउँ सब लायक।।10
राजिव नयन धरे धनु सायक।
भगति विपति भंजन सुख दायक।।

परशुराम का क्रोध जब उनके विनम्र व्यवहार से नीचे नहीं उतरता, तब राम उन्हें दृढ़ चेतावनी देते हैं। उक्त चौपाइयाँ दर्शनीय हैं :–

देव दनुज भूपति भट नाना।
समबल अधिक होउ बलवाना।।
जौ रन हमहि पचारै कोऊ।
लरहिं सुखेन काल किन होऊ।।[11]

इसी प्रकार लंका पर चढ़ाई करते समय जब समुद्र राम को मार्ग नहीं देता है, समझाने और बिनती करने पर भी नहीं पसीजता, तब वे उसे अपनी शक्ति का परिचय देते हैं। पँक्तियाँ इस प्रकार हैं–

विनय न मानत जलधि जड़, गए तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब भय, बिनु होइ न प्रीति।।
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा।
यह मत लछिमन के मन भावा।।
संधानेउ प्रभु बिसिखि कराला।
उठी उदधि उर अंतर ज्वाला।।
मकर उरग झग गन अकुलाने।
जरत जंतु जलनिधि जब जाने।।[12]

भगवान राम की छवि जनमानस में त्राता, रक्षक, पालक एवं सब प्रकार से अपने भक्त की रक्षा में सन्नद्ध पूर्ण पुरुष के रूप में विद्यमान है। जिस प्रकार 'श्रीमद्भगवद्गीता' में भगवान कृष्ण ने कहा है– 'न मे भक्तो प्रणश्यति'। उसी प्रकार 'रामचरितमानस' में राम नारद को सम्बोधित करते हुए कहते हैं, कि मैं अपने भक्त की रक्षा उसी प्रकार करता हूँ, जिसप्रकार माँ अपने शिशु की रक्षा करती है। उक्त चौपाइयों के अन्तर्गत उक्त विचार द्रष्टव्य है :–

सुनु मुनि तोहि कहउँ सहरोसा।
भजइँ जे मोहिं तजि सकल भरोसा।।
करउँ सदा तिन्ह कै रखवारी।
जिमि बालक राखइ महतारी।।[13]
गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई।
तहँ राखइ जननी अरगाई।।

राम की छवि की व्यापकता का विश्लेषण करते हुए हिन्दी के प्रकाण्ड समीक्षक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है:–

'ऊपर जो कुछ कहा गया है उससे सत्स्वरूप की व्यक्त प्रवृत्ति अर्थात् धर्म की ऊँची–नीची कई भूमियाँ लक्षित होती है– जैसे–गृह धर्म, कुल धर्म, समाज धर्म, लोकधर्म और विश्वधर्म या पूर्ण धर्म। किसी परिमित वर्ग से कल्याण से सम्बन्ध रखने वाले धर्म की अपेक्षा विस्तृत जनसमूह के

कल्याण से सम्बन्ध रखने वाला धर्म, उच्चकोटि का है। धर्म की उच्चता उसके लक्ष्य की व्यापकता के अनुसार समझी जाती है। गृह धर्म उसके लक्ष्य की व्यापकता के अनुसार समझी जाती है। गृह धर्म या कुल धर्म से समाज धर्म श्रेष्ठ है, समाज धर्म से लोक धर्म, लोक धर्म से विश्व धर्म, जिसमें धर्म अपने शुद्ध और पूर्ण स्वरूप में दिखाई पड़ता है। यह पूर्ण धर्म अंगी है और शेष धर्म अंग। पूर्ण धर्म, जिसका सम्बन्ध अखिल विश्व की स्थिति रक्षा से है, वस्तुतः पूर्ण पुरूष या पुरूषोत्तम में ही रहता है, जिसकी मार्मिक अनुभूति सच्चे भक्तों को ही हुआ करती है। इसी अनुभूति के अनुरूप उनके आचरण का भी उत्तरोत्तर विकास हो जाता है। गृह धर्म पर दृष्टि रखने वाला किसी वर्ग या समाज की रक्षा देखकर और लोक धर्म पर दृष्टि रखने वाला समस्त मनुष्य जाति की रक्षा देखकर आनंद का अनभव करता है। पूर्ण या शुद्ध धर्म का स्वरूप सच्चे भक्त ही अपने और दूसरों के सामने लाया करते हैं, जिनके भगवान पूर्ण धर्मस्वरूप हैं, अतः ये कीट—पतंग से लेकर मनुष्य तक सब प्राणियों की रक्षा देखकर आनंद प्राप्त करते हैं। विषय की व्यापकता के अनुसार उनका आनंद भी उच्चकोटि का होता है।'[14]

राम का सम्पूर्ण जीवन विभिन्न छवियों से ओत—प्रोत है। वे राम आनंद के अक्षय स्रोत भी हैं और करूणा के अपार सागर भी हैं। उनकी छवि के विविध रूप हैं। बाल्यावस्था, किशोरावस्था, वनवासी जीवन, युद्ध काल की परिस्थिति का जीवन अथवा रामराज्य की स्थापना का प्रसंग, ये सभी स्वरूप जन—मन रंजनकारी हैं। राम प्रत्येक स्थिति में शान्त, सौम्य और जीवन की सहज शान्ति से परिपूर्ण परिलक्षित होते है। राम विवाह के अवसर पर गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत वर—वधू रूप में राम एवं सीता की सौन्दर्य संवलित छवि का अवलोकन इस प्रकार किया जा सकता है :—

राम सीय सुंदर प्रति छाहीं।
जगमगात मनि खंभन माहीं।।
मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा।
देखत राम बिआहु अनूपा।।
दरस लालसा सकुच न थोरी।
प्रगटत दुरत बहोरि बहोरि।।
भए मगन सब देखनिहारे।
जनक समान अपान बिसारे।।
प्रभुदित मुनिन्ह भाँवरी फेरी।
नेग सहित सब रीति निबेरी।।
राम सीय सिर सेंदुर देहीं।
सोभा कहि न जाति बिधि केहीं।।
अरून पराग जलज भरि नीके।
ससिहिं भूष अहि लोभ अमी के।।
बहुरि बसिष्ठ दीन्हि अनुसासन।
बरू दुलहिनि बैठे एक आसन।।[15]

शक्ति और सौन्दर्य के साथ—साथ राम के शील की छवि भी अनुपम है। अत्यन्त विषम परिस्थिति आने पर भी वे शील के भाव से ओत—प्रोत रहते हैं। मर्यादा का अनुसरण करते हुए जनसामान्य के समक्ष एक अनुपम आदर्श उपस्थित करते हैं। जो कैकेयी उनके चौदह वर्ष के वनवास का कारण बनती है, उसके प्रति उनमें अपनी माँ से अधिक प्रेम और श्रद्धा। वनवास का आदेश प्राप्त होने पर वे अत्यन्त मुस्कराहट के साथ माँ कैकेयी से वार्तालाप करते है। उक्त उदाहरण द्रष्टव्य है :—

मन मुसुकाइ भानुकुल भान।
रामु सहज आनंद निधानू।।
बोले बचन बिगत सब दूषन।
मृदु मंजुल जनु बाग बिभूषन।।
सुन जननी सोइ सुत बड भागी।
जो पितु मातु बचन अनुरागी।।
तनय मातु पितु तोषनिहारा।
दुर्लभ जननि सकल संसारा।।
मुनि गन मिलनु बिसेषि बन सबहि भाँति हित मोर।
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि संमत जननी तोर।।
भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू।
बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू।।

जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा।
प्रथम गनिअ मोंहि मूढ़ समाजा।।

राम की सुन्दर छवि की लोकग्राह्यता पर विचार करते हुए तुलसी लिखते हैं :—

कै तोहि लागहिं राम प्रिय, कै तू प्रभुप्रिय होहि।
दुइ महँ रूचौ जो सुगम सो कीबे तुलसी तोहिं।।[17]

अंत में निष्कर्ष रूप में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में भगवान राम की छबि का विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :—

'या तो तुझे राम प्रिय लगें या राम का तू प्रिय लग, इन दोनों में जो सीधा समझ पड़े सो कर। तुझे राम प्रिय लगें, इसके लिए तो इतना ही करना होगा कि तू राम के मनोहर रूप, गण, शक्ति और शील को बारम्बार अपने अंतकरण के सामने रखा कर बस राम तुझे अच्छे लगने लगेंगे। शील को शक्ति और सौंदर्य के योग में यदि तम बार—बार देखेगा तो शील की ओर भी क्रमशः आप से आप आकर्षित होगा। तू राम को प्रिय लगे, इसके लिए तुझे स्वयं उत्तम गुणों को धारण करना पड़ेगा और उत्तम कर्मो का सम्पादन करना पड़ेगा। पहला मार्ग कैसा सुगम है, जो दूर जाकर दूसरे मार्ग से मिल जाता है और दोनों मार्ग एक हो जाते हैं।'[18]

शोध संदर्भ :—

1— रामचरितमानस 1/112/3—4/गीताप्रेस गोरखपुर सं.44/सं. 2075 वि.

2— तदैव 1/147/1—8/गीताप्रेस गोरखपुर सं. 44/सं. 2075 वि.

3— सम्मेलन पत्रिका (मानस चतु:शती विशेषांक), पृष्ठ 75 हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग भाग 60, संख्या 1, 2, 3, दि.सं. सन् 1999 ई.

4— संचारिणी—विद्यानिवास मिश्र (राम कथा मेरे लिए : निबंध), पृष्ठ—25
प्रकाशकः वाणी प्राकशन, 61, एफ. कमलानगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन् 1982

5— शीतलाखेत प्रशिक्षण शिविर 2004 में सुना गया गीत (डॉ. जगदीश प्रसाद द्वारा गवाया गया गीत —5/06/2004)

6— कवि सम्मेलन में बेकल उत्साही से सुनी कविता (लखनऊ, संगीत नाटक अकादमी में उनके द्वारा पाठ किया गया था)

7— महात्मागांधी के विचार—सं.आर.के. प्रभु एवं यू.आर. राव, पृष्ठ 75
प्रकाशकः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, दशम् संस्करण, सन 2019 ई.

8— रामचरितमानस 2/118—119/1—12/गीताप्रेस गोरखपुर सं. 44/सं. 2075 वि.

9— भारतीय सौंदर्य बोध और तुलसीदास — डॉ. रामविलास शर्मा, प्रकाशक साहित्य अकादमी, नई दिल्ली। संस्करण — 2015, पृष्ठ 460

10— रामचरितमानस 1/18/9—10/ गीताप्रेस गोरखपुर, सं. 44/सं. 2075वि0 11— रामचरितमानस 1/284/1—2/गीताप्रेस गोरखपुर, सं. 44/सं. 2075 वि. 12— रामचरितमानस 5/57/57/ गीताप्रेस गोरखपुर, सं. 44/सं. 2075 वि.

11— रामचरितमानस 3/43/4, 5, 6/गीताप्रेस गोरखपुर, सं. 44/सं. 2075 वि.

12— चिन्तामणि भाग—1 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली संस्करण—2020, पृष्ठ—153—154

13— रामचरितमानस 1/325/3—10/गीताप्रेस गोरखपुर सं. 44/सं. 2075 वि.

14— रामचरितमानस 2/41/5—8/42/1—2 गीताप्रेस गोरखपुर सं. 44/सं. 2075 वि. 17— दोहावली/268/गीताप्रेस गोरखपुर/सं. 33/सं. 2053 वि.

15— गोस्वामी तुलसीदासा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल — प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली— संस्करण — 2017, पृष्ठ 55

◆

मो. : 9452019983

जा पर कृपा राम की होई

—प्रज्ञा पाण्डेय

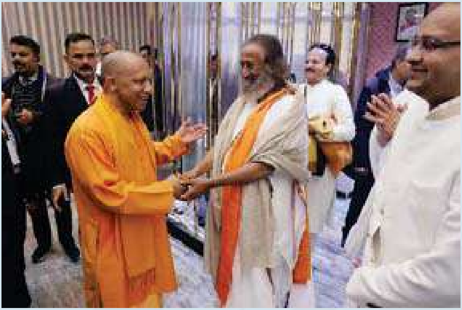

चाहे जितनी भी तरक्की कर ली हो लेकिन इस तरह का चमत्कारिक पुरुषार्थ आज तक कोई भी प्रकट नहीं कर पाया है। बाल्मीकि जी ने भगवान राम को द्युतिमान यानी तेजस्वी कहा है। द्युति का अर्थ होता है तेज, कान्ति, दीप्ति। भगवान श्रीराम दिव्य कान्ति के स्वामी हैं। उनकी शोभा निराली है। उनका सौन्दर्य इस तरह का है, जिसे देखकर कामदेव भी लज्जित हो जाया करते हैं। भगवान राम परम धैर्यवान हैं। शोक एवं हर्ष, दोनों ही स्थिति में समान रूप से गम्भीर रहते हैं। उनका धैर्य हिमालय के समान दृढ़ है। युद्ध भूमि में रावण को रथी और राम को रथहीन पाकर विभीषण की चिंता सहज ही प्रकट हो जाती है और उसका जैसा उत्तर भगवान राम देते हैं, वह यह बताने के लिए काफी है कि धैर्य के धरातल पर भगवान राम कहां खड़े होते हैं।

भगवान राम भारतीय संस्कृति के धीरोदात्त नायक हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। भगवान विष्णु के अवतार हैं। अकेले भगवान राम में जितने गुण हैं, उतने गुण इस चराचर जगत या यूं कहें कि ब्रह्मांड के किसी भी प्राणी में नहीं पाए जाते। महर्षि बाल्मीकि में उन्हें नियतात्मा कहा है। मतलब उनका चित्त कभी विचलित नहीं होता। उनकी कथनी और करनी में भिन्नता नहीं है। नीति कहती है कि जहां कथनी और करनी में भिन्नता होती है। वहां धर्म नहीं,पाखंड का निवास होता है। इसके विपरीत भगवान राम जो सोचते हैं, जो कहते हैं, वैसा ही आचरण करते हैं, उसके विपरीत जाने का तो सवाल ही नहीं उठता। कदाचित् इसलिए ही भगवान राम को मनीषियों ने विग्रहवान धर्म कहा है। वे महान शक्तिशाली हैं। रावण जैसे त्रैलोक्य विजयी का दर्प हरण करने वाले हैं। उनका बाण अमोघ है। जिस रावण के चलने से धरती कांपती है। चलत दसानन डोलत अवनी। उस रावण के पूरे वंश का खात्मा करना राम के ही वश का था। इक लख पूत सवा लख नाती, ता रावन घर दिया न बाती। गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है कि राम विमुख अरू हाल तुम्हारा, रहा न कोउ कुल रोवनिहारा। यह भगवान राम का ही प्रताप है। उनकी शक्ति कभी व्यर्थ नहीं जाती। उनके धनुष से छोड़ा गया बाण अपना लक्ष्य वेध कर फिर उनके तरकस में आ जाता था। विज्ञान ने

गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं कि रावनु रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयउ अधीरा। अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा। जहां अत्यंत प्रेम हो, वहां संदेह का उपजना स्वाभाविक भी है।

उन्होंने भगवान राम से पूछ ही लिया कि नाथ न रथ नहि तन पद त्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना। और इसका जो मार्मिक उत्तर भगवान राम ने दिया है, वह साधनों का रोना रोने वाले समाज के लिए किसी प्रेरणास्रोत से कम नहीं है। उन्होंने कहा कि जिससे विजय होती है, वह रथ कुछ दूसरे तरह का होता है।

सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना। सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका। बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे। भगवान राम कहते हैं कि शौर्य और धैर्य उस रथ

के पहिए हैं। सत्य और शील उसकी मजबूत ध्वजा और पताका हैं। बल, विवेक, दम (इंद्रियों का वश में होना) और परोपकार– ये चार उसके घोड़े हैं, जो क्षमा, दया और समता रूपी डोरी से रथ में जोड़े हुए हैं। ऐसा रथ ही युद्धभूमि में विजय दिलाने में सक्षम होता है।

महर्षि बाल्मीकि ने भगवान राम को वशी कहा है। अर्थात सबको वश में करने वाले। कोई भी उनके लिए अवश नहीं है। चाहे कोई कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो, श्रीराम से आगे नहीं है। उमा दारु जोषित की नाईं। सबहिं नचावत राम गुसाईं।

भगवान श्रीराम तीक्ष्ण एवं परम बुद्धि से सम्पन्न महान मेधावान एवं परम ज्ञानी हैं। संसार में उनसे बढ़कर और कोई दूसरा ज्ञानी हो ही नहीं सकता। नीति के मार्ग पर चलने वाले भगवान श्रीराम के समान सुनीति मार्ग पर चलने वाले संसार में शायद ही हुआ करते हैं। इस बात की वे एकाध बार मुनादी भी कर चुके हैं। रघबंसिन्ह कर सहज सुभाऊ। मन कुपंथ पथ धरिय न काहू।

भगवान राम को महर्षि बाल्मीकि ने वाग्मी कहा है। वे शत्रु से भी प्रिय वाणी में ही बोलते हैं। उनकी वाणी इतनी मधुर है कि सुनने वाले का मन भरता ही नहीं। वे अलौकिक प्रतिभा के धनी हैं। भगवान राम शत्रुओं का नाश करने वाले, महान धर्मनिष्ठ, परम वीर एवं अति तेजस्वी हैं। समस्त संसार में उनसे बढ़कर कोई दूसरा वीर है ही नहीं। उन्हें महेष्वासः कहा गया है। मतलब धनुष का संधान करने वालों में महान। विष्णु सहस्र नाम के 183वें क्रम पर महेष्वासः नाम का जिक्र हुआ है। भगवान राम सुविक्रम है। इसका मतलब जिसका पराक्रम उचित दिशा में हो। भगवान श्रीराम का पराक्रम दुष्टों के विनाश तथा शरणागतों, भक्तों की रक्षा करने की दिशा में है। भगवान राम परम धर्मज्ञ हैं। धर्म को जानने वाले हैं। धर्म का व्यावहारिक अर्थ होता है– कर्तव्य– हम जो करते हैं, हमें जो करना चाहिए, वह धर्म कहलाता है। भगवान श्रीराम ने अपने धर्म पालन हेतु ही पिता की इच्छा को स्वीकार कर चौदह वर्षों का वनवास स्वीकार किया था।

लक्ष्मण को ब्रह्मशक्ति लगने पर वैद्यराज सुषेण ने उनसे पूछा कि वे रावण के घर के वैद्य हैं और आप रावण के शत्रु हैं। ऐसे में क्या लक्ष्मण का उपचार धर्मसंगत होगा। राधेश्याम रामायण में पंक्ति आती है कि मैं वैद्य हूं रावण के घर का किस तरह आपका काम करूं। जिसमें प्रत्यक्ष बुराई है, क्या वह कर्म किया जाए। हे राम आज्ञा देते हो, इस वक्त अधर्म किया जाए। आज का मनुष्य होता तो वह कहता है कि वैद्य जी जैसे भी हो, मेरे अनुज को बचाओ लेकिन भगवान राम ने वैद्यराज को जो उत्तर दिया, वह यह बताने के लिए काफी है कि विपरीत स्थिति में भी वे धर्म को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। वे कहते हैं कि जिस धर्म पर प्यारा राज्य गया, श्रीपितृदेव का मरण हुआ, जिस धर्म पर भाई भरत छुटा, सीता प्यारी का हरण हुआ। उस धर्म सत्य पर लक्ष्मण भी यदि मर जाए तो मर जाए, हाँ धर्म नहीं जाने पाए। निरुत्तर वैद्यराज को लक्ष्मण का इलाज करना ही पड़ा। भगवान श्रीराम की प्रतिज्ञा सत्य होती है। उनकी प्रतिज्ञा है कि– सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते। अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम। अर्थात जो कोई एक बार भी मेरी शरण में आ जाता है और याचना करता है कि मैं आपका हूं तो उसे मैं सभी प्राणियों के भय से मुक्ति दिलाता हूं।

भगवान श्रीराम अपनी प्रजा की भलाई के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। आवश्यकता है कि हम स्वयं को उनकी प्रजा के रूप में मानें और श्रीराम को अपना राजा मान लें। रक्षिता जीवलोकस्य– भगवान श्रीराम जीवलोक की रक्षा करने वाले हैं। रक्षिता शब्द का अर्थ रक्षक होता है। भगवान श्रीराम सभी लोगों के लोक–व्यवहार के प्रवर्तक हैं मतलब संसार के जीव जो कुछ भी करते हैं उन कार्यों को कराने वाले श्री राम ही हैं। उन्हीं की कृपा से जीव प्राण धारण करते हैं। चाहत राम करावत सोई। यह गति गूढ़ जानि कोई कोई। वे धर्म की रक्षा करने वाले हैं। जहाँ कहीं भी धर्म की रक्षा में बाधा उत्पन्न होती है तो वे स्वयं इस कार्य को करते हैं। चारों वेद– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद तथा छह वेदाङ्ग– शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष के तत्त्वों को जानने वाले हैं। मतलब सभी विद्याओं के ज्ञाता हैं। चारों उपवेद आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद तथा अर्थशास्त्र में भी उनकी समान गति है। सर्वलोकप्रिय हैं। साधु हैं। मतलब सज्जन हैं। मृदु स्वभाव वाले हैं। साधुमृर्दुमधुरस्वभावः। सब के लिए समान हैं। उन्हें स च सर्वगुणोपेतः कहा गया है। भगवान श्रीराम सभी उत्कृष्ट गुणों से सम्पन्न हैं। वैशेषिक दर्शन में 24 गुणों का वर्णन मिलता है– रूप, रस, गंध, स्पर्श, संख्या, परिणाम, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, द्रवत्व, गुरुत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म और संस्कार। इन 24 गुणों में जो जो उत्तम गुण हैं, उनसे परिपूर्ण हैं भगवान श्रीराम। वे चन्द्रमा के समान सौम्य दर्शन हैं। उनका क्रोध काल की अग्नि अर्थात सभी का अन्त करने वाले अग्नि के समान है। देवतागण भी युद्ध में उनके क्रोध से कांप जाते हैं। श्रीराम की इस विशेषता का उल्लेख आदिकवि वाल्मीकि ने इन शब्दों में किया है– कस्य

विभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे लेकिन वे क्षमावान भी हैं। क्षमया पृथिवीसमः। वे भी पृथ्वी की तरह क्षमा कर देते हैं।

रामचरितमानस में वर्णन मिलता है कि भगवान राम ने जब मुनियों से पूछा कि कहां निवास करें तो मुनियों ने कहा कि वे अपने 14 प्रकार के भक्तों के हृदय में निवास करें। जिन भक्तों के मन में काम, क्रोध, मद, मान और मोह न हो और लोभ, क्षोभ के साथ राग और द्वेष भी न हो। जिन भक्तों के हृदय में कपट, दंभ और माया न हो, कृपया आप उन भक्तों के हृदय में रहिए। इसमें बताया गया है कि उन ज्ञानी या भक्तों के हृदय में भगवान रहते हैं, जिनका अंतःकरण (चित्त) बिल्कुल पवित्र हो चुका है, जिनको न तो कुछ दिखाने की इच्छा है, न ही कुछ छिपाने की। माया से न तो वे स्वयं ग्रसित हैं और न ही दूसरों को माया में फंसाते हैं क्योंकि किसी भी विकार को अपनी पूर्णता के लिए द्वैत की आवश्यकता होती है और ज्ञानी स्वयं में अद्वैत होता है। भक्त भगवान के साथ अद्वैत भाव में ही रहता है। काम कोध्र मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा। जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया। जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करहिं सब कोई। इसका अर्थ है जिन पर प्रभु श्री राम की कृपा होती है, उन्हें कोई सांसारिक दुःख छू नहीं सकता। जिन लोगों पर परमात्मा की कृपा हो जाती है उस पर तो सभी की कृपा बनी ही रहती है। जिसके अंदर कपट, झूठ और माया नहीं होती, उन्हीं के हृदय में रघुपति राम बसते हैं। साथ ही उनके ऊपर प्रभु की कृपा सदैव होती है। अगुण सगुण गुण मंदिर सुंदर, भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर। काम क्रोध मद गज पंचानन, बसहु निरंतर जन मन कानन। मतलब हे गुणों के मंदिर ! आप सगुण और निर्गुण दोनों हैं। आपका प्रबल प्रताप सूर्य के प्रकाश के समान काम, क्रोध, मद और अज्ञान रूपी अंधकार का नाश करने वाला है। आप हमेशा ही अपने भक्तजनों के मन रूपी वन में निवास करने वाले हैं। कहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरनकामा दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी। भगवान राम सभी प्रकार से पूर्ण हैं अर्थात उन्हें किसी प्रकार की कामना नहीं है, तथापि दीन–दुखियों पर दया करना उनकी प्रकृति है। संसार में वही होता है जो भगवान राम ने रच रखा है। होइहि सोइ जो राम

रचि राखा। भगवान राम से अच्छा मित्र इस धरती पर दूसरा नहीं है। वे कहते हैं कि जे न मित्र दुख होहिं दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी। निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरु समाना।

रामचरित मानस में भगवान राम और सुग्रीव की मित्रता के संदर्भ में यह चौपाई मनुष्य को ज्ञान देती है कि मित्रता निभाने वाले की भगवान भी सहायता करते हैं। जो लोग मित्र या फिर दूसरों के दुःख को देखकर दुःखी नहीं होते, उन लोगों की मदद नहीं करते हैं। ऐसे लोगों को देखने से भी पाप लग जाता है। जो लोग अपने दुःख को भूलकर दूसरों की सहायता करते हैं, ईश्वर स्वयं उसकी मदद करते हैं। आगे कह मृदु बचन बनाई। पाछें अनहित मन कुटिलाई। जाकर चित अहि गति सम भाई। अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई। चौपाई में लिखा है कि जो सामने तो कोमल वचन कहता है और पीठ–पीछे बुराई करता है, ऐसे लोगों से हमेशा दूरी बनाकर रखना चाहिए क्योंकि ये स्वार्थी होते हैं। भगवान राम अपने भाई लक्ष्मण से कहते हैं कि हे भाई, जिसका मन सांप की चाल के समान टेढ़ा है, ऐसे कुमित्र को तो त्यागने में ही आपकी भलाई है। सच्चा मित्र हमेशा स्पष्ट बात करता है। सच्चा मित्र आपको सही राय देता है। मित्रता में एक–दूसरे के प्रति खुला हृदय होना चाहिए। इसलिए मित्रता हमेशा राम से करनी चाहिए। राम मित्र हों तो जीवन की सारी समस्याएं सहज ही हल हो जाती हैं।

◆

मो. : 6388573155

नित नए प्रतिमान गढ़ती अयोध्या

—रजनीश वैश्य

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की अयोध्या नित नए कीर्तिमान रचने में भी सबसे आगे रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अयोध्या के प्रति प्रतिबद्धता ने इस प्राचीन नगरी को वैश्विक रिकॉर्ड सूची में दर्ज़ करा रही है।

अयोध्या वैश्विक रामलीला मंचन का मुख्य केंद्र बिन्दु है तो यहां का दीपोत्सव हर वर्ष नए कीर्तिमान गढ़ता है।

रामनगरी अयोध्या देश–विदेश की विभिन्न प्रचलित रामलीलाओं का केंद्र बिन्दु है। यहां अनवरत रामलीला मंचन का विश्व कीर्तिमान भी बन चुका है। प्रभु श्रीराम परम आज्ञाकारी पुत्र, संन्यासी राजा, मर्यादित पुरुष, पत्नीव्रता पति, परम अनुरागी ज्येष्ठ भ्राता और अधर्मियों का नाश करने वाले महापराक्रमी योद्धा थे। वे शरणागत के संरक्षण देने वाले करुणा सिंधु थे। प्रभु श्रीराम के विशिष्ट गुणों के कारण वे दुनिया भर में पूज्य हैं। उनका सद्गुण और उत्तम चरित्र समाज के लिए आदर्श है। प्रभु श्रीराम न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया की आस्था का प्रतीक हैं।

देश–विदेश में राम के जीवन दर्शन को रामलीला के माध्यम से वृहद स्तर पर प्रचारित–प्रसारित करने की दिशा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दिशा–निर्देशन में विस्तृत कार्ययोजना बनायी गयी है। अयोध्या में न सिर्फ विभिन्न भारतीय शैलियों बल्कि विदेशी शैली में भी रामलीला का मंचन कर रिकॉर्ड बनाया गया है। रामलीला के माध्यम से अयोध्या आने वाले पर्यटक व श्रद्धालुओं को श्रीराम के आदर्शों व मूल्यों से अवगत कराने का अनुपम प्रयास किया जा रहा है।

अयोध्या दीपोत्सव में हर वर्ष दीप प्रज्ज्वलन का नया रिकॉर्ड

वर्ष 2017	1.71 लाख
वर्ष 2018	3.01 लाख
वर्ष 2019	4.04 लाख
वर्ष 2020	6.06 लाख
वर्ष 2021	9.41 लाख
वर्ष 2022	15.76 लाख
वर्ष 2023	22.23 लाख

अयोध्या महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, कर्नाटक, सिक्किम, केरल, छत्तीसगढ़, जम्मू कश्मीर, लद्दाख और चंडीगढ़ के साथ ही नेपाल, कंबोडिया, सिंगापुर, श्रीलंका, थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि देशों के रामलीला मंडलियों के प्रदर्शन का गवाह है। तुलसी भवन स्मारक, रामकथा पार्क, भजन–संध्या व तुलसी उद्यान में रामलीला का मंचन समय–समय पर होता है।

वहीं, अयोध्या ने नया कीर्तिमान बनाते हुए दीपोत्सव 2023 में 22.23 लाख दीप प्रज्ज्वलित किए। पिछले वर्ष 2022 में प्रज्ज्वलित 15.76 लाख दीपों से यह संख्या लगभग छह लाख 47 हजार अधिक रही। ड्रोन से की गई दीपों की गणना के उपरांत दीपोत्सव का कीर्तिमान गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज़ किया गया।

54 देशों के राजनयिक भी इस कार्तिमान के साक्षी बनें। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री बनने के बाद योगी आदित्यनाथ दीपोत्सव आयोजन कर देश के दिल में उतर गए। पहले कार्यकाल के बाद दूसरे कार्यकाल का दीपोत्सव और अधिक भव्य रहा। इसके बाद दीपावली पर दीपोत्सव का आयोजन एक परंपरा बन चुकी है।

जनकपुर नेपाल की रामलीला

जनकपुर नेपाल का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। ये नगर प्राचीनकाल में मिथिला की राजधानी माना जाता है।

सीता माता के पिता जनक यहां के राजा थे। नेपाली पाली कलाकारों की इस रामलीला में सीता को मुख्य पात्र के रूप में दर्शाया जाता है।

इंडोनेशिया की रामलीला

इंडोनेशिया में रामायण को रामायण ककविन (काव्य) कहते हैं। यहां भी रामलीला का मंचन पूरे साल किया जाता है। यानी लोग किसी भी विशेष अवसर पर रामलीला करवाते हैं। यहां तक कि इस देश में स्कूलों में शिक्षा देने के लिए भी रामायण के चरित्रों का इस्तेमाल करते हैं।

कम्बोडिया की रामलीला

यहां की संस्कृति में भगवान राम घर–घर और लोगों के दिलों मे बसते हैं, यहां राम को हर आम आदमी की कहानी से जोड़कर देखा जाता है। इस देश में भी सामाजिक उत्सवों के दौरान रामायण महाकाव्य का मंचन किया जाता है।

रूस की रामलीला

रूस में भी भगवान राम को आदर्श मानते हैं। रूस में 1960 से ही रामलीला हो रही है। रूस के कुछ स्कूलों में रामायण के कुछ हिस्सों का मंचन होता है, जो रूस के लोगों को खूब पसंद है।

थाईलैंड की रामलीला

थाईलैंड की रामलीला दुनियाभर में प्रसिद्ध है। यहां की रामलीला को रामकेयन कहा जाता है। यहां सिर्फ शारदीय नवरात्रि में ही नहीं बल्कि लोग किसी भी विशेष अवसर पर रामलीला का आयोजन कराते हैं।

बाली की रामलीला

यहां रामलीला पर आधारित छोटे–छोटे प्रसंगों का मंचन किया जाता है। यहां राम और रावण के साथ एक–एक विदूषक भी होता है। ये दोनों दर्शकों का मनोरंजन करते रहते हैं। बीच में बैठे कुछ लोग मंत्र और गीत गाते हैं।

श्रीलंका की रामलीला

रावण की नगरी श्रीलंका में रामायण काव्य को नृत्य में पिरोकर पेश किया जाता है। रामलीला में रावण के चरित्र का प्रमुखता से प्रदर्शन किया जाता है। रामलीला मंचन में ढीले–ढाले व खुले वस्त्रों का इस्तेमाल होता है।वेशभूषा पर खास फोकस होता है।

खोन, थाईलैंड की रामलीला

थाईलैंड की खोन की रामलीला नृत्य शैली में प्रस्तुत की जाती है। इसमें कोई संवाद नहीं होता और पृष्ठभूमि की आवाजें रामायण की पूरी कहानी बयान करती हैं। यह अपनी खूबसूरत पोशाक और सुनहरे मुखौटों के लिए भी प्रसिद्ध है।

त्रिनिदाद एवं टोबैगो की रामलीला

त्रिनिदाद एवं टोबैगो में रामलीला को 19वीं शताब्दी में वहां कार्यरत भारतीय मजदूरों द्वारा प्रारंभ किया गया था। यहां की रामलीला में भारतीय संस्कृति का प्रभाव देखने को मिलता है।

अयोध्या : उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर

अथर्ववेद के वर्णन मैं ब्रह्मा के पुत्र मनु के पुत्र इक्ष्वाकु द्वारा बसायी गई अयोध्या का वर्णन प्राप्त होता है, जिसमें इसे अष्टचक्र नवद्वार से युक्त अयोध्या कहा गया है।

तीर्थंकरों की जन्मस्थली : अयोध्या में 5 जैन तीर्थंकरों का जन्म हुआ है, जिसमें प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेव भी हैं। इसी परंपरा के लोग अयोध्या को जैन धर्म का प्रथम स्थान मानते हैं।

बौद्ध परम्परा : महात्मा बुद्ध के शाक्य गणतंत्र का पारंपरिक सम्बन्ध अयोध्या राजतंत्र से था। ह्वेनसांग की पुस्तिका 'साची' में यह उल्लेख है कि महात्मा बुद्ध ने यहां 6 वर्षाकाल व्यतीत किए हैं।

शैव परम्परा : अयोध्या में शैव परम्परा भी सशक्त रूप में प्राप्त होती है, जिसमें नागेश्वर मंदिर प्रमुख स्थल है।

स्वामी नारायण सम्प्रदाय : स्वामी नारायण सम्प्रदाय संस्थापक का छपिया मंदिर भी अयोध्या क्षेत्र में है। स्वामी नारायण का जन्म स्थान अयोध्या है, जहां उन्होंने 9 वर्ष तक निवास किया।

सिख परंपरा : श्री राम जन्मभूमि में रामलला के प्राकट्य स्थल के एकदम समीप सरयू तट पर ब्रह्मकुंड गुरुद्वारा स्थित है। मान्यता है कि गुरु नानक देव सहित अन्य सभी 9 गुरु साहिब अयोध्या पधारे थे।

कबीर मठ : निर्गुण संत कबीर जी की कर्मस्थली भी अयोध्या रही है। कबीर मठ अयोध्या में बहुत बड़े समुदाय का प्रेरणा स्थल है।

◆

मो. : 8840973541

अवधपुरी अति रूचिर बनाई, देवन्ह सुमन वृष्टि झरि लाई

—रतिभान त्रिपाठी

श्री राम की अयोध्या गौरवान्वित है अपने प्रभु का वैभव देखकर। भगवान श्रीराम का मंदिर कितना भव्य दिव्य है कि पूरी दुनिया खिंची चली आ रही है। अयोध्या का कोना—कोना सजा हुआ है। भविष्य में यह भारत का सबसे भव्य नगर होगा, इसमें संदेह नहीं है। राम पथ, भक्ति पथ, से लेकर अयोध्या का हर क्षेत्र श्रद्धालुओं से भरा हुआ है। भक्ति की ऐसी रसधार बही है कि हर भारतीय उसमें डूबने उतराने को आतुर है। वास्तव में श्रीराम भारत की संस्कृति और सभ्यता के मानबिंदु हैं, जन—जन के आराध्य हैं, मानवीय मर्यादा के सर्वोच्च शिखर हैं। श्रीराम परमात्मा और जीवात्मा के बीच सेतु की तरह हैं, जिन्होंने स्वयं को कभी भगवान और परमात्मा नहीं कहा लेकिन सृष्टि की समूची मानवता उन्हें अवतार मानती है, ईश्वर मानती है। जो सभ्यताएं अपनी संस्कृतियों के कारण उन्हें भगवान नहीं मानती होंगी, वह भी उन्हें परम तत्व के रूप में तो महसूस करती ही रही हैं क्योंकि विश्व की ज्ञात संस्कृतियों में से किसी में भी श्रीराम का अस्वीकरण या विरोध नहीं है। श्रीराम के समकालीन और आदिकवि की संज्ञा से विभूषित किए गए महर्षि वाल्मीकि ने स्वयं लिखा है कि श्रीराम के समान विश्व में कोई नहीं हुआ है। नारद मुनि ने मुझसे यह बात तब कही थी जब मैं अतुलनीय व्यक्तित्व पर महाकाव्य रचने के लिए विचार कर रहा था, और सम्यक विचारोपरांत मैंने श्रीराम पर रामायण महाकाव्य की रचना की है। एक क्षण के लिए इसे किसी कवि की निजी भावना भी मान लिया जाए और अन्य भौतिक मानदंडों से भी विचार किया जाए तो समूचे विश्व में श्रीराम सदृश कोई न तो हुआ और न आगे होगा।

जब चतुर्दिक उल्लास दिख रहा हो, जब यत्र—तत्र—सर्वत्र एक ही चर्चा हो, एक ही चिंतनधारा हो, जब सबके स्वागत की तैयारी हो, जब राजा से लेकर रंक तक एक ही स्थल पर एकत्र हो रहे हों, जब सब अपने—अपने मन की बात खुलकर कह रहे हों, जब सभी विचारों को महत्व दिया जा रहा हो तब कोई पूछे कि यह कौन सा युग और कौन सा कालखंड है, तो इसका एक ही उत्तर मिलेगा कि यह राम युग है और उसका अभ्युदय काल है।

प्रश्न अनेक हैं पर उत्तर एक है कि राम फिर लौटे हैं। अब वह टाट में नहीं, ठाठ से हैं। अपने भव्य मंदिर में हैं जिसकी प्रतीक्षा सदियों से थी, वह सुअवसर अब बना है। चहुंओर हर्षातिरेक है, अपने राम का अभिषेक है। श्रीरामचरित मानस में वर्णित भगवान शंकर द्वारा की गई श्रीराम स्तुति बरबस याद आती है —

जय राम रमारमणं समनं, भवताप भयाकुल पाहि जनं।
अवधेस सुरेस रमेस बिभो, सरनागत मागत पाहि प्रभो।

महि मंडल मंडन चारुतरं, धृत सायक चाप निषंग बरं।
मद मोह महा ममता रजनी, तम पुंज दिवाकर तेज अनी।।

श्रीराम के राज्याभिषेक में जैसा दृश्य रहा होगा, कुछ वैसा ही दृश्य अयोध्या में उपस्थित हुआ है। सबने देखा भी है। साधु–संत, धनी–निर्धन, शहरी–ग्रामीण, वनवासी–आदिवासी सब अपने रामलला के अभिषेक–अभिनंदन–वंदन के लिए एकाकार हो रहे हैं। श्रीरामचरितमानस की यह पंक्तियां–अवधपुरी अति रुचिर बनाई। देवन्ह सुमन वृष्टि झरि लाई।। अयोध्या की शोभा कुछ ऐसी ही है।

राम युग से श्रेष्ठ युग की कल्पना पूरे विश्व में कहीं नहीं है। आगम–निगम सब ऐसा ही बखान करते हैं। वह वास्तविक रूप में लोकतंत्र का युग रहा है। श्रीराम ने अपनी प्रजा से स्पष्ट रूप से कहा था कि ''जो अनीति कछु भाखौं भाई। तौ मोहिं बरजेहु भय बिसराई।।'' किसी महाराजा की लोकतांत्रिक घोषणा इससे अधिक और क्या हो सकती है। उस युग में जो भौतिक संसाधन न रहे होंगे, आज के युग में जनमानस के लिए वह भी सुलभ हैं। नव्य अयोध्या का निर्माण जारी है। आगामी कुछ वर्षों में अयोध्या जिस भव्यता को प्राप्त करने वाली है, भारत क्या पूरे विश्व में कोई वैसा महानगर न होगा। श्रीराम के प्रति आस्था की ऐसी भावना बलवती है कि कोई राम नाम का झंडा लेकर केरल से चल पड़ा है तो कोई महाराष्ट्र और गुजरात से। ऐसे–ऐसे पदयात्री अयोध्या के लिए निकले हैं जिन्हें कोई आमंत्रण नहीं दिया गया है। वह स्वतः स्फूर्त भावना से अयोध्या पहुंच रहे हैं लेकिन इसी देश में कुछ ऐसे हतभागी हैं जो निमंत्रण पाकर भी सुअवसर ठुकरा रहे हैं।

श्रीराम भारत की संस्कृति और सभ्यता के मानबिंदु हैं, जन–जन के आराध्य हैं, मानवीय मर्यादा के सर्वोच्च शिखर हैं। श्रीराम परमात्मा और जीवात्मा के बीच सेतु की तरह हैं, जिन्होंने स्वयं को कभी भगवान और परमात्मा नहीं कहा लेकिन सृष्टि की समूची मानवता उन्हें अवतार मानती है, ईश्वर मानती है। जो सभ्यताएं अपनी संस्कृतियों के कारण उन्हें भगवान नहीं मानती होंगी, वह भी उन्हें परम तत्व के रूप में तो महसूस करती ही रही हैं क्योंकि विश्व की ज्ञात संस्कृतियों में से किसी में भी श्रीराम का अस्वीकरण या विरोध नहीं है। श्रीराम के समकालीन और आदिकवि की संज्ञा से विभूषित किए गए महर्षि वाल्मीकि ने स्वयं लिखा है कि श्रीराम के समान विश्व में कोई नहीं हुआ है।

हमारे देश में कुछ ऐसे भी सरल और आस्थावान लोग हैं जिन्होंने राम मंदिर न बनने तक चरणपादुकाएं न धारण करने का संकल्प ले रखा था तो कुछ ने सिर में पगड़ी न पहनने का प्रण किया था। झारखंड की एक महिला ने वर्षों से उपवास रखा था। इन सबके प्रण और संकल्प अब पूरे हुए हैं। विदेश से भी लोग आ रहे हैं। उनके मन में बस एक ही भरोसा है कि वह अपने प्रभु श्रीराम के दर्शन उनकी जन्मभूमि अयोध्या में एक आह्लादकारी वातावरण में कर सकेंगे।

युग बदलते हैं। यह एक उक्ति है जो चरितार्थ होती दिख रही है। यह बदलाव यूं ही नहीं हुआ। इसमें करोड़ों भारतीयों की भावनाएं समाहित हैं। इसमें उनकी आशा और विश्वास का संबल है। उनके कर्तव्य की शक्ति घनीभूत हुई है। उनकी तपस्या का तेजपुंज उद्दीप्त हुआ है। उनके शुभकर्मों का पुण्यफल जागृत हुआ है। इसमें 'इदं ते इदं न मम' की भारतीय मनीषा का भाव भी संलग्न है। इसमें सात्विक विचारों की ऊर्जा का समावेश है। जब इतने सारे विचारों, भावनाओं, संकल्पों, सत्कर्मों, पराक्रम और तपोबल का एकत्रीकरण हुआ है तब यह सुयोग उपस्थित हो रहा है। इसलिए इस अवसर को जी भरकर जीने की चेष्टा होनी चाहिए। ऐसी चेष्टा दिख भी रही है।

सृष्टि का ऐसा कोई युग, कोई कालखंड नहीं रहा जब शुभ कार्यों में विघ्न–बाधाएं पैदा करने वाले चरित्र न रहे हों। भारतीय वांग्मय ही नहीं, विश्व साहित्य में ऐसे अनेकानेक प्रसंग मिलते हैं। राम के युग में भी थे। श्रीरामचरितमानस रचते समय गोस्वामी तुलसीदास तभी तो लिखते हैं –

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएं। जे बिनु काज दाहिनेहु बाएं।।
परहित हानि लाभ जिन्ह केरें। उजरें हरष बिषाद बसेरें।।

यानी उन खलों की भी वंदना करता हूं जो बिना काम के ही दाहिने बाएं घूमते रहते हैं। वे खल ऐसे होते हैं कि दूसरे की हानि में उन्हें लाभ दिखता है। किसी के उजड़ जाने पर

वो सुखी होते हैं और स्थापना पर दुःखी होते हैं। तो इस कालखंड में भी ऐसे प्रसंग आ रहे हैं। इसलिए मान लिया जाना चाहिए कि यह होता ही है लेकिन ऐसे प्रसंगों पर सत्कर्म छोड़े नहीं जाते। छोड़ना भी नहीं चाहिए और छूटेंगे भी नहीं।

अयोध्या में मंदिर का निर्माण पुनर्निर्माण है। साधारण सी बात है। हमारे घर में कोई घुसकर उथल–पुथल मचाए। तोड़–फोड़ करे, लूटपाट मचाए तो समर्थ हो जाने पर हम अपना घर फिर से दुरुस्त करते हैं। अयोध्या में भी वही हुआ था। अब जन–मन के संबल श्रीराम का मंदिर बना है। इसमें किसी की हानि नहीं की गई है। लेकिन फिर भी कुछ विघ्नसंतोषी दुखी हों तो उन्हें विश्व की संस्कृतियों का अध्ययन करना चाहिए। सभ्यताओं का इतिहास जानना चाहिए। इससे उनको दृष्टिबोध होगा। उन्हें भूलना नहीं चाहिए कि भारतीय संविधान की मूल प्रति में उन्हीं श्रीराम का चित्र अंकित है। यह लंकाविजयी श्रीराम, सीता और लक्ष्मण की अयोध्या वापसी का चित्र है। मूल अधिकारों का वर्णन करने वाले पहले पृष्ठ पर श्रीराम का चित्र है। यह चित्र इसलिए अंकित किया गया है कि प्रकारांतर से श्रीराम भारतीय संविधान की चेतना हैं। उसमें श्रीराम का दृष्टिकोण और प्रभाव सर्वत्र दिखाई देता है। संविधान सुशासन के लिए वेद–पुराण हैं और कानूनी मर्यादाओं का पालन कराने वाला पथ–प्रदर्शक है। जब संविधान–निर्माताओं और उसको लागू करने वालों ने श्रीराम को एक महान दृष्टिकोण से अंगीकार करने से परहेज नहीं किया। खुद को इतिहासकार बताकर अपनी ही अस्मिता से छल करने वाले उन समुदायों को कितना अपना माना जाए जो खुद को देशी कहते हुए विदेशी आक्रांताओं की प्रतिष्ठा बनाने–बचाने के लिए प्राणपण से संघर्ष करते रहे। सच के तराजू में कौन भारी–कौन हल्का, यह मानक तय होने में पांच सौ साल लग गए।

ध्यान रहे कि यदि कोई राम के अस्तित्व को ख़ारिज करता है तो वह भारतीय संस्कृति को ख़ारिज करता है। मर्यादा को ख़ारिज करता है। ईश्वर को ख़ारिज करता है। मानवता को ख़ारिज करता है। उसे यह नहीं भूलना चाहिए कि ऐसा करते हुए वह स्वयं भी ख़ारिज हो जाता है। उसे समाज ख़ारिज कर देता है। उसे सभ्यता ख़ारिज कर देती है। उसे उसका परिवेश ख़ारिज कर देता है। उसे उसकी आत्मा ही ख़ारिज कर देती है। वह माने न माने, उसकी आत्मा उसे हर कदम धिक्कारती है। यह बात किन्हीं धार्मिक भावनाओं से नहीं बल्कि सामाजिक भावनाओं के आधार पर साबित, समर्थित और परिपुष्ट होती है। फिलहाल अयोध्या गुलजार है.. चहुंओर श्रीराम की जयकार है..राम आएंगे तो अंगना सजाऊंगी.. की बहार है।

◆

मो. : 9415225285, 7905252032

पाँच सौ वर्षों की प्रतीक्षा का सुखद अंत!

—स्नेह मधुर

"**हर** ओर समृद्धि है, सुरक्षा का भाव है, सुशासन का राज है और सुव्यवस्था विद्यमान है...!" हर क्षेत्र में तेजी से बदलते उत्तर प्रदेश की विशेषताओं को गिनाते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, "यही रामराज्य है।"

खचाखच भरे पंडाल में गुंजायमान श्रीराम के जयघोष को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अयोध्या से जोड़कर याद दिलाया, "आप सभी ने 22 जनवरी, 2024 का कार्यक्रम देखा होगा। 500 वर्षों की प्रतीक्षा के बाद अयोध्या के नये मंदिर में प्रधानमंत्री के कर कमलों से प्राण प्रतिष्ठा का समारोह हुआ। यह सिर्फ प्रभु श्रीराम के विग्रह की नहीं, भारत के गौरव की प्राण प्रतिष्ठा थी, जन आस्था और जन विश्वास की प्राण प्रतिष्ठा थी।"

योगी आदित्यनाथ के इस संबोधन में कोई अतिशयोक्ति नहीं थी। जब सरकारें अच्छी होती हैं तो जनभावनाओं और आस्था का सम्मान करती हैं, जनविश्वास

पर खरा उतरने का प्रयास करती हैं। और ऐसा साफ–साफ दिख रहा है जब भगवान श्रीराम के बालरूप के विग्रह श्री बालकराम के दर्शन करने के लिए जन सैलाब उमड़ता ही जा रहा है, लाखों लोग प्रतिदिन श्री बालकराम के दर्शन करते हैं, उनकी आरती में शामिल होते है। लोगों का उत्साह बताता है कि अयोध्या दुनिया का सबसे बड़ा तीर्थस्थल बन चुका है, जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की थी और इस धार्मिक पर्यटन ने लाखों लोगों को न सिर्फ ढेरों व्यवसायों और नौकरियों से नवाज़ा है बल्कि भारत देश को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के संकल्प की दिशा में बड़ा कदम भी बना दिया है। यह नये भारत का नया उत्तर प्रदेश है। अयोध्या में श्रीराम मंदिर, भारत के राष्ट्र मंदिर के रूप में भी स्थापित हो चुका है। गणतंत्र दिवस पर इस सच्चाई को पूरी गरिमा के साथ पूरे विश्व के सामने प्रतिपादित भी कर दिया गया। सरकारी व गैर सरकारी प्रतिष्ठानों में अवकाश का उपयोग आस्था निवेदित करने में हुआ। राष्ट्रीय पर्व पर न केवल श्रद्धालुओं का प्रवाह रामनगरी की ओर उन्मुख हुआ, बल्कि इस प्रवाह के बीच श्रीराम भक्ति के पर्याय भगवा ध्वज के साथ लहराता राष्ट्रीय ध्वज श्रीराम और राष्ट्र की एकरूपता का संवहन कर रहा था।

यही नहीं, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने प्रधान सचिव रहे नृपेन्द्र मिश्र को श्रीराम मंदिर निर्माण समिति का अध्यक्ष बनाने में पहल की ताकि उनकी सोच के अनुरूप ही इस भव्य मंदिर का निर्माण सुनिश्चित किया जा सके और निर्माण में आ रही बाधाओं को अविलंब दूर किया जा सके। उन्होंने न केवल राम मंदिर निर्माण समिति को इसके लिए प्रेरित किया कि यह मंदिर समावेशी स्वरूप में निर्मित हो, बल्कि अयोध्या के चहुंमुखी विकास पर भी बल दिया। इसी का परिणाम है कि जहां राम मंदिर के साथ वाल्मीकि, शबरी, निषादराज आदि की स्मृति में भी मंदिर निर्मित हो रहे हैं, वहीं अयोध्या में हवाईअड्डे, रेलवे स्टेशन आदि का भी निर्माण किया गया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी कहा कि श्रीराम मंदिर में रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा ने देश के करोड़ों लोगों को एक सूत्र में बांध दिया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आकर्षक समारोह के समय देश की सामूहिक शक्ति दिखाई दे रही थी। हर उम्र और हर क्षेत्र के पुरोधा लोग तो मौजूद थे ही, उनको भी आमंत्रण दिया गया था जिनसे विचारों का मेल नहीं था और उनमें से भी काफी लोगों ने इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में शिरकत की थी। उपलब्धियों और भिन्नताओं से भरी इतनी भीड़ ने भी कार्यक्रम की छटा बढ़ा दी थी। प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' की 109वीं व इस वर्ष की पहली कड़ी में देशवासियों से संवाद करते हुए कहा, "श्री राम का शासन देश के संविधान निर्माताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत था। इसीलिए 22 जनवरी को अयोध्या में मैंने 'देव से देश' व 'राम से राष्ट्र' की बात की थी।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, "प्राण प्रतिष्ठा समारोह ने देश के करोड़ों लोगों को एक साथ ला दिया है। सबकी

भावना एक है। सबकी भक्ति एक है। राम सबकी वाणी में हैं। राम सबके हृदय में हैं। 22 जनवरी की शाम को पूरे देश ने 'राम ज्योति' जलाई व दिवाली मनाई। देश की सामूहिक शक्ति दिखी, जो विकसित भारत के हमारे संकल्प का आधार भी है।" मोदी जी ने देश को एक और दीपावली की सौगात दे दी है और दोनों ही श्रीराम की वापसी से जुड़ी हैं, एक मंदिर में वापसी और दूसरी वनवास के बाद अयोध्या वापसी से।

कुछ लोग प्रश्न उठाते हैं कि जब सब कुछ अदालत के आदेश से ही हो रहा है तो किसी प्रधानमंत्री की इसमें क्या भूमिका? इसका श्रेय भाजपा या फिर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कैसे ले सकते हैं? यह प्रश्न खड़ा करने वाले इस तथ्य की जानबूझकर अनदेखी कर रहे हैं कि यदि भाजपा केंद्र की सत्ता में नहीं होती और अयोध्या मामले में शीघ्र निर्णय देने की आवश्यकता रेखांकित नहीं करती तो संभवतः सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने में और अधिक देर होती। एक तथ्य यह भी है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद मोदी सरकार ने यह सुनिश्चित किया कि अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण जितनी जल्दी संभव हो, शुरू हो। उसकी प्रतिबंद्धता का पता इससे चलता है कि कोविड प्रतिबंधों के बावजूद प्रधानमंत्री ने अयोध्या जाकर राम मंदिर निर्माण का शुभारंभ किया। प्रधानमंत्री ने इसमें अतिरिक्त रुचि ली कि अयोध्या में भव्य राम मंदिर के निर्माण का सपना शीघ्र साकार हो।

यही नहीं, प्रधानमंत्री ने अपने प्रधान सचिव रहे नृपेन्द्र मिश्र को श्रीराम मंदिर निर्माण समिति का अध्यक्ष बनाने में पहल की ताकि उनकी सोच के अनुरूप ही इस भव्य मंदिर का निर्माण सुनिश्चित किया जा सके और निर्माण में आ रही बाधाओं को अविलंब दूर किया जा सके। उन्होंने न केवल राम मंदिर निर्माण समिति को इसके लिए प्रेरित किया कि यह मंदिर समावेशी स्वरूप में निर्मित हो, बल्कि अयोध्या के चहुंमुखी विकास पर भी बल दिया। इसी का परिणाम है कि जहां राम मंदिर के साथ वाल्मीकि, शबरी, निषादराज आदि की स्मृति में भी मंदिर निर्मित हो रहे हैं, वहीं अयोध्या में हवाईअड्डे, रेलवे स्टेशन आदि का भी निर्माण किया गया है। अयोध्या के विकास में केंद्र सरकार के साथ उत्तर प्रदेश सरकार भी जिस तरह प्रयत्न कर रही है, उससे यह स्पष्ट है कि राम की यह नगरी विश्व की सबसे प्रमुख तीर्थस्थल बनने जा रही है। नरेन्द्र मोदी ने अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का परिचय दिया है। यह अवश्य याद रखना चाहिए कि श्री नरेंद्र मोदी श्री राम मंदिर निर्माण की अलख जगाने के लिए लालकृष्ण आडवाणी की ओर से निकाली गई रथयात्रा के सारथी के तौर पर भी जाने जाते थे। इन सब गतिविधियों से राम मंदिर निर्माण के प्रति उनके समर्पण का परिचय मिलता है।

श्रीराम, सामाजिक एकता की चेतना हैं, जीवन की अवधारणा हैं और आदर्श की पराकाष्ठा हैं। रामराज्य सुशासन के चार स्तंभों पर खड़ा था जहां सम्मान से, बिना भय के हर कोई सिर ऊंचा कर चल सके, जहां हर नागरिक के साथ समान व्यवहार हो, जहां हर कमजोर की सुरक्षा हो और जहां धर्म यानी कर्तव्य सर्वोपरि हो। अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर में रामलला के विराजमान होने से संपूर्ण विश्व में भारत की प्राचीन गौरवशाली धरोहर के प्रति सम्मान का नया भाव उभरा है। विश्व इस नए भारत की ओर आशा एवं सम्मान के भाव से देख रहा है। यह अचानक जादू से नहीं हुआ, बल्कि इसके पीछे कठोर परिश्रम है। पिछले 10 वर्षों में हमने इस परिवर्तन को बहुत ही निकट से अनुभव किया है।

अयोध्या आंदोलन ने केवल राम मंदिर के निर्माण का मार्ग ही प्रशस्त नहीं किया, बल्कि यह भी सिद्ध किया कि यह महज श्रीराम के नाम पर बनने वाले एक मंदिर के लिए संघर्ष नहीं था, बल्कि भारत की अस्मिता और उसकी सभ्यता एवं संस्कृति के पुनरुत्थान की भी अभिलाषा थी। अयोध्या आंदोलन ने राम जन्मभूमि पर केवल मंदिर का निर्माण ही नहीं कराया, बल्कि यह भी स्थापित किया कि श्रीराम मंदिर आस्था के केंद्र होने के साथ–साथ भारतीय सभ्यता के प्रतिनिधि भी हैं। अयोध्या आंदोलन महज राम मंदिर निर्माण के लिए नहीं था, वह

आहत भारतीय स्वाभिमान की पुनर्स्थापना का सदियों पुराना स्वप्न भी था। ऐसा न होता तो देश आज राममय नहीं होता।

यही नहीं, इसकी जानकारी 22 जनवरी, 2024 को ही मिली कि प्राण प्रतिष्ठा के लिए प्रधानमंत्री ने स्वयं को शारीरिक और मानसिक रूप से न सिर्फ तैयार किया बल्कि शुद्ध भी किया। यह प्रभु श्रीराम जी की ही शक्ति और सामर्थ्य है, जिसने एक ऐसे राजर्षि का चुनाव किया जो बिना थके, बिना रुके न केवल जनता जनार्दन के लिए जीता है, बल्कि इस देश की महान दिव्य परंपराओं और सांस्कृतिक चेतना को भी जाज्वल्यमान बनाए रखने लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है। जब प्राण–प्रतिष्ठा के दिन गोविंद गिरि जी महाराज ने पंचामृत से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 11 दिनों के महा–अनुष्ठान का व्रत संपन्न कराया तो ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह भारतवर्ष की इस पावन धरा के इस पुण्यात्मा पुत्र के उपवास की पूर्णाहुति में संपूर्ण सत्पुरुषों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। जब मैं प्रधानमंत्री जी के 11 दिवसीय महा–अनुष्ठान एवं उनकी कठिन तपश्चर्या के बारे में गोविंद गिरि जी महाराज को सुन रहा था तो मुझे तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ। प्राण प्रतिष्ठा के लिए प्रधानमंत्री ने विशेषज्ञों से स्वयं ही विधि विधान के लिए पूछा था। श्रीरामलला की प्राण–प्रतिष्ठा में यजमान बनने के लिए उन्हें तीन दिन का अनुष्ठान करने को कहा गया था, लेकिन उन्होंने 11 दिनों का महा–अनुष्ठान किया! वह अन्न का त्याग कर नारियल पानी के सहारे 11 दिनों तक रहे, भूमि पर सोये और राम में लीन रहे! उन्हें जितना कठोर व्रत करने को कहा गया था, उन्होंने उससे ज्यादा कठोर व्रत किया, पर उन्होंने अपने शासकीय कर्तव्यों को भी उसी निष्ठा से निभाया।

जिसने भी मूल संविधान पढ़ा है या देखा भी है तो भारत के संविधान की मूल प्रति में भगवान राम विराजमान हैं, यह कोई छिपी हुई बात नहीं है। संविधान के अस्तित्व में आने के बाद भी 134 वर्षों तक प्रभु श्रीराम के अस्तित्व को लेकर कानूनी लड़ाई चली। यह कैसी विडंबना थी कि अपने ही देश में रामलला को अपने ही घर से बेदखल होकर 500 सालों तक टेंट में बारिश, धूप और शीत के साए में कष्ट भोगना पड़ा। उनके लिए एक वर्ष में केवल सात कपड़े और 20,000 रुपये तय थे। इससे हर भारतवासी का मन क्षुब्ध और व्यथित था।

श्रीराम, सामाजिक एकता की चेतना हैं, जीवन की अवधारणा हैं और आदर्श की पराकाष्ठा हैं। रामराज्य सुशासन के चार स्तंभों पर खड़ा था जहां सम्मान से, बिना

भय के हर कोई सिर ऊंचा कर चल सके, जहां हर नागरिक के साथ समान व्यवहार हो, जहां हर कमजोर की सुरक्षा हो और जहां धर्म यानी कर्तव्य सर्वोपरि हो। अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर में रामलला के विराजमान होने से संपूर्ण विश्व में भारत की प्राचीन गौरवशाली धरोहर के प्रति सम्मान का नया भाव उभरा है। विश्व इस नए भारत की ओर आशा एवं सम्मान के भाव से देख रहा है। यह अचानक जादू से नहीं हुआ, बल्कि इसके पीछे कठोर परिश्रम है। पिछले 10 वर्षों में हमने इस परिवर्तन को बहुत ही निकट से अनुभव किया है।

श्रीराम राष्ट्र की संस्कृति हैं, राष्ट्र के प्राण हैं। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार संसद में कहा था कि राम मंदिर का निर्माण राष्ट्रीय स्वाभिमान का मुद्दा है। रामलला के मंदिर के निर्माण का अर्थ भारत का नवनिर्माण है। अयोध्या धाम में श्रीरामलला की प्राण–प्रतिष्ठा का अलौकिक क्षण हर किसी को भाव–विभोर करने वाला है।

श्रीराम राष्ट्र की संस्कृति हैं, राष्ट्र के प्राण हैं। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार संसद में कहा था कि राम मंदिर का निर्माण राष्ट्रीय स्वाभिमान का मुद्दा है। रामलला के मंदिर के निर्माण का अर्थ भारत का नवनिर्माण है। अयोध्या धाम में श्रीरामलला की प्राण–प्रतिष्ठा का अलौकिक क्षण हर किसी को भाव–विभोर करने वाला है।

समय लोगों की दृष्टि में किस तरह से परिवर्तन ला सकता है, उसका भी अयोध्या का यह विवाद साक्षी रहा है। आज अयोध्या में निर्मित राम मंदिर को लेकर जन–जन में जो अप्रतिम उत्साह है और मीडिया भी पलक पांवड़े बिछाकर इसका स्वागत कर रहा है, ऐसा पहले नहीं था। एक समय था और विशेष रूप से 1990 के आसपास

के दशक का, जब एक–दो समाचार पत्रों को छोड़कर कोई भी इसके पक्ष में नहीं था कि अयोध्या में विवादित स्थल पर राम मंदिर बनना चाहिए।

अयोध्या में विवादित ढांचे के विध्वंस के बाद जब उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को इस्तीफा देना पड़ा था और सत्ता परिवर्तन के कारण वर्षों तक विपरीत विचारधाराओं वाली सरकारों का आगमन जारी रहा, तो मंदिर समर्थकों ने अनुकूल वातावरण न मिलने पर अदालत के निर्णय की प्रतीक्षा करना बेहतर समझा और वे खामोश से हो गए। श्रीराम जी की प्रतिमा एक टेंट में रख दी गई थी और लोग दर्शन के लिए उसी टेंट में जाते थे। भक्तगणों के मन में श्रीराम मंदिर के निर्माण की आग जलती रही लेकिन उन्होंने संयम का सहारा लिया और न्यायालय की निर्णय की प्रतीक्षा करने लगे।

अशोक सिंहल जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। श्रीराम मंदिर का निर्माण कैसे हो, इसके लिए उन्होंने बहुत प्रयास किए। इस मसले पर मेरी उनसे कर बार वार्ताएं हुई हैं। संभवतः लगभग बारह वर्ष पूर्व मेरी उनसे जब मुलाकात हुई तो उन्होंने कहा था कि अब आंदोलनों की जरूरत नहीं रही। मंदिर का निर्माण या तो न्यायालय के आदेश पर ही हो पाएगा या फिर संसद से। मैंने प्रश्न किया था कि भाजपा तो केंद्र में नहीं है, फिर संसद से कैसे मंदिर निर्माण का प्रस्ताव पारित हो सकता है, वहां तो विपरीत विचारधारा वाले सांसदों की संख्या काफी है? मेरी शंका दूर करते हुए उन्होंने आश्वस्त भाव से कहा था कि उनकी तमाम सांसदों से बात हो चुकी है, उनमें से अधिकतर इस मसले पर हमारे साथ हैं, हम इस प्रस्ताव को बहुमत से पारित कराने में सफल होंगे, ऐसी मुझे उम्मीद है।

तब तक कोर्ट का फैसला नहीं आया था। चूंकि मंदिर निर्माण को लेकर श्री राम के भक्तों को हर बार मुंह की खानी पड़ती ही थी, इसलिए संगठन ने लंबी रणनीति के तहत खामोशी बनाई रखी क्योंकि कोई हिंसात्मक कदम उठाने की मनाही थी। लोगों में लड़ाइयां भी खूब हुई लेकिन असफलता ही मिलती रही। भक्तगण निराश जरूर हो जाते थे लेकिन कोशिशें कभी नहीं छोड़ी। ऐसे नकारात्मक माहौल के बाद भी सनातन धर्म का न सिर्फ अस्तित्व बचा कर रखा बल्कि समय–समय पर उस विश्वास रूपी धर्म की ध्वजा फहराने के प्रयास भी अनवरत जारी रहे।

तमाम जद्दोजहद के बाद अंत में 9 नवंबर 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने अपना ऐतिहासिक निर्णय सुनाया, जिसमें उसने इस्लामिक ढांचे को राम का जन्मस्थान माना और ज़मीन रामलला विराजमान को दे दी। इससे जन्मस्थान पर राम मंदिर निर्माण का रास्ता साफ हो गया।

कोर्ट ने कहा कि सरकार एक ट्रस्ट बनाकर मंदिर का निर्माण करवाए। परिसर पर सरकार का कब्ज़ा होगा। सुन्नी वक्फ बोर्ड को मस्जिद के लिए अयोध्या में किसी दूसरी जगह 5 एकड़ ज़मीन दे दी जाए। कोर्ट ने निर्मोही अखाड़े के दावे को ख़ारिज कर दिया। यह निर्णय 5 जजों की बेंच ने सर्वसम्मति से दिया।

5 फरवरी, 2020

सुप्रीम कोर्ट से आए निर्णय के बाद प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट की घोषणा की। ट्रस्ट में 15 सदस्य बनाए गए जिनमें से 12 को भारत सरकार द्वारा नामित किया गया और 3 को 19 फरवरी 2020 को आयोजित ट्रस्ट ने अपनी पहली बैठक में चुना।

5 अगस्त, 2020

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने मंदिर निर्माण के लिए भूमिपूजन कर दोपहर 12:44 बजे मंदिर की आधारशिला रखी।

1 जून, 2022

प्रस्तावित मंदिर के गर्भगृह की पहली शिला रखी गई।

सितम्बर 2023

गर्भगृह पूरा हुआ।

22 जनवरी, 2024 को लगभग 22 महीनों के भीतर आधारभूत संरचना तैयार कर दी गई और बीस महीनों के भीतर श्रीरामलला अपने भव्य मंदिर में विराज गए, उनकी प्राण प्रतिष्ठा हो गई।

◆

मो. : 9415216045

श्रीकृष्ण की क्रीड़ास्थली

मथुरा

सांस्कृतिक धरोहरों की पुनर्प्रतिष्ठा

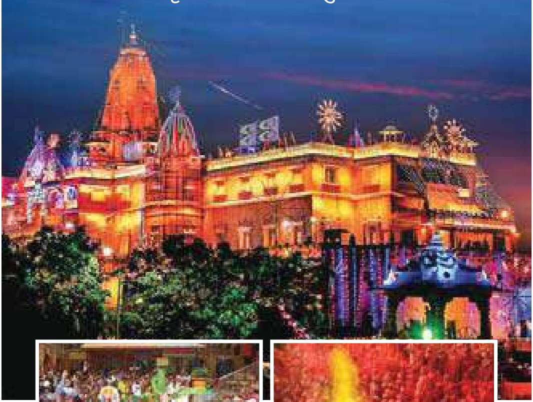

- रंगोत्सव, बृजरज उत्सव, श्रीकृष्णोत्सव का आयोजन
- उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद का गठन
- वृन्दावन में श्री बांके बिहारी धाम का कॉरिडोर
- श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर लाइट एंड साउंड शो की स्थापना
- गोवर्धन परिक्रमा के लिए हेलीपैड का निर्माण
- वृन्दावन शोध संस्थान के भवन का जीर्णोद्धार
- बरसाना में रोपवे की सुविधा, मुक्ताकाशी रंगमंच

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

घर–घर आये हैं राम

–अखिलेश निगम 'अखिल'

पौष शुक्ल द्वादशी का अभिजित मुहूर्त..... संवत दो हजार अस्सी....सोमवार बाइस जनवरी दो हजार चौबीस.... एक ऐसा समय जिसमें सम्पूर्ण भारत वर्ष एक नये युग में प्रवेश कर गया..... सनातन धर्म की सनातन ज्योति ने एकाएक ऐसी मशाल का स्वरूप धारण कर लिया जिससे देश ही नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व देदीप्यमान हो उठा।

रामलला का इतने वर्ष पश्चात अपनी जन्मभूमि में पुर्नस्थापित होना अपने आप में अद्‌भुत, अभूतपूर्व, अविस्मरणीय एवं भाव विह्‌वल कर देने वाला समय है यह वह समय था जिसका भारतीय जनमानस शताब्दियों से प्रतीक्षा कर रहा था आखिरकार वह मंगल बेला आयी, लोगों का त्याग, बलिदान, समर्पण और परिश्रम ने भगवान श्रीराम को पुनः अयोध्या आगमन के लिए मना लिया और वह बालक राम के रूप में अपनी सजीव मोहक मुस्कान के साथ पुनः अयोध्या पधार गए हैं।

भगवान श्रीराम केवल अयोध्या नहीं आये हैं, वह किसी एक स्थान पर स्थापित नहीं हुए हैं वह तो प्रत्येक भारतवंशी के हृदयमंदिर में अपनी मन्द मोहक मुस्कान के साथ घर बना लिया है तभी तो सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रत्येक घर में दीवाली मनाई गई। आनन्द एवं उल्लास के समुद्र ने भारतीय जनमानस को सराबोर कर दिया....... एक ऐसा उत्सव जो विगत कई शताब्दियों से प्रतीक्षित था। हाँ, लोगों की उत्सव धर्मिता को देखकर ऐसा लगा कि जब प्रभु श्री राम 14 वर्ष के वनवास के पश्चात अयोध्या लौटे थे तब इसी तरह का उत्सव मनाया गया होगा।

प्रभु श्रीराम के विग्रह की प्राण–प्रतिष्ठा का अलौकिक अवसर......... सम्पूर्ण देश में चतुर्दिक आनन्द ही आनन्द..... कहीं लोग शंख, तुतुही और शहनाई की तान के बीच ढोल, मृदंग और नगाड़ों की थाप पर नृत्य कर रहे हैं...... श्रीराम का जयघोष दिग–दिगन्त में गूँज रहा है..... कहीं अबीर.... गुलाल लुटाया जा रहा है.....गर्भगृह में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मुख्य यजमान के रूप में बैठे हैं तो साथ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

प्रमुख मोहन भागवत, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राज्यपाल श्रीमती आनन्दीबेन पटेल और मणिराम छावनी के महंत श्री नृत्य गोपाल दास जी इसके साक्षी बने। कार्यक्रम में आमन्त्रित विशिष्ट महानुभावों के नेत्र मन्दिर के बाहर लगी स्क्रीन पर इस दृश्य को देखर अश्रुपूरित हो उठे,... वहीं देश–विदेश में भारतवंशियों ने अपने–अपने टी. वी., मोबाइल एवं अन्य सोशल मीडिया के माध्यम से इस पुनीत अवसर के साक्षी बने और ऐसा लगा कि प्रभु श्रीराम की मूर्ति केवल अयोध्या के राम मन्दिर में नहीं बल्कि हर एक भारतीय के हृदय मंदिर में स्थापित हो गई है। सच मानो तो राम केवल अयोध्या में नहीं आये हैं वे तो घर–घर आये हैं।

भगवान श्रीराम केवल अयोध्या नहीं आये हैं, वह किसी एक स्थान पर स्थापित नहीं हुए हैं वह तो प्रत्येक भारतवंशी के हृदयमंदिर में अपनी मन्द मोहक मुस्कान के साथ स्थापित हैं तभी तो सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रत्येक घर में दीवाली मनाई गई। आनन्द एवं उल्लास के समुद्र ने भारतीय जनमानस को सराबोर कर दिया....... एक ऐसा उत्सव जो विगत कई शताब्दियों से प्रतीक्षित था।

राम साकार और निराकार के दो छोर हैं जिसमें भक्ति, ज्ञान और कर्म की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहती है और साधक जिस भाव से अपने आराध्य को देखता है उसे उसी भाव से दर्शन होते हैं और गोस्वामी तुलसीदास की यह चौपाई

"जाकी रही भावना जैसी।
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।"

प्रत्येक साधक को उसकी साधना का फल देती है। जब हम अयोध्या के राम मन्दिर पहुँचते हैं तो वहाँ का विहंगम दृश्य हमें भाव–विभोर कर देता है।

राम मंदिर का निर्माण अपने आपमें बेजोड़ है यह मंदिर 360 फिट लम्बा और 250 फिट चौड़ा है राम मंदिर की नींव विशिष्ट ढंग से बनाई गई है 50 मीटर की गहराई से कृत्रिम चट्टान के रूप में इसकी ढली नींव यह सुनिश्चित करती है कि एक हजार वर्ष तक इस मंदिर का बाल भी बाँका नहीं होगा। बाँध की शैली में निर्मित रिटेनिंग वाल निचली सतह पर 50 फिट मोटी है और ऊपर आने पर यह क्रमशः आठ फिट तक पतली रह गई है राम मंदिर को तीन ओर से घेरती रिटेनिंग वाल की लम्बाई लगभग सात सौ फिट हैं। राम मंदिर को निहारने में 21 फिट ऊँचा अधिष्ठान है जिस पर पहुँचने के लिए 32 सोपान अर्थात सीढ़ियाँ हैं अधिष्ठान की दीवारों में राम से सम्बन्धित अनेक प्रसंग हमें त्रेतायुग में पहुँचा देते हैं भव्यता के पर्याय सिंह द्वार के सम्मुख स्वयं की न्यूनता और आराध्य की अनन्तता का बोध होता है। आगे बढ़ने के साथ पूरे 166 स्तम्भ स्वागत करते प्रतीत होते हैं 14 फिट 6 इंच ऊँचे और आठ फिट तक की परिधि के स्तम्भ 16–16 मूर्तियों से सज्जित हो भव्यता के साथ कला की भी छाप छोड़ते हैं इन्हीं पर नृत्य मंडप टिका है जो मंदिर में प्रवेश करने के साथ सामने होता है इसे पार करने के पश्चात रंगमंडप और उसी के समानान्तर भजन एवं प्रार्थना मंडप हम सभी को भावविभोर कर देते हैं वहाँ से आगे गुणमंडप है जहाँ पर रामलला के भव्य दर्शन होते हैं।

बाइस जनवरी दो हजार चौबीस..... दिन सोमवार....... कितनी शुभ घड़ी है, पुलकित तन और मुदित मन सनातन संस्कृति के प्रतीक पुरूष का आह्वान कर चुकी है। जब नवनिर्मित मंदिर के गर्भगृह में प्राण प्रतिष्ठा के साथ रामलला की आँखों पर बंधी पट्टी खुली तो बोलती आँखें उन लोगों को गलत सिद्ध कर रही थी जो कहते थे कि पत्थर पिघल नहीं सकता। प्रेम के वशीभूत प्रभु अवतरित हो चुके हैं...... चहुँ ओर मंगलगान हो रहा है..... घर.. घर में बधाई बज रही और सोहर गूँज रहे.... सांस्कृतिक कार्यक्रमों का शुभारम्भ ही मंगलगान से हो रहा..यह दृश्य देखकर स्वर्ग में दशरथ–कौशल्या को ब्रम्हानन्द की अनुभूति हो रही है, जो सुख के पुन्ज, मोह से परे तथा ज्ञान–वाणी–इन्द्रियों से अतीत हैं जो सत, चित, आनन्द के खान अर्थात आनन्द है रामलला ने हर भारतवंशी के हृदय मंदिर में बाल लीला के लिए अवतार ले लिए हैं। योग, ग्रह, लग्न, वार और तिथि सभी अनुकूल हैं। शीतल, मंद और सुगन्धित पवन के संस्पर्श से जड़–चेतन सब आनन्द से भर गये हैं सन्त–महन्त हर्षित हैं और प्रत्येक भारतीय पुलकित–प्रफुल्लित। दुंदुभि के साथ शहनाई की मंगलध्वनि के बीच आकाश से पुष्पवर्षा हो रही है। धमाधम नगाड़े बज रहे हैं और दिग्विजय का शंखनाद हो रहा है। देश के प्रत्येक मंदिर में राम के अलौकिक जन्मोत्सव पर दीपक जलाए गये हैं। घर–घर मंदिर–मंदिर में एक ही स्वर लहरी फूट रही है।

'भये प्रकट कृपाला, दीन दयाला।'

श्यामवर्णी राम लला का पाँच वर्ष का स्वरूप अत्यन्त अद्भुत, तेजोमय एवं आभायुक्त है राम के विग्रह की ऊँचाई चार फीट तीन इंच और विग्रह के आसन की ऊँचाई एक फीट छह इंच रखी है ताकि हर भक्त उन्हें जी भर निहार सके ऐसी अलौकिक संरचना के लिए मूर्तिकार अरूण योगीराज को कलयुग का केवट कहना अतिश्योक्ति न होगी जिन्होंने भगवान राम से अपने कर्म और भक्ति से जीते जी सहज सामीप्य का सुख प्राप्त कर लिया है।

बालक राम का मुकुट उत्तर भारतीय परम्परा में स्वर्ण निर्मित है जिसे माणिक्य, पन्ना और हीरे से अलंकृत किया गया है। मुकुट के मध्य में आदिदेव सूर्य अंकित हैं जो राम के सूर्यवंशी होने का उद्घोष कर रहे हैं कानों में पहने हुए कुंडल में मयूर आकृतियाँ देखकर प्रत्येक दर्शक का हृदय मयूर की भाँति नृत्य करने लगता है और वह भक्ति सागर में डुबकी लगाने लगता है। रामलला के गले में जहाँ एक ओर अर्द्धचन्द्रकार रत्नजटित कंठा सुशोभित है तो वहीं दूसरी ओर हृदय में कौस्तुभ मणि धारण किये हैं जिसे एक बड़े माणिक्य और हीरों से सजाया गया है यह तो कहा ही जाता है कि भगवान विष्णु हृदय में कौस्तुभ मणि धारण करते हैं।

रामलला पाँच लड़ियों वाला रत्नजड़ित पदिक यानी पंचलड़ा धारण किए हुए अत्यन्त मनोहारी लग रहे हैं वहीं पर विजय प्रतीक के रूप में बैजयन्ती माला धारण किए हैं जिसमें वैष्णव परम्परा के समस्त मंगल चिह्म सुदर्शन चक्र, पद्म, पुष्प, शंख और मंगल कलश प्रदर्शित है दोनों भुजाओं में बाजूबंद, हाथों में रत्न जड़ित कंगन, दोनों हाथों की उंगलियों में मुद्रिका की शोभा देखते ही बनती है। कमर में करधनी और पैरों में पैजनियाँ राम के बालस्वरूप को साकार कर देती है और ऐसा लगता है कि वह हर भक्त के मन–मानस में बाल लीलायें करने को उतावले हैं और उनके भक्तिपूर्वक आग्रह करने पर उनके मनमंदिर में उतर आएँगें।

राम के बाएँ हाथ में स्वर्ण का धनुष तथा दाहिने हाथ में स्वर्ण का बाण सुशोभित है जो अहंकार और अन्धकार का शमन करने को आतुर है मस्तक पर रामानंदीय तिलक का मध्य भाग माणिक्य और दोनों किनारे हीरे से निर्मित किये गये हैं। रामलला चूँकि पाँच वर्ष के बालक के रूप में विराजे हैं इसलिए पारम्परिक ढंग से उनके सम्मुख चाँदी से निर्मित खिलौनों में झुनझुना, हाथी, घोड़ा, ऊँट, खिलौनागाड़ी आदि रखे गये हैं।

रामलला को देखकर ऐसा लगता है कि उन्होंने फिर से अवतार ले लिया है लेकिन यह अवतार केवल अयोध्या में नहीं हुआ है बल्कि हरेक भारतवासी के मन–मन्दिर में हुआ है और सभी के हृदय में भक्ति सागर उमड़ रहा है सभी उस लहर में आकंठ डूबे हुए हैं। जो भी राम लला का दर्शन कर रहा है वह ब्रम्हानन्द की अनुभूति कर रहा है और आज भारतीय जनमानस के यही उद्‌गार हैं कि घर–घर राम आये हैं।

◆

मो. : 9793274150

अयोध्या : स्वर्णिम इतिहास और शानदार भविष्य

–रूद्रेश घिल्डियाल

देश के इतिहास में 22 जनवरी, 2024, यही वह तिथि थी, जिसकी प्रतीक्षा हर देशवासी कर रहा था और जब यह तिथि आयी तो 'जय सियाराम' की नगरी में ही नहीं बल्कि इसकी गूंज पूरे विश्वभर में हैं। सभी देशवासियों को और विश्व भर में फैले करोड़ों भारतीय व रामभक्तों को आज के इस पवित्र अवसर पर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि दीपोत्सव आ गया है। देश–विदेश के मन्दिरों में भव्य आयोजन किया गया। रामायण, सुन्दरकाण्ड और हनुमान चालीसा के पाठ के साथ भजन, कीर्तन और विशेष आरती का आयोजन किया गया, घड़ियाल भी गूंजते रहे। 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में नव निर्मित मन्दिर में रामलला के प्राण–प्रतिष्ठा से पहले से ही न्यूयार्क के विश्व प्रसिद्ध टाइम्स स्क्वायर पर भक्तों की भीड़ राम मन्दिर में सुसज्जित झंडे के साथ पहले ही पहुंच चुकी थी। जैसे ही प्राण–प्रतिष्ठा समारोह का समापन हुआ, आस्ट्रेलिया के मेलबर्न, अमेरिका के वाशिंगटन (डी.सी.), फ्लोरिडा के अन्य शहरों में भारतवासियों ने पटाखे व दीप जलाये गये। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सेशल्स, मारिशस, सूरीनाम आदि की गली–गली में राम–नाम गूंज रहा था। भारतवासियों की आबादी वाला देश शायद ही विश्व में कोई हो जहाँ आयोजन न हुआ हो। यही नहीं, नेपाल के जनकपुरधाम में जानकी मन्दिरों को फूल–मालाओं से सजाया गया। विश्व के कई देशों में सांस्कृतिक और धार्मिक आयोजन किये गये। इनमें हिन्दुओं के अलावा सिक्ख, मुस्लिम तथा अन्य धर्मों के लोग भी शामिल हुल। लंदन के साउथ हॉल में प्रसिद्ध राम मन्दिर सहित पूरे ब्रिटेन के मन्दिरों में प्रवासी भारतीयों की भीड़ देखी गयी।

आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने अयोध्या में राम मन्दिर का उद्घाटन करके उत्तर प्रदेश में धार्मिक पर्यटन परिदृश्य के नये युग की शुरूआत की। यह महत्वपूर्ण आयोजन केवल हिन्दुओं के लिए एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मील का पत्थर नहीं है बल्कि क्षेत्रीय, सामाजिक, आर्थिक और नगर विकास के लिए भी एक महत्वपूर्ण प्रेरक है लेकिन अयोध्या का सुनहरा भविष्य, आशा, सामाजिक सौहार्द और अटूट आस्था के धागे में पिरोया हुआ एक हिस्सा मात्र है।

इस धार्मिक पुर्नजागरण के केन्द्र अयोध्या के धार्मिक पर्यटन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। राम मन्दिर के साकार होने के साथ श्रद्धालुओं में भगवान राम के दर्शन की इच्छा प्रबल हो उठी है। अयोध्या विकास प्राधिकरण 22 जनवरी, 2024 प्राण–प्रतिष्ठा समारोह के तुरन्त बाद प्रतिदिन पांच लाख श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद जताई गई थी। अयोध्या में कुल 2.39 करोड़ घरेलू और 1465 विदेशी पर्यटक आये थे।

ये आंकड़ा जल्द ही तेजी से बदलने वाला है, न केवल धार्मिक उत्साह फिर से जिन्दा होने को दर्शाते हैं बल्कि इससे यह भी साबित होता है कि अयोध्या देश के प्रमुख धार्मिक पर्यटनस्थल में बदल रहा है।

इस बढ़ते हुए पर्यटन को समायोजित करने के लिए पर्याप्त निवेश किया जा रहा है। उद्योग जगत के अनुसार हास्पिटैलिटी क्षेत्रफल फल–फूल रहा है जिसमें प्रमुख होटल, चेन्स के नये होटल बनाने के लिल 350 करोड़ रूपये का निवेश किया गया है। इसके अलावा अयोध्या में महर्षि बाल्मकि अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, जहाँ से लगभग 10 लाख पर्यटक सालाना आ–जा सकते हैं, और 'अमृत भारत' तथा 'वंदे भारत' एक्सप्रेस ट्रेनों की शुरूआत से देश–विदेश के यात्रियों के लिए अयोध्या की यात्रा सुलभ हो गयी है लेकिन अयोध्या पुनरूत्थान उत्तर प्रदेश के व्यापक आध्यात्मिक पर्यटक कैनवास का केवल एक हिस्सा है।

श्रीराम जन्मभूति पर आये सुप्रीम कोर्ट के फैसले और राम मन्दिर की स्थापना के बाद शहर में पर्यटकों के लिए कई आकर्षण विकसित किये जा रहे हैं। यह लोगों के घूमने के लिए विकल्प प्रदान करता है। इसके साथ ही बच्चों के लिए पार्कों का निर्माण भी कराया गया है।

भगवान राम की जन्मस्थली का विशिष्ट पौराणिक महत्व है। अयोध्या आस्था का महाकुंभ है, हर तरफ रामायण की गाथाओं और पात्रों के सुने–अनसुने किस्से बयान करता पूरा शहर पौराणिक भव्यता का जीवन्त उदाहरण है। ऐतिहासिक महत्व वाले इसके असंख्य मन्दिर, घाट व अन्य स्थल में श्रद्धा, भक्ति, वीरता और अध्यात्म का बोध कराते हैं। राम में आस्था रखने वाले तीर्थ यात्रियों के साथ–साथ इतिहास जानने–समझने के इच्छुक लोगों के लिए भी हमेशा से एक पसंदीदा स्थल रहा है।

निर्माणाधीन राम मन्दिर में रामलला के प्राण–प्रतिष्ठा समारोह को सफल बनाने के लिए 37 सरकारी एजेन्सियों द्वारा 264 परियोजनाओं पर काम किया गया। वर्तमान समय में रू. 31,662 करोड़ की परियोजनायें या तो पूरी हो चुकी हैं या चल रही हैं। बुनियादी ढांचे को बढ़ाने और आसपास के जिलों से आवागमन के समय को कम करने के लिए अतिरिक्त रू. 8,000 करोड़ की योजनायें बनाई गयी हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य यह है कि दुनिया भर में अयोध्या को हिन्दू धर्म के मूल रूप में स्थापित किया जाय। इस नयी सुबह का सपना श्रीयुत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ के कुशल नेतृत्व में पूरा होने जा रहा है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि अयोध्या का श्रीराम मन्दिर ''राष्ट्रीय मन्दिर के रूप में भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक एकता का प्रतीक होगा।'' उन्होंने कहा कि आज पूरी दुनिया अयोध्या की ओर उत्सुकता से देख रही है और हर कोई अयोध्या आना चाहता है। मुख्यमंत्री ने एक उच्च स्तरीय बैठक में अयोध्या में जारी विभिन्न परियोजनाओं की समीक्षा की और आवश्यक दिशा–निर्देश दिए। इस सम्बन्ध में जारी एक बयान में कहा गया कि मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने आगामी 22 जनवरी को अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि मन्दिर में श्री रामलला के प्राण–प्रतिष्ठा समारोह के अलौकिक, अभूतपूर्व और अविस्मरणीय बनाने के लिए राज्य सरकार के स्तर से सभी आवश्यक प्रबन्ध करने के निर्देश दिये।

मुख्यमंत्री योगी जी ने कहा आज पूरा देश राममय है। यह उत्तर प्रदेश की ग्लोबल ब्रान्डिंग का अवसर भी है। उन्होंने कहा कि प्राण–प्रतिष्ठा समारोह में आने वाले अतिथियों तथा उसके बाद पर्यटकों/श्रद्धालुओं के आगमन को सुखद बनाने में राज्य सरकार ने कोई कोर–कसर नहीं छोड़ेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि श्रीराम मन्दिर ''राष्ट्र मन्दिर'' के रूप में भारत की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक एकता का प्रतीक होगा। उन्होंने कहा कि प्राण–प्रतिष्ठा का यह ऐतिहासिक कार्यक्रम सभी सनातनियों के लिए गौरव का अवसर है और 22 जनवरी, 2024 को शाम के समय हर एक मन्दिर में दीपोत्सव मनाया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा सनातन आस्थावान अपने घरों/प्रतिष्ठानों में राम ज्योति प्रज्ज्वलित कर रामलला का स्वागत करेगा। यह सब अभूतपूर्व एवं भावुक करने वाला है।

संक्षेप में अयोध्या में राम मन्दिर का उद्घाटन केवल एक धार्मिक घटना से कहीं अधिक है। यह एक परिवर्तनकारी मील का पत्थर है जो उत्तर प्रदेश की पहचान को आध्यात्मिक पर्यटन के एक प्रमुख स्थल के रूप में फिर से स्थापित कर रहा है।

यह सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक विकास के साथ

मिलता है। आस्था और इतिहास का महाकुंभ ''अयोध्या का तीर्थ स्थल''।

भगवान राम की जन्मस्थली का विशिष्ट पौराणिक महत्व है। अयोध्या आस्था का महाकुंभ है, हर तरफ रामायण की गाथाओं और पात्रों के सुने–अनसुने किस्से बयान करता पूरा शहर पौराणिक भव्यता का जीवन्त उदाहरण है। ऐतिहासिक महत्व वाले इसके असंख्य मन्दिर, घाट व अन्य स्थल में श्रद्धा, भक्ति, वीरता और अध्यात्म का बोध कराते हैं। राम में आस्था रखने वाले तीर्थ यात्रियों के साथ–साथ इतिहास जानने–समझने के इच्छुक लोगों के लिए भी हमेशा से एक पसंदीदा स्थल रहा है।

हनुमानगढ़ी –

10वीं सदी का यह मन्दिर, 76 सीढ़ियों वाले एक किले जैसा दिखता है। यह तीर्थ नगरी के मध्य में स्थित है, यह भगवान हनुमान के निवास के रूप में प्रतिष्ठित है, जहां उनकी एक सुनहरी मूर्ति भी स्थापित है।

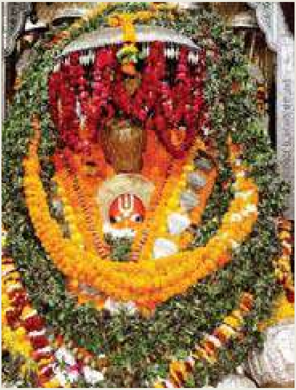

नागेश्वर मन्दिर –

राम की पैड़ी पर स्थित, भगवान राम के पुत्र कुश द्वारा स्थापित नागेश्वर मन्दिर से एक किवंदती जुड़ी है कि कुश का खोया बाजूबन्द सरयू में एक नाग–कन्या को प्राप्त हुआ जिससे दोनों में प्यार बढ़ा और अन्ततः कुश को नागेश्वर मन्दिर निर्माण की प्रेरणा हुई।

कनक भवन –

वर्ष 1891 में मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ की रानी वृषभानु कुँवारी ने भव्य रूप से सुसज्जित इस मन्दिर का निर्मावा कराया। मन्दिर के गर्भ गृह में भगवान राम, देवी सीता, अनुजों लक्ष्मण, करन और शत्रुघ्न सहित विराजमान हैं। भगवान राम और देवी सीता ने स्वर्ण मुकुट पहन रखे हैं।

त्रेता के ठाकुर –

कालेराम–का–मन्दिर के नाम से लोकप्रिय यह मन्दिर भगवान राम के अश्वमेघ यज्ञ का स्मरणोत्सव माना जाता है। इस मन्दिर की वर्तमान संरचना, तीन शताब्दी पहले कुल्लू के राजा द्वारा बनायी गयी थी। बाद में इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर द्वारा इसका नवीनीकरण किया गया था।

श्रृंगवेरपुर –

अयोध्या से 170 कि.मी. दूर यह गांव रामायण में वर्णित है। यह मछुआरों के राजा निषादराज की राजधानी थी। भगवान राम, माँ सीता और भगवान लक्ष्मण ने अपने वनवास के दौरान यहीं गंगा पार की थी। जब अन्य नाविकों ने नदी पार कराने से इन्कार कर दिया था तो निषादराज ने भगवान राम के पैर धोए, भक्ति भाव में उस जल को ग्रहण किया और अपनी नाव से नदी पार करायी। श्रृंगी आश्रम –

अयोध्या से 50 कि.मी. दूर सरयू नदी के किनारे स्थित इस आश्रम में श्रृंगी ऋषि की समाधि है। प्रार्थना के लिए यहां भगवान शिव के मन्दिर जा सकते हैं। श्रृंगी ऋषि के अयोध्या में ''पुत्र कामेष्टि यज्ञ'' से जुड़ने के परिणामस्वरूप राजा दशरथ को भगवान राम सहित सन्तानों की प्राप्ति हुई।

वशिष्ठ कुंड –

श्रीराम जन्म भूमि क्षेत्र के पीछे स्थित इस मन्दिर में गुरू वशिष्ठ की मूर्ति है। साथ ही दोनों तरफ राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न की मूर्तियां स्थापित हैं।

◆

मो. : 9453059581

सुत सनेह बस माता, बालचरित कर गान

—डॉ. अलका अस्थाना 'अमृतमयी'

भगवान श्री राम अपने बाल स्वरूप में अपनी जन्म भूमि अयोध्या में बने भव्य और दिव्य राम मन्दिर में विधि—विधान के साथ विराजित हो गये इसी के साथ भारत ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व के मन मानस में उनके बाल रूप की मनोहारी छवि अंकित हो गयी। वैसे तो भगवान राम का सम्पूर्ण जीवन चरित्र ही मधुर है लेकिन उनका बाल स्वरूप, उनकी बाल लीलाएं तो वैरागियों के चित्त में भी प्रसन्नता की हिलोरें लाने वाली हैं विरागी को रागी बना देने की सामर्थ्य भगवान राम के बाल रूप है, तभी तो अयोध्या में बने इस नये मन्दिर का नाम बालक राम मन्दिर रखा गया है।

22 जनवरी, 2024 सनातन भारतीय संस्कृति के प्राण हमारे आदर्श प्रभु श्री राम अपनी जन्मभूमि नव्य व भव्य अयोध्या में विराजमान हो गये जिन्हें भारतवासियों द्वारा सम्पूर्ण विश्व में राम नाम को बड़े ही जोश के साथ याद किया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ जी के सफल प्रयासों से ये ऐतिहासिक कार्य संभव हो सका। देश में चारों ओर जयकारे लगाये जाने लगे। भारत के बाहर रह रहे हिन्दू प्रवासियों ने रामलला की प्राण प्रतिष्ठा में दीपोत्सव मनाकर उन्हें याद किया।

भगवान श्री राम हमारे हृदय में स्थापित हैं वो प्रत्येक भारतवंशी के मन में सीता माता सहित मनमोहक मुस्कान लिये अपनी कृपा से हमें सराबोर कर रहे हैं। इस आनन्द उत्सव में जगह—जगह भंडारे भोग दीपोत्सव यज्ञ हवन आदि का आयोजन किया गया। ये उत्सव विगत कई वर्षों से प्रतीक्षा में था जो कार्य 22 जनवरी, 2024 को पूर्ण हुआ। एक उत्सव तब मनाया गया था, जब राम 14 वर्षों के वनवास के उपरान्त अयोध्या माता सीता सहित आये थे जिसे हम दीपावली के रूप में मनाते आये हैं।

प्रभु श्री राम की प्रतिष्ठा के अवसर पर सम्पूर्ण देश में चतुर्दिक आनन्द का उत्सव, जहां शंख की निनाद ढोल मंजीरे मृदंग सहित भक्ति रस की वर्षा होती दिखाई दी, गर्भगृह में प्रधानमंत्री जी मुख्य यजमान के रूप में बैठे तो साथ में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मोहन भागवत और मणि राम छावनी के महंत श्री नृत्य गोपाल दास जी इस कार्यक्रम के साक्षी बने। सम्पूर्ण देश की निगाहें टीवी स्क्रीन पर लगी थीं। कहीं लोग मोबाइल व अन्य सोशल मीडिया के माध्यम से इस पुनीत अवसर के साक्षी बने। ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रभु श्री राम की मूर्ति अयोध्या में ही स्थापित नहीं हुई, बल्कि जनमानस के हृदय पटल पर स्थापित हो गई।

प्रभु श्री राम का जन्म

रामनवमी की पावन बेला में प्रभु श्री राम का अवतरण हुआ था उन्हें विष्णु जी का सातवां अवतार माना जाता है। धर्म को स्थापित करने व आसुरी शक्तियों का विनाश करने के लिए विष्णु जी ने राजा दशरथ के पुत्र के रूप में जन्म लिया और संसार को सबक दिया कि कैसे मर्यादा में रहकर सम्बन्धों का निर्वाह किया जाता है।

तुलसीदास के बाल राम

तुलसीदास जी ने भगवान राम की सुन्दर बाल लीलाओं का वर्णन किया है बचपन से श्रीराम बहुत ही सुशील थे वैसे तो चारों भाई ही बहुत सुन्दर थे पर श्री राम सबसे अधिक सुन्दर थे। मां कभी गोदी में लेकर उनको प्यार करती हैं और कभी पालने में लिटाकर। ललना कहकर! उन्हें दुलार करती हैं। भगवान माया रहित विनोद रहित और अजन्मे ब्रह्म हैं। वे कौशल्या की गोद में अपनी बाललीलाओं को दिखा रहे हैं। भगवान के बाल घुंघराले हैं उनकी नासिका बहुत सुन्दर है। दो सुन्दर नेत्र हैं।

वर दन्त की पंगति कुंद कली, अधराधर पल्लव खेलन की।
चपला चमकै घन बीचि जगै, छवि मोतिन माल अमोलन की।
घुंघरारि लटै लटकैं मुख ऊपर, कुंडल लोल कपोलन की।
न्यौछावर प्रान करै तुलसी, बलि जाऊँ लला इन बोलन की।।

तुलसी दास जी कहते हैं

"बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।
अमिय मूरिमय चूरन चारु। समन सकल रुज परिवारू।।

अर्थात् मैं गुरू महाराज के चरण कमलों की रज की वन्दना करता हूं जो सुरूचि (सुन्दर स्वाद सुगन्ध तथा अनुराग रूपी रस से पूर्ण हैं। वह अमर मूल (संजीवनी जड़ी) का सुन्दर चूर्ण है। जो समस्त संसार से उत्पन्न होने वाले रोगों को नष्ट करने वाला है।

बालकाण्ड में रचित तुलसी दास की लेखनी भक्ति रस डूब चुकी है। जहां भगवान के जन्म दिन में कुछ प्रकट पंक्तियां सुशोभित होती हैं।

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।
लोचन अभिराम तनु घन श्यामा,
निज आयुध भुजचारी।
भूषन बनमाला, नयन बिसाला, सोभा सिंधु खरारी।।

भगवान पृथ्वी पर अवतरित हुए, जिससे वे लोक का कल्याण कर सकें जिनकी मनोहर छवि देखती ही बनती है। पूरी अयोध्या में बधाई गीत गुंजायमान हैं । देवता उनके दर्शन करने के लिए आतुर हैं, आकाश से पुष्प वर्षा हो रही है। सभी प्रसन्न हैं। तुलसी दास ने एक चित्र को इस प्रकार अंकित किया कि ..

जाकर नाम सुनत सुभ होई, मोरे गृह आवा प्रभु सोई।
परमानंद पूरि मन राजा, कहा बोलाई बजावहु बाजा।।

जिनका नाम सुनने से ही कल्याण होता है वहीं प्रभु मेरे घर आये हैं यह सोचकर राजा का मन परम आनंद से पूर्ण हो गया ।

तुलसी एक दोहे के माध्यम से कहते हैं कि
प्रेम मगन कौशल्या निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता, बालचरित कर गान।

माता की वात्सल्यता का सजीव चित्रण करते हुए तुलसी की कलम थकती नहीं है बल्कि वो कलम को साधक मानकर अपने काव्य में राम की भक्ति में लीन हैं जहां प्रेम में मगन कौशल्या जी रात और दिन का बीतना नहीं जानती थी पुत्र के स्नेह वश माता उनके बाल चरित्रों का गान किया करती हैं।

प्रभु श्री राम का आंगन में चलना अपनी बाल लीलाओं से समस्त पृथ्वी पर निवास कर रहे चर व अचर दोनों को मोहित करता है। जिनकी लीला सभी के मन को आनंदित करती है।

कौसल्या जब बोलन जाई। ठुमुकु ठुमुकु प्रभु चलहि पराई।।
निगम नेति सिय अंत न पावा। ताहि धरै जननी हठि धावा।।
कौसल्या माता जब बुलाने जाती हैं तब प्रभु ठुमुकु ठुमुकु चलते हैं।

तुलसीदास राम जी के गुणगान को गाने में अपनी असमर्थता को व्यक्त करते हैं वे बड़ी ही विनम्रता से इस दोहे में कहते हैं।

करन चहऊँ रघुपति गुन गाहा।
लघु मति मोरि चरित अवगाहा।
सूझ न एकउ अंग उपाऊ।
मन रति रंक मनोरथ राऊ।

मैं श्री रघुनाथ के गुणों का वर्णन करना चाहता हूं परन्तु मेरी बुद्धि छोटी है और श्री राम जी का चरित्र अथाह है, इसके लिए मुझे कोई उपाय नहीं सूझ रहा है। मेरे मन और बुद्धि कंगाल हैं किन्तु मनोरथ राजा है।

अपनी कवितावली बालकाण्ड में तुलसीदास ने वर्णन किया है कि श्री रामचन्द्र जी तो कभी चन्द्रमा को मांगने का हठ करते हैं कभी हाथ से ताली बजाकर नाचते हैं जिससे सब माताओं के हृदय आनन्द से भर जाते हैं कभी रूठ कर हठपूर्वक कुछ कहते (मांगते हैं) और जिस वस्तु के लिए अड़ते हैं, उसे लेकर ही मानते हैं।

अयोध्यापति महाराज दशरथ के चारो बालक तुलसीदास के मन मन्दिर में सदैव विहान करें।

बालक राम भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के राम हैं। यहां तक कि चराचर जगत के अखण्ड ब्रह्मांड के सृजेता, पालक पोषक , और संहारकर्ता हैं वे सम्पूर्ण विश्व पर कृपालु हैं सम्पूर्ण विश्व का मंगल हो, सर्वत्र सुख शान्ति और समृद्धि का वातावरण बने। नदियां पर्वत सागर संतृप्त हों वनस्पतियां जीवमात्र को स्वस्थ और निरोग बनाये रखने में समर्थ हों। ऐसी भगवान श्री राम कृपा करें जिससे भारत ही नहीं, संपूर्ण विश्व में राम राज्य की स्थापना हो सके। ऐसा राम राज्य जिसमें जाति और धर्म का विभेक न हो सब सुखी हों। सब शिक्षित हों, सबके हृदय में एक दूसरे के प्रति प्रेम सद्भाव और सहयोग की भावना हो यही शायद इस मन्दिर के निर्माण का 'अभीष्ट' भी हो।

◆

मो. : 8934884441

अवधपुरी का माहात्म्य

—अमल मिश्र

अयोध्या को प्रायः हम सब एक तीर्थ और धार्मिक—प्राचीन नगर के रूप में जानते और पहचानते हैं, जबकि सनातन और अन्य धर्मों के उद्भव व प्रचार—प्रसार के साथ सांस्कृतिक व राजनीतिक दृष्टि से अयोध्या सदैव समृद्ध रही है और वहां ऐसी प्रतिभाएं, रचनाकार, अभिनेता, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और शिक्षाविद् उत्पन्न हुए और उन्होंने अपने क्षेत्र में ऐसा उल्लेखनीय कार्य किया जिससे वे अपने क्षेत्र के मील के पत्थर के रूप में जाने जाते हैं। निश्चित रूप से अयोध्या का नागर दृश्य और परिदृश्य ऐसा ही है, जो सरयू नदी की तरफ से देखने पर तीर्थ स्थान के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ मंदिर और घंट—घड़ियाल के साथ उभरता भक्तिमय संगीत सुनाई देगा और दृश्य रूप में सरयू नदी के निर्मल प्रवाह में नौका विहार और तट पर बनी राम की पैड़ी और उसके ऊपर एक दूसरे में धँसते मंदिर और मकान काशी के घाटों की तरह कुछ ऐसा ही दृश्य उत्पन्न करते हैं पर अयोध्या में बनारस की तरह पूजा—पाठ के लिए बनी छतरियां नहीं मिलतीं और नगर में उद्योग, व्यवसाय एवं शिक्षालयों की भी ऐसी स्थिति है कि वह समस्त क्षेत्र में नेतृत्व करने वाले अपने विद्यार्थियों पर गौरवान्वित हो सके। हालांकि इस समय एक अवसर है 500 वर्षों बाद राम राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण और रामलला के भव्य मंदिर में प्राणप्रतिष्ठा का जिसे पूरे विश्व के सनातनियों और श्रद्धालुओं ने उत्सव में बदल दिया है।

अयोध्या या अवधपुरी, उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से लगभग 150 किलोमीटर पूर्व में सरयू नदी पर स्थित एक अत्यंत मनोरम और घनी आबादी का प्राचीन नगर और महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल है। ऐसा माना जाता है कि अयोध्या, जिसका पूर्व में नाम फैजाबाद भी था, उसकी स्थापना मनु द्वारा की गई थी और यह कोसल देश की प्रारंभिक राजधानी के रूप में जाना जाता है, जिसका सन्दर्भ वेदों में भी मिलता है। हिंदुओं की मोक्षदायिनी सप्तपुरी में अयोध्या पहला तीर्थ स्थल है। सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु, पृथु, मांधाता, हरिश्चंद्र,

सगर, भागीरथ, रघु, दिलीप और राजा दशरथ के कुल में जन्में श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में यशस्वी राजा हुए और सनातन धर्म में भगवान के रूप में पूजे गए। राम ने अपनी राजधानी अयोध्या से ही कोसल पर एक आदर्श शासन दिया था, जो आज की राजनीति का मापदण्ड है। यहाँ के उत्सव जैसे दीपोत्सव, राम नवमी मेला, श्रवण झूला मेला, राम लीला, परिक्रमा–अंतरग्रही, पंचकोशी, चतुर्दशकोशी देशी–विदेशी पर्यटकों और श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण होते हैं। पर्यटकों के भ्रमण और आस्था के लिए के लिए यहां सरयू नदी, राम जन्मभूमि, हनुमान गढ़ी, श्रीनागेश्वरनाथ मंदिर, रामकोट, तुलसी स्मारक भवन, सीता की रसोई, कनक भवन, मणि पर्वत आदि महत्त्वपूर्ण स्थलों का माहात्म्य स्थापित है।

जनसहयोग से निर्मित राम जन्म भूमि के भव्य मंदिर में राम लला का प्राणप्रतिष्ठा समारोह इस समय विश्व के सनातन धर्मानुयायियों के लिए विशेष आकर्षण बन चुका है जो 16 जनवरी से लेकर 22 जनवरी तक प्रायश्चित और पूजन, मूर्ति के परिसर प्रवेश, तीर्थ पूजन, जल यात्रा, गंधाधिवास, औषध्याधिवास, केसराधिवास, घृताधिवास, धान्याधिवास, शर्कराधिवास, फलाधिवास, पुष्पाधिवास, मध्याधिवास, शैय्याधिवास और तत्पश्चात इसका समापन प्राणप्रतिष्ठा के साथ पूर्ण हुआ। आज पूरी दुनिया से श्रद्धालुओं का नियमित आना–जाना लगा हुआ है और अयोध्या के माहात्म्य को जानने पहचानने और साक्षात्कार करने के प्रति एक उत्सुकता बनी हुई है।

अयोध्या का धार्मिक आकर्षण तो राम जन्मभूमि और उससे जुड़े अनेक पावन स्थान हैं ही, पर ऐसी प्रतिभाओं ने भी अयोध्या का नाम अन्तरराष्ट्रीय फलक तक पहुँचाया है, जिन्हें अपने–अपने क्षेत्रों में मील के पत्थर की तरह देखा जाता है, जैसे गज़ल गायिका बेगम अख्तर, कवि बशीर बद्र, मीर बाबर अली, बृज नारायण चकबस्त, कुँवर नारायण, फिल्म निर्देशक एवं पटकथा लेखक अभिषेक चौबे, मृदंग वादक बाबा पागलदास, तबला वादक एस आर चिश्ती, चित्रकार अवधेश मिश्र, संस्कृतिविद् यतीन्द्र मिश्र, कोरिओग्राफर कैथलीन क्रोपतोन, डच संगीतकार बैरी हे, व्यवसायी इंदु जैन, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बृजवासी लाल, मंगल पाण्डेय, अशफाकुल्ला खान, पत्रकार शीतला सिंह, समाजवादी विचारक राम मनोहर लोहिया आदि।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म अयोध्या में हुआ था। जैन परंपरा के अनुसार 24 तीर्थंकरों में से पांच का जन्म स्थान अयोध्या है, जिसमें आदिनाथ, अजीत नाथ, अभिनंदन नाथ, सुमित नाथ और अनंतनाथ शामिल हैं।

इस तरह अयोध्या (साकेत) का एक अनुकरणीय धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास रहा है, जो देश–दुनिया को मिलजुलकर रहने का एक सकारात्मक सन्देश देता है। यही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन का सन्देश था।

◆

मो. : 99568 99939

आस्था के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरता प्रदेश

अयोध्या में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा के साथ नए युग का प्रवर्तन
आर्थिक विकास का आधार बनेगा अयोध्या का राम मंदिर

–अनिल श्रीवास्तव

अयोध्या में 22 जनवरी को राम मंदिर का उद्‌घाटन हुआ। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों इसके गर्भगृह में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की गई। अयोध्या में विवादित स्थल पर राम मंदिर का निर्माण एक सपने के साकार होने जैसा है। इसी के साथ केवल अयोध्या ही नहीं बल्कि उत्तर प्रदेश भी देश–दुनिया में आस्था के सबसे बड़े प्रतीक के तौर पर देखा जाने लगा है। नवनिर्मित राम मंदिर सिर्फ एक इमारत का निर्माण नहीं बल्कि राष्ट्रीय एकता, समग्र विकास और धर्म–आध्यात्म के प्रति विश्वास का प्रतीक भी है। अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण और भव्य प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद उत्तर प्रदेश आध्यात्मिक पर्यटन का एक बड़ा केंद्र बनता जा रहा है।

अयोध्या में श्री रामजन्मभूमि मंदिर के लिए देशवासियों को शताब्दियों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। श्री रामजन्मभूमि मंदिर के लिए पूरे देश में जिस तरह का जन–आंदोलन देखने को मिला वह अपने आप में एक मिसाल है। केंद्र की नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार की दृढ़ इच्छाशक्ति और व्यापक जन सहयोग से ही अयोध्या में बहुप्रतीक्षित राम मंदिर का सपना साकार हो सका है। अयोध्या में नवनिर्मित भव्य राम मंदिर में भगवान राम की प्राण–प्रतिष्ठा के साथ ही पूरे देश में एक नए युग का प्रवर्तन हुआ है। यही नहीं अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के बाद उत्तर प्रदेश पूरे देश में आस्था का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभर रहा है। पूरे देश के साथ–साथ विदेशों से भी रोज़ाना बड़ी संख्या में श्रद्धालु अपने आराध्य भगवान राम के दर्शन के लिए अयोध्या पहुंच रहे हैं। खास बात यह है कि नए राम मंदिर ने पूरे अयोध्या की तस्वीर बदलकर रख दी है। कहा जा सकता है कि आने वाले समय में राम मंदिर देश और प्रदेश के आर्थिक विकास का मजबूत आधार बनेगा।

अयोध्या में भव्य राम मंदिर के उद्‌घाटन के मूल में एकता का संदेश और आस्था की शक्ति थी। प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में इसे रेखांकित करते हुए कहा भी, ''रामलला के लिए इस मंदिर का निर्माण भारतीय समाज के शांति, धैर्य, आपसी सद्‌भाव और समन्वय का प्रतीक है। राम मंदिर का निर्माण समाज के हर वर्ग के लिए उज्ज्वल भविष्य के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा का भी प्रतीक है।''

धर्म और अध्यात्म के साथ ही राम मंदिर को उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था के लिए भी संभावनाओं के बड़े द्वार खोलने वाला माना जा रहा है। प्राण प्रतिष्ठा के बाद कई देशी और विदेशी रिपोर्ट्स में यह दावा किया गया कि अयोध्या आने वाले समय में न सिर्फ श्रद्धालुओं की संख्या में रिकॉर्ड तोड़ वृद्धि दर्ज़ करने जा रहा है, बल्कि प्रदेश और देश की अर्थव्यवस्था को भी नई ऊंचाई प्रदान करने वाला है। केंद्र

और उत्तर प्रदेश की डबल इंजन सरकार ने जिस तरह समावेशी विकास के ज़रिए अयोध्या की तस्वीर बदली है, उसी तरह आने वाले समय में राम की जन्मस्थली उत्तर प्रदेश और देश की तकदीर बदल सकती है। कहा तो यहां तक जा रहा है कि उत्तर प्रदेश को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य को हासिल करने में अयोध्या का नवनिर्मित मंदिर मील का पत्थर साबित हो सकता है।

एसबीआई रिसर्च ने अपनी हाल की एक रिपोर्ट में दावा किया है कि राम मंदिर और राज्य सरकार की ओर से उठाए जा रहे अन्य पर्यटन केंद्रित कदमों से उत्तर प्रदेश को 2024–25 में 25 हजार करोड़ रुपये का टैक्स मिल सकता है। इसमें अयोध्या की सबसे अहम् भूमिका होगी। आने वाले समय में सिर्फ उत्तर प्रदेश और देश ही नहीं बल्कि दुनिया के कई हिस्सों से श्रद्धालुओं के अयोध्या आने की संभावना है, जो यहां के पर्यटन उद्योग को नई ऊंचाई पर ले जाएगा। यह भी दावा किया जा रहा है कि अगले वित्तीय वर्ष में उत्तर प्रदेश को पर्यटन से भारी–भरकम आय हो सकती है। मंदिर निर्माण से जुड़ी कंपनी लार्सन एंड टूब्रो ने दावा किया है कि नवनिर्मित राम मंदिर अगले एक हजार साल तक बना रहेगा। इसकी डिजाइनिंग और इंजीनियरिंग ऐसी है कि यह एक हजार साल से भी ज्यादा समय तक क्षतिग्रस्त नहीं हो सकता। ज़ाहिर है इसका आर्थिक प्रभाव भी काफी व्यापक होने वाला है।

अयोध्या में भव्य राम मंदिर के उद्घाटन के मूल में एकता का संदेश और आस्था की शक्ति थी। प्राण प्रतिष्ठा के बाद प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में इसे रेखांकित करते हुए कहा भी, ''रामलला के लिए इस मंदिर का निर्माण भारतीय समाज के शांति, धैर्य, आपसी सद्भाव और समन्वय का प्रतीक है। राम मंदिर का निर्माण समाज के हर वर्ग के लिए उज्ज्वल भविष्य के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा का भी प्रतीक है।''

स्टॉक मार्केट रिसर्च फर्म जेफरीज का दावा है कि अयोध्या धाम श्रद्धालुओं की संख्या के मामले में वेटिकन सिटी और मक्का को भी पीछे छोड़ देगा। वेटिकन सिटी कैथोलिक का सबसे पवित्र स्थान है, जहां हर साल लाखों लोग आते हैं। इसी तरह सऊदी अरब का मक्का, जो मुस्लिम समुदाय के लोगों की आस्था का सबसे प्रमुख स्थान है। यहां भी लाखों लोग हर साल आते हैं। ये दोनों स्थान पिछले कई वर्षों से श्रद्धालुओं की संख्या के मामले में सबसे आगे रहे हैं और यहां प्रति वर्ष करीब 3 करोड़ श्रद्धालु पहुंचते हैं। दावा है कि राम मंदिर की वजह से अयोध्या इन दोनों को पीछे छोड़ देगा। रिपोर्ट के अनुसार राम मंदिर निर्माण के बाद अयोध्या आध्यात्मिक पर्यटन का एक विशाल और प्रमुख गंतव्य बन गया है। यहां एक वर्ष के अंदर पांच करोड़ लोगों के आने की उम्मीद है। जेफरीज ने ये भी कहा है कि हजारों करोड़ खर्च करके अयोध्या में निर्मित नए एयरपोर्ट,

रेलवे स्टेशन, टाउनशिप और रोड कनेक्टिविटी के साथ ही नए होटल्स के निर्माण से यहां का परिदृश्य बदल चुका है। आज अयोध्या सिर्फ भारत ही नहीं पूरी दुनिया में आकर्षण का केंद्र बन गया है।

रिपोर्ट के अनुसार श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ने के साथ–साथ अयोध्या की वार्षिक आय में भी वृद्धि होगी। माना जा रहा है कि अयोध्या वार्षिक आय के मामले में सारे रिकार्ड तोड़ सकता है। अभी देश में आंध्र प्रदेश में स्थित तिरुपति बालाजी से राज्य को 1200 करोड़ रुपये की आय होती है। तिरुपति बालाजी में हर वर्ष 2.5 करोड़ श्रद्धालु पहुंचते हैं। इसी तरह वैष्णो देवी में प्रतिवर्ष 80 लाख लोग जाते हैं, जहां से वहां 500 करोड़ रुपये की आय होती है। आगरा के ताज महल में 70 लाख लोगों के पहुंचने से 100 करोड़ तो आगरा फोर्ट में 30 लाख लोगों के माध्यम से 27.5 करोड़ रुपये की वार्षिक आय होती है। वेटिकन सिटी और मक्का की बात करें तो मक्का में प्रति वर्ष 2 करोड़ लोग आते हैं, जिससे सऊदी अरब को 12 बिलियन डॉलर की वार्षिक आय होती है, जबकि वेटिकन सिटी में 90 लाख लोग प्रतिवर्ष आते हैं जिनसे 315 मिलियन डॉलर की वार्षिक आय होती है।

एक अन्य अनुमान के अनुसार प्रतिदिन एक लाख से अधिक श्रद्धालु प्रभु श्रीराम के दर्शन के लिए अयोध्या पहुंचेंगे। यह संख्या जल्द ही 3 लाख श्रद्धालु प्रतिदिन हो सकती है। यदि ऐसा होता है तो प्रतिवर्ष 10 करोड़ से अधिक श्रद्धालु अयोध्या पहुंचेंगे। अयोध्या पहुंचा प्रत्येक श्रद्धालु यदि 2500 रुपए भी खर्च करता है तो केवल अयोध्या की स्थानीय अर्थव्यवस्था में 25000 करोड़ रुपए शामिल होंगे। यह श्रद्धालु अयोध्या जाते हुए वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर एवं मथुरा में बांके बिहारी मंदिर आदि में भी दर्शन के लिए अवश्य जाएंगे। इस प्रकार, वाराणसी एवं मथुरा की स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बल मिलेगा। कुल मिलाकर उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को प्रतिवर्ष लगभग एक लाख करोड़ रुपए की अतिरिक्त खुराक प्रत्यक्ष रूप से मिल सकती है। इस प्रत्यक्ष खुराक का स्थानीय अर्थव्यवस्था पर लगभग 5 गुना चक्रीय असर भी हो सकता है जो अंततः भारत के आर्थिक विकास में ही जुड़ने जा रहा है। धार्मिक पर्यटन से यातायात, होटल, स्थानीय स्तर पर निर्मित उत्पादों जैसे क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर निर्मित होते हैं। इससे भी स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिलता है। स्विटजरलैंड, इटली, फ्रांस,

अमेरिका, यूएई, आदि ने पर्यटन के बलबूते पर अतुलनीय आर्थिक विकास किया है एवं अपनी अर्थव्यवस्था को विकसित श्रेणी की अर्थव्यवस्था बना दिया है। इसी प्रकार अब अयोध्या में प्रभु श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के बाद भारत भी इस श्रेणी के देशों में शामिल होने जा रहा है। भारत की अर्थव्यवस्था में विकास दर 10 प्रतिशत के पार जा सकती है।

उत्तर प्रदेश अब देश के प्रमुख आध्यात्मिक केंद्र के रूप में अपनी दावेदारी पेश कर रहा है। भगवान शिव की पौराणिक नगरी काशी, मिर्जापुर का विंध्याचल धाम, संगमनगरी प्रयागराज, भगवान कृष्ण की लीलास्थली मथुरा–वृंदावन, गोरखपुर का गोरखनाथ मंदिर, नैमिषारण्य समेत पूरे प्रदेश में बहुत से धार्मिक स्थल हैं जिनकी अपनी विशेषता है और उनसे लोगों की आस्था जुड़ी है।ये धार्मिक स्थल सामूहिक रूप से उत्तर प्रदेश की आध्यात्मिक तस्वीर को समृद्ध करते हैं। योगी आदित्यनाथ सरकार उत्तर प्रदेश की धार्मिक और आध्यात्मिक विरासत को दुनिया के सामने प्रदर्शित करने के लिए लगातार प्रयासरत है।

राम मंदिर एक तरफ जहां प्रमुख आध्यात्मिक केंद्र के रूप में उभरा है तो दूसरी ओर यह पर्यटन तथा अयोध्या व उसके आसपास बुनियादी ढांचे के विकास के जरिए उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार, खास तौर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रदेश के आर्थिक विकास के लिए धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने पर लगातार जोर दे रहे हैं। इसके लिए योगी सरकार ने अयोध्या, काशी, मथुरा के साथ–साथ अन्य धार्मिक स्थलों के विकास को भी प्राथमिकता पर रखा है। यही नहीं यूपी के पर्यटन स्थलों की ब्रांडिंग पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। मुख्यमंत्री की इसी सोच का नतीज़ा है कि देश–दुनिया के पर्यटक उत्तर प्रदेश की ओर आकर्षित हो रहे हैं। आने वाला समय उत्तर प्रदेश में पर्यटन उद्योग के लिए संभावनाओं के नए द्वार खोलने जा रहा है जिसका सीधा लाभ स्थानीय स्तर पर लोगों को मिलना तय है।

माना जा रहा है कि अयोध्या वार्षिक आय के मामले में सारे रिकार्ड तोड़ सकता है। अभी देश में आंध्र प्रदेश में स्थित तिरुपति बालाजी से राज्य को 1200 करोड़ रुपये की आय होती है। तिरुपति बालाजी में हर वर्ष 2.5 करोड़ श्रद्धालु पहुंचते हैं। इसी तरह वैष्णो देवी में प्रतिवर्ष 80 लाख लोग जाते हैं, जहां से वहां 500 करोड़ रुपये की आय होती है। आगरा के ताज महल में 70 लाख लोगों के पहुंचने से 100 करोड़ तो आगरा फोर्ट में 30 लाख लोगों के माध्यम से 27.5 करोड़ रुपये की वार्षिक आय होती है। वेटिकन सिटी और मक्का की बात करें तो मक्का में प्रति वर्ष 2 करोड़ लोग आते हैं, जिससे सऊदी अरब को 12 बिलियन डॉलर की वार्षिक आय होती है, जबकि वेटिकन सिटी में 90 लाख लोग प्रतिवर्ष आते हैं जिनसे 315 मिलियन डॉलर की वार्षिक आय होती है।

राम मंदिर के निर्माण के बाद अयोध्या में काफी बदलाव देखने को मिल रहे हैं। पहले से व्यवसाय कर रहे स्थानीय कारोबारियों को तो इसका फायदा हुआ ही है बड़ी संख्या में दूसरे प्रदेशों के कारोबारी भी अयोध्या की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। जिस तरह से अयोध्या में सड़क, रेल और वायुमार्ग की कनेक्टिविटी मजबूत हो रही है उसे देखते हुए अयोध्या और उसके आसपास के क्षेत्रों में निवेश की काफी संभावनाएं हैं। यही वजह है कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम घोषित होने के साथ ही अयोध्या में संपत्तियों की कीमतें आसमान छूने लगी हैं। यही नहीं बड़ी–बड़ी कंपनियां अब अयोध्या को प्रमुख व्यावसायिक केंद्र के रूप में देख रही हैं खासतौर पर होटल व्यवसाय से जुड़े कारोबारी अब यहां निवेश की संभावनाएं तलाश रहे हैं। हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मौजूदगी में लखनऊ में संपन्न हुई ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी में अयोध्या की भी निवेश परियोजनाओं का शुभारंभ हुआ।

जानकारों का मानना है कि साल दर साल जैसे–जैसे अयोध्या में श्रद्धालुओं और पर्यटकों की संख्या में इज़ाफा होगा वैसे–वैसे रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे। ये रोजगार हॉस्पिटलिटी, टूर एंड ट्रैवल, मांग के अनुसार स्थानीय स्तर पर स्थापित होने वाले उद्योग–धंधों में होंगे जिससे यहां के लोगों की आर्थिक प्रगति के द्वार खुलेंगे।

◆

मो. : 9935097410

उमा राम सुभाउ जेहिं जाना

—संजीव कुमार

कलयुग में रामराज की स्थापना बिना राम की कृपा के संभव नहीं यह बात सुनने में तो अपने आप बहुत विलक्षण लग रही होगी लेकिन जब आप अंतर्मन से इस बात को स्वीकार करेंगे तो संभवत यह बात हृदय के पटल पर जरूर अपना स्थान बनाएगी क्योंकि आज भारतवर्ष में सनातनी परंपरा वेद और शास्त्रों के माध्यम से जो हमको उपलब्धि प्राप्त हो रही है उसमें श्री धाम अयोध्या में श्री राम लला सरकार की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा समारोह मानो भारतवर्ष में एक नई स्फूर्ति लेकर आया है जहां तक राम लाल मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का सवाल है तमाम सारे लोगों ने अपने—अपने आंतरिक विचार व्यक्त किये और इस भावना से आपस में कहीं ना कहीं टकराहट की स्थिति भी बनी पर जब आप शास्त्रों में जाएंगे तो जो परमात्मा की वास्तविक सत्ता है वह संसार के हर जीव में इस तरीके से विद्यमान है इसको चाहे किसी धर्म के माध्यम से जाने, चाहे किसी शास्त्र के माध्यम से और चाहे तो वेद और पुराणों के माध्यम से भी इसका बहुत गहराई से अध्ययन किया जा सकता है लेकिन जब ऐसे किसी प्रसंग में राजनीतिक प्रकरण जुड़ता है तो स्वाभाविक सी बात है कि पक्ष और विपक्ष के लोग अपने—अपने मत अवश्य प्रकट करते हैं लेकिन वह यह भूल जाते हैं कि वह जो विचार उनको मिल रहा है वह उसे परम तत्व के बिना संभव नहीं है जहां तक राम की बात है तो राम की महिमा को विभिन्न संत महात्माओं ने वेद पुराणों ने और शास्त्रों ने अपनी—अपनी परिभाषा से परिभाषित किया है मानवीय दृष्टिकोण से राम उसे तत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके बिना संसार में किसी भी चीज की कल्पना करना संभव नहीं है जैसे हमारे प्रसिद्ध कवि और दर्शन शास्त्री जो स्वयं परम तत्व का स्वरूप माने जाते थे कबीर साहब के विचार से अगर राम की परिभाषा को देखा जाए तो वह कोई एक युग में अपना प्रभाव नहीं दिखाते हैं बल्कि जब से या संसार बना है और जब तक यह संसार की सस्ती चलेगी उसके बाद तक उसे राम के महत्व को खत्म नहीं किया जा सकता है चाहे महर्षि वाल्मीकि जी हो फिर या तुलसीदास जी हो सभी ने उसे परम तत्व की चर्चा अपने—अपने ज्ञान और अध्ययन और अनुभव के आधार पर

भले ही की हो लेकिन उनको यह सौभाग्य तभी प्राप्त हुआ जब उसे परमपिता परमात्मा की कृपा हुई और उसे राम के तत्व को जिसको हम लोग समझने में पूरा जीवन लगा देते हैं नहीं समझ पाए उन महापुरूषों ने बहुत ही सरल परिभाषा में हम लोगों को जीवन जीने का जो एक दृष्टिकोण दिया है हमें उससे बहुत ही अधिक महत्व मिलता है और अपने उसे मानव जीवन के परम तत्व को प्राप्त करने के लिए जो रास्ता हमें रामचरितमानस और श्रीमद् भागवत महापुराण के माध्यम से जानकारी होती है उसमें भी राम के तत्व को महत्व बहुत ही अच्छी तरीके से समझ में आता है जहां तक वर्तमान परिवेश की बात है श्रीधाम अयोध्या में जब रामलला सरकार की स्थापना हुई और प्राण प्रतिष्ठा में देश के आम नागरिकों में जो जोश देखा गया वह अपने आप में एक सौभाग्यशाली क्षण ही कहा जा सकता है और जब कोई बालक जन्म लेता है तो युवावस्था के बाद फिर उसके द्वारा जब शासन काल की बात होती है तभी हम उसे रामराज की कल्पना करते हैं इस समय भारतवर्ष में जो परिस्थितियों है वह राम राज्य की ओर अग्रसर है और हम सभी को इस माहौल को और भी अधिक भक्ति मय वातावरण बनाते हुए उसे परम तत्व को जानने में जो अपना योगदान हो सकता है उसमें अपने आप को समर्पित रहकर देश और संसार के कल्याण की भावना से इस प्रकार के आयोजनों को हम अंतर मन से स्वीकार करें और अपने उसे परम तत्व को भी जाने। इसके लिए हमको परमपिता परमात्मा द्वारा मानव का शरीर प्राप्त हुआ है।

राम लला मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का सवाल है तमाम सारे लोगों ने अपने–अपने आंतरिक विचार व्यक्त किये और यह भावना आपस में कहीं ना कहीं टकराहट की स्थिति भी बनी पर जब आप शास्त्रों में जाएंगे तो जो परमात्मा की वास्तविक सत्ता है वह संसार के हर जीव में इस तरीके से विद्यमान है इसको चाहे किसी धर्म के माध्यम से जाने चाहे किसी शास्त्र के माध्यम से चाहे चाहे तो भेद और पुराणों के माध्यम से भी इसका बहुत गहराई से अध्ययन किया जा सकता है लेकिन जब ऐसे किसी प्रसंग में राजनीतिक प्रकरण जुड़ता है तो स्वाभाविक सी बात है कि पक्ष और विपक्ष के लोग अपने–अपने मत अवश्य प्रकट करते हैं लेकिन वह या भूल जाते हैं कि वह जो विचार उनको मिल रहा है वह उसे परम तत्व के बिना संभव नहीं है जहां तक राम की बात है तो राम की महिमा को विभिन्न संत महात्माओं ने वेद पुराणों ने और शास्त्रों ने अपनी अपनी परिभाषा से परिभाषित किया है। मानवीय दृष्टिकोण से राम उसे तत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके बिना संसार में किसी भी चीज की कल्पना करना संभव नहीं है जैसे हमारे प्रसिद्ध कवि और दर्शन शास्त्री जो स्वयं परम तत्व का स्वरूप माने जाते थे कबीर साहब के विचार से अगर राम की परिभाषा को देखा जाए तो वह कोई एक युग में अपना प्रभाव नहीं दिखाते हैं बल्कि जब से या संसार बना है और जब तक यह संसार की सस्ती चलेगी उसके बाद तक उसे राम के महत्व को खत्म नहीं किया जा सकता है चाहे महर्षि वाल्मीकि जी हों फिर या तुलसीदास जी हों सभी ने उसे परम तत्व की चर्चा अपने–अपने ज्ञान और अध्ययन और अनुभव के आधार पर भले ही की हो लेकिन उनको यह सौभाग्य तभी प्राप्त हुआ जब उसे परमपिता परमात्मा की कृपा हुई और उसे राम के तत्व को जिसको हम लोग समझने में पूरा जीवन लगा देते हैं

इस समय भारतवर्ष में जो परिस्थितियों है वह राम राज्य की ओर अग्रसर है और हम सभी को इस माहौल को और भी अधिक भक्तिमय वातावरण बनाते हुए उसे परम तत्व को जानने में जो अपना योगदान हो सकता है उसमें अपने आप को समर्पित रहकर देश और संसार के कल्याण की भावना से इस प्रकार के आयोजनों को हम अंतर मन से स्वीकार करें और अपने उसे परम तत्व को भी जान इसके लिए हमको परमपिता परमात्मा द्वारा मानव का शरीर प्राप्त हुआ है विडम्बना है कि हम संसार में आते ही उसे परम लक्ष्य से विमुख होकर सांसारिक चीजों में इतना सम्मिलित हो जाते हैं कि कदाचित् हमें अपना लक्ष्य ही नहीं पता रहता है लेकिन प्राणी मात्रा में वही राम नाम की सत्ता हमें हमेशा इस बात का एहसास कराती रहती है कि जीव का जो संसार में आने का मुख्य लक्ष्य है वह परमपिता परमात्मा को प्राप्त करना ही है।

नहीं समझ पाए उन महापुरूषों ने बहुत ही सरल परिभाषा में हम लोगों को जीवन जीने का जो एक दृष्टिकोण दिया है हमें उससे बहुत ही अधिक महत्व मिलता है और अपने उस मानव जीवन के परम तत्व को प्राप्त करने के लिए जो रास्ता हमें रामचरितमानस और श्रीमद् भागवत महापुराण के माध्यम से जानकारी होती है उसमें भी राम के तत्व को महत्व बहुत ही अच्छी तरीके से समझ में आता है जहां तक वर्तमान परिवेश की बात है श्रीधाम अयोध्या में जब रामलला सरकार की स्थापना हुई और प्राण प्रतिष्ठा में देश के आम नागरिकों में जो जोश देखा गया वह अपने आप में एक सौभाग्यशाली क्षण ही कहा जा सकता है और जब कोई बालक जन्म लेता है तो युवावस्था के बाद फिर उसके द्वारा जब शासन काल की बात होती है तभी हम उसे रामराज की कल्पना करते हैं।

इस समय भारतवर्ष में जो परिस्थितियों है वह राम राज्य की ओर अग्रसर है और हम सभी को इस माहौल को और भी अधिक भक्ति में वातावरण बनाते हुए उसे परम तत्व को जानने में जो अपना योगदान हो सकता है उसमें अपने आप को समर्पित रहकर देश और संसार के कल्याण की भावना से इस प्रकार के आयोजनों को हम अंतर मन से स्वीकार करें और अपने उसे परम तत्व को भी जान इसके लिए हमको परमपिता परमात्मा द्वारा मानव का शरीर प्राप्त हुआ है विडम्बना है कि हम संसार में आते ही उसे परम लक्ष्य से विमुख होकर सांसारिक चीजों में इतना सम्मिलित हो जाते हैं कि कदाचित् हमें अपना लक्ष्य ही नहीं पता रहता है लेकिन प्राणी मात्रा में वही राम नाम की सत्ता हमें हमेशा इस बात का एहसास कराती रहती है कि जीव का जो संसार में आने का मुख्य लक्ष्य है वह परमपिता परमात्मा को प्राप्त करना ही है लेकिन हम उस लक्ष्य को कैसे प्राप्त करें उसके लिए हमें शास्त्रों में वर्णित तमाम उन चीजों का अध्ययन करना पड़ता है जिससे हमारे महापुरुष मुक्त हुए हैं और संत महात्माओं के माध्यम से जो वाणी प्रकट की गई है उसमें परमपिता परमात्मा के द्वारा किस तरह अवतार लेकर संसार में जीवन जीने की कला को आम मानव के लिए सरलता पूर्वक ढंग से प्रस्तुत किया गया है यह भी अपने आप में एक महत्वपूर्ण पहलू है अगर हम कबीर साहब के उस भजन पर थोड़ा गौर कर ले जिसमें उन्होंने बहुत ही स्पष्ट दर्शन में कहा है कि बिना राम रघुनाथ जगत में अपना नहीं कोई इसी बात को आगे बहुत अच्छे तरीके से प्रस्तुत करते हुए उन्होंने संकेत भी किया है कि ''देहरी तक मेरी सोना, द्वार तक सगा भाई, लोक कुटुंब मरघट तक है, हंस अकेला जाए'' कबीर साहब के शब्दों में हमारी आत्मा को हंस का स्वरूप बताया गया है लेकिन विडंबना है कि हम हंस होते भी अपनी गिनती कौवे में करने की प्रतिस्पर्धा में यह भूल गए हैं कि हमारा परम लक्ष्य तो वह राम ही है जिसने संसार में हमको यह अवसर प्रदान किया है इसलिए हम सभी लोगों को मानव मात्र बल्कि प्राणी मात्र को इस बात का अहसास होते रहना चाहिए कि जब तक राम की सत्ता है, तभी तक हमारा जीवन और हमारा दर्शन है। बिना राम की कल्पना कोरी कल्पना है। इसलिए हमको इस व्यवस्था को शहर स्वीकार करना चाहिए और अपने जीवन को धन्य बना लेना चाहिए।

◆

मो. : 9415149576

आस्था के संकल्प की सिद्धि

—राघवेन्द्र प्रताप सिंह

अवध में राम आ चुके हैं और सारी अयोध्या नगरी उससे भाव विभोर हो उठी है। भारत के इतिहास में वर्ष 2024 अविस्मरणीय स्मृति के रूप में दर्ज़ हो गया है। लगभग पांच शताब्दियों की सुदीर्घ प्रतीक्षा के बाद 22 जनवरी, 2024 को सनातन भारतीय संस्कृति के प्राण, हमारे आदर्श प्रभु श्री रामलला अपनी जन्मभूमि अयोध्या में नव्य, भव्य और दिव्य मंदिर में विराजमान हो गये हैं। इसके साथ ही श्रीराम के वनवास के साथ साथ अयोध्या नगरी का भी वनवास खत्म हो गया है। अब इसे विश्व पटल पर एक ऐसे वैश्विक आध्यात्मिक नगरी बनाने का काम किया जा रहा जिसे देख दुनिया कह उठे कि ये वही अयोध्या का रामराज है जो अब सुशासन के साथ आगे बढ़ेगा। पूरा विश्व इस अलौकिक अवसर का गवाह बना है और भारतीय जन आस्था के संकल्प की सिद्धि के प्रतीक श्री राम जन्मभूमि मंदिर की स्थापना भारत के सांस्कृतिक गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा है। हम सभी आजादी के अमृत काल में प्रवेश कर चुके हैं। ऐसे विशिष्ट कालखंड में हमारी सांस्कृतिक विरासत का यह दिव्य प्रतिमान हमें और आने वाली पीढ़ियों को प्रभु श्रीराम के आदर्शों पर चलने को सदैव प्रेरित करता रहेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में भगवान राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा समारोह में आए लोगों के सामने दिए अपने भाषण में कहा था कि श्हमारे राम आ गए हैं। रामलला अब टेंट में नहीं बल्कि दिव्य मंदिर में रहेंगे। आज हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है। निश्चित रूप से यह एक अभूतपूर्व सांस्कृतिक उपलब्धि है। प्रधानमंत्री मोदी ने देश से जो वादा किया था उसे पूरा किया। ये देश मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और श्रीराम भक्तों का है और एक दिन राम और सत्य एकाकार हो जायेंगे। 22 जनवरी ऐसी ही तिथि थी। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल ने अयोध्या में रामभक्तों की सुविधा और सुगम दर्शन के लिए प्रदेश सरकार की ओर से किये जा रहे प्रयासों की चर्चा करते हुए कहा कि अयोध्या में विकास के अनेक उपयोगी कार्य संपन्न कराए गये हैं, आज अयोध्या जल–थल–नभ की बेहतरीन कनेक्टिविटी से सम्पन्न हो रहा है, यहां लगभग 31,000 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाएं जारी हैं। उन्होंने कहा कि आज अयोध्या अपने त्रेतायुगीन वैभव के साथ नगरीय विकास और संपन्नता के मॉडल के रूप में नवीन मानक गढ़ रहा है।

राम मंदिर के ऐतिहासिक साक्ष्य हमेशा से थे मौजूद :

इतिहास के पन्नों में एक बात स्पष्ट रूप से दर्ज़ है कि मुगल या कोई अन्य विदेशी आक्रांता रहा हो, जिसने भी

भारत पर हमला किया उसने मंदिरों को तुड़वाकर उन स्थानों पर निर्माण कराया। 1634 में थॉमस हर्बर्ट भी राम के महल का जिक्र करते हैं। 1717 में जयपुर के राजपूत राजा सवाई जयसिंह द्वितीय अयोध्या में जमीन खरीदते हैं। जयपुर सिटी पैलेस में मौजूद दस्तावेज़ में रामजन्मभूमि के स्थान का जिक्र मिलता है। जोसफ टेफेन्थैलर (Joseph Tiefenthaler) 1767 में इंडिया आए, उन्होंने डिस्क्रिप्टो इंडिया किताब लिखी। इस किताब में उन्होंने बताया कि राम के किले को ढहाया गया, जिसे राम का जन्मस्थान कहा जाता है। इसके स्थान पर मस्जिद बनाई गई। 1838 में सर्वे करने वाले ब्रिटिश अधिकारी Montgomery Martin ने लिखा कि

अवध में राम आ चुके हैं और सारी अयोध्या नगरी उससे भाव विभोर हो उठी है। भारत के इतिहास में वर्ष 2024 अविस्मरणीय स्मृति के रूप में दर्ज़ हो गया है। लगभग पांच शताब्दियों की सुदीर्घ प्रतीक्षा के बाद 22 जनवरी, 2024 को सनातन भारतीय संस्कृति के प्राण, हमारे आदर्श प्रभु श्री रामलला अपनी जन्मभूमि अयोध्या में नव्य, भव्य और दिव्य मंदिर में विराजमान हो गये हैं। इसके साथ ही श्रीराम के वनवास के साथ साथ अयोध्या नगरी का भी वनवास खत्म हो गया है। अब इसे विश्व पटल पर एक ऐसे वैश्विक आध्यात्मिक नगरी बनाने का काम किया जा रहा जिसे देख दुनिया कह उठे कि ये वही अयोध्या का रामराज है जो अब सुशासन के साथ आगे बढ़ेगा।

मस्जिद के पिलर मंदिर से लिए गए हैं। मशहूर आर्कियोलॉजिस्ट केके मोहम्मद 1976–77 में विवादित ढांचे की हुई ASI जांच के समय टीम का हिस्सा थे। अपने बयान में वो कहते हैं कि एएसआई के पास इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि बाबरी मस्जिद से पहले वहां एक विशाल मंदिर था। बाबरी मस्जिद से एक शिलालेख भी मिला। इस शिलालेख का अनुवाद केवी रमेश ने किया। इस शिलालेख को विष्णु हरि शिलालेख कहा जाता है। इसके लिए केके मोहम्मद कहते हैं कि इस शिलालेख में लिखा है यह मंदिर उस विष्णु को समर्पित है, जिसने 10 सिर वाले को मारा है यानी रावण को मारा है और वो विष्णु जिन्होंने बाली का वध किया यानी

कि राम। उन्होंने बताया कि यह शिलालेख 12वीं शताब्दी का है। यह दर्शाता है कि मस्जिद से पहले 12वीं सदी में वहां एक मंदिर हुआ करता था।

अयोध्या में नई अमृत भारत ट्रेनों और वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी :

जिस तरह भव्य राम मंदिर ने आकार लिया है, उसी भाव से अयोध्या का कायाकल्प करने के लिए भारत सरकार ने दूरदर्शी कदम उठाते हुए अयोध्या की कनेक्टिविटी में व्यापक बदलाव की योजना बनाई है, जिससे प्राचीन शहर को पहुंच के एक नए युग में प्रवेश कराया जा सके। इस क्रमिक विकास में सबसे आगे है अयोध्या का हाल ही में उद्घाटन किया गया और नये सिरे से तैयार रेलवे स्टेशन, जिसका नाम अब बदलकर अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन कर दिया गया है। 240 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से विकसित, यह कनेक्टिविटी को आधुनिक बनाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। अचंभित कर देने वाली तीन मंजिला लिफ्ट, एस्केलेटर, फूड प्लाजा और पूजा की जरूरतों को पूरा करने वाली दुकानें, आधुनिक सुविधा के साथ आध्यात्मिकता का मिश्रण हैं। उपयोगी और व्यावहारिक होने के अलावा, यह क्लॉकरूम, चाइल्ड केयर रूम और वेटिंग हॉल जैसी सुविधाओं के साथ समावेशिता को प्राथमिकता देता है, गर्व से 'सभी के लिए सुलभ' और 'आईजीबीसी प्रमाणित ग्रीन स्टेशन बिल्डिंग' का लेबल देता है। इस कायाकल्प का महत्व तब पता चला जब प्रधानमंत्री ने स्वयं अपनी उपस्थिति से अयोध्या की शोभा बढ़ाई और एक अभूतपूर्व विकास–अमृत भारत एक्सप्रेस, जो देश में सुपरफास्ट यात्री ट्रेनों की एक नई श्रेणी है, को हरी झंडी दिखाई। इसके अलावा कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने अयोध्या–आनंद विहार टर्मिनल वंदे भारत एक्सप्रेस का भी उद्घाटन किया।

महर्षि वाल्मिकी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के उद्घाटन :

दिसम्बर 2023 में महर्षि वाल्मिकी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के उद्घाटन के साथ अयोध्या का परिवर्तन रेलवे से भी आगे बढ़ गया है। 1450 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से विकसित, चरण 1 में 6500 वर्गमीटर में फैले एक अत्याधुनिक टर्मिनल की शुरुआत की गई है, जो सालाना 10 लाख यात्रियों की सेवा के लिए तैयार है। यह टर्मिनल, नवनिर्मित श्री राम मंदिर को प्रतिबिंबित करता है, इसके अग्रभाग पर मंदिर–प्रेरित वास्तुकला है, जबकि इसके अंदरूनी हिस्से में स्थानीय कला और भित्ति चित्र शहर की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं। दूसरे चरण में, हवाई अड्डे का लक्ष्य सालाना 60 लाख यात्रियों को सेवा प्रदान करना है, बेहतर कनेक्टिविटी को बढ़ावा देना है जो पर्यटन को प्रोत्साहित करने, व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए तैयार है।

अयोध्या में फलेगा फूलेगा पर्यटन :

अयोध्या का परिवर्तन केवल परिवहन बुनियादी ढांचे तक सीमित नहीं है और इसका विस्तार अयोध्या के समग्र विकास तक है। प्रधानमंत्री की हालिया यात्रा में चार नई पुनर्विकसित, चौड़ी और सुंदर सड़कों–रामपथ, भक्तिपथ, धर्मपथ और श्री राम जन्मभूमि पथ का उद्घाटन हुआ, जिससे तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की पहुंच बढ़ गई। अयोध्या के बुनियादी ढांचे का पुनर्विकास और पर्यटन क्षेत्र में निवेश शहर के परिवर्तन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदर्शित करता है। कनेक्टिविटी में सुधार, आगंतुक अनुभव को बढ़ाने और अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करके, अयोध्या तीर्थयात्रा, पर्यटन और आर्थिक समृद्धि का एक संपन्न केन्द्र बनने की ओर अग्रसर है।

अयोध्या पंचांग का निर्माण :

उत्तर प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह द्वारा भगवान श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत को संजोये हुए भारतीय नववर्ष विक्रम सम्वत् 2080 शक सम्वत् 1945 सन् 2023–24 का अयोध्या पंचांग टेबल कैलेण्डर का विमोचन किया जा चुका है। जयवीर सिंह ने इस अवसर पर कहा था कि केन्द्र और उत्तर प्रदेश की सरकार भारत की प्राचीन गौरवशाली संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन करके गाँव–गाँव तक पहुंचने के साथ ही युवा पीढ़ी को इसकी महत्ता की जानकारी देना चाहती है। इसके अलावा प्राचीनकाल से सनातन संस्कृति में प्रचलित पंचांग के महत्व से परिचित कराने का हरसंभव प्रयास कर रही है। इसी दिशा में संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश की ओर से अयोध्या पंचांग तैयार कराया गया है। इस पंचांग में कालगणना की विश्वसनीय गणना के साथ ही समस्त धार्मिक

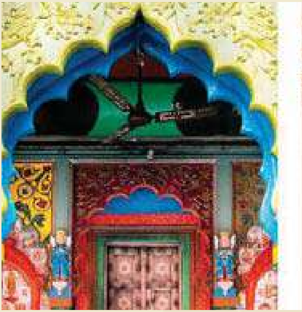

पर्वों, मासों, नक्षत्रों आदि की सटीक जानकारी दी गयी है। उत्तर प्रदेश के पर्यटन मंत्री ने कहा है कि सनातन संस्कृति में पंचांग प्राचीनकाल से ही प्रचलित रहे हैं। इनकी गणना के अनुसार सारे शुभ कार्यों की शुरूआत की जाती है। भारतीय जनमानस में इनकी विश्वसनीयता आदिकाल से बनी हुई है। इसमें शक सम्वत्, वेद, नक्षत्रों तथा ज्योतिष गणना से संबंधित विभिन्न जानकारी दी गई है। उन्होंने कहा कि यह पंचांग सभी लोगों के लिए उपयोगी एवं संग्रहणीय हो सके, इसके लिए हर संभव प्रयास किया गया है।

अयोध्या में सांस्कृतिक केंद्र खोलेगा थाईलैंड :

थाईलैंड से भारत आए प्रतिनिधिमंडल ने रामलला के दरबार में हाज़िरी लगाई और साथ ही श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य विमलेंद्र मोहन प्रताप मिश्र से मुलाकात कर उन्हें अयोध्या में सांस्कृतिक केंद्र खोलने के लिए एक प्रस्ताव भी सौंपा। प्रतिनिधिमंडल में शामिल लोग राममंदिर निर्माण कार्य के साक्षी भी बने। प्रतिनिधिमंडल में शामिल थाईलैंड में भारत के राजदूत डॉ. परविंदर सिंह ने बताया है कि भगवान राम की जन्मभूमि के रूप में, अयोध्या हिंदू धर्म के लाखों भक्तों के दिलों में एक विशेष स्थान रखती है। इसको ध्यान में रखते हुए उत्तर प्रदेश में वाट फ्रॉम अयोध्या, संस्कृति मंत्रालय, एक कला और सांस्कृतिक केंद्र के विकास और स्थापना को लेकर प्रस्ताव डॉ. विमलेंद्र मोहन को सौंपा है। वाट फ्रॉम अयोध्या का लक्ष्य अयोध्या शहर के समग्र विकास में योगदान देना है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना के लिए उपयुक्त भूमि की तलाश है। भौतिक विकास के अलावा अयोध्या की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और संरक्षित करने के लिए संस्कृति मंत्रालय की स्थापना का प्रस्ताव दिया है। यह मंत्रालय न केवल स्थानीय समुदाय के बीच बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसके अलावा कला और सांस्कृतिक केंद्र भारतीय नागरिकों और वैश्विक पर्यटकों के लिए सुलभ कला के अवसर प्रदान करने में सहायक होगा। यह केंद्र कलात्मक अभिव्यक्ति, अयोध्या की विविध सांस्कृतिक परंपरा को प्रदर्शित करने और रचनात्मकता को बढ़ावा देने का केंद्र होगा। यह थाई–भारतीय सहयोग के लिए एक प्रकाशस्तंभ बन सकता है। राममंदिर के ट्रस्टी डॉ. बिमलेंद्र मोहन प्रताप मिश्र ने बताया कि हम इस प्रस्ताव को आगे बढ़ाएंगे। यह पहल अयोध्या व थाईलैंड के संबंधों को नया आयाम देगी और मजबूती प्रदान करेगी।

◆

मो. : 9415650340

अयोध्या होगा देश का पहला सोलर सिटी

–सरिता त्रिपाठी

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकार इस समय देश के सबसे बड़े राज्य को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए काम कर रही है। केंद्र सरकार ने ऊर्जा आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य तय कर रखा है और इस लक्ष्य की पूर्ति में उत्तर प्रदेश की बड़ी भूमिका तय होनी जरूरी है। इसी वजह से योगी सरकार ने सौर ऊर्जा के विकास पर विशेष जोर देना शुरू कर दिया है। अयोध्या को भारत का पहला सोलर एनर्जी सिटी बनाने के लिए तैयारियां जोरों शोरों पर हैं। 165 एकड़ में विकसित हो रहे 40 मेगावाट सौर ऊर्जा प्लांट के जरिए अयोध्या को स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन का रोल मॉडल बनाने का काम किया जा रहा है। सीएम ने इस प्राचीन नगरी को सोलर सिटी के रूप में विकसित करने की घोषणा की थी। सीएम ने इस प्राचीन नगरी को सोलर सिटी के रूप में विकसित करने की घोषणा की थी। अयोध्या की गलियों, प्रमुख चौराहों, मार्गों, घाटों के बाद अब पार्कों में सोलर ट्री लगाए जा रहे हैं। फिलहाल 34 पार्कों में एक किलोवाट, आठ पार्कों में ढाई किलोवाट के सोलर ट्री लगाए जा चुके हैं। इसके अलावा एक किलोवाट के छह व ढाई किलोवाट से जुड़े 10 स्थानों पर तेजी से काम चल रहा है। अयोध्या के पार्कों को सौर ऊर्जा से रोशन करने के लिए प्रयास जारी है। फिलवक्त शहर के 52 स्थानों को चयनित किया गया है। उत्तर प्रदेश में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए योगी आदित्यनाथ की अगुवाई वाली उत्तर प्रदेश सरकार ने पिछले साल महात्मा गांधी की जयंती दो अक्टूबर से पूरे माह भर लखनऊ और वाराणसी में "हर घर सोलर अभियान" आयोजित किया। इससे राज्य सरकार द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में बढ़ाई जा रही जागरूकता का पता चलता है। योगी सरकार के अनुसार इस अभियान का उद्देश्य उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपीनेडा) द्वारा सौर ऊर्जा नीति–2022 के

अन्तर्गत निर्धारित 6000 मेगावाट सोलर रूफटॉप संयंत्र के (आवासीय/व्यावसायिक) लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में प्रयास करना है। इसके अलावा उत्तर प्रदेश राज्य पर्यटन विकास लिमिटेड और यूपी नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास एजेंसी के बीच सौर ऊर्जा से चलने वाली नावों के संचालन के लिए समझौता भी हो चुका है। इस समझौते के तहत तीर्थनगरी गढ़मुक्तेश्वर में अत्याधुनिक सोलर नावों का संचालन शुरू किया जाना है। करीब एक करोड़ रूपये की लागत वाली इस नाव में एक बार में 12 से 15 लोग सवार हो सकेंगे। नेड़ा के अधिकारियों का दावा है कि उत्तर प्रदेश पहला ऐसा राज्य होगा, जहां सोलर बोट शुरू की जा रही हैं। तीर्थनगरी आने वाले श्रद्धालुओं को सोलर बोट में बैठकर लुत्फ उठाने का मौका मिलेगा, बल्कि इस नाव के माध्यम से गंगा स्थल का वायु प्रदूषण भी कम होगा। यह नाव रात को रंगीन लाइटों से जगमग रहा करेगी। जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करते हुए नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध दिखाई दे रही है। बायोडीजल के उत्पादन, वितरण से संबंधित एड्वांस्ड वेब पोर्टल का विकास भी करने का निर्णय योगी सरकार ने किया है। उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपीनेडा) के प्रयोग के लिए नए आधुनिक वेब पोर्टल का विकास यूपी इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड कराएगा। नया पोर्टल बायोडीजल के उत्पादन व वितरण से संबंधित एनओसी व लाइसेंस आवंटन प्रक्रिया सरलता के साथ पूर्ण करने में सक्षम होगा। यह पोर्टल कई खूबियों से लैस होगा तथा बायोडीजल के उत्पादन, वितरण, एनओसी क्लियरेंस, लाइसेंस आवंटन, पंजीयन, वाद निस्तारण तथा भुगतान संबंधी कार्यों की पूर्ति के लिए 'वन स्टॉप सॉल्यूशन प्लैटफॉर्म' की तरह कार्य करेगा। पोर्टल को इस लिहाज से निर्मित किया जाएगा कि वह निवेश मित्र के साथ इंटीग्रेट होकर कार्य करने में सक्षम हो। वेबसाइट में एप्लिकेंट रजिस्ट्रेशन, एप्लिकेशन अप्रूवल, एनओसी मॉड्यूल, पेमेंट मॉड्यूल, रीन्यूअल मॉड्यूल, क्वेरी सब्मिशन, रिपोर्टिंग मॉड्यूल, एसएमएस व ई-मेल इंटीग्रेशन, क्लाउड सर्वर, सिक्योरिटी ऑडिट, हेल्पडेस्क मॉड्यूल तथा वेब सर्वर डोमेन के लिए एसएसएल जैसे फीचर्स होंगे। इसमें एक डैशबोर्ड होगा जिसमें एप्लिकेंट लॉगिन, मैनुफैक्चरिंग यूनिट, रीटेलर यूनिट जैसे लॉगिन इंटरफेस रहेंगे। यह रिस्पॉन्सिव डिजाइन टेक्नोलॉजी आधारित होगा। इसका डेटा ट्रांसफर बैंडविड्थ 1000 गीगाबाइट प्रति सेकेंड होगा जबकि 500 गीगाबाइट तक डिस्क टू डिस्क बैकअप स्टोरेज की सुविधा से लैस होगा। इसके साथ ही, इसमें लाइव टेलिकास्टिंग की सुविधा भी रहेगी। यह वेब पोर्टल यूजर फ्रेंडली होगा तथा इसके जरिए त्वरित वाद निस्तारण की प्रक्रिया को भी बल मिलेगा।

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकार इस समय देश के सबसे बड़े राज्य को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए काम कर रही है। केंद्र सरकार ने ऊर्जा आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य तय कर रखा है और इस लक्ष्य की पूर्ति में उत्तर प्रदेश की बड़ी भूमिका तय होनी जरूरी है। इसी वजह से योगी सरकार ने सौर ऊर्जा के विकास पर विशेष जोर देना शुरू कर दिया है। अयोध्या को भारत का पहला सोलर एनर्जी सिटी बनाने के लिए तैयारियां जोरों शोरों पर हैं। 165 एकड़ में विकसित हो रहे 40 मेगावाट सौर ऊर्जा प्लांट के जरिए अयोध्या को स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन का रोल मॉडल बनाने का काम किया जा रहा है। सीएम ने इस प्राचीन नगरी को सोलर सिटी के रूप में विकसित करने की घोषणा की थी। सीएम ने इस प्राचीन नगरी को सोलर सिटी के रूप में विकसित करने की घोषणा की थी। अयोध्या की गलियों, प्रमुख चौराहों, मार्गों, घाटों के बाद अब पार्कों में सोलर ट्री लगाए जा रहे हैं। फिलहाल 34 पार्कों में एक किलोवाट, आठ पार्कों में ढाई किलोवाट के सोलर ट्री लगाए जा चुके हैं।

नवीकरणीय ऊर्जा पर जोर

प्रदेश के विकास के साथ-साथ ऊर्जा की माँग में अनवरत बढ़ोत्तरी हो रही है। ऊर्जा के परम्परागत स्त्रोत सीमित होने और उनके दोहन से पर्यावरणीय प्रदूषण बढ़ने के मद्देनजर नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों पर आधारित

ऊर्जा के उत्पादन को बढ़ाने तथा इसके प्रचार–प्रसार को उच्च प्राथमिकता प्रदान की जा रही है। ऊर्जा की मुख्यधारा में महत्वपूर्ण सहभागिता करने के लिये अब आगे नयी और वृहत्तर सम्भावनायें स्पष्ट दिखाई दे रही है। बायोमास एवं लघु जलदृविद्युत के साथ–साथ अब सौर ऊर्जा पर आधारित मेगावाट क्षमता की बड़ी परियोजनाओं की स्थापना का मार्ग भी प्रशस्त हो रहा है। प्रदेश में ग्रिड–संयोजित सोलर पावर जनरेशन' तथा रूफटॉप पावन जनरेशन की दिशा में कार्य किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने में उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा

विकास अभिकरण (यूपीनेडा) की महत्वपूर्ण भूमिका है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा अतिरिक्त ऊर्जा स्त्रोत विभाग के अधीन अप्रैल 1983 में वैकल्पिक ऊर्जा विकास संस्थान का गठन एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में किया गया। इस संस्था का नाम अब उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपीनेडा) कर दिया गया है। प्रारम्भ से यह अभिकरण प्रदेश में विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन के लिये स्टेट नोडल एजेन्सी के रूप में भी कार्य कर रहा है। प्रदेश में उपलब्ध अक्षय ऊर्जा स्त्रोतों यथा–सौर ऊर्जा' लघु जल विद्युत एवं बायोमास पर आधारित विद्युत उत्पादन की क्षमता के विकास हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। सौर ऊर्जा से विद्युत उत्पादन के लिये विभिन्न क्षमताओं के सोलर पावन प्लाण्ट्स स्थापित किये जा रहे हैं। प्रदेश की चीनी मिलों में कोदृजनरेशन तथा धान की भूसी आदि बायोमास पर आधारित विद्युत उत्पादन परियोजनाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त निजी उधमियों के सहयोग से लघु जल विद्युत परियोजनाओं को कार्यान्वित कराया जा रहा है। प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में सौर ऊर्जा के उपयोग की व्यापक सम्भावनाओं के दृष्टिगत विशेष योजनाएं लागू की जा रही हैं। अविद्युतीकृत अथवा विद्युत आपूर्ति की समस्या से ग्रस्त ग्रामों में रिमोट ग्राम विद्युतीकरण अथवा मिनीदृग्रिड सोलर पावर प्लान्ट की योजनायें ली जा रही हैं। चयनित ग्रामों में सामुदायिक मार्ग प्रकाश की सुविधा हेतु सोलर स्ट्रीय लाईट संयंत्रों की स्थापना की जा रही है। लोहिया आवास योजना के अंतर्गत लोहिया आवासों में सोलर पावर पैक की व्यवस्था की जा रही हैं कृषि के क्षेत्र में प्रदेश के तराई एवं पूर्वान्चल क्षेत्रों में लघु एवं सीमान्त कृषकों को सिंचाई हेतु अनुदान पर सोलर पम्प स्थापित कर लाभान्वित किया जा

रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को स्वच्छ पेय जल की सुविधा उपलब्ध कराये जाने के साथ–साथ कक्षाओं में पंखों की व्यवस्था हेतु सोलर पावर प्लाण्ट की स्थापना की योजना क्रियान्वित की जा रही है। गरीब ग्रामीण परिवारों को सब्सिडाइज्ड सोलर पैक की व्यवस्था से लाभान्वित किये जाने की योजना तथा ग्राम पंचायतों में सार्वजनिक 8 स्थलों पर सोलर स्ट्रीट लाईट की व्यवस्था की योजना प्रस्तावित है। नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतो पर आधारित संयंत्रों परियोजनाओं की स्थापना संचालनों अनुरक्षण एवं सर्विसिंग के विषय में दक्षता के विकास हेतु लखनऊ तथा मऊ में प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित हैं। अक्षय ऊर्जा संयंत्रों की सर्विसिंग मरम्मत हेतु प्रशिक्षण की बढ़ती हुयी आवश्यकता के दृष्टिगत जनपद कन्नौज में एक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की जा रही है।

उत्तर प्रदेश की सौर ऊर्जा नीति– 2017

इस नीति के अनुसार 2022 तक कुल 10700 मेगावाट के सोलर प्लांट बनाये जाने थे। बुंदेलखण्ड क्षेत्र में गैर कृषि भूमि की उपलब्धता के कारण अधिकांश सोलर पार्क ललितपुर, जालौन, महोबा, झाँसी, सोनभद्र, मिर्जापुर आदि जिलों में स्थापित किए जाने है। भारत एक उष्णकटिबंधीय (ट्रापिकल) देश है, जिसमें लगभग 300 दिन सौर विकिरण प्राप्त होता है तथापि देश के ऊर्जा मिश्रण में सौर ऊर्जा का योगदान अत्यन्त न्यून है। देश में कुल स्थापित 329000 मेगावाट क्षमता में से सोलर फोटोवोल्टाईक संयंत्रो से विद्युत उत्पादन की क्षमता मात्र 12500 मेगावाट अप्रैल, 2017 तक थी। सौर पॉवर परियोजनाओं की आर्थिक व्यवहारिता एवं जीवाष्म ईंधन के मूल्यों में वृद्धि के कारण भविष्य में सौर पॉवर की मार्केट में प्रभावी बढ़ोत्तरी अपेक्षित है। भारत सरकार द्वारा वर्ष 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से 40 प्रतिशत विद्युत उत्पादन की बचनबद्वता और उक्त के अंतर्गत वर्ष 2022 तक 100000 मेगावाट सोलर पॉवर से लक्षित उत्पादन, जिसमें से 40000 मेगावाट सोलर रूफटॉप परियोजना की स्थापना से प्राप्त किया जाना निश्चित है, के आलोक में सौर ऊर्जा से विद्युत उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा। इसके अतिरिक्त संशोधित राष्ट्रीय टैरिफ नीति – 2016 के अनुसार वर्ष 2021 तक सौर ऊर्जा की 08 प्रतिशत भागीदारी (जल विद्युत उत्पादन को छोड़कर) राज्य के ऊर्जा मिश्रण में लक्षित है। उत्तर प्रदेश सरकार नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से विद्युत उत्पादन हेतु कृत संकल्पित है एवं उसके द्वारा आर्थिक एवं पर्यावरणीय उद्देश्यों को बढ़ावा देते हुए सतत् विकास गति प्राप्त करने हेतु आवश्यक कदम उठाये जा रहे है। राज्य में सौर ऊर्जा की संभावित क्षमता 22300 मेगावाट है, जिसके दोहन से राज्य सरकार राज्य की ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति एवं नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एम.एन.आर.ई.) भारत सरकार द्वारा राज्य के लिए सौर ऊर्जा उत्पादन हेतु निर्धारित 10700 मेगावाट लक्ष्य (जिसके अंतर्गत 4300 मेगावाट लक्ष्य रूफटॉप परियोजनाओं के लिए निर्धारित है) की प्राप्ति हेतु करना चाहती है। राज्य में ऊर्जा की मांग की पूर्ति एवं उपलब्धता समस्त ग्रामीण एवं शहरी परिवारों को वर्ष 2018–19 तक 24 घण्टे विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराने का राज्य सरकार का लक्ष्य था। इस महत्वकांक्षी लक्ष्य की पूर्ति के लिए उत्तर प्रदेश में पॉवर सेक्टर परिदृश्य को पूर्णतया रूपांतरित करने एवं सौर ऊर्जा की वृहद सम्भावनाओं के दोहन की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त राज्य में सौर ऊर्जा परिनियोजन से निवेश आकर्षित

होगा, जिससे राज्य में रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी होगी। सोलर उद्योगों द्वारा परियोजनाओं की कमिशनिंग के पूर्व एवं निर्माण अवधि में तथा सौर परियोजनाओं के पूर्ण उपयोगी जीवनकाल में परियोजनाओं के संचालन एवं रखरखाव हेतु नियमित रोजगार उपलब्ध होता है। सोलर उद्योगों में निवेश एवं घरेलू/स्थानीय सोलर पैनल विनिर्माण से कुशल एवं अकुशल क्षेत्र में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित हो सकेगें।

उत्तर प्रदेश सौर ऊर्जा नीति– 2022

ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के सम्बन्ध में वैश्विक प्रतिबद्धता के दृष्टिगत हरित ऊर्जा की आपूर्ति पर बल दिया जाना आवश्यक है। गैर जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से 50 प्रतिशत संचित विद्युत उत्पादन क्षमता वर्ष 2030 तक स्थापित करने हेतु भारत सरकार वचनबद्ध है। उ0प्र0 सरकार जलवायु परिवर्तन के वर्तमान और संभावित प्रभाव को महत्व देते हुये राज्य में स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देने के लिए संकल्पित है। उ.प्र. में वृहद सौर ऊर्जा संसाधन एवं गीगावाट स्केल की सौर ऊर्जा क्षमता उत्पन्न करने की अपार सम्भावनायें है। इस नीति के द्वारा राज्य की पूर्ण सौर ऊर्जा क्षमता का लाभ उठाने के लिए एक समग्र परिस्थितिकी तंत्र विकसित करने की योजना बनाई गयी है। भारत के महत्वाकांक्षी सौर ऊर्जा क्षमता विस्तार कार्यक्रम के कदम से कदम मिलाने के लिए उ.प्र. सरकार राज्य में रूफटॉप सोलर पीवी परियोजनाओं की स्थापना, विकेन्द्रित सौर ऊर्जा प्रणाली, अल्ट्रा मेगा सौर ऊर्जा पार्क और यूटिलिटी स्केल परियोजना से सौर ऊर्जा का विस्तार करने के लिए प्रतिबद्ध है। उत्तर प्रदेश सौर ऊर्जा नीति– 2022 का उद्देश्य उत्तर प्रदेश में विश्वसनीय और टिकाऊ सौर ऊर्जा की पहुँच सभी के लिए सुनिश्चित कराना है। यह नीति राज्य में ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए, जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने एवं पारंपरिक और नवीकरणीय ऊर्जा का "इष्टतम ऊर्जा मिश्रण" प्राप्त करने पर बल देती है। यह नीति सौर ऊर्जा उत्पादन और भंडारण के क्षेत्र में निजी क्षेत्र के निवेश के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने का लक्ष्य रखती है। इसके तहत निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करना और सौर ऊर्जा के विस्तारण के लिए निवेश के अवसर प्रदान करने पर जोर दिया गया है। अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में कौशल वृद्धि और रोजगार के अवसरों के लिए मानव संसाधन का विकास के लक्ष्य से भी यह नीति प्रेरित है। इस नीति के जरिए सौर ऊर्जा तकनीकी के सम्बन्ध में आमजन में जागरूकता उत्पन्न कराने का लक्ष्य भी योगी सरकार ने तय किया है। केंद्र के सार्वजनिक नीति थिंक टैंक नीति आयोग के सहयोग से गैर–लाभकारी वसुधा फाउंडेशन की एक रिपोर्ट के अनुसार, जुलाई 2023 में देश में बिजली की सबसे अधिक मांग यूपी (15.3 बिलियन यूनिट) और महाराष्ट्र (15.3 बिलियन यूनिट) में थी। हालांकि, स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन में यूपी नौवें स्थान पर है। राज्य में 75 जिले हैं, लेकिन बड़ी सौर परियोजनाएं केवल कुछ जिलों तक ही सीमित हैं, जिनमें बुन्देलखण्ड भी शामिल है। अब योगी सरकार ने इस कमी को दूर करने का प्रयास किया है। यूपी में सौर शहर, सौर पार्क, ऑन ग्रिड और ऑफ ग्रिड परियोजनाएं और ग्रीन कॉरिडोर जैसी महत्वाकांक्षी परियोजनाएं हैं। लेकिन सौर ऊर्जा का बड़ा फायदा यह है कि इसे हर घर और गांव में पैदा किया जा सकता है।

◆

मो. : 9415650332

राम की वैश्विक दृष्टि

—वीरेंद्र सिंह

अमृत काल में विरासत और विकास की पुनर्स्थापना का दौर चल रहा है। इसी क्रम में पिछले महीने अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की गई थी। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अबू धाबी के पहले भव्य मंदिर का उद्घाटन किया। इसे अयोध्या के राम मंदिर की तरफ भव्य बनाया गया है। इस मंदिर का निर्माण करीब 27 एकड़ क्षेत्र में किया गया है और इसे अबू धाबी में 'अल वाक्बा' नाम की जगह पर बनाया गया है। इस मंदिर का निर्माण बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था यानी बीएपीएस ने करवाया है। यह मंदिर भले ही आज बनकर तैयार हुआ है, लेकिन इस मंदिर की कल्पना 1997 में बीएपीएस संस्था के तत्कालीन प्रमुख स्वामी महाराज जी ने की थी।

यह ग्रंथ मनुष्य के बदलते हुए मानवीय मूल्य तथा मनोवृत्तियों का जीवन दस्तावेज है।

मानव समाज के बदलते सामाजिक–धार्मिक–सांस्कृतिक–नैतिक जीवन मूल्यों से साक्षात्कार कराते 'मानस' के कथामृत में विश्व को मानवता का अमर संदेश देने की शक्तिमत्ता अंतर्निहित है। "भारतीय आध्यात्मिक निष्ठा हमारी हजारों–हजारों वर्षों से चली आ रही सर्वश्रेष्ठ धरोहर है। हमारा सारा जीवन, आस्था, अनास्था, भाव, कुभाव, क्रोध, आलस्य, खीझ सब कुछ उसके प्रति हम में है, फिर भी वह हमारी सांस्कृतिक धरोहर है और एक न एक दिन सम्पूर्ण विश्व को उसके लिए कृतज्ञ होना पड़ेगा। यह भक्ति कविता रावण एवं कंस के साम्राज्यवाद के ऊपर तुलसी के 'रामराज्य' तथा गीता के 'स्वराज्य' की कविता है।

यह ग्रंथ मनुष्य के बदलते हुए मानवीय मूल्य तथा मनोवृत्तियों का जीवन दस्तावेज है।

वैश्विक संदर्भ में राम

'रामकथा और राम' भारतीय संस्कृति और सभ्यता का बहुत सुन्दर पुंज है। रामकाव्य विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की प्रेरणा देता है और राम का व्यक्तित्व और उनकी कथा इतनी सघन और व्यापक है कि उसमें सम्पूर्ण जीवन की गहराई और सूक्ष्मता, विस्तार और सौन्दर्य, संघर्ष और सत्य, यथार्थ और आदर्श विधि–विश्वास और प्रज्ञा आदि स्थितियों, चित्तवृत्तियों और भावभूमियों की अभिव्यक्ति के लिए विपुल आकाश है।

आधुनिक युग में रामकथा विश्व के सभी प्राणियों के लिए ज्ञान और मूल्य का स्रोत रहेगी क्योंकि रामकाव्य में सभी प्राणियों के हित की बात है, जीवन–मूल्यों का सार है, राष्ट्र

के प्रति प्रेम–भावना और त्याग है। पूरे संसार का सुख और खुशी की भावना है। रामकथा 'मानवमन और मानवप्रज्ञा' का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए यदि रामकथा को जीवन का महाकाव्य कहा जाये तो अतिशशयोक्ति न होगी। रामकाव्य का प्रभाव भारत के जनमानस के साथ विश्व के सभी देशों पर पड़ा है। विदेशी भाषाओं में रामकथा और राम के स्वरूप की व्याख्या हुई है। रामकाव्य को विश्व के समग्र साहित्य में विशेष स्थान प्राप्त है और जनमानस के हृदय में राम का मर्यादा पुरुषोत्तम रूप और स्वरूप भी अमिट है। एशिया में रामकथा में राम का स्वरूप में सभी रचनाकारों ने अपनी–अपनी लेखनी और भावों की अपार आस्था से अभिव्यक्त कर शब्दों में लिखा है।

श्रीराम को मर्यादा पुरुषोऔर अत्याचार नहीं है सभी लोग एक दूसरे से स्नेह रखते हैं। राम राज्य में कोई किसी का शत्रु नहीं है।

'रामराज बैठे त्रैलोका।
हरषित भये गए सब सोका।।
बयरु न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप विषमता खोई।।'

श्री रामचंद्र जी निष्काम और अनासक्त भाव से राज्य करते थे। उनमें कर्तव्य परायणता थी और वे मर्यादा के अनुरूप आचरण करते थे। जहां स्वयं रामचंद्र जी शासन करते थे उस नगर के वैभव का वर्णन नहीं किया जा सकता है।

'रमानाथ जहँ राजा सो पुर
बरनी की जाइ।
अनिमादिक सुख संपदा रहीं अवध सब छाइ।।'

अयोध्या में सर्वत्र प्रसन्नता थी। वहां दुख और दरिद्रता का कोई नाम तक नहीं था। ना कोई अकाल मृत्यु को प्राप्त होता था और ना किसी को कोई पीड़ा होती थी। कारण कि सभी लोग अपने वर्ण और आश्रम के अनुरूप धर्म में तत्पर होकर वेद मार्ग पर चलते थे और आनंद प्राप्त करते थे। राम राज्य में दैहिक दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं सताते थे। राम के राज्य में राजनीति स्वार्थ से प्रेरित ना होकर प्रजा की भलाई के लिए थी। इसमें अधिनायकवाद की छाया मात्र भी नहीं थी। राम का राज्य मानव कल्याण के आदर्शों से युक्त एक ऐसा राज्य था जिसमें निस्वार्थ प्रजा की सेवा निष्पक्ष आदर्श न्याय व्यवस्था सुखी तथा समृद्ध शादी समाज व्यवस्था पाई जाती थी। स्वयं श्री रामचंद्र जी ने नगर वासियों की सभा में यह स्पष्ट घोषणा कीरू "भाइयों! यदि मैं कोई अनीति की बात कहूं तो तुम लोग निसंकोच मुझे रोक देना।"

वैदिक धर्म की रक्षा के लिए भगवान श्री राम का अवतार हुआ। मारीच रावण को समझाते हुए राघव के गुणों का वर्णन और रावण को सन्मार्ग दिखाने के संदर्भ में कहते हैं : 'रामो विग्रहवान धर्म साधु : सत्यपराक्रमः। राजा सर्वस्य लोकस्य देवनामिव वासवरू।'

अर्थातः श्रीराम साक्षात विग्रह वान धर्म है। वह साधु और सत्य पराक्रमी है। जैसे इंद्र समस्त देवताओं के अधिपति हैं उसी प्रकार श्री राम समस्त जगत के राजा हैं।

संपूर्ण भारतीय समाज के लिए समान आदर्श के रूप में भगवान रामचंद्र को उत्तर से लेकर दक्षिण तक सब लोगों ने स्वीकार किया है। उत्तर में गुरु गोविंद सिंह जी ने राम कथा लिखी है पूर्व की ओर कृति वास रामायण चलती है। महाराष्ट्र में भावार्थ रामायण चलती है हिंदी भाषी क्षेत्र में कभी कुल चूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास जी की श्रीरामचरितमानस सर्वत्र प्रसिद्ध है। सुदूर दक्षिण में महाकवि कंबन द्वारा लिखित कंब रामायण अत्यंत भक्ति पूर्ण ग्रंथ है। मनुष्य के जीवन में आने वाली सभी संबंधों को पूर्ण एवं उत्तम रूप से निभाने की शिक्षा देने वाला प्रभु रामचंद्र के चरित्र के समान दूसरा कोई चरित्र नहीं है। वर्तमान समय में राम नीति की अत्यंत आवश्यकता है क्योंकि पूरा विश्व घोर आपसी वैमनस्य और

आधुनिक युग में रामकथा विश्व के सभी प्राणियों के लिए ज्ञान और मूल्य का स्रोत रहेगी क्योंकि रामकाव्य में सभी प्राणियों के हित की बात है, जीवन–मूल्यों का सार है, राष्ट्र के प्रति प्रेम–भावना और त्याग है। पूरे संसार का सुख और खुशी की भावना है। रामकथा 'मानवमन और मानवप्रज्ञा' का प्रतिनिधित्व करती है। इसलिए यदि रामकथा को जीवन का महाकाव्य कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी। रामकाव्य का प्रभाव भारत के जनमानस के साथ विश्व के सभी देशों पर पड़ा है। विदेशी भाषाओं में रामकथा और राम के स्वरूप की व्याख्या हुई है। रामकाव्य को विश्व के समग्र साहित्य में विशेष स्थान प्राप्त है और जनमानस के हृदय में राम का मर्यादा पुरुषोत्तम रूप और स्वरूप भी अमिट है।

आर्थिक संकट से जूझ रहा है। राजा की दिनचर्या कैसी होनी चाहिए या वर्तमान समय में जो पूरे विश्व में जिस प्रकार से शासन प्रणाली है, उसमें आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है, चाहे वह अमेरिका हो या चीन या ग्रेट ब्रिटेन ही क्यों ना हो क्योंकि इन्हीं देशों का अनुसरण लगभग सभी देश अपने शासन सत्ता को चलाने के लिए करते हैं। शासन सत्ता के बल मत्स्य न्याय के आधार पर नहीं चलती चलती है। हमारे देश का अप्रतिम शासन सत्ता का मानक रामराज्य ही है जिसकी नीव त्याग है।

विश्व मंच पर लोकप्रिय बनाने में इसाई मिशनरी से 'मानस' मनीषी बनने वाले फादर कामिल बुल्के का योगदान भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। उन्होंने अपने शोध प्रबंध "रामकथाः उत्पत्ति और विकास" के द्वारा देश–दुनिया के सामने श्रीराम की ऐतिहासिकता के 300 से अधिक प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। 1934–35 में बेल्जियम से भारत आए फादर कामिल बुल्के ने राम कथा की उत्पत्ति और विकास पर कार्य करके 'इलाहाबाद विश्वविद्यालय' से पहले डी.फिल. तथा बाद में 1950 में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर रामायण को विश्व साहित्य की धरोहर का दर्जा दिलवाया। फादर बुल्के ने लिखा है कि वाल्मीकि के राम कल्पित पात्र नहीं, इतिहास पुरुष थे। उन्होंने अपने शोधग्रंथ के उद्धरणों ने पहली बार साबित किया कि रामकथा केवल भारत में नहीं, अंतरराष्ट्रीय कथा है जो वियतनाम से इंडोनेशिया तक फैली हुई है। इस संदर्भ में फादर बुल्के अपने इंडोनेशियाई मित्र हॉलैन्ड के डाक्टर होयकास के हवाले से लिखते हैं कि एक दिन डा. होयकास इंडोनेशिया में शाम के वक्त टहल रहे थेय तभी उन्होंने एक मौलाना को रामायण पढ़ते देखा। होयकास ने उनसे पूछा,– मौलाना आप तो मुस्लिम हैं, आप रामायण क्यों पढ़ते हैं। उत्तर मिला– और भी अच्छा मनुष्य बनने के लिए! ' रामकथा के इस विस्तार को फादर बुल्के 'वाल्मीकि' की दिग्विजय, भारतीय संस्कृति की दिग्विजय कहते थे।

श्रीराम की जीवन गाथा को जन जन तक पहुंचाने वाले गोस्वामी तुलसीदास की 'रामचरितमानस' की महत्ता और प्रभाव के कारण भारतीय ही नहीं अपितु बड़ी संख्या में विदेशी विद्वान भी तुलसी साहित्य की के प्रति आकर्षित और प्रेरित हुए हैं। इटली के फ्लोरेंस विश्वविद्यालय में पी. एल. तेस्सी तोरी ने सन 1911 में तुलसीदास पर पहली पीएचडी उपाधि प्राप्त कर अनेक विद्वानों को चकित कर दिया था। दूसरा शोध कार्य लन्दन के जे.एन. कारपेंटर द्वारा 1918 में किया गया। इस शोध को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने प्रकाशित किया। तुलसी के रचना संसार का अनुशीलन करने वाले पाश्चात्य चिंतकों में अमेरिका के अब्राहम जॉर्ज गियर्सन का नाम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। गियर्सन के तुलसी प्रेम का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उन्होंने 1886 में आस्ट्रिया के वियना नगर में आयोजित प्राच्य विद्या–विशारदों के अधिवेशन में तुलसी के संबंध में प्रबन्ध ग्रन्थ पढ़ विद्वतसभा में मौजूद साहित्य प्रेमियों को अभिभूत कर दिया। एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल के 'जर्नल' में प्रकाशित गियर्सन के लेख 'द मार्डन वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' में तुलसीदास के रचना संसार का विषद विवेचन मिलता है। 'नोट्स ऑन तुलसीदास' शीर्षक से उनकी पुस्तक प्रकाशित हुई। इसके बाद गियर्सन ने 'इम्पीरियल गजट' के लिए भी तुलसीदास पर लेख लिखा।

इसी क्रम में 'रायल एशियाटिक सोसाइटी' के जर्नल में गियर्सन का 'क्या तुलसीदास कृत रामचरित मानस रामायण का अनुवाद है' शीर्षक से लेख प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने

रामचरितमानस को अनुवाद न मानकर मौलिक ग्रन्थ सिद्ध किया। 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एंड एथिक्स' में भी गियर्सन ने तुलसी सम्बन्धी लेख लिखा। तुलसी पर उल्लेखनीय कार्य करने वाले दूसरे महत्वपूर्ण विदेशी विद्वान हैं– फ्रांस के गार्सा दाताजी। इस फ्रांसीसी विद्वान ने तुलसीदास के रामचरित मानस के सुंदरकांड का फ्रैंच में अनुवाद किया जो फ्रांस में ही नहीं, आस–पास के कई देशों में भी खासा लोकप्रिय हुआ। इस क्रम में तीसरा महत्वपूर्ण नाम है– इंग्लैंड के विद्वान एफएस ग्राउज का। ग्राउज ने मानस के काव्य तत्व का अनुशीलन करते हुए तुलसी के रामचरित मानस व वाल्मीकि रामायण का तुलनात्मक अध्ययन किया। ग्राउज मानस के पहले विदेशी चिंतक हैं जिन्होंने रामचरित मानस का अंग्रेजी में अनुवाद किया। 'द रामायण ऑफ तुलसीदास' नामक शीर्षक से यह ग्रन्थ पृथक–पृथक भागों में 1871–1878 के बीच प्रकाशित हुआ। सरकारी प्रेस इलाहाबाद से इस ग्रन्थ के प्रथम भाग 'बालकाण्ड' का अनुवाद 'द चाइल्डहुड' शीर्षक से हुआ। तुलसी पर लेखनी चलाने वाले विद्वानों में सुप्रसिद्ध रूसी साहित्यकार अलेक्सेई वरान्विकोव का नाम भी आदर से लिया जाता है। अलेक्सेई ने दस वर्ष के कठिन परिश्रम के बाद डॉ. श्यामसुंदर दास द्वारा सम्पादित तुलसीकृत रामचरित मानस का रूसी भाषा में छन्दोबद्ध अनुवाद किया जिसे सोवियत संघ की साहित्य अकादमी द्वारा 1948 में प्रकाशित किया गया। इनके अलावा रूसी विद्वान व संगीतकार जिवानी मिखाइलोव व नतालिया गुसोवा ने रामकथा की कथावस्तु को लेकर बच्चों के लिए रंगमंचीय संस्करण तैयार किया। अमेरिकी विद्वान मीसो केवलैंड भी मानस की कथाओं से बेहद प्रभावित थे। उन्होंने रामकथा को बाल साहित्य के रूप में रूपांतरित किया व इसका प्रकाशन 'एडवेन्चर आफ रामा' शीर्षक से किया।

राम का विश्व संदेश

वर्तमान समय में राम नीति की अत्यंत आवश्यकता है, क्योंकि पूरा विश्व घोर आपसी वैमनस्य और आर्थिक संकट से जूझ रहा है। राजा की दिनचर्या कैसी होनी चाहिए या वर्तमान समय में जो पूरे विश्व में जिस प्रकार से शासन प्रणाली है, उसमें आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है, चाहे वह अमेरिका हो या चीन या ग्रेट ब्रिटेन ही क्यों ना हो क्योंकि इन्हीं देशों का अनुसरण लगभग सभी देश अपने शासन सत्ता को चलाने के लिए करते हैं।

रामचरितमानस में एक आदर्श राज्य का दिग्दर्शन होता है। रामराज्य एक आदर्शवादी प्रजातंत्मक व्यवस्था है जिसमें किसी प्रकार का शोषण और अत्याचार नहीं है। लोकमंगल की पावन भावना है।

◆

मो. : 9410704385

दशरथ महल : जहां पहन पैजनिया ठुमुक चले राम जी

–रवि प्रकाश

विश्व में भारत जहां राम के देश के नाम से जाना जाएगा वहीं राम नगरी अयोध्या राम मय के रूप में विकसित करने के जतन में योगी सरकार पूरे मनोयोग से जुटी हुई है। राम मंदिर के देश को समर्पण के साथ वहां राम से जुड़े हर स्थल के पुनरोद्धार और सजाने संवारने का काम अंतिम चरण में है। अयोध्या में राम से जुड़े ऐसे तमाम महत्व के स्थलों में से एक दशरथ महल भी है जो प्रभु राम के बाल्यकाल के अनगिनत कथाओं का साक्षी है।

श्री राम मंदिर से कम महत्व अयोध्या के दशरथ महल का नहीं है। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने भगवान राम के बाल्यकाल से जुड़े इस तीर्थ स्थल के सुंदरीकरण व पुनरोद्धार पर भी ध्यान दिया। योगी ने 2021 में दशरथ महल के पुनरोद्धार के लिए बजट का विशेष प्रावधान कर दशरथ महल की जीर्ण शीर्ण अवस्था को बदल कर उसके पूर्व के स्वरूप में लाने की कोशिश की।

पूर्व में भगवान राम से जुड़े इस धार्मिक स्थल की घोर उपेक्षा होती रही। 'राम काज कीजे बिना मोहे कहां विश्राम' जैसी इच्छा शक्ति और भक्ति पूर्ण भावना योगी जैसे सच्चे राम भक्त में ही थी सो उनके हाथों दशरथ महल का जीर्णोद्धार हुआ।

दशरथ महल के माहात्म्य का वर्णन राम से जुड़े सभी ग्रंथों में है। चाहे वाल्मीकि रामायण हो, महान कवि तुलसीदास कृत रामचरित मानस हो या रामानंद सागर कृत रामायण टीवी सीरियल ही क्यों न हो, राम लला के बाल्यकाल के सुलभ हठ, किलकारियां, हंसने–मुस्कुराने, रोने–मनाने की लीलाओं का संबंध जिस दशरथ महल के प्रांगण से था इसका उल्लेख सबमें है।और यह त्रेतायुग से लेकर आज तक भी यथावत है। भव्य मंदिर में बाल स्वरूप राम लला के विराजते ही दशरथ महल का यह प्रांगण भी भाव विह्वल हो उठा।

वह दशरथ महल ही है जहां माता कौशल्या की गोद में पैजनिया पहने ठुमुक कर चलते सकल ब्रह्मांड के नायक भगवान राम अपने पिता राजा दशरथ से चांद पाने का हठ कर लेते हैं और राजा दशरथ थाली में जल भरकर राम लला को चंद्रमा के प्रतिबिंब को पकड़ लेने को प्रेरित करते हैं। बाल्य अवस्था के राम चंद्रमा को पकड़ने के लिए थाली भरे

पानी में छपकोइयाँ खेलते रहते हैं। भगवान राम के बाल्य अवस्था का यह दृश्य हर किसी को मोहित करता है। राम के जीवन के हर अध्याय का साक्षी रहा अयोध्या के दशरथ महल ने त्रेतायुग में साकार राम को देखा और अब अपने प्रिय लला को भव्य राम मंदिर में पुनर्प्रतिष्ठित होते हुए भी देखा। यह वही दशरथ महल है, जो 500 साल के पराभव काल के दौरान भी मौजूदा रामजन्म भूमि क्षेत्र पर श्रीराम के मंदिर होने के साक्ष्यों की गवाही देता रहा।

योगी सरकार ने दशरथ महल के जीर्णोद्धार व सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया को अमली जामा पहनाते हुए करीब तीन करोड़ रुपये खर्च कर यहां सत्संग भवन, प्रवेश द्वार, रैन बसेरा व दर्शनार्थी सहायता केंद्र के निर्माण– पुनरोद्धार व सुदृढ़ीकरण कर इसकी ऐतिहासिक खूबसूरती को बहाल कर दिया है।

दशरथ महल के महात्म्य का वर्णन राम से जुड़े सभी ग्रंथों में है। चाहे वाल्मीकि रामायण हो, महान कवि तुलसीदास कृत रामचरित मानस हो या रामानंद सागर कृत रामायण टीवी सीरियल ही क्यों न हो, राम लला के बाल्यकाल की सुलभ हठ, किलकारियां, हंसने–मुसकुराने, रोने–मनाने की लीलाओं का संबंध जिस दशरथ महल के प्रांगण से था इसका उल्लेख सबमें है और यह त्रेतायुग से लेकर आज तक भी यथावत है। भव्य मंदिर में बाल स्वरूप राम लला के विराजते ही दशरथ महल का यह प्रांगण भी भाव विह्वल हो उठा।

650 स्क्वायर मीटर में बने सत्संग भवन में लगभग 300 से 350 सत्संगी एक साथ कीर्तन–भजन कर सकेंगे। दशरथ भवन की तरफ श्रद्धालुओं को भौतिक रूप से आकर्षित करने के लिए जगमगाती लाइटिंग सभी को अपनी ओर आकर्षित करती है। यहां श्रीराम के जीवन को चित्रित करते हुए वाल पेंटिंग, रामचरित मानस के दोहे लिखे हैं।

दशरथ महल का भव्य प्रवेश द्वार अपने पुराने वैभव को संरक्षित करते हुए यह आधुनिकता की चाशनी से भी लैस है। खंभों और दीवारों पर लंबे समयावधि तक टिकाऊ रहने वाले पेंट की परत चढ़ाई गई है।

यहां आने वाले श्रद्धालुओं को कोई असुविधा न हो इसके लिए विशेष दर्शनार्थी सहायता केंद्र भी स्थापित है जो यहां की समृद्ध विरासत, ऐतिहासिक महत्व, सांस्कृतिक योगदान व आध्यात्मिक महत्व के बारे में अवगत कराता है।

◆

मो. : 8303851539

अजेय अयोध्या

–डॉ. रंजना जायसवाल

जटाधारी साधु–संतों, घण्टों और घड़ियालों की सुमधुर आवाज, आस्था और विश्वास, श्री राम के पवित्र नाम के जयघोष के मध्य से प्रवाहित होती मोक्षदायिनी, पतित पावनी, शीतल, मनोहारी सरयू के तट पर बसा एक छोटा सा शहर अयोध्या। वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण के अनुसार अयोध्या की स्थापना मनु ने की थी। अयोध्या हिंदुओं के सात पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है जिसमें अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारिका शामिल है।

अयोध्या शब्द संस्कृत का शब्द है जो दो शब्दों से मिलकर बना है। अयोद्धा। जिसमें अ शब्द उपसर्ग है और अ शब्द के जुड़ जाने से अयोध्या का अर्थ है युद्व न करना। अर्थात वह स्थान जहाँ युद्ध न लड़ा जाए या जो अजेय है वह स्थान अयोध्या है।

इस शब्द की पुष्टि नौवीं शताब्दी के "आदि पुराण "में जैन कविता में भी उद्‌घृत है जो इस बात की पुरजोर तरीके से पुष्टि करती है कि अयोध्या ''केवल नाम से नहीं बल्कि दुश्मनों से अजेय होने की योग्यता से अस्तित्व में है''। "सत्योपाख्यान" एक बड़ा वर्णनात्मक ग्रंथ है जिसमें रामचंद्र के जन्म से लेकर विवाह तक की कथा बड़े विस्तार के साथ वर्णित है। "सत्योपाख्यान" इस शब्द की व्याख्या थोड़ी अलग तरह से करते हुए कहता है कि इसका अर्थ है ''वह जिसे पापों से नहीं जीता जा सकता।'' कहने का तात्पर्य है इस ग्रन्थ में शत्रुओं के बजाय पापों से न जीता जा सके व्यक्ति के लिए अयोध्या शब्द प्रयोग किया गया है।

अयोध्या शहर एक प्राचीन शहर है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए.एस.आई.) के संस्थापक अलेक्जेंडर कनिघम ने 1862–1863 में अयोध्या का गहन अध्ययन किया और उनके सर्वेक्षण के अनुसार अयोध्या की पहचान फाहियान के लेखों में वर्णित शा–ची से, जुआनजैंग की लेखों में वर्णित विशाखा और हिंदू बौद्ध किवदंतियों में वर्णित साकेत शहर से की है।

साकेत शहर भारत में छठी शताब्दी के दौरान एक महत्वपूर्ण शहर माना जाता था। ऐतिहासिक रूप से अयोध्या को पहले साकेत के नाम से भी जाना जाता था। बुद्ध के समय साकेत पर प्रसेनदी का शासन था जिसकी राजधानी श्रावस्ती थी।मौर्य शासन के दौरान भी साकेत ने अपना अस्तित्व बनाए रखा और 190 ईसा पूर्व के दौरान पांचाल और माथुर से सम्बद्ध बैक्ट्रियन यूनानी अभियान द्वारा उस पर हमला भी किया गया था।

गुप्त काल के शासन में अयोध्या अपने उच्चतम राजनीतिक महत्व पर आसीन थी। इस काल के शासकों कुमार गुप्त और स्कंद गुप्त जैसे प्रसिद्ध राजाओं के

शासनकाल के दौरान साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र से अयोध्या स्थानांतरित कर दी गई थी। जहाँ साकेत का पुराना नाम बदलकर अयोध्या कर दिया गया था। इस शहर का अयोध्या नाम इस शहर को भगवान राम की राजधानी के रूप में परिभाषित करता है लेकिन समय बदला और समय के साथ चीज भी बदल गई। हूणों द्वारा नरसिंह गुप्त के साम्राज्य पर कुठाराघात कर उसे नष्ट कर दिया गया जिसके कारण छठी शताब्दी में जिस अयोध्या को राजधानी के रूप में जाना जाता था। अब उनकी राजधानी अयोध्या से कन्नौज में स्थानांतरित कर दी गई, जिसका परिणाम यह हुआ कि अयोध्या जो अभी तक सम्मान से सर उठाए अपने अस्तित्व का लोहा मनवा रही थी। उसका सम्मान धूमिल पड़ गया और अस्तित्व पूरी तरह से मिट गया।

दूसरी सहस्त्राब्दी के प्रारंभ में कन्नौज में गढ़वालस सत्ता में आए। उनका आगमन अयोध्या के लिए शुभ साबित हुए। अपने शासन के दौरान गढ़वाल लोगों ने अयोध्या में कई विष्णु मंदिरों की स्थापना की। सनातनी जो अपना तेज अपना सम्मान कहीं खो बैठे थे एक बार फिर से सनातनियों का उद्धार हुआ। उनके आगमन से सनातनियों के डूबते अस्तित्व का पुनः उदय हुआ।

वक्त के साथ सनातनियों की स्थिति मजबूत होती चली गई। वक्त ने एक करवट ली और भारत में वैष्णव पंथियों का उदय हुआ। वैष्णव पंथ के भीतर राम का पथ विकसित हुआ जिससे भगवान विष्णु के सभी अवतारों में श्री रामचन्द्र को सबसे प्रमुख अवतार माना जाने लगा और धीरे–धीरे पूरी अयोध्या ने इस भाव की पैठ बना ली। परिणाम स्वरुप अयोध्या का एक तीर्थ स्थल के रूप में महत्व बढ़ गया।

वक्त के साथ सनातनियों की स्थिति मजबूत होती चली गई। वक्त ने एक करवट ली और भारत में वैष्णव पंथियों का उदय हुआ। वैष्णव पंथ के भीतर राम का पथ विकसित हुआ जिससे भगवान विष्णु के सभी अवतारों में श्री रामचन्द्र को सबसे प्रमुख अवतार माना जाने लगा और धीरे–धीरे पूरी अयोध्या ने इस भाव की पैठ बना ली। परिणाम स्वरुप अयोध्या का एक तीर्थ स्थल के रूप में महत्व बढ़ गया।

अंग्रेजों के शासनकाल में अयोध्या आध्यात्मिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण शहर के रूप में उभर कर आई और अयोध्या उत्तर प्रदेश के आध्यात्मिक शहर के रूप में जाने जाने लगी। अयोध्या ने अपने शरीर पर विध्वंसकारियों से गहरी चोट पाई है जिसके घाव आज तक दिखाई पड़ते हैं।

अयोध्या ने पिछली पाँच सदी में पचहत्तर बार संघर्ष का सामना किया। पाँच सदी पहले मुगलों ने भारत की संस्कृति और आराधना के केंद्रों पर आक्रमण कर मन्दिरों और मूर्तियों को ध्वस्त कर हमारी आस्था और विश्वास को गहरी चोट पहुँचाई और वहाँ मस्जिदों की स्थापना की।

पाँच सौ वर्षों के वैमनस्य, रक्तपात और विवाद को अंततः विराम लगना ही था। आखिर कब तक राजनीति की रोटियाँ सेंकी जाती। लाखों सनातनियों साधु–सन्यासियों और राम भक्तों ने राम जन्म भूमि की पुनर्स्थापना के लिए अपने प्राणों की आहुतियाँ दी थीं आखिर उसका प्रतिफल तो मिलना ही था।

अयोध्या में मंदिर विवाद से लेकर विध्वंस और मंदिर निर्माण की घटनाएं देख तुलसीदास जी द्वारा

श्रीरामचरितमानस के बालकांड में लिखा यह दोहा स्वतः याद आ जाता है कि–

"होइहि सोइ जो राम रचि राखा
को करि तर्क बढ़ावै साखा।"

यानी होगा वही जो राम ने लिख रखा है। तर्क करके कौन शाखा (विस्तार) बढ़ाए अर्थात तर्क करने का कोई फायदा नहीं है।

कहते हैं आस्था अगर मानवीय संवेदनाओं और विश्वास की बुनियाद पर टिकी हो तो कभी नहीं मरती। भारतीय संस्कृति की यही खूबी है। न जाने कितने विध्वंसकारियों द्वारा लहू लुहान किए जाने पर भी अयोध्या कभी नहीं मिटी। कुछ तो ऐसी बात है अयोध्या में जिसने सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांध दिया। अयोध्या ने सामूहिक चेतना को झकझोरने का काम किया।

वक्त ने ऐसी अंगड़ाई ली कि सारी दुनिया देखती रह गई 22 जनवरी 2024 का दिन स्वर्णाक्षरों में लिख दिया गया। मंत्रोच्चार से गुंजित धरा, नैवेद्य की खुशबू और राम नाम के जयकारे ने सम्पूर्ण वातावरण को राममय बना दिया था। पाँच सदी के बाद सनातनियों के देश में अराध्य भगवान राम लला का अयोध्या में पुनः आगमन हुआ।

सात हजार विशिष्ट श्रेणी के अतिथियों, लगभग चार हजार साधु–संन्यासियों, पचास देश और भारत देश के अन्य सभी राज्यों से करीब बीस हजार लोगों की उपस्थिति में श्री राम की मूर्ति की विधि–विधान से प्राण प्रतिष्ठा कर अयोध्या के गौरव की पुनर्स्थापना की गई। राम जन्मभूमि पर बना राम मंदिर सिर्फ मंदिर नहीं है हमारे सांस्कृतिक उत्थान का प्रतीक है। यह मंदिर युग परिवर्तनकारी साबित होगा।

अयोध्या त्याग, तर्पण और तप की धरा है। अयोध्या सिर्फ एक नाम नहीं एक शहर नहीं बल्कि सनातनियों की अस्मिता, स्वाभिमान, प्रतिष्ठा और आत्मविश्वास का शहर है।

◆

मो. : 9415479796

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला

–सुनीता उपाध्याय

हमारे राम सिर्फ अयोध्या के राजा नहीं हैं, वे साक्षात परमेश्वर हैं। सबल होते हुए भी सरल होना उनका व्यक्तित्व है। वे शबरी के जूठे बेर खाने वाले दीनदयालु हैं जिन्होंने शापग्रस्त अहिल्या का उद्धार किया। राम इतने मर्यादित हैं कि सीता के अलावा अन्य किसी महिला को उन्होंने कभी आंख उठाकर देखा तक नहीं। सर्व शक्तिमान रावण की बहन सूर्पणखा ने जब अरण्य में उनसे कामातुर होकर प्रणय निवेदन किया तो राम के मन–वचन एवं कर्म में स्पष्ट निषेध का भाव था। यह एक श्रेष्ठ पुरुष की निशानी है। लक्ष्मण इस समस्त प्रकरण में कौतुकवश आते हैं। उस युग में तो बहु पत्नी प्रथा थी, स्वयं महाराज दशरथ के तीन रानियां थीं– कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा। राम ने आजीवन एक पत्नीव्रत का अनुसरण किया। जब साधु वेश में रावण माता सीता को अपहृत करके लंका ले गया तो राम साधारण मानव की भांति अपनी पत्नी के वियोग में बिलखते हुए नज़र आए। यह नर के रूप में विष्णु का त्रेता युग में लिया गया अवतार था। द्वापर युग में विष्णु ने नारायण के रूप में अवतार लिया था। यह नर–नारायण की विलक्षण जोड़ी थी। नारायण श्रीहरि ने मोहग्रस्त अर्जुन को महाभारत के युद्ध से पूर्व निष्काम कर्म का संदेश दिया। उनकी वाणी श्रीमदभगवत गीता के रूप में जानी जाती है। रामायण और महाभारत भारतीय मनीषा एवं संस्कृति के प्रमुख महाकाव्य हैं जो राम और कृष्ण के जीवन चरित्र की व्याख्या करते हैं। अग्निपरीक्षा में सोने की तरह तप कर निकली माता सीता का, एक धोबी द्वारा संदेह प्रकट किए जाने के उपरांत राम राज्य की शुचिता बनाए रखने के लिए राम परित्याग करते हैं और लक्ष्मण उन्हें वाल्मीकि आश्रम छोड़ आते हैं। ऐसी दशा में गर्भवती सीता के प्राणों की रक्षा वन देवी करती हैं। महर्षि वाल्मीकि उन्हें जनक के समान दुलार, स्नेह एवं संरक्षण प्रदान करते हैं। यहां निर्जन वन में सीता लव और कुश को जन्म देती हैं। वे अकेले अपने दम पर इन दोनों बालकों को इतना श्रेष्ठ और समर्थ बनाती हैं कि वे राम के राजसूय यज्ञ का घोड़ा बांध लेते हैं। जब इसे छुड़ाने के लिए सेना सहित शत्रुघ्न, लक्ष्मण और हनुमान आते हैं तो उन्हें भी ये वीर बालक पाश में बांध लेते हैं। अंत में स्वयं जगत के नियंता को युद्ध भूमि में आना पड़ता है। तब सीता लव और कुश का परिचय देती हैं और पिता–पुत्र संग्राम को टालती हैं। राम अपने शूरवीर पुत्रों को पाकर मुग्ध हैं। राम की शक्ति पूजा का भी अद्भुत प्रसंग है। रावण को साक्षात देवी भगवती का आशीर्वाद एवं संरक्षण प्राप्त था। वह शिव का भक्त था। राम ने लगातार नौ दिनों तक समुद्र तट पर देवी की आराधना एवं स्तुति की। वे उन्हें अपने नयन समर्पित करने जा रहे थे तब देवी प्रकट हुईं और उन्होंने राम को वह अमोघ शक्ति प्रदान की जिससे रावण को पराजित किया जा सका।

गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है सरल सबल साहिब रघुराजू। इसका मतलब यह है कि जो परम ब्रह्म परमेश्वर है, जिसमें सारे ब्रह्मांड की शक्तियां निहित हैं वे कितने सरल हैं। कहीं कोई ऐसा प्रसंग नहीं मिलता, जहां उनके मन में

बड़े–छोटे की भावना आई हो। वे हमेशा भक्ति के कायल रहते हैं और भक्तों की रक्षा करते हैं। वे सुग्रीव का साथ देते हैं, विभीषण को गले लगाते हैं। राम राज्य की जो परिकल्पना है और उत्तर कांड में जिसका वर्णन किया गया है–राम राज बैठे त्रैलोका, हरषित भए गए सब सोका। हमारी यही कामना है कि हमारे पास भगवान श्रीराम के रूप में ऐसे राजा हैं जिनके गद्दी पर बैठने से ही सारे क्लेष, दुःख, पाप नष्ट हो जाते हैं। सब लोग हर्षित हो जाते हैं। हर्षित होने में अकेले किसी एक व्यक्ति अथवा जातीय समूह का वर्णन नहीं है बल्कि सामूहिक रूप से सबके प्रसन्न होने की बात कही गयी है। हमारा मन ऐसा होना चाहिए कि हम खुद प्रसन्न हों और हमारे आसपास के सभी लोग प्रसन्न हों। सभी सुखी हों, स्वस्थ एवं निरोग रहें यही राम राज्य की आदर्श परिकल्पना है। देश की आजादी के बाद इसकी ही कामना हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने की थी। राम राज्य लोकतंत्र एवं शासन पद्धति की सुन्दरतम परिकल्पना है, पश्चिमी विचारकों का युटोपियन समाज शायद ऐसा ही रहा होगा। यहां शासक ऐसे हैं जो परम दयालु हैं, वे सभी से संवाद करते हैं। हर जाति, हर वर्ग के व्यक्तियों के साथ भगवान श्रीराम ने मित्रता स्थापित की। उनकी सेना में वानर और भालू शामिल थे जिन्होंने अजेय रावण संस्कृति को पदच्युत किया, सत्य एवं असत्य के मध्य हुए युद्ध में सच्चाई की जीत का मार्ग प्रशस्त किया। राम की रावण पर विजय असत्य पर सत्य की जीत का ऐतिहासिक एवं पौराणिक साक्ष्य है। राम कुशल प्रबंधक थे। वे अद्भुत श्रोता हैं। वे सबको साथ लेकर चलते हैं। उनकी बेहतर नेतृत्व क्षमता के चलते ही श्रीलंका पहुंचने के लिए सेतु बन सका। समुद्र ने उन्हें रास्ता प्रदान किया लेकिन इससे पूर्व जब सागर अपने शक्ति के मद में डूबा हुआ नजर आ रहा था तो राम ने प्रत्यंचा चढ़ाई ही थी कि उसने परम शक्ति को पहचाना और तत्काल घुटने टेक दिए। भय बिनु होई न प्रीति।

अयोध्या में भव्य राम मंदिर की स्थापना तथा उसमें नवीन विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा ऐतिहासिक घटना है। विक्रम संवत 2080 में पौष शुक्ल द्वादशी यानी कि 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में आयोजित एक भव्य समारोह में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की गयी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस समारोह के मुख्य यजमान की भूमिका में थे। जीवन के हर क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं गणमान्य नागरिकों की इस मौके पर गरिमापूर्ण उपस्थिति रही। इससे अयोध्या ही नहीं बल्कि समूचा देश राममय हो गया है। चहुंओर आनंद छाया है। आदिकाल से राम हमारी चेतना में समाए हैं, वे हमारी सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक चेतना के मूलाधार हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार मनु और शतरूपा ने वर्षों की घोर तपस्या के बाद सृष्टि के पालनकर्ता विष्णु से यह वरदान पाया था कि ईश्वर त्रेता युग में उनके अंश से जन्म लेंगे।

अयोध्या में भव्य राम मंदिर की स्थापना तथा उसमें नवीन विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा ऐतिहासिक घटना है। विक्रम संवत 2080 में पौष शुक्ल द्वादशी यानी कि 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में आयोजित एक भव्य समारोह में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की गयी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस समारोह के मुख्य यजमान की भूमिका में थे। जीवन के हर क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों एवं गणमान्य नागरिकों की इस मौके पर गरिमापूर्ण उपस्थिति रही। इससे अयोध्या ही नहीं बल्कि समूचा देश राममय हो गया है। चहुंओर आनंद छाया है। आदिकाल से राम हमारी चेतना में समाए हैं, वे हमारी सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक चेतना के मूलाधार हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार मनु और शतरूपा ने वर्षों की घोर तपस्या के बाद सृष्टि के पालनकर्ता विष्णु से यह वरदान पाया था कि ईश्वर त्रेता युग में उनके अंश से जन्म लेंगे। वे मानव मात्र के रूप में धरती पर आएंगे तथा समस्त मानव जाति के कष्ट एवं संताप को हरेंगे। यही मनु और शतरूपा रघुकुल में दशरथ और कौशल्या कहलाये जिनके अंश से पुत्रयेष्टि यज्ञ के बाद राम ने जन्म लिया। राम, कृष्ण और शिव हमारी संस्कृति में पूर्णता के तीन महान अवतार हैं। यदि राम की पूर्णता मर्यादित व्यक्तित्व में है तो कृष्ण की उन्मुक्त या सम्पूर्ण व्यक्तित्व में परिलक्षित होती है। ऐसे में शिव का असीमित व्यक्तित्व भी हमारे समक्ष प्रकट होता है। हर एक पूर्ण हैं, किसी एक का एक या दूसरे से अधिक या कम पूर्ण होने का कोई सवाल नहीं उठता। यही वजह है कि काशी,

मथुरा और अयोध्या हमारी आस्था के पुरातन एवं महानतम केंद्र हैं; हमारे पुराणों में शैव और वैष्णव दो प्रमुख परम्परायें पाई जाती हैं। ईश्वर के सगुण तथा निर्गुण रूप की आराधना की जाती है। सगुण उपासकों के बीच राम और कृष्ण की उपासना का सर्वत्र विधान है। शिव अहर्निष हैं, घोर तपस्या में लीन, सृष्टि के संहारकर्ता, नीलकंठ, अपनी जटाओं में जीवनदायिनी गंगा को समाये हुए। शिव राम के प्रिय हैं और राम शिव के प्रति अगाध श्रद्धा और भक्ति भाव से ओतः प्रोत नजर आते हैं। उधर राम और कृष्ण में कोई विभेद नहीं, दरअसल यह दोनों एक ही हैं। राम और कृष्ण, विष्णु के दो मनुष्य रूप हैं, जिनका अवतार धरती पर धर्म का नाश और अधर्म के बढ़ने पर होता है। राम धरती पर त्रेता में आये जब धर्म का रूप इतना अधिक नष्ट नहीं हुआ था। वह आठ कलाओं से बने थे, इसलिए मर्यादित पुरुष थे। इसके विपरीत कृष्ण द्वापर में तब आये जब अधर्म बढ़ रहा था। वे सोलह कलाओं में निपुण थे और पूर्ण पुरुष थे।

जब सीता का अपहरण हुआ तो राम बेहद व्याकुल थे। वे रो रोकर कंकड़, पत्थरों और वृक्षों की लताओं से सीता का पता पूछ रहे थे–हे खग कुल, हे मधुकर श्रेनी तुमने देखी सीता मृगनयनी। उनका यह विलाप एक मनुष्य का अपनी पत्नी के प्रति सहज संताप था जो उससे बिछड़ गयी थी। उधर कृष्ण ने गोपियों के साथ महारास रचाया था। दूसरी ओर देखें तो राधा और कृष्ण का प्रेम विरल है। कृष्ण की असंख्य प्रेमिकायें थीं। उनकी सोलह हजार एक सौ आठ पत्नियां थीं। इनमें भी रुक्मिणी और सत्यभामा के मध्य सदैव प्रतिद्वंद्विता रही कि कृष्ण किसके अधिक प्रिय हैं। कृष्ण द्रौपदी के भी सखा हैं, वे उन्हें सखी कहते हैं। मीरा की कृष्ण के प्रति दीवानगी गजब की है। सीता का अपहरण मानव जाति की कहानियों में महानतम घटनाओं में से एक है। मर्यादित पुरुष सदैव नियमों के दायरे में रहता है। जबकि उन्मुक्त पुरुष नियम और कानून को तभी तक मानता है जब तक उसकी इच्छा होती है और प्रशासन में कठिनाई पैदा होते ही उनका उल्लंघन करता है। मर्यादा में बंधे राम एक धोबी के कहने से महारानी सीता का तब परित्याग करते हैं जब वे गर्भवती थीं। हालांकि सीता कठिन अग्निपरीक्षा से सफल होकर बाहर आई थीं। यह राम राज्य की उत्कृष्ट कसौटी है जिसमें एक सामान्य नागरिक का संदेह महाराज को अपनी पत्नी के परित्याग के लिए प्रेरित करता है। राम में शील और संयम है जबकि कृष्ण दुष्टों के नाश में छल–बल और भेद के प्रयोग को अनुचित नहीं ठहराते। वे युद्धभूमि में मोहग्रस्त अर्जुन को निष्काम कर्म की शिक्षा देते हैं। यही श्रीमदभगवतगीता है। यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानमं सृजाम्यहम्।

राम चुप्पी का जादू जानते हैं। वे दूसरों को बोलने देते हैं, जब तक आवश्यक नहीं होता वे हस्तक्षेप नहीं करते। रामकथा विश्व के अनेक देशों में लोकप्रिय है। रामलीलाओं के मंचन की समूचे उत्तर भारत में सदियों पुरानी परम्परा है। यह हमारी गंगा–जमुनी संस्कृति की विशिष्टता है। जब नाटकों के बाद फिल्मों का दौर शुरू हुआ तो बीसवी सदी के पांचवें और छठे दशक में राम राज्य और सम्पूर्ण रामायण जैसी बेहद लोकप्रिय फिल्में बनीं। इन्हें देश की जनता ने अपने मन मस्तिष्क और दिलों में बसा लिया। रामानंद सागर ने जब रामायण टेली सीरियल बनाया तो यह घर–घर में लोकप्रिय हो गया। इसमें अरुण गोविल ने राम, दीपिका चिल्खिया ने सीता तथा अरविंद त्रिवेदी ने रावण की भूमिकाएं निभाई थीं। इसका संगीत जाने माने संगीतकार रवीन्द्र जैन ने दिया था जो उस दौर में अपार लोकप्रियता एवं प्रसिद्धि बटोर रहा था। आज भी इसे चाव से सुना जाता है। रामायण पर बाद में भी कई सीरियल बने। हमारे अधिकांश कवि, कलाकार, लेखक, अभिनेता, नर्तक, गायक, गायिकाएं और संगीतकार अक्सर अपनी रचनाओं में राम को प्रस्तुत करते हैं। आज जुबिन नौटियाल हों या सुरभि मिश्रा इनके गाए भजन लोगों की जुबान पर हैं। राम कण–कण में हैं। वे जन–जन में हैं। बच्चों

की मुस्कुराहट में हैं राम। बहन की चूड़ियों की खनखनाहट में हैं राम, मां के चेहरे की जगमगाहट में हैं राम, खेतों में फसलों की लहलहाहट में हैं राम। राम कोई कोरा शब्द नहीं है। वह हमारी देह में रुधिर बनकर दौड़ रहा है। हृदय बनकर धड़क रहा है। वह हमारी सांसों की सांस है। उसकी महत्ता का तब पता चलता है जब उसके स्मरण मात्र से सारे कष्ट नष्ट हो जाते हैं। यह कह पाना कठिन है कि कितने कवियों ने राम के व्यक्तित्व से प्रेरित होकर गीत गाए हैं। वाल्मीकि और व्यास हमारे इतिहास की दो दृष्टियां हैं, एक के शिखर पुरुष श्रीराम हैं और दूसरी के श्रीकृष्ण। एक को समन्वयात्मक तथा दूसरे को विश्लेषणात्मक पटल पर स्थापित कर इन दोनों महान कवियों के रचनात्मक चिंतन ने आदमी की श्रेष्ठतम प्रभा के माध्यम से देवता या कि द्वियता को मानवीय तल पर अध्यारोपित किया है। रामायण की कहानी एक हरहराती हुई नदी की तरह दुर्गम पठारों और जंगलों को पार करती हुई अंततः सागर संगम तक पहुंचती है। देश के सांस्कृतिक क्षितिज का कौन सा ऐसा कोना है जिसे राम ने न छुआ हो। यह शायद राम के चुम्बकीय व्यक्तित्व का ही प्रभाव रहा होगा कि उनकी गाथा जावा, सुमात्रा, जापान, कम्बोडिया, यूनान और थाईलैंड तक वहां की जातीय स्मृति में हीरक हार की तरह जड़ी है। अयोध्या और कोरिया के मध्य तो मधुर संबंध तक स्थापित हुए। रामायण और रामचरितमानस की रचनाशीलता मात्र कविता के लिए कविता नहीं कही जा सकती। आदिकवि वाल्मीकि की वाणी मानव जीवन की शुभ्रता का काव्य विम्ब है।

राम का सबसे पहले संदर्भ यजुर्वेद 29/59 में मिलता है– अधो रामो सावित्रिः। गोस्वामी तुलसीदास ने रामकथा को श्रुतिसम्मत कहकर इसे वैदिक परम्परा सम्मत माना है। वे राम को ईश्वर का सहज अवतार मानते हुए उनके मानव चरित्र का वर्णन करते हैं। तुलसी अवधी में अपना महाकाव्य लिखते हैं जो लोकभाषा थी। सदियों से इसके गायन एवं पाठ की वाचिक परम्परा देखने को मिलती है। मानस की चौपाई और दोहे न सिर्फ विद्वानों बल्कि निरक्षर ग्रामीणों, मजदूरों और समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों को कंठस्थ है। वे अक्सर इसको गाकर प्रस्तुत करते हैं। एक काव्य की जीवंतता इससे बढ़कर और क्या हो सकती है। शायद यही कारण रहा होगा कि हिंदी के वरिष्ठ आलोचक पंडित राम चंद्र शुक्ल ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक हिंदी साहित्य का इतिहास में सबसे अधिक महत्व महाकवि तुलसीदास को प्रदान किया है। जिंदगी में दो ही मार्ग हैं – एक मार्ग हृदय का, आस्था का, समर्पण का है और दूसरा तर्क का, बुद्धि का, अनास्था का। तुलसीदास ने

अपनी गति और नियति दोनों राम को सौंप दी। उनकी आस्था का शिखर बिंदु राम थे। उन्होंने संवत 1631 में अयोध्या में आकर रामचरितमानस का लेखन आरंभ किया और इसे दो वर्ष सात महीनों में पूरा कर लिया। कुछ अंश संभवतया काशी में भी रचा गया था। ऐसा कहा जाता है कि गोस्वामी तुलसीदास पर ज्ञान की देवी मां सरस्वती तथा हनुमान जी की परम कृपा थी जिसकी वजह से ही उनके द्वारा मानस की रचना की जा सकी। उनकी आस्था में धर्म और ज्ञान दोनों का समावेश है। जहां तक समर्पण और आस्था का प्रश्न है गोस्वामी तुलसीदास के इष्ट एकमात्र राम हैं। तुलसीदास का जिक्र हो और रत्नावली का प्रसंग न आए

भला ऐसा कैसे संभव है। यह रत्नावली ही थीं जिन्होंने तुलसीदास को चाम से आगे बढ़कर राम तक पहुंचने के लिए उलाहना दी थी। पत्नी की उलाहना से तुलसीदास व्यथित तो जरूर हुए लेकिन उन्होनें खुद को राम में इतना लीन कर लिया कि गोस्वामी कहलाए। दूर क्यों जाएं कबीर को भी राम बहुत ही प्यारे हैं। वह उनके निर्गुण रूप पर रीझे हुए हैं। इसलिए वे बारम्बार कहते हैं राम नाम जानै बिना, भौ बूड़ि मुवा संसार। बदै कबीर राम वमि रहिये, राम न रमसि मोह वो गाते सुमिरन कबहु राम वा। कबीर वाणी में राम की चर्चा सर्वाधिक है। वही उनके साहेब हैं, कबीर का राम सबके हृदय में वास करता है, वह अयोध्या नरेश दशरथ का पुत्र नहीं है। वे कहते हैं हृदय बसे तेहि राम न जाना, दिल मां खोजि, दिलहि मां खोजौ इहै बरीमा रामा। कबीर बेलाग और बेलौस थे। साम्प्रदायिक कठमुल्लापन पर उन्होंने सीधी चोट की थी लेकिन निराकार परब्रम्ह में उनकी गहन आस्था थी। वे गुरु को ईश्वर के समकक्ष मानते हैं।

अंतिम घड़ी में गांधीजी ने क्या किया, जब उनको गोली मारी गयी, तब अत्यंत सहज भाव से उन्होंने भगवान का नाम लिया–हे राम। नई दिल्ली स्थित राजघाट पर बापू के समाधि स्थल पर यही दो शब्द अंकित हैं जो आज भी हमें प्रेरणा देते हैं। संत विनोबा भावे इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि अंतिम दिनों में गांधीजी के अंतःकरण में अपार वेदना थी। वे देश के विभाजन, अपने राजनैतिक शिष्यों के बीच मची रार और कांग्रेसियों के शुरू हो गए अधोपतन को लेकर व्यथित थे। ऐसी ही व्यथा कृष्ण को भी अपने अंतिम दिनों में यदुकुल के बिखराव और मूल्यहीनता को लेकर थी। गांधी जी के रामराज्य की कल्पना अद्‌भुत है। यही भारतीय लोकतंत्र का आदर्श स्वरूप है जहां समाज में आखिरी पंक्ति में खड़े व्यक्ति की जीवन दशा में सुधार का स्वप्न एक महान संकल्प के रूप में नजर आता है। इसी महान संकल्प की सिद्धि के लिए विगत कई दशकों से हम प्रयासरत हैं। आज प्रत्येक देशवासी की यही कामना है कि हम मिलजुल कर साथ – साथ आगे बढ़ें और भारत विश्वगुरु बने। हम तरक्की की दिशा में समवेत कदम बढ़ाएं। अयोध्या में राम मंदिर में हुए प्राण प्रतिष्ठा समारोह ने हमारे जीवन में अद्‌भुत आलोक और आनंद भर दिया है। चतुर्दिश उत्साह, उमंग और अनुराग का माहौल है। सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः। मा कश्चित् दुःख भाग भवेत, यही लोक कल्याण और विश्व बंधुत्व की भावना रामत्व है। आज सबकी आंखें अयोध्या की ओर टकटकी लगाए हुए हैं। सबके मन में सहज लालसा है कब अयोध्या जाने का सुअवसर प्राप्त हो तथा अपने आराध्य के सम्मुख सिर नवाने की अभिलाषा पूर्ण हो। ऐसे महान क्षण हमारे जीवन में कभी कभार आते हैं।

◆

मो. : 9454098779

अनुपम, अतुलनीय

श्री अयोध्या धाम

" 500 वर्षों के सुदीर्घ अंतराल के बाद आए प्रभु श्री रामलला के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक और अत्यंत पावन अवसर पर पूरा भारत भावविभोर और भाव विह्वल है। श्री अवधपुरी में श्री रामलला का विराजना भारत में 'रामराज्य' की स्थापना की उद्घोषणा है। 'सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती' की परिकल्पना साकार हो उठी है "

-योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

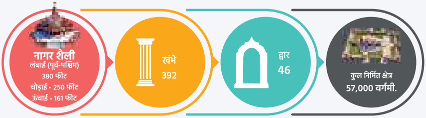

- मंदिर परिसर के किनारे 14 फीट चौड़े परिक्रमा पथ का निर्माण
- परिक्रमा पथ पर रामायण को चित्रित करने वाली 125 कांस्य मूर्तियों की स्थापना
- श्रीराम मंदिर के दक्षिण क्षेत्र में 7 अन्य मंदिरों का निर्माण किया जा रहा है। ये मंदिर रामायण के विभिन्न ऋषियों एवं निषादराज, अहिल्या और शबरी जैसे पात्रों को समर्पित होंगे।
- परिसर में हरित क्षेत्र विकसित करने हेतु 70 एकड़ के 70% क्षेत्र में 600 वृक्ष रोपण
- भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण में पिंक सैंड स्टोन, सफेद संगमरमर और ग्रेनाइट सहित 2.1 मिलियन क्यूबिक फीट पत्थर का उपयोग
- मंदिर की नींव में रोलर-कॉम्पैक्ट कंक्रीट की 14 मीटर मोटी परत एवं सतह की नमी रोकने हेतु ग्रेनाइट प्लिंथ का निर्माण
- श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों की सुविधा हेतु लॉकर और चिकित्सा सुविधाओं से लैस 25,000 लोगों की क्षमता वाले आगंतुक सुविधा केंद्र का निर्माण

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए शिशिर, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश एन. भार्गव, प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ द्वारा मुद्रित।